राष्ट्रीय संस्करण

# दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 205

मूल्य ₹6.00, नई दिल्ली, गुरुवार, 2 जनवरी 2020

www.jagran.com

पृष्ठ 16

दशक की टीमों के कप्तान चुने गए धौनी

>>14

**उम्मीदें 2020**

**सूझबूझ से गढ़ रहे रोजगार...**

**नई दिल्ली** : उम्मीदें-2020 में आज जागरण सरोकार-जनसंख्या नियोजन के तहत उन लोगों की कहानी जो अपनी सूझबूझ से न केवल अपने लिए बल्कि औरों के लिए भी रोजगार की राह बनाने में सफल रहे। (पेज-7)

## जागरण विशेष

### राजपथ पर नए अवतार में नजर आएगा जम्मू कश्मीर

**जम्मू** : इस बार राजपथ पर नए जम्मू-कश्मीर की झलक दिखेगी। गणतंत्र

दिवस समारोह पर निकाली जाने वाली राज्य की झांकी में विकास की बात होगी तो कला संस्कृति की चमक भी। बड़ी बात यह कि भेदभाव दंश भी मिटेगा। (पेज-6)

## न्यूज गैलरी

**राज-नीति** ▶ पृष्ठ 3

### नीट-2020 के लिए अब छह तक कर सकेंगे ऑनलाइन आवेदन

**नई दिल्ली** : नीट (यूजी)-2020 के लिए ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ाकर छह जनवरी (रात 11:50 बजे तक) कर दी गई है। वेबसाइट में ओवरलोड के कारण बड़ी संख्या में अभ्यर्थी आवेदन नहीं कर पाए थे। पहले आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2019 थी। बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय से वेबसाइट की परेशानी के कारण आवेदन न कर पाने की शिकायत की थी।

**नेशनल न्यूज** ▶ पृष्ठ 5

### कानून मंत्री ने विरोधी राज्यों को दिखाया संविधान का आईना

**नई दिल्ली** : सीएए के खिलाफ केरल विस में प्रस्ताव पारित होने पर केंद्रीय कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद ने राज्य सरकारों को संविधान का आईना दिखाया है। उन्होंने कहा, जो सरकारें संविधान की शपथ लेकर सत्ता में आई हैं वो गैर संवैधानिक बात कर रही हैं। केंद्रीय कानून लागू करना राज्यों का संवैधानिक दायित्व है'।

**बिजनेस** ▶ पृष्ठ 12

### किराया वृद्धि के बाद अब यूजर चार्ज वसूलने का प्रस्ताव

**नई दिल्ली** : यात्री किरायों में एक से चार पैसे प्रति किलोमीटर की वृद्धि से ऑपरेटिंग रेशियो में भले ही सुधार हो जाए, लेकिन इससे रेलवे की खराब माली हालत में विशेष सुधार होने वाला नहीं है। इसलिए आने वाले समय में रेलवे अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए कुछ और कदम उठा सकती है।

**अंतरराष्ट्रीय** ▶ पृष्ठ 13

### अमेरिका सैकड़ों और सैनिकों को भेज रहा है इराक

**बगदाद** : इराक में स्थित दूतावास पर हमले के बाद अमेरिका ने सैकड़ों और सैनिकों को पश्चिम एशिया भेजने का निर्णय लिया है। मंगलवार को बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारियों ने बगदाद में अमेरिकी दूतावास के अंदर घुसकर आगजनी की थी। डेथ ऑफ अमेरिका जैसे नारे लगा रहे ये प्रदर्शनकारी अमेरिकी हवाई हमलों का विरोध कर रहे थे।

# गगनयान के लिए वायुसेना के चार अफसरों का चयन

**बेंगलुरु, एजेंसियां** : भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी इसरो ने चंद्रयान-3 मिशन को अगले साल अंजाम देने की घोषणा की है। साथ ही यह भी बताया कि महत्वाकांक्षी मानव मिशन गगनयान के लिए भारतीय वायुसेना के चार पायलटों का चयन किया जा चुका है। इनका अंतरिक्ष यात्री का प्रशिक्षण इसी महीने रूस में शुरू होगा।

इसरो के चेयरमैन के. सिवन ने बुधवार को एक प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि देश के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन के तहत 'गगनयान' वर्ष 2022 तक पृथ्वी की धुरी पर चक्कर लगाने लगेगा। गगनयान के लिए वायुसेना के चार पायलटों का चयन हो चुका है। बेंगलुरु में स्थित वायुसेना के इंडियन एविएशन मेडिसिन में चारों का चिकित्सकीय परीक्षण हो चुका है। इनमें से तीन एक हफ्ते के लिए अंतरिक्ष में पृथ्वी की धुरी पर चक्कर लगाएंगे। इस दौरान वह पृथ्वी की माइक्रो ग्रैविटी और बायो-साइंस पर अध्ययन करेंगे। सिवन ने यह ब्योरा देते हुए वायुसेना के अफसरों की पहचान जाहिर नहीं की। वायुसेना के इन अफसरों का बतौर अंतरिक्ष यात्री प्रशिक्षण इसी महीने के तीसरे हफ्ते में रूस में शुरू होगा। सिवन ने बताया कि चारों अंतरिक्ष यात्री पुरुष होंगे। हालांकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब वर्ष 2018 में स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से इस महत्वाकांक्षी योजना की घोषणा की थी, तब उन्होंने कहा था कि तीन अंतरिक्ष यात्री जाएंगे जिसमें एक महिला होगी।

- मानव मिशन के लिए चारों का प्रशिक्षण इसी माह से रूस में होगा
- चंद्रयान-3 मिशन अगले साल के लिए खिसका
- चांद के तीसरे मिशन की कुल लागत 600 करोड़ रुपये होगी

बेंगलुरु में बुधवार को प्रेसवार्ता करते इसरो के चेयरमैन के. सिवन। एएफपी

**2022** में पृथ्वी के चक्कर लगाने लगेगा गगनयान

**2018** में पीएम ने की थी इस मिशन की घोषणा

सिवन ने कहा, वर्ष 2019 में इस प्रोजेक्ट पर खासी प्रगति हुई थी। इसके कई डिजाइन पूरे हो चुके हैं। अंतरिक्ष यात्रियों का चयन भी किया जा चुका है। चारों अंतरिक्ष यात्रियों को प्रशिक्षण के लिए रूस भेजा जा रहा है। भारत ने गगनयान अभियान के लिए रूस और फ्रांस से करार किया था। ध्यान रहे कि वर्ष 1984 में रूसी अंतरिक्ष यान से देश के पहले अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा को अंतरिक्ष भेजा गया था। 35 वर्षीय विंग कमांडर शर्मा भी वायुसेना के टेस्ट पायलट थे।

उन्होंने बताया कि चंद्रयान-3 मिशन का काम बहुत सहजता से चल रहा है। यह मिशन चंद्रयान-2 जैसे ही होगा, लेकिन चंद्रयान-3 में एक लैंडर, रोवर और एक प्रपल्जन मॉड्यूल होगा। सिवन ने कहा कि चंद्रयान-3 का प्रक्षेपण अगले साल 2021 में बढ़ जाने के आसार हैं। ध्यान रहे कि इसरो ने यह घोषणा तब की है, जबकि एक दिन पहले ही केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा था कि चंद्रयान-3 मिशन की शुरुआत 2020 में ही होगी। सिवन ने यह भी माना कि चंद्रयान-2 के विक्रम लैंडर की सॉफ्ट लैंडिंग चांद की सतह पर नहीं हो पाई थी। चूंकि उसके वेग को कम नहीं किया जा सका था।

सिवन ने बताया कि चंद्रयान-3 परियोजना की लागत करीब 250 करोड़ रुपये है। लेकिन इसकी लांचिंग की लागत करीब 350 करोड़ रुपये होगी। इसलिए इसकी कुल लागत करीब 600 करोड़ रुपये होगी। ध्यान रहे कि इसरो ने वर्ष 2020 की परियोजनाओं के लिए सरकार से 14,000 करोड़ रुपये मांगे हैं।

### तूतीकोरिन में बनेगा दूसरा लांच पैड

उन्होंने बताया कि श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के अलावा तमिलनाडु के तूतीकोरिन में इसका लांच पैड होगा। दूसरे लांच पैड के लिए तूतीकोरिन जिले में भूमि अधिग्रहण किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि एसएसएलवी (स्माल सैटेलाइट लांच वेहिकल) के लिए विशेष रूप से इस जगह का चुनाव किया गया है। ताकि दक्षिण दिशा में लांच का विशेष लाभ मिले। शुरुआत में नए पैड से केवल एसएसएलवी को ही लांच किया जाएगा। लेकिन आगे चल कर विस्तार के तहत बड़े लांच भी किए जाएंगे। सिवन ने भावी योजनाओं का ब्योरा देते हुए कहा कि इस साल 25 अभियान होंगे। जो मिशन 2019 में पूरे नहीं किए जा सके, वह भी इसी साल मार्च तक पूरे कर लिए जाएंगे।

# राजनीति से दूर रहती हैं सेनाएं : रावत

**रखी अपनी बात** ▶ देश के पहले सीडीएस का पदभार संभालने के बाद साफ किया रुख

### कहा, सरकार के निर्देशों का पालन करती हैं सेनाएं, तीनों सेनाओं में संतुलन बनाकर टीम के रूप में करेंगे काम

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली**

नए साल में भारत के सैन्य इतिहास में नए अध्याय की शुरुआत करते हुए जनरल बिपिन रावत ने तीनों सेनाओं की संयुक्त कमांड के पहले प्रमुख 'चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ' (सीडीएस) का कामकाज संभाल लिया। सीडीएस के तौर पर जनरल रावत ने साफ कहा, सेनाएं राजनीति से दूर रहकर काम करती हैं। सैन्य बलों के अनुशासन के दायरे में रहने की ओर इशारा करते हुए कहा, सेनाएं मौजूदा सरकार के निर्देशों का पालन करती हैं। बतौर सीडीएस वह तीनों सेनाओं के बीच संतुलन बनाते हुए एक टीम के रूप में सैन्य मजबूती के लिए काम करेंगे।

सेनाओं के राजनीति से दूर रहने के जनरल रावत के इस स्पष्टीकरण के बाद उनके कथित सियासी बयान का विवाद समाप्त होने की उम्मीद है। रावत ने कहा था कि वे लोग नेता नहीं हो सकते जो लोगों को दूसरी दिशा में ले जाते हों जैसा कि अभी हम कॉलेजों, विश्वविद्यालयों या अपने शहरों में हिंसक विरोध प्रदर्शनों के रूप में देख रहे हैं। सीएए और एनआरसी विरोधी प्रदर्शनों को देखते हुए रावत के बयान पर विपक्षी दलों ने सवाल उठाते हुए उनसे सैन्य अनुशासन की मर्यादा पार नहीं करने की बात कही थी।

नई दिल्ली में बुधवार को साउथ ब्लॉक के लॉन में गॉर्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण करने के बाद थल सेनाध्यक्ष मनोज मुकुंद नरवाने (बाएं), नौसेना प्रमुख करमबीर सिंह (बाएं से दूसरे) और वायु सेना अध्यक्ष आरकेएस भदौरिया (दाएं) के साथ देश के पहले सीडीएस बिपिन रावत। प्रेट्र

जनरल रावत ने साउथ ब्लॉक में नया पदभार संभालने से पहले इंडिया गेट पर राष्ट्रीय युद्ध स्मारक जाकर शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि दी। जबकि सीडीएस की कमान थामने के बाद रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मुलाकात करके तीनों सेनाओं के शीर्षस्थ सैन्य अधिकारी के तौर पर अपनी नई जिम्मेदारी का आगाज किया।

भारत में पहली बार तीनों सेनाओं की संयुक्त कमान के लिए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की शुरुआत हुई है। सीडीएस के अधिकारों व कामकाज की तस्वीर अभी साफ नहीं हुई है। हालांकि रावत ने कहा, वह देश को आश्वस्त करते हैं कि सेना, नौसेना व वायुसेना टीम के रूप में काम करेगी। बेशक तीनों सीडीएस के नियंत्रण में होंगे मगर फैसला विचार-विमर्श के बाद टीम के रूप में होगा। उनका फोकस इस बात पर रहेगा कि तीनों सेनाओं के संसाधनों का अधिकतम उपयोग हो। संसाधनों में तालमेल बिठाकर सैन्य पराक्रम क्षमता में इजाफा करना भी उनका लक्ष्य है। तीनों सेनाओं को एक एक कर तीन नहीं पांच या सात बनाएंगे। उपलब्ध संसाधन के साथ आगे बढ़ेंगे। सीडीएस इसमें पूरा सहयोग करेगा।

तीनों सेनाओं के संयुक्त थियेटर कमांड बनाने के सवाल पर रावत ने कहा, पश्चिमी देशों के मॉडल समेत कई विकल्पों की बात की जा रही है, मगर हम विचार मंथन करके अपनी थियेटर कमांड संरचना बनाने पर गौर करेंगे। उन्होंने तीनों सेनाओं के प्रशिक्षण में भी एक दूसरे के बीच सामंजस्य बिठाने की बात कही। साथ ही खरीद प्रक्रिया और प्रबंधन में भी सुधार करते हुए सामंजस्य बिठाने के इरादे जाहिर किए। रावत ने कहा कि वह निष्पक्ष रहेंगे और तीनों सेनाओं के बीच संतुलन बनाए रखेंगे। 41 साल की सेवा के बाद अब उन्होंने अपना गोरखा कैप उतार दिया है और नई टोपी पहनी है जो निष्पक्षता का संदेश देती है।

पाकिस्तान की नापाक हरकतों और विशेषकर गुलाम कश्मीर के लिए खास योजना के सवाल पर कहा, इस तरह की किसी योजना को उजागर नहीं किया जाता। उत्तरी सीमा व चीन की चुनौतियों के सवाल पर रावत ने कहा कि सेना समन्वित तरीके से ऐसी चुनौतियों का सामना करने के लिए काम करती रहेगी।

जनरल नरवाने बोले, चीन सीमा पर शांति से ही सुझलेगा विवाद पेज>>3

भारत-पाक ने साझा की परमाणु प्रतिष्ठानों और कैदियों की सूची पेज>>3

# माल्या की चल संपत्तियां बेच बैंक कर सकेंगे कर्ज वसूली

**मुंबई, प्रेट्र** : विशेष अदालत ने स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआइ) के नेतृत्व वाले 15 बैंकों के कंसोर्टियम को पूर्व शराब कारोबारी विजय माल्या की चल संपत्तियों के इस्तेमाल की अनुमति प्रदान कर दी है। इन संपत्तियों से बैंक माल्या द्वारा लिए गए कर्ज की वसूली कर सकते हैं।

विजय माल्या मार्च, 2016 में देश छोड़कर भाग गया था और इस समय ब्रिटेन में रह रहा है। प्रिवेंशन ऑफ मनी लांड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के तहत विशेष अदालत ने अपराधी घोषित कर 2016 में उसकी संपत्तियों को जब्त कर लिया था। उसकी चल संपत्तियों में यूनाइटेड ब्रेवरीज होल्डिंग लिमिटेड (यूबीएचएल) के शेयर जैसी वित्तीय प्रतिभूतियां शामिल हैं। आपराधिक प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) के प्रावधानों के तहत किसी व्यक्ति के अपराधी घोषित किए जाने के बाद अदालत उसकी चल संपत्तियों को जब्त करने का आदेश देती है। प्रावधानों के तहत उसी व्यक्ति को अपराधी घोषित किया जा सकता है जिसके खिलाफ वारंट जारी किया गया हो और अदालत को लगे कि वह भाग गया है या वारंट के कार्यान्वयन से बच रहा है।

इससे पहले बैंकों के कंसोर्टियम ने विशेष अदालत में आवेदन दाखिल कर माल्या की चल संपत्तियों को रिलीज करने की मांग की थी। बैंकों के कंसोर्टियम की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता राजीव पाटिल ने बताया कि विशेष अदालत ने मंगलवार को चल संपत्तियों को रिलीज करने का आदेश दे दिया है। साथ ही अपने आदेश पर 18 जनवरी तक रोक लगा दी है ताकि संबंधित पक्ष बांबे हाई कोर्ट में अपील कर सकें। माल्या की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता अमित देसाई ने बताया, 'हमें नहीं पता कि अदालत ने संपत्तियां एसबीआइ के पास बहाल की हैं या कंसोर्टियम के पास। स्पष्टीकरण के लिए हम अदालती आदेश की प्रति का इंतजार कर रहे हैं।'

- विशेष अदालत ने अपील के लिए दिया 18 जनवरी तक का समय

विजय माल्या फाइल फोटो

बता दें कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने पिछले साल फरवरी में विशेष पीएमएलए अदालत में कहा था कि उसे बैंकों के कंसोर्टियम द्वारा जब्त संपत्तियों को बेचे जाने पर कोई आपत्ति नहीं है। कर्जदाता बैंक इन संपत्तियों को बेचकर 6,203.35 करोड़ रुपये वसूल करना चाहते हैं।

धोखाधड़ी में 18 करोड़ की संपत्तियां जब्त पेज>>3

# सीबीआइ ने घूसखोरी में डीआरआइ के एडीजी को किया गिरफ्तार

**जागरण संवाददाता लुधियाना**

सीबीआइ ने बुधवार को घूसखोरी में राजस्व गुप्तचर निदेशालय (डीआरआइ) के अतिरिक्त महानिदेशक चंद्रशेखर और दो बिचौलियों को गिरफ्तार कर लिया। चंद्रशेखर लुधियाना में तैनात हैं। सीबीआइ का दावा है कि दिल्ली के एक निर्यातक से इन लोगों ने तीन करोड़ रुपये की रिश्वत मांगी थी। घूस की पहली किस्त के रूप में 25 लाख रुपये लेते समय सीबीआइ ने बिचौलियों को गिरफ्तार कर लिया। डीआरआइ अधिकारी को जांच के दौरान गिरफ्तार किया गया।

अधिकारियों ने बताया कि पकड़े गए बिचौलियों में राजेश ढांडा और क्लीयरिंग हाउस का एजेंट अनूप जोशी शामिल हैं। लुधियाना का होजरी निर्यातक राजेश ढांडा डीआरआइ अधिकारी का करीबी बताया जाता है।

- जांच एजेंसी ने दो बिचौलिए भी दबोचे, तीन करोड़ रुपये रिश्वत मांगने का आरोप

**क्या है मामला** : डीआरआइ ने जून 2019 में दिल्ली की कंपनी पर छापा मारा था। जब्त दस्तावेज से करोड़ों रुपये के शुल्क की चोरी का पता चला था। कार्रवाई नहीं हो इसके लिए बिचौलियों ने डीआरआइ के एडीजी व एक्सपोर्टर के बीच तीन करोड़ रुपये रिश्वत की डील करवाई। जोशी ने निर्यातक से कहा था कि लुधियाना का होजरी निर्यातक एडीजी का दोस्त है। वह तीन करोड़ मांग रहे हैं। पैसा न देने पर उसके खिलाफ कार्रवाई होगी। दिल्ली के निर्यातक की शिकायत पर सीबीआइ ने दिल्ली के एक होटल में जाल बिछाया रिश्वत की पहली किस्त लेते समय बिचौलियों को दबोच लिया।

चार घंटे तक शहर में की जांच पेज>>6

# पीएफआइ के खिलाफ सक्रिय हुई जांच एजेंसियां, लगाया जा सकता है प्रतिबंध

**नीलू रंजन, नई दिल्ली**

नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों में विरोध प्रदर्शन के दौरान हुई हिंसा के पीछे पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआइ) के हाथ होने के सुबूत मिलने के बाद केंद्रीय एजेंसियां सक्रिय हो गई हैं। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने पीएफआइ के खिलाफ पहले से चल रही मनी लांड्रिंग केस की जांच तेज कर दी है, तो आयकर विभाग ने भी पीएफआइ को मिलने वालों चंदों के स्रोतों को खंगालना शुरू कर दिया है। वहीं, उत्तर प्रदेश की ओर से संगठन पर पाबंदी की सिफारिश पर गृह मंत्रालय ने गंभीरता से विचार शुरू कर दिया है।

गृह मंत्रालय के उच्चपदस्थ सूत्रों के अनुसार, विभिन्न रिपोर्टों में पीएफआइ के अतिवादी हिंसक गतिविधियों में शामिल होने की पुष्टि हुई है। केरल के रामालिंगम हत्याकांड की जांच के बाद दाखिल आरोपपत्र में एनआइए ने पीएफआइ पर आतंकी गतिविधियों में शामिल होने का दावा किया है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआइए) के अनुसार, 2013 में कन्नूर में पीएफआइ और सोशलिस्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ इंडिया ने युवाओं को आतंकी प्रशिक्षण देने के लिए शिविर लगाया था। केरल की स्थानीय अदालत ने एनआइए के आरोपों को सही ठहराते हुए 22 आरोपितों में से 21 को सजा भी सुनाई थी। इसी मामले में 2018 में ईडी ने प्रिवेंशन ऑफ मनी लांड्रिंग एक्ट के तहत केस दर्ज कर पीएफआइ को मिलने वाले चंदे की जांच शुरू की थी। हिंसक विरोध प्रदर्शनों में पीएफआइ का हाथ सामने आने के बाद ईडी ने जांच तेज कर दी है। उसने सभी बैंकों से पीएफआइ के खातों की विस्तृत जानकारी देने को कहा है।

- प्रवर्तन निदेशालय ने पहले से जारी मनी लांड्रिंग मामले की जांच तेज की, आयकर विभाग भी खातों की पड़ताल में जुटा

एजेंसियों का अनुमान है कि पीएफआइ और उसके आनुषंगिक संगठनों से जुड़े खातों में 100 करोड़ रुपये से अधिक जमा हो सकते हैं। बताया जाता है कि अकेले पीएफआइ के देशभर में लगभग तीन दर्जन बैंक खाते हैं। यह भी बताया जा रहा है कि इन बैंकों में 20 हजार से लेकर एक लाख तक की नगदी भारी पैमाने पर जमा कराई गई है। इसके साथ ही विदेश से भी पैसा आने का शक है। आयकर विभाग अब उन व्यक्तियों का पता लगाने की कोशिश कर रहा है, जिन्होंने नकदी के तौर पीएफआइ के बैंक अकाउंट में रकम जमा कराए।

### कोहरे ने राजधानी और शताब्दी की रफ्तार पर लगाया ब्रेक

**नई दिल्ली** : कोहरे की वजह से रेल यात्रियों की परेशानी बढ़ गई है, क्योंकि ट्रेनें घंटों देरी से चल रही हैं। नए साल के पहले दिन भी दिल्ली आने वाली 50 से ज्यादा ट्रेनें देरी से पहुंची। विलंब से गंतव्य पर पहुंचने के कारण राजधानी और शताब्दी सहित 14 ट्रेनों के समय में बदलाव करना पड़ा। आने वाले दिनों में परेशानी और बढ़ सकती है। (पेज-6)

### उम्र की गलत जानकारी देने के कारण मनजोत कालरा निलंबित

**नई दिल्ली** : पिछले अंडर-19 विश्व कप के फाइनल मैच में शतक लगाने वाले बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज मनजोत कालरा को अंडर-16 और अंडर-19 के दिनों में उम्र में कथित धोखाधड़ी करने के लिए डीडीसीए के निवर्तमान लोकपाल ने रणजी ट्रॉफी के मैचों में खेलने से एक वर्ष के लिए निलंबित कर दिया है। (पेज-15)

## कूटनीति

नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान और मालदीव के प्रमुखों से बात कर की नए साल की शुरुआत, सहयोग की दिशा में उठाए कदमों की समीक्षा के साथ नई संभावनाओं पर चर्चा, प्रधानमंत्री की इस कूटनीतिक पहल के निकाले जा रहे खास मायने

# पाकिस्तान को छोड़ सभी पड़ोसियों से बतियाए नरेंद्र मोदी

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली**

नए वर्ष 2020 की कूटनीतिक शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पड़ोस से की है। बुधवार को नए साल के अवसर पर उन्होंने पाकिस्तान को छोड़कर नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका के प्रधानमंत्रियों और मालदीव के राष्ट्रपति से फोन पर बात की। इस दौरान उन्होंने पड़ोसी देशों को नए साल की बधाई दी, भारत की जनता की तरफ से जनता को शुभेच्छा भेंट कीं, पिछले साल सहयोग की दिशा में उठाए गए कदमों की समीक्षा की और नए वर्ष में सहयोग की संभावनाओं पर भी चर्चा की। ऐसे समय जब कुछ पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय रिश्तों का संतुलन बिगड़ने के संकेत हैं तब प्रधानमंत्री मोदी की इस कूटनीतिक पहल के खास मायने निकाले जा रहे हैं।

मोदी ने बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना को आवामी लीग की तीन और वर्षों के लिए प्रेसिडेंट चुने जाने पर बधाई दी और नई दिल्ली में बांग्लादेश के उच्चायुक्त सैयद मुआज्जम अली के असमय निधन पर गहरी संवेदना भी प्रकट की। छोटी सी बातचीत में पिछले एक वर्ष के दौरान उठाए गए कदमों की समीक्षा और भावी योजनाओं पर चर्चा भी हुई। अगले वर्ष बांग्लादेश की स्थापना की 50वीं वर्षगांठ मनाने की तैयारी है। मोदी ने शेख हसीना को बताया कि यह बहुत अच्छा मौका है जब हम द्विपक्षीय रिश्तों को और प्रगाढ़ करने की दिशा में कदम उठाएं। उन्होंने आश्वस्त किया कि उनकी सरकार का बांग्लादेश के साथ रिश्ता हमेशा से प्राथमिकता में रहा है। भारत में नागरिकता संशोधन कानून बनने के बाद पहली बार दोनों देशों के बीच शीर्ष स्तर की वार्ता हुई है। इस कानून को लेकर बांग्लादेश नाराजगी जाहिर कर चुका है। उसने अपने विदेश मंत्री के भारत दौरे को रद कर दिया था। दोनों देशों के बीच नदी जल बंटवारे पर गठित समिति की बैठक भी रद कर दी गई है। हाल ही में बांग्लादेश ने सीमा पर मोबाइल नेटवर्क बंद कर दिया था। उसे आशंका है कि भारत में अवैध तरीके से रहने वाले बांग्लादेशी लौट सकते हैं।

नरेंद्र मोदी फाइल फोटो

इसी तरह प्रधानमंत्री ने एक अन्य अहम पड़ोसी देश श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे और प्रधानमंत्री महिंदा राजपक्षे से भी बात की और रिश्तों को प्रगाढ़ बनाने के संभावित उपायों पर चर्चा की। गोटाबाया ने राष्ट्रपति बनने के बाद भारत की यात्रा भी की थी, लेकिन यहां से लौटने के बाद उनकी सरकार के कुछ कदमों से भारत निश्चित तौर पर खुश नहीं होगा। राजपक्षे को चीन समर्थक माना जाता है जो श्रीलंका में कई औद्योगिक ढांचागत परियोजनाएं लगा रहा है। भारत से लौटने के बाद गोटाबाया सरकार ने खुलेआम चीन की परियोजनाओं को आगे बढ़ाने की बात कही है, जबकि इन परियोजनाओं पर पूर्व की सीरीसेना सरकार ने कड़ा रुख अख्तियार किया था। नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली से भी मोदी ने बात की है। इस दौरान भारत-नेपाल रिश्तों पर चर्चा हुई। मोतीहारी अमलेकगंज पाइपलाइन के रिकॉर्ड समय में पूरा होने पर दोनों ने प्रसन्नता जताई और इस तरह की दूसरी परियोजनाओं की समीक्षा की गई। खास तौर पर बिराटनगर में बन रहे चेकपोस्ट का साथ मिलकर उद्घाटन करने पर भी बात हुई। सनद रहे कि ओली सरकार का रुख भी चीन समर्थक का रहा है। हाल ही में चीन और नेपाल के बीच बनने वाले नए सड़क व रेल मार्ग के समन्वयन को लेकर बैठक हुई। जाहिर है कि भारत को इन दोनों परियोजनाओं को लेकर आपत्ति है। मोदी ने भूटान नरेश जिग्मे बांग्चुक और प्रधानमंत्री एलएल शेरिंग से भी बात की। उन्होंने इन दोनों नेताओं को बताया कि भारत की पड़ोस प्रथम नीति में भूटान का अहम स्थान है।

# अब्दुल सत्तार को मंत्री बनाने से शिवसेना पर उठे सवाल

**संजीव शिवडेकर (मिड-डे), मुंबई**

महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे सरकार में कभी अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम के करीबी बताए जाने वाले अब्दुल सत्तार को मंत्री बनाए जाने पर सवाल उठने लगे हैं। शिवसेना के मुखपत्र 'सामना' ने ही 1994 में प्रकाशित अपनी एक रिपोर्ट में अब्दुल सत्तार को दाऊद का करीबी बताया था। 25 साल पुरानी सामना की यह रिपोर्ट अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है और शिवसेना के नेताओं को इसका जवाब देते नहीं बन रहा है।

सामना ने 11 जून, 1994 को 'शेख सत्तार के दाऊद गिरोह से करीबी संबंध' शीर्षक से रिपोर्ट प्रकाशित की थी। तब अब्दुल सत्तार कांग्रेस में थे और उन्होंने शिवसेना के पार्षद को चुनाव में हराया था। सत्तार औरंगाबाद जिले के सिल्लोड क्षेत्र से विधायक हैं। यही नहीं, 1993 के मुंबई विस्फोट मामले में मौत की सजा पाए याकूब मेमन के लिए दया का अनुरोध करने वाले विधायकों में भी सत्तार शामिल थे। पिछले साल लोकसभा चुनाव में कांग्रेस से टिकट नहीं मिलने से नाराज होकर सत्तार ने पार्टी छोड़ दी थी। बाद में वह शिवसेना में शामिल हुए और विधायक बन गए। सीएम उद्धव ठाकरे ने पहले मंत्रिमंडल विस्तार में अब्दुल सत्तार को कैबिनेट मंत्री बनाया है। इससे शिवसेना के नेताओं व कार्यकर्ताओं में भी नाराजगी है। उनका कहना है कि चुनाव से पहले पार्टी में आए नेता को इतनी जल्दी मंत्री बनाना ठीक नहीं है। औरंगाबाद क्षेत्र को मंत्रिमंडल में जगह ही देनी थी तो तीन बार के विधायक संजय शिरसाट को मंत्री बनाया जाना चाहिए था।

- 1994 में 'सामना' ने सत्तार को अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद का करीबी बताया था

सत्तार ने नहीं की कोई टिप्पणी पेज>>4

**437** रहा बुधवार को दिल्ली का एयर इंडेक्स। पिछले वर्ष एक जनवरी को एयर इंडेक्स 393 रहा था। गुरुवार से दिल्ली में एक पश्चिमी विक्षोभ का असर आने वाला है। इससे प्रदूषण में कुछ कमी आ सकती है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
गुरुवार 2 जनवरी 2020

# उत्तर प्रदेश के पांच आइपीएस अधिकारियों के खिलाफ डीजीपी से शिकायत

**जागरण संवाददाता, नोएडा**

- गौतमबुद्धनगर एसएसपी वैभव कृष्ण का आरोप, ट्रांसफर-पोस्टिंग गैंग से जुड़े हैं अधिकारी
- गाजियाबाद के एसएसपी, सुल्तानपुर और बांदा के एसपी सहित कई अधिकारी हैं शामिल

पत्रकारों से बात करते गौतमबुद्धनगर के एसएसपी वैभव कृष्ण। जागरण

> पूर्व में उगाही व गैंगस्टर मामले में गिरफ्तार चंदन राय व लखनऊ निवासी अतुल शुक्ला के साथ पांच आइपीएस अधिकारियों की वॉट्सएप, एसएमएस व ऑडियो बातचीत सामने आई थी। मैंने यह रिपोर्ट डीजीपी व अपर मुख्य सचिव गृह को भेजी थी। उसके बाद ट्रांसफर पोस्टिंग के संगठित गिरोह में संलिप्त अधिकारियों की शह पर ही मुझे बदनाम करने के लिए साजिश रची जा रही है। **-वैभव कृष्ण, एसएसपी गौतमबुद्ध नगर**

एसएसपी गौतमबुद्धनगर वैभव कृष्ण के एक महिला से बातचीत के तीन कथित आपत्तिजनक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने पर बुधवार को पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। इसके बाद गौतमबुद्धनगर एसएसपी वैभव कृष्ण ने देर रात पत्रकार वार्ता कर उत्तर प्रदेश के पांच आइपीएस अधिकारियों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया।

डीजीपी व अपर मुख्य सचिव गृह को सौंपी रिपोर्ट का हवाला देते हुए वैभव कृष्ण ने कहा कि उन्होंने पत्रकारिता के नाम पर संगठित गिरोह चलाने वाले कथित पत्रकारों उदित गोयल, सुशील पंडित व चंदन राय को जेल भेजा था। इसी मामले में लखनऊ के नितीश शुक्ला के खिलाफ भी कार्रवाई हुई थी। चंदन की आइपीएस अजयपाल शर्मा, आइपीएस सुधीर सिंह, आइपीएस हिमांशु कुमार, आइपीएस राजीव नारायण मिश्रा व आइपीएस गणेश साहा के साथ ट्रांसफर-पोस्टिंग को लेकर की गई बातचीत व वॉट्सएप चैटिंग जांच में सामने आई थी। तभी से मेरे खिलाफ साजिश हो रही है। अब निजी स्तर पर बदनाम करने के लिए फेक वीडियो वायरल कराए जा रहे हैं। उन्होंने दावा किया है कि मामले की जांच के बाद पुलिस विभाग के कई अधिकारियों का काला चिट्ठा खुल जाएगा।

वैभव कृष्ण ने पत्रकारों को पांच पेज की एक रिपोर्ट भी दी। इसमें उन्होंने गौतमबुद्धनगर के पूर्व एसएसपी अजयपाल शर्मा, गाजियाबाद के वर्तमान एसएसपी सुधीर कुमार सिंह, बांदा एसपी गणेश साहा, कुशीनगर के पूर्व एसपी राजीव नारायण मिश्र व सुल्तानपुर के वर्तमान में एसपी हिमांशु कुमार का जिक्र किया है। रिपोर्ट के अनुसार, अजयपाल शर्मा के मोबाइल की सीडीआर में उनकी अभियुक्त चंदन राय से बात हुई है, जिसमें चंदन द्वारा कहा जा रहा है कि उनकी पोस्टिंग मेरठ करवाने का आश्वासन मिल गया है। 80 लाख रुपये में से 50 फीसद पोस्टिंग से पहले व शेष एक महीने के अंदर देने होंगे। रिपोर्ट में लखनऊ के अतुल शुक्ला, स्वप्निल राय, नीतीश, दीप्ति शर्मा, सुनील भारती से भी बातचीत का जिक्र है। ये उक्त आरोपित ट्रांसफर पोस्टिंग के मामले में गिरफ्तार किए गए थे।

गाजियाबाद के एसएसपी सुधीर सिंह व चंदन राय की एसएमएस पर बातचीत में निरीक्षक संजय वर्मा को चार्ज दिलाने के लिए बात हुई। इसमें सुधीर सिंह ने आरोपित को शाम को मिलने के लिए बुलाया। एसपी बांदा गणेश साहा व चंदन राय की चैट में ट्रकों को निकलवाने व एवज में पेमेंट आने की बात कही जा रही है। साथ ही चंदन राय ने राजेश राय नाम के व्यक्ति को वॉट्सएप चैट भेजी है, जिसमें लिखा है कि एसपी बांदा से बात हो गई है। गाड़ियों को निकलवाने से पहले टोकन देना होगा, साथ ही बैंक अकाउंट नंबर भी दिया गया है। वैभव कृष्ण के अनुसार, कुशीनगर के तत्कालीन एसपी राजीव नारायण की नीतीश पांडेय से वॉट्सएप चैट का विवरण मिला है, जिसमें आरक्षी अनिल तिवारी को जनपद में एक माह के लिए संबद्ध कराया गया है। इस आरक्षी के खिलाफ आपराधिक कृत्य से जुड़े मुकदमों का भी जिक्र है। नीतीश द्वारा उपनिरीक्षक वेद प्रकाश, भगवान सिंह, आरक्षी रामसाधन यादव, आरक्षी जोगेश यादव, आरक्षी राजेश, दिनेश यादव के भी ट्रांसफर-पोस्टिंग की बात है।

सुल्तानपुर के एसपी हिमांशु कुमार के ट्रांसफर के संबंध में चंदन व लखनऊ निवासी अतुल शुक्ला के साथ वॉट्सएप चैट व ऑडियो रिकार्डिंग का जिक्र है, जिसमें बिजनौर के लिए 30 लाख, बरेली के 40 लाख आगरा के लिए 50 लाख रुपये की बात कही गई है। वॉट्सएप चैट में हिमांशु और अतुल शुक्ला के बीच बातचीत का भी जिक्र है। वैभव कृष्ण ने बताया कि अतुल शुक्ला क्रुक्सा पब्लिसिटी लिमिटेड का मालिक है। यह संस्था उत्तर प्रदेश सरकार की योजनाओं का प्रचार-प्रसार करती है। अतुल शुक्ला से पूछताछ में दिवाकर खरे नाम के एक व्यक्ति से अतुल शुक्ला के संबंध होने की बात सामने आई है। वैभव कृष्ण के अनुसार अतुल द्वारा यह भी बताया गया कि दिवाकर खरे मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश के कार्यालय में निदेशक मीडिया के पद पर तैनात हैं। अतुल की दूसरी फर्म स्काई स्कैनर टूरिज्म के खाते से कई बार दिवाकर के खाते में पैसे भी भेजे गए हैं। दिवाकर व अतुल के बीच बातचीत के एक अन्य ऑडियो में पीसीएस अधिकारी गुलशन कुमार को ईओ बड़ौत का चार्ज दिलवाने के लिए कहा जा रहा है, जिसके एवज में दस लाख रुपये देने की बात हो रही है।

## अज्ञात के खिलाफ दर्ज कराया गया मुकदमा

**जागरण संवाददाता, नोएडा** : एसएसपी ने वीडियो को मार्फर्ड (फर्जी) बताते हुए इस मामले में अज्ञात के खिलाफ कोतवाली सेक्टर-20 में एफआइआर दर्ज कराने की बात कही। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल किया जा रहा है, जिसमें मेरा फोटो दिखाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ आपराधिक तत्वों ने इस तरीके से साजिश करने की कोशिश की है, जिससे मेरी छवि को नुकसान पहुंचे। जिले में पिछले एक वर्ष में संगठित अपराध व अपराधियों व भ्रष्टाचार व दलाली व उगाही के खिलाफ कार्रवाई हुई है।

### आलाधिकारियों ने मामले पर साधी चुप्पी

शासन स्तर पर अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश कुमार अवस्थी और डीजीपी ओपी सिंह इस मामले पर अधिकृत रूप से कुछ भी कहने से बच रहे हैं। एसएसपी बांदा गणेश साहा का कहना है कि वैभव कृष्ण उनके सीनियर हैं। उनके प्रेसवार्ता करने व डीजीपी से उनकी शिकायत करने की उन्हें जानकारी नहीं है। गाजियाबाद के एसएसपी सुधीर सिंह ने कहा कि मुझे किसी वीडियो की जानकारी नहीं है। मेरा उनसे कोई भी विवाद नहीं है। मैंने कभी उनके बारे में गलत टिप्पणी तक नहीं की है। मेरे ऊपर लगे तमाम आरोप बेबुनियाद हैं।

## न्यूज गैलरी

### करोड़ों के भूमि घोटाले में जमा कराई एफआइआर की कॉपी

**गाजियाबाद** : सीबीआइ की विशेष अदालत में बुधवार को यमुना प्राधिकरण क्षेत्र में हुए 126 करोड़ के जमीन घोटाले के मामले में सीबीआइ की टीम ने एफआइआर की कॉपी जमा कराई है। जल्द ही अदालत कॉपी पर संज्ञान लेने के बाद सीबीआइ को इस मामले में आगे के दिशा-निर्देश देगी। बता दें कि सीबीआइ की टीम ने पिछले दिनों सेवानिवृत्त आइएएस अफसर एवं प्राधिकरण के पूर्व सीईओ पीसी गुप्ता समेत 17 आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था। सीबीआइ सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया जा चुका है। इसके बाद अदालत में कॉपी जमा कराई गई है। अदालत के आदेश के बाद इस मामले में सीबीआइ आगे की कार्रवाई करेगी। वहीं सूत्रों का कहना है कि इस मामले में सीबीआइ अन्य अधिकारियों की भी जांच कर रही है। ऐसे में चार्टशीट देने से पहले सीबीआइ अधिकारी इस मामले की गहनता से जांच में जुटे हैं। जांच में कई और बड़े चेहरों के बेनकाब होने का अंदेशा सीबीआइ को है। (जासं)

### एयरपोर्ट लाइन की मेट्रो में मिलेगी मुफ्त वाई-फाई की सुविधा

**नई दिल्ली** : दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) नए साल में मेट्रो के अंदर मुफ्त वाई-फाई का तोहफा देगा। बृहस्पतिवार को एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन की मेट्रो में सुविधा शुरू हो जाएगी। डीएमआरसी के प्रबंध निदेशक मंगू सिंह इसकी शुरुआत करेंगे। इससे मेट्रो में सफर के दौरान यात्री मुफ्त इंटरनेट इस्तेमाल कर सकेंगे। डीएमआरसी के अनुसार इस फैसले से मेट्रो में यात्रा करने वाले यात्री स्मार्ट फोन और लैपटॉप से मुफ्त में इंटरनेट इस्तेमाल कर सकेंगे। अभी तक एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन के सभी छह स्टेशन व ब्लू लाइन के स्टेशनों के प्लेटफार्म पर वाई-फाई की सुविधा है। लेकिन चलती मेट्रो में यह सुविधा नहीं मिल रही थी। डीएमआरसी ने अब सुविधा में विस्तार करने और मेट्रो के अंदर भी वाई-फाई की सुविधा देने की योजना बनाई है। आने वाले दिनों में सभी कॉरिडोर की मेट्रो में यह सुविधा मिल सकेगी। (जासं)

### चार मेट्रो स्टेशनों का निर्माण कार्य जल्द होगा शुरू

**नई दिल्ली** : दिल्ली मेट्रो के फेज-4 के तुगलकाबाद-एरोसिटी मेट्रो कॉरिडोर का निर्माण कार्य जल्द शुरू होगा। इस कॉरिडोर में संगम विहार से साकेत-जी तक चार एलिवेटेड मेट्रो स्टेशनों का निर्माण करने के लिए दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन (डीएमआरसी) ने निर्माण कार्य का अनुबंध किया है। इस अनुबंध के तहत संगम विहार, खानपुर-देवली, आंबेडकर नगर और साकेत-जी मेट्रो स्टेशन का निर्माण होगा। ये सभी स्टेशन एलिवेटेड होंगे। (जासं)

# दिल्ली में हुई हिंसा के लिए आप-कांग्रेस जिम्मेदार : जावडेकर

**सियासत** ▸ केंद्रीय मंत्री बोले, भाजपा का मुख्य मुद्दा दिल्ली का पूर्ण विकास

### 'जहां झुग्गी, वहीं मकान' का पंजीकरण फॉर्म भी जारी किया

**राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली**

नागरिकता संशोधन कानून के विरोध में प्रदर्शन के दौरान हुई हिंसा के लिए भाजपा ने आम आदमी पार्टी (आप) व कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया है। केंद्रीय मंत्री व दिल्ली के चुनाव प्रभारी प्रकाश जावडेकर ने प्रदेश भाजपा कार्यालय में आयोजित प्रेसवार्ता में कहा कि आप के विधायकों व कांग्रेस के पूर्व विधायकों ने अल्पसंख्यकों के बीच दुष्प्रचार किया, जिससे हिंसा भड़की थी। दोनों पार्टियों को इसके लिए माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने कहा कि भाजपा सकारात्मक एजेंडे के साथ चुनाव मैदान में उतर रही है। जनता को केंद्र सरकार द्वारा दिल्ली के विकास व दिल्लीवासियों के हित में उठाए गए कदमों की जानकारी देंगे। अगले पांच साल में क्या काम किए जाएंगे, इसे भी बताएंगे। इसके साथ ही पांच साल में आप सरकार द्वारा नहीं किए गए कामों की भी जानकारी जनता को देंगे।

उन्होंने कहा कि भाजपा का मुख्य मुद्दा दिल्ली का पूर्ण विकास रहेगा। यह लड़ाई झूठ बनाम सच की है, अराजकता बनाम राष्ट्रवाद की है। भाजपा सच्चाई और राष्ट्रवाद के साथ है, जबकि आप झूठ और अराजकता के साथ खड़ी है। पांच जनवरी को इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में बूथ कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा, जिसे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह संबोधित करेंगे।

उन्होंने कहा कि साढ़े चार वर्षों तक मुख्यमंत्री ने कोई काम नहीं किया। वह यह आरोप लगाते रहे कि मोदी सरकार काम नहीं करने दे रही है। चुनाव के तीन माह पहले वह काम करने का नाटक करके लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। वह नगर निगमों व केंद्र सरकार के कामों का श्रेय खुद लेने की कोशिश में लगे रहते हैं। नगर निगमों का नौ हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का फंड दिल्ली सरकार रोके हुए है। अनधिकृत कॉलोनियों में लोगों के घर का मालिकाना हक देने और प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 'जहां झुग्गी, वहीं मकान' देने की योजना को लेकर आप नेता लोगों में भ्रम फैला रहे हैं। आप सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना दिल्ली में लागू नहीं होने दी, जिससे लोगों को इस योजना के तहत मकान नहीं मिले है। उन्होंने 'जहां झुग्गी, वहीं मकान' का पंजीकरण फॉर्म भी जारी किया। लोगों को फॉर्म देने के लिए झुग्गी बस्तियों में दिल्ली विकास प्राधिकरण की ओर से स्टॉल लगाए जाएंगे। भाजपा इस योजना के तहत लोगों को मकान देना चाहती है, लेकिन लोगों को गुमराह करने के लिए मुख्यमंत्री प्रमाण पत्र बांट रहे हैं।

प्रदेश भाजपा कार्यालय में 'जहां झुग्गी, वहीं मकान' का रजिस्ट्रेशन फॉर्म दिखाते (बाएं से) राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू, केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर व राज्यसभा सदस्य विजय गोयल। सौजन्य : भाजपा

## 'भाजपा नहीं चाहती, लोगों को मिले सस्ती शिक्षा'

**राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली**

आम आदमी पार्टी (आप) के नेता व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने आरोप लगाया कि भाजपा महंगी शिक्षा की पक्षधर है। यह इस बात से प्रमाणित होता है कि भाजपा के दिल्ली नेताओं के इशारे पर सीबीएसई ने दसवीं और बारहवीं के परीक्षा शुल्क में चार गुना की बढ़ोतरी कर दी है। यह बढ़ोतरी तब की गई, जब केजरीवाल सरकार ने दिल्ली के सरकारी स्कूलों के बच्चों की फीस जमा करने का निर्णय लिया। हालांकि इसके बाद भी दिल्ली सरकार अपने निर्णय पर कायम है। वह बच्चों की फीस दे रही है। लेकिन भाजपा के निर्णय का नुकसान निजी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों और उनके परिवार को हुआ है। वह भाजपा को कभी माफ नहीं करेंगे।

पार्टी मुख्यालय में प्रेसवार्ता में सिसोदिया ने कहा कि भाजपा की तमाम नीतियां शिक्षा के खिलाफ हैं। मैं भाजपा से पूछना चाहता हूं कि भाजपा शिक्षा को महंगा क्यों रखना चाहती है? भाजपा क्यों नहीं चाहती कि दिल्ली और देश के बच्चों को अच्छी और सस्ती शिक्षा मिले?

22 जून को त्यागराज स्टेडियम में छात्रों के साथ सीएम अरविंद केजरीवाल द्वारा किए गए एक संवाद कार्यक्रम का उदाहरण देते हुए सिसोदिया ने बताया कि उस कार्यक्रम में लगभग 1000 ऐसे छात्र थे जो कि 90 फीसद या उससे अधिक नंबर लेकर 12 कक्षा में उत्तीर्ण हुए थे। मुख्यमंत्री ने 10वीं और 12वीं के छात्रों की बोर्ड की फीस 450 रुपये माफ करने का फैसला लिया था। उन्होंने आरोप लगाया कि इस फैसले के तुरंत बाद दिल्ली भाजपा के नेताओं ने भाजपा के केंद्रीय नेताओं से मिलकर साजिश के तहत सीबीएसई की बोर्ड परीक्षा फीस चार गुना बढ़वा दी। इसमें एससी-एसटी छात्रों की फीस बढ़ाकर 1650 रुपये और सामान्य श्रेणी के छात्रों की फीस बढ़ाकर 1950 रुपये कर दी गई। दिल्ली के सभी स्कूलों में कुल मिलाकर 44 लाख बच्चे पढ़ते हैं। इनमें 10वीं और 12वीं के छात्र लगभग पांच से छह लाख हैं। दिल्ली सरकार की इस योजना से सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले चार लाख बच्चों को फायदा होने वाला था। भाजपा को लगा कि इतने बड़े स्तर पर लोगों को लाभ होगा तो भाजपा की राजनीति शून्य हो जाएगी। सिसोदिया ने केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर व अन्य भाजपा नेताओं से सीबीएसई की फीस चार गुना बढ़ाई जाने पर जवाब मांगा है।

पार्टी मुख्यालय में पत्रकारों से बात करते उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया। सौजन्य : आप

### दंगों की मास्टरी किसके पास जनता जानती है : सिसोदिया

**राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली** : नागरिकता संशोधन कानून को लेकर दिल्ली में हुई हिंसा को लेकर भाजपा ने सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी को भी जिम्मेदार ठहराया। पार्टी मुख्यालय में प्रेसवार्ता के दौरान उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने भाजपा पर पलटवार किया। उन्होंने कहा कि हम हिंसा के खिलाफ हैं। हमने साफ तौर पर कहा है कि जो भी हिंसा में शामिल रहा है, उस पर कार्रवाई हो। उन्होंने कहा कि दंगा कराने की मास्टरी किसके पास है, यह जनता जानती है। सिसोदिया ने कहा कि भाजपा सरकार के अंतर्गत सभी जांच एजेंसियां हैं। जांच करवाएं और जो भी दोषी है, उसको जेल भेजें। उन्होंने कहा कि चुनाव नजदीक है। ऐसे में भाजपा वाले लोगों को मुद्दों से भटकाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि मैं प्रकाश जावडेकर को बता देना चाहता हूं कि इस बार टेपरिकार्डर में पुराने टेप नहीं चलेंगे। वह अपने पुराने टेपों को भूल जाएं। चुनाव विकास के मुद्दों पर होगा। भाजपा के पास न नेता है और न ही मुद्दे हैं।

## महंगाई रोकने में नाकाम रहा केंद्र : सुभाष चोपड़ा

**राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली**: प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सुभाष चोपड़ा ने रसोई गैस की कीमतों में वृद्धि की कड़ी निंदा की है। उन्होंने भाजपा सरकार पर महंगाई रोकने में नाकाम रहने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने नव वर्ष पर एक सिलेंडर की कीमत में 19 रुपये का इजाफा करके यह साबित कर दिया है कि भाजपा जनविरोधी है। उन्होंने रसोई गैस की बढ़ी हुई कीमतें तुरंत वापस लेने की मांग की।

चोपड़ा ने बुधवार को बयान जारी किया कि केंद्र के तमाम प्रयासों के बावजूद प्याज की कीमतों का कम न होना भी साफ दर्शाता है कि सरकार महंगाई रोकने में कोई रुचि नही ले रही है। इससे आम आदमी के बजट पर सीधा प्रभाव पड़ेगा। चोपड़ा ने कहा कि व्यावसायिक इस्तेमाल में आने वाले सिलेंडर की कीमतों में भी भारी इजाफा किया गया है। इससे चाय व अन्य खाने-पीने की वस्तुओं के दाम तेजी से बढ़ेंगे। मुख्य प्रवक्ता मुकेश शर्मा ने कहा कि केंद्र के इस जनविरोधी निर्णय के खिलाफ गुरुवार को पार्टी कार्यकर्ता प्रदेश अध्यक्ष के नेतृत्व में धरना देंगे।

# दिल्ली के चुनावी रण में उतरने को तैयार हरियाणा के योद्धा

**अनुराग अग्रवाल, चंडीगढ़**

- 70 सदस्यीय विधानसभा की दो दर्जन सीटों पर हरियाणा के लोगों का दबदबा
- चुनाव से पहले दिल्ली नापने में जुटे भाजपा-कांग्रेस और जजपा के योद्धा
- मनोहर लाल, हुड्डा, सैलजा, किरण और दुष्यंत अचानक हुए सक्रिय

### केजरीवाल के मोहल्ला क्लीनिक और स्कूलों के जवाब में भाजपा का सुशासन

भाजपा ने दिल्ली में आप को घेरने के लिए चक्रव्यूह तैयार कर रखा है। हरियाणा के विधानसभा चुनाव में दिल्ली में मोहल्ला क्लीनिक और सरकारी स्कूलों में आमूल-चूल बदलाव को लेकर मुख्यमंत्री मनोहर लाल को ललकारते रहे केजरीवाल को अब हरियाणा के भाजपाई सुशासन से जवाब देने की तैयारी में हैं। हरियाणा के चुनाव में केजरीवाल का पूरा दखल रहा था। हरियाणा में आम आदमी पार्टी का मजबूत और बड़ा नेटवर्क है। यहां के आप कार्यकर्ता भी दिल्ली चुनाव में ताल ठोंकते नजर आएंगे।

### केजरीवाल के पुराने योद्धा नवीन जयहिंद जुटे तैयारी में

अरविंद केजरीवाल खुद हरियाणा के हिसार जिले के सिवानी से हैं। दिल्ली विधानसभा चुनाव में हरियाणा आप के प्रधान नवीन जयहिंद की अगुआई में प्रदेश के बड़े पदाधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है जो स्थानीय नेताओं के साथ सभी क्षेत्र नापेंगे। खासकर दिल्ली से लगते गुरुग्राम, फरीदाबाद, सोनीपत और बहादुरगढ़ के लोगों का चुनाव में खासा दखल रहेगा। दिल्ली के हरियाणा से प्रभावित इलाकों को फतेह करने की मंशा से नवीन जयहिंद ने आप की हरियाणा इकाई के प्रभारी गोपाल राय तथा राज्यसभा सदस्य सुशील गुप्ता के साथ मंथन शुरू कर दिया है।

हरियाणा में नई सरकार के गठन के बाद अब यहां के नेता दिल्ली के रण में उतरने को तैयार हैं। तीन ओर से हरियाणा से घिरी राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में मतदान के लिए भले ही चुनाव आयोग ने अभी कार्यक्रम जारी नहीं किया, लेकिन हरियाणा के योद्धा पूरी तरह एक्शन मोड में आ गए। हरियाणा भाजपा और कांग्रेस के नेता दिल्ली चुनाव में दमदार प्रदर्शन कर खुद को साबित करने की कोशिश में हैं। वहीं, नई नवेली जननायक जनता पार्टी के सामने एक बार फिर खुद को साबित करने की बड़ी चुनौती है।

70 विधानसभा सीटों वाली दिल्ली में दो दर्जन से अधिक सीटों पर हरियाणवियों का दखल है। खासकर बाहरी दिल्ली में करीब एक दर्जन सीटों पर जाट मतदाता चुनावी हार-जीत में अहम भूमिका निभाने की ताकत रखते हैं। दिल्ली में 21 साल बाद सत्ता में वापसी की राह तलाश रही भाजपा ने हरियाणा की गठबंधन सरकार में पहले ही चार जाट मंत्रियों को शामिल कर जाटों को रिझाने का दांव खेला है। राज्य में भाजपा की सहयोगी जननायक जनता पार्टी के संयोजक दुष्यंत चौटाला भी जाट हैं।

हरियाणा में भाजपा की सहयोगी जननायक जनता पार्टी दिल्ली में भी गठबंधन कर चुनावी ताल ठोक सकती है। चुनावी माहौल बनाने के लिए भाजपा ने प्रदेश के 31 दिग्गजों को प्रचार रण में उतार दिया है। मुख्यमंत्री मनोहर लाल के साथ केंद्रीय राज्यमंत्री कृष्ण पाल गुर्जर, राव इंद्रजीत, चौ. बीरेंद्र सिंह, पूर्व मंत्री रामबिलास शर्मा, ओमप्रकाश धनखड़, कैप्टन अभिमन्यु, विपुल गोयल, कविता जैन और मूलचंद शर्मा दिल्ली की चुनावी जंग को काफी हद तक प्रभावित करने का माद्दा रखते हैं।

कांग्रेस की ओर से पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा, हरियाणा कांग्रेस की प्रधान कुमारी सैलजा, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी रणदीप सुरजेवाला और विधायक किरण चौधरी अब दिल्ली में सक्रिय हो गए हैं। हरियाणा की राजनीति में आने से पहले किरण चौधरी दिल्ली विधानसभा की उपाध्यक्ष भी रह चुकी हैं। दिल्ली में उनका खासा प्रभाव है। वहीं, कांग्रेस की दिल्ली में होने वाली रैलियों में सर्वाधिक भीड़ जुटाकर पूर्व मुख्यमंत्री हुड्डा खुद को कई बार साबित कर चुके हैं।

पूर्व में कई मौकों पर भाजपा के साथ मिलकर चुनाव लड़ने वाला इनेलो (इंडियन नेशनल लोकदल) अब टूट चुका है। दिल्ली विधानसभा में कभी अपना विधायक बैठाने वाली इस पार्टी की जगह अब जजपा ने ले ली है। जजपा की कोशिश विधानसभा के लिए भाजपा से गठबंधन कर चुनाव लड़ने की है। खासकर बाहरी दिल्ली की आधा दर्जन सीटों पर जजपा की निगाह है। उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला सांसद रहते यहां काफी सक्रिय रहे हैं जिसका फायदा उन्हें विधानसभा चुनाव में मिल सकता है।

## जागरण विशेष

नोएडा के मुर्तिकार राम वी सुतार ने 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के बाद फिर तैयार की पहले गृह मंत्री की मूर्ति, गुजरात के अहमदाबाद स्थित सरदार धाम में तीन जनवरी को सरदार वल्लभभाई पटेल की 40 फीट ऊंची मूर्ति को होगा अनावरण

# नोएडा से गुजरात पहुंचे भारत के सबसे असरदार 'सरदार'

**कुंदन तिवारी, नोएडा**

आजाद भारत के सबसे असरदार 'सरदार' कहे जाने वाले देश के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की 40 फीट ऊंची मूर्ति अनावरण को तैयार है। नोएडा से बनकर मूर्ति गुजरात के अहमदाबाद स्थित सरदार धाम पहुंच चुकी है। तीन जनवरी को गुजरात के मुख्यमंत्री इसका अनावरण कर सकते है। इस मूर्ति को भी नोएडा के मूर्तिकार राम वी सुतार ने 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के बाद तैयार किया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत को एक सूत्र में बांधने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल की दुनिया में सबसे ऊंची मूर्ति 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' को देश को समर्पित कर चुके हैं। सरदार पटेल की इस मूर्ति की ऊंचाई 182 मीटर है। इस मूर्ति को नोएडा के मूर्तिकार राम वी सुतार ने बनाया है। इसके बाद गुजरात सरकार ने अहमदाबाद स्थित सरदार धाम में सरदार पटेल की 40 फीट ऊंची मूर्ति को लगवाने का निर्णय लिया। छह माह पहले निर्माण की जिम्मेदारी मूर्तिकार राम वी सुतार को सौंप दी। उन्होंने इस मूर्ति को तैयार कर सरदार धाम भिजवा दिया है। तीन जनवरी को गुजरात के मुख्यमंत्री इस मूर्ति का अनावरण कर सकते हैं। पिछले सप्ताह नोएडा से इस तैयार मूर्ति को ले जाकर सरदार धाम में स्थापित कराया गया है।

राम वंजी सुतार, मूर्तिकार। जागरण आर्काइव

> छह माह पहले सरदार पटेल की मूर्ति को तैयार करने की जिम्मेदारी गुजरात सरकार ने दी थी। उसे तैयार कर अहमदाबाद स्थित सरदार धाम पहुंचा दिया गया है।
> -राम वी सुतार, मूर्तिकार

### सबसे अधिक लोकप्रिय महात्मा गांधी

विदेशों में सबसे अधिक लोकप्रिय भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी हैं। इनकी मूर्ति विदेश के चार सौ शहरों में स्थापित की गई है। ताज्जुब की बात यह है कि महात्मा गांधी की इन सभी मूर्तियों का निर्माण नोएडा के मूर्तिकार राम वी सुतार ने किया है।

गुजरात के अहमदाबाद स्थित सरदार धाम में लगाई जा रही देश के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा। सौ. अनिल सुतार

# पेटी में बंद होगा भाजपा से टिकट चाहने वालों का भाग्य

**संतोष कुमार सिंह, नई दिल्ली**

भाजपा ने इस बार प्रत्याशी चयन की प्रक्रिया में बदलाव करने का फैसला किया है। भाजपा पदाधिकारी व वरिष्ठ कार्यकर्ता गुप्त मतदान के जरिये अपने क्षेत्र में योग्य उम्मीदवार का चयन करेंगे। पार्टी के रणनीतिकारों ने प्रत्याशियों के चयन में पारदर्शिता लाने और किसी तरह के विवाद से बचने के लिए यह कदम उठाया है। उन्हें लगता है कि इस प्रक्रिया से चुनावी समर में योग्य नेता उतर सकेंगे और किसी तरह की गुटबाजी भी नहीं होगी।

प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में टिकट चाहने वाले नेताओं की लंबी लाइन लगी हुई है। पुराने नेताओं के साथ ही पार्टी में कुछ समय पहले शामिल होने वाले कार्यकर्ता भी चुनाव लड़ना चाहते हैं। इसके साथ ही कई सांसद और बड़े नेता अपने समर्थकों को टिकट दिलाने की कोशिश में लगे हुए हैं। इससे पार्टी में गुटबाजी बढ़ रही है और कार्यकर्ताओं में असमंजस भी बढ़ रहा है।

पिछले विधानसभा चुनाव तक प्रदेश के नेता मंडल व जिला स्तर पर नेताओं व वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की राय लेकर संभावित उम्मीदवारों की सूची तैयार करते थे। प्रदेश चुनाव समिति इसमें संशोधन करने के बाद केंद्रीय नेतृत्व के पास भेजती थी। केंद्रीय नेतृत्व आखिरी फैसला लेता था। प्रदेश व केंद्रीय नेतृत्व द्वारा विधानसभा क्षेत्रों में सर्वे भी कराया जाता है जिससे कि संभावित उम्मीदवारों और चुनाव को प्रभावित करने वाले मुद्दों की पहचान हो सके। इन सबके बावजूद टिकट वितरण को लेकर विवाद होना आम बात है। इस तरह के विवाद से बचने के लिए सभी 70 विधानसभा क्षेत्रों में आंतरिक मतदान होगा।

**1.5** करोड़ फास्टैग अभी तक जारी किए जा चुके हैं। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के अनुसार, 1 लाख से अधिक रोजाना जारी किए जा रहे हैं। टोल वसूलसी की यह व्यवस्था 15 दिसंबर 2019 से लागू की गई है।



## न्यूज गैलरी

### निजी मेडिकल कालेजों को जिला अस्पतालों से जोड़ने का सुझाव

**नई दिल्ली :** चिकित्सकीय शिक्षा में उच्च शिक्षा प्राप्त डॉक्टरों की कमी की खाई को पाटने के लिए नीति आयोग ने पीपीपी (पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल) अपनाने का सुझाव दिया है। इसके जरिये नए या मौजूदा निजी मेडिकल कालेजों को जिला अस्पतालों के साथ मिल-जुल कर काम करेगा ताकि जिला अस्पताल में मेडिकल की सीटें बढ़ जाएं। सरकार के थिंक टैंक नीति आयोग ने बुधवार को पीपीपी गाइडलाइन दस्तावेजों के तहत समझौते के मसौदे में कहा कि गुजरात और कर्नाटक में ऐसे ही पीपीपी प्रावधान चलन में हैं। भारत में क्वालिफाइड डॉक्टरों की खासी कमी है। इसलिए व्यवहारिक रूप से केंद्र व राज्य सरकारों को चिकित्सकीय शिक्षा में आई खाई को मौजूदा संसाधनों और धन से नहीं पाटा जा सकता है। दस्तावेज में कहा गया है कि इससे नासिर्फ मेडिकल की सीटें ही बढ़ेंगी बल्कि चिकित्सा शिक्षा की कीमतों में भी तार्किक कमी आएगी। इसमें सुझाव दिया गया है कि जिला अस्पतालों से संबद्ध मेडिकल कालेजों में हर साल 150 एमबीबीएस स्टूडेंट्स का दाखिला हो सकेगा। मुफ्त इलाज वाले मरीजों से दस रुपये की रजिस्ट्रेशन फीस लेने का भी सुझाव दिया गया है। (प्रेट्र)

### केरल में ईसाइयों में छिड़े विवाद पर सरकार लाएगी अध्यादेश

**तिरुअनंतपुरम :** दक्षिण भारत के राज्य केरल में सत्तारूढ़ पिनरई विजयन सरकार ईसाइयों के दो फिकरों के बीच विवाद को शांत करने के लिए जल्द ही एक अध्यादेश लाएगी। इस अध्यादेश से जैकोबाइट पैरिशनरों को अपने सामुदायिक कब्रिस्तान में मृतकों के पार्थिव शरीर को दफन करने का अधिकार मिलेगा। इन कब्रिस्तानों पर अभी मालंकारा चर्च के ऑर्थोडॉक्स फिकरे का नियंत्रण है। सरकार ने बुधवार को कैबिनेट की बैठक में अध्यादेश जारी करने का फैसला ईसाइयों के दोनों वर्गों के बीच बातचीत में सहमति न होने के बाद किया। अलाप्पुजा जिले में 91 साल की महिला के निधन के बाद उसके अंतिम संस्कार का मामला एक महीने से ज्यादा समय तक लटके रहने के बाद सरकार ने यह फैसला किया है। उल्लेखनीय है कि प्रदेश में गिरजाघरों की संपत्ति को लेकर जैकोबाइट और ऑर्थोडॉक्स के बीच लंबे समय से टकराव की स्थिति बनी हुई है। 2017 में एक फैसले में सर्वोच्च न्यायालय ने प्रदेश के एक हजार से ज्यादा चर्चों का नियंत्रण जैकोबाइट से लेकर ऑर्थोडॉक्स को दिए जाने का आदेश दिया था। अब वही ऑर्थोडॉक्स वर्ग कब्रिस्तानों में जैकोबाइट वर्ग के मृतकों के अंतिम संस्कार पर विरोध जता रहा है। (प्रेट्र)

# चीन सीमा पर शांति से ही सुलझेगा विवाद : जनरल नरवाने

**कहा** ▶ उत्तरी सीमा पर क्षमताओं में इजाफा करेगी सेना

### सेनाध्यक्ष ने कहा कि उनकी प्राथमिकता सेना को हर समय सामरिक रूप से तैयार रखने की होगी

- भारत-चीन सीमा विवाद 3,488 किमी लंबी एलएसी से जुड़ा है
- अरुणाचल पर चीनी दावे को खारिज करता रहा है भारत

नई दिल्ली में बुधवार को साउथ ब्लॉक में मीडिया से मुखातिब थल सेना अध्यक्ष मनोज मुकुंद नरवाने। एएनआइ

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** नए सेनाध्यक्ष जनरल मनोज मुकुंद नरवाने ने बुधवार को उम्मीद जताई कि चीन से लगती सीमा पर शांति बरकरार रहने से सीमा विवाद का अंतिम समाधान निकल सकेगा। थलसेना के 28वें अध्यक्ष का पदभार संभालने के एक दिन बाद नरवाने ने कहा कि उनकी सेना मानवाधिकारों से जुड़े मसलों पर विशेष ध्यान देगी। सेनाध्यक्ष ने पत्रकारों से बातचीत में चीन से लगती सीमा के वर्तमान हालात पर कहा कि भारतीय सेना उत्तरी सीमाओं पर अपनी क्षमताओं में इजाफा करेगी क्योंकि पूर्व में ध्यान पाकिस्तान से लगती सीमा पर केंद्रित रहा है।

उन्होंने कहा, 'हमारी चीन से लगती वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) है। सीमा का सवाल अभी हल किया जाना है। हालांकि हमने सीमाओं पर शांति बनाए रखने में काफी प्रगति की है। मुझे विश्वास है कि यही हालात बने रहेंगे। सीमाओं पर शांति बरकरार रखकर हम अंतिम समाधान का मंच तैयार कर सकेंगे।'

गौरतलब है कि भारत-चीन सीमा विवाद 3,488 किमी लंबी एलएसी से जुड़ा है। चीन का दावा है कि अरुणाचल प्रदेश दक्षिण तिब्बत का हिस्सा है जबकि भारत उसके इस दावे को खारिज करता है।

नए सेना अध्यक्ष जनरल नरवाने ने आगे कहा, 'मैं देश के लोगों को आश्वस्त कर रहा हूं कि हमारा सैन्य बल देश को सुरक्षित रखने के लिए पूरी तरह से तैयार है। हम देश को कोई नुकसान नहीं होने देंगे। हम चौबीसों घंटे पूरी तरह सतर्क हैं। हमारी सेनाएं किसी भी चुनौती से निपटने में पूरी तरह सक्षम हैं।'

सेनाध्यक्ष जनरल मनोज मुकुंद नरवाने ने इस दौरान कहा कि उनकी प्राथमिकता सेना को हर समय सामरिक रूप से तैयार रखने की होगी। उन्होंने कहा, 'यह आधुनिकीकरण की वजह से होगा। हम क्षमताओं में इजाफा करना जारी रखेंगे खासकर उत्तर और पूर्वोत्तर क्षेत्र में।'

**राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर दी शहीदों को श्रद्धांजलि :** जनरल नरवाने बुधवार को दिल्ली स्थित राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पहुंचे और शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने अमर जवान ज्योति पर भी श्रद्धासुमन अर्पित किए।

## सरकार ने सीडीएस की नियुक्ति को ऐतिहासिक करार दिया

- पीएम ने कहा, आधुनिक युद्ध की चुनौतियों का मुकाबला करने में मिलेगी मदद
- केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अपने ट्वीट में कहा कि पहले सीडीएस की नियुक्ति भारत के लिए महत्वपूर्ण है

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** सरकार ने चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के रूप में जनरल बिपिन रावत के पदभार ग्रहण करने को 'ऐतिहासिक' करार दिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि सैन्य मामलों का विभाग सृजित करना और सीडीएस पद को संस्थागत स्वरूप प्रदान करना महत्वपूर्ण सुधार हैं जो देश को आधुनिक युद्ध की चुनौतियों का मुकाबला करने में मदद करेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी ने बुधवार को ट्वीट किया, 'आवश्यक सैन्य विशेषज्ञता के साथ सैन्य मामलों का विभाग सृजित करना और सीडीएस पद को संस्थागत स्वरूप प्रदान करना महत्वपूर्ण और समग्र सुधार हैं जिनसे हमारे देश को आधुनिक युद्ध की बदलती चुनौतियों का सामना करने में मदद मिलेगी।'

उन्होंने कहा, '15 अगस्त, 2019 को लाल किले की प्राचीर से मैंने घोषणा की थी कि भारत का एक चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ होगा। इस पद पर हमारे सशस्त्र बलों के आधुनिकीकरण की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होगी। यह 1.3 अरब देशवासियों की आशाओं और आकांक्षाओं को परिलक्षित करेगा।' मोदी ने कहा, 'मैं देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वालों और सेवा करने वालों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।'

भाजपा के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावडेकर ने कहा, ' चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) एक नवसृजित व्यवस्था है और देश को इस पर गर्व होना चाहिए। अगर इस पर कोई राजनीति करता है तो यह निंदनीय है।' जावडेकर ने कहा कि कांग्रेस एक भ्रमित पार्टी है और उसके नेताओं के अलग अलग सुर होते हैं। उन्होंने कहा, 'कांग्रेस नेता राहुल गांधी के सलाहकार उनके ट्वीट करते हैं और कांग्रेस के नेता इससे इतर कुछ और ही बोलते हैं। इससे साफ है कि कांग्रेस एक भ्रमित पार्टी है।'

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने अपने ट्वीट में कहा कि पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) की नियुक्ति भारत के लिए महत्वपूर्ण है। यह ऐतिहासिक दिन है जब पहले सीडीएस की नियुक्ति करके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लंबे समय से लंबित मांग को पूरा कर दिया है। गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, ' चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) न केवल भारतीय सशस्त्र बलों की तीनों शाखाओं के कल्याण के मोदी सरकार के प्रयासों को और बढ़ाएगा बल्कि हमारी सेनाओं का आधुनिकीकरण करेगा और नए भारत की आकांक्षाओं को पूरा करेगा।'

वहीं, कांग्रेस ने सीडीएस जनरल बिपिन रावत के संदर्भ में अपने दो वरिष्ठ नेताओं अधीर रंजन चौधरी और मनीष तिवारी की आलोचनात्मक टिप्पणियों से बुधवार को दूरी बना ली।

पार्टी प्रवक्ता सुष्मिता देव ने कहा, 'अगर कांग्रेस के किसी नेता ने कहा है तो उस पर टिप्पणी नहीं करूंगी। सीडीएस का निर्णय भारत सरकार का है। हम आशा करते हैं कि वह अपने कर्तव्य का पालन करेंगे। भारत सरकार देश की सुरक्षा मजबूत करने के लिए कोई भी कदम उठाएगी तो कांग्रेस उसका विरोध नहीं करेगी।' उन्होंने यह भी कहा कि अभी सीडीएस के तौर पर रावत के काम को देखना होगा और इससे पहले कुछ भी कहना ठीक नहीं है।

## पहले सीईओ हो सकते हैं रेलवे बोर्ड के चेयरमैन

- हाल ही में हुए प्रशासनिक पुनर्गठन के दौरान यह पद सृजित किया गया है

विनोद कुमार यादव फाइल फोटो

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** अपने विस्तारित कार्यकाल के लिए प्रभार संभाल चुके रेलवे बोर्ड के चेयरमैन विनोद कुमार यादव इसके पहले सीईओ हो सकते हैं। रेलवे में हाल ही में प्रशासनिक पुनर्गठन के तहत सीईओ (मुख्य कार्यकारी अधिकारी) का पद सृजित किया गया है। पुनर्गठन कवायद के मद्देनजर यादव का एक साल का कार्यकाल विस्तार अहम है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में पुनर्गठन के लिए मंजूरी दी थी।

यादव को पहले कार्यकाल में एक जनवरी 2019 को रेलवे बोर्ड का चेयरमैन नियुक्त किया गया था। उससे पहले उन्होंने दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक के रूप में काम किया था। रेलवे बोर्ड के चेयरमैन के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान न केवल काडरों के विलय की घोषणा की गई बल्कि बोर्ड को छोटा भी किया गया और लगभग 50 अधिकारियों को मुख्यालय से जोनल कार्यालयों में स्थानांतरित कर दिया गया।

इसके अलावा, 'निजी परिचालकों' को कुछ ट्रेनें चलाने की अनुमति दी गई और रेलवे के सार्वजनिक उपक्रमों के निगमीकरण की घोषणा भी की गई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग (इलेक्ट्रिकल) में स्नातक यादव को यदि सीईओ नियुक्त किया जाता है तो उन पर काडर नियंत्रण की जिम्मेदारी होगी और डीजी (एचआर) उनकी सहायता करेंगे।

यादव रेलवे में कई महत्वपूर्ण कार्यकारी और प्रबंधकीय पदों पर काम कर चुके हैं। रेलवे के सर्वोच्च रैंकिंग वाले अधिकारी के रूप में यादव पर यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी भी होगी कि रेलवे का महत्वाकांक्षी काडर विलय बिना किसी अड़चन के लागू किया जाए। उनकी बड़ी चुनौती रेलवे को वित्तीय रूप से मजबूत बनाना होगा क्योंकि कुछ वर्षों से रेलवे गंभीर नकदी संकट का सामना कर रहा है।

## पार्टी गठन के 30 दिन के भीतर करना होगा पंजीकरण का आवेदन

**नई दिल्ली, प्रेट्र/आइएएनएस :** चुनाव आयोग ने जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 के तहत पंजीकरण की मांग करने वाली पार्टियों के लिए नया दिशानिर्देश जारी किया है। बुधवार से प्रभावी दिशानिर्देश के अनुसार राजनीतिक दलों को अपनी स्थापना की तारीख से 30 दिनों के भीतर चुनाव आयोग को अर्जी देनी होगी। पार्टी को मान्यता दिए जाने तक की समूची प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने के लिए आयोग ने ऑनलाइन ट्रेकिंग सिस्टम (पीपीआरटीएमएस) शुरू किया है। संविधान के अनुच्छेद 324 और जनप्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 29ए के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए आयोग ने दिशानिर्देश में कहा है, 'पंजीकरण मांगने वाले संगठन को अपनी स्थापना की तारीख से एक माह के अंदर आवेदन सौंपना होगा।'

आवेदक को अपने आवेदन की स्थिति देखने के लिए आयोग ने पीपीआरटीएमएस लांच किया है। इसके तहत नए राजनीतिक दल के रूप में एक जनवरी 2020 से पंजीकरण के लिए आवेदन करने वाले दल अपने आवेदन की ऑनलाइन निगरानी कर सकेंगे।

## केसीसी घोटाले में कारोबारी की 51 करोड़ की संपत्तियां जब्त

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने किसान क्रेडिट कार्ड घोटाले में आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम निवासी कारोबारी कुमार पप्पू सिंह व उससे जुड़े लोगों की 51 करोड़ रुपये से ज्यादा की संपत्तियां जब्त कर ली हैं। सीबीआइ ने आइडीबीआइ बैंक अधिकारियों, लोन एग्रिगेटरर्स और अन्य के खिलाफ विशाखापत्तनम में मछलीपालन के लिए फर्जी तरीके से केसीसी लोन उपलब्ध करने का मुकदमा दर्ज किया। इस आधार पर ईडी ने भी मामला दर्ज कर लिया।

ईडी का आरोप है कि सिंह ने अपने परिवार के सदस्यों, कंपनी के कर्मचारियों और अन्य समेत कुल 87 लोगों के नाम पर फर्जी तरीके से किसान क्रेडिट कार्ड से कर्ज ले लिया। कर्ज लेने वालों ने अपनी संपत्तियां भी गिरवी रखीं थीं। केंद्रीय एजेंसी के अनुसार, 'बाद में लोगों ने कर्ज की राशि को सिंह और उसकी कंपनी के खातों में हस्तांतरित कर दिया। आरोपितों के नामों पर कुल 69.46 करोड़ रुपये के कर्ज दिए गए थे। इस राशि का निजी संपत्तियों की खरीद और पॉल्ट्री फॉर्म व मछलीपालन के कारोबार में निवेश के रूप में दुरुपयोग किया गया।'

प्रिवेंशन ऑफ मनी लांड्रिंग एक्ट के तहत की गई कार्रवाई में 35.70 करोड़ रुपये के मूल्य का घर, फिश टैंक और पॉल्ट्री फॉर्म तथा विभिन्न बैंकों में जमा 15.73 करोड़ रुपये जब्त किए गए। जब्त संपत्तियों की कुल कीमत 51.43 करोड़ रुपये है।

### बैंक धोखाधड़ी में 18 करोड़ की संपत्तियां जब्त

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गुजरात की एक कंपनी की 18 करोड़ से ज्यादा कीमत वाले नौ पवन टरबाइन जनरेटर व जमीन को जब्त कर लिया है। ईडी ने सूरत की कंपनी नकोडा लिमिटेड के चेयरमैन व प्रबंध निदेशक (एमडी) बाबूलाल जी. जैन, उनके बेटे व संयुक्त प्रबंध निदेशक देवेंद्र बाबूलाल जैन तथा अन्य के खिलाफ मामला दर्ज किया है। ईडी के बयान में कहा गया है कि कंपनी ने 13 बैंकों के कंसोर्टियम से फंड आधारित व नॉन फंड आधारित वित्तीय सुविधाएं हासिल कर ली थीं। कंपनी ने 2,107 करोड़ रुपये के लोन वापस नहीं किए।' आरोप है कि जैन ने ट्रेडर पुनीत रूंगटा और चार्टर्ड अकाउंटेंट जगदीश सोमानी के साथ मिलकर फैंसी फैब्रिक्स की फर्जी खरीद-बिक्री की।

## प्लास्टिक के इस्तेमाल पर रोक के प्रयास को पीएम मोदी ने सराहा

**नईदुनिया, अंबिकापुर :** छत्तीसगढ़ में अंबिकापुर के होलीक्रास स्कूल के विद्यार्थियों के सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक लगाने पर किए जा रहे प्रयासों की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सराहना की है। उन्होंने ट्विटर पर लिखा है कि स्कूल के नौजवान विद्यार्थियों द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। बच्चों ने साल भर पैक खाद्य पदार्थ सहित अन्य प्लास्टिक को एकत्र कर उसे साल के आखिर में विभिन्न कंपनियों को भेजा। इसके पीछे उनका मकसद पैकेज फूड के इस्तेमाल में प्लास्टिक को पूरी तरह हटाना है। होलीक्रास स्कूल में पिछले साल इस अभिनव प्रयास की शुरुआत तब हुई थी, जब यहां के छात्र-छात्राओं ने स्कूल में लाए जाने वाले अलग-अलग कंपनियों द्वारा बनाए गए खाद्य पदार्थों के प्लास्टिक पैकेट को एक जगह सुरक्षित रखना शुरू किया। साल भर में हजारों रैपर जमा होने के बाद उसे आखिरी दिन संबंधित कंपनियों को पार्सल के जरिये भेजा गया। हालांकि, उनके प्रयास को कंपनियों की ओर से अच्छा प्रतिसाद नहीं मिला, लेकिन यहां के विद्यार्थियों का कहना है कि उनका यह अभियान तब तक जारी रहेगा जब तक कंपनियां प्लास्टिक का प्रयोग बंद न कर दें।

## भारत-पाक ने साझा की परमाणु प्रतिष्ठानों और कैदियों की सूची

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली :** भारत और पाकिस्तान ने बुधवार को अपने-अपने परमाणु प्रतिष्ठानों और अपनी-अपनी जेलों में बंद एक दूसरे के कैदियों की सूची साझा की। परमाणु प्रतिष्ठानों की सूची हर वर्ष के पहले दिन साझा की जाती है और बुधवार को यह लगातार 29वीं बार साझा की गई। दोनों देशों ने यह चलन अभी तक नहीं तोड़ा है। ऐसा करने के लिए दोनों देशों के बीच एक समझौता है जो 31 दिसंबर, 1988 को किया गया था और एक जनवरी, 1992 को पहली बार सूची साझा की गई थी।

दोनों देशों ने काउंसलर एक्सेस एग्रीमेंट के तहत अपनी-अपनी जेलों में बंद एक दूसरे के कैदियों की सूची भी साझा की। इस एग्रीमेंट पर 21 मई, 2008 को हस्ताक्षर किए गए थे। इसके तहत दोनों देश हर साल एक जनवरी और एक जुलाई को अपनी-अपनी जेलों में बंद एक दूसरे के कैदियों की सूची का आदान प्रदान करते हैं। पाकिस्तान ने अपनी जेल में बंद 282 भारतीय कैदियों की सूची दी है। इसमें 227 मछुआरे हैं जबकि शेष 55 नागरिक हैं। भारत की तरफ से पाकिस्तान को इस संदर्भ में जो सूची सौंपी गई है उसके मुताबिक भारतीय जेलों में 366 पाकिस्तानी कैद हैं। इनमें 267 पाकिस्तानी नागरिक हैं जबकि शेष मछुआरे हैं।

## नीट-2020 के लिए छह तक कर सकेंगे ऑनलाइन आवेदन

- एनटीए ने छूटे अभ्यर्थियों को दिया एक और मौका
- पहले आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2019 (रात 11:50 बजे तक) थी

**15** लाख 19 हजार 375 छात्र-छात्राओं ने 2019 में एनईईटी परीक्षा के लिए कराया था पंजीकरण

**14** लाख 10 हजार 754 अभ्यर्थी शामिल हुए थे परीक्षा में

**07** लाख 97 हजार 42 अभ्यर्थी दाखिला परीक्षा को पास करने में सफल हुए

**नई दिल्ली, एएनआइ :** नीट (यूजी)-2020 के लिए ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ाकर छह जनवरी (रात 11:50 बजे तक) कर दी गई है। वेबसाइट में ओवरलोड के कारण बड़ी संख्या में अभ्यर्थी आवेदन नहीं कर पाए थे। इसे देखते हुए ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि को बढ़ाने का फैसला लिया गया। पहले आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2019 (रात 11:50 बजे तक) थी। ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ाने से काफी संख्या में छात्रों को फायदा मिलेगा।

गौरतलब है कि बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय से वेबसाइट की परेशानी के कारण आवेदन नहीं कर पाने की शिकायत की थी। अभ्यर्थियों ने दोबारा मौका दिए जाने की भी मांग की थी। इसके बाद नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) के अनुसार, राष्ट्रीय पात्रता व प्रवेश परीक्षा-यूजी (नीट-यूजी) के ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ा दी गई है, लेकिन ध्यान देने वाली बात है कि ॉनलाइन आवेदनों को दुरुस्त करने की अंतिम तिथि में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इसका मतलब यह है कि अभ्यर्थी अपने ऑनलाइन आवेदन को 15 जनवरी से 31 जनवरी 2020 (रात 11:50 बजे) तक दुरुस्त कर सकेंगे।

कश्मीर घाटी, लेह और कारगिल के अभ्यर्थी एनटीए की तरफ से तय नोडल केंद्रों पर अपना आवेदन ऑफलाइन जमा करा सकते हैं। और अधिक जानकारी के लिए अभ्यर्थी एनटीए की वेबसाइट www.ntaneet.nic.in की मदद ले सकते हैं। आवेदन व फीस से संबंधित जानकारी के लिए आवेदक एनटीए की हेल्पडेस्क (0120-6895200) की भी मदद ले सकते हैं।

## वायु सेना ने अनोखे अंदाज में दी नए साल की शुभकामनाएं

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** भारतीय वायु सेना ने देशभक्ति की भावनाओं से ओतप्रोत एक वीडियो के जरिए लोगों को नए साल की शुभकामनाएं दी है। इसमें वायुसेना के योद्धाओं की प्रशंसा की गई है, जो आसमान की रक्षा करते हैं। वायु सेना द्वारा नए साल की पूर्व संध्या पर ट्विटर पर जारी करीब ढाई मिनट के वीडियो को 12,500 से अधिक बार देखा जा चुका है, लगभग 5,000 लाइक और 900 रीट्वीट मिले हैं। वीडियो की शुरुआत एक शुभकामना संदेश के साथ होती है, 'भारतीय वायु सेना की ओर से सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।'

इसके बाद वायु सेना के प्रतीक चिह्न और ध्येय वाक्य, 'नभः स्पर्शं दीप्तम' को दिखाया गया है। वीडियो के सशक्त दृश्य और बेहद आकर्षक संगीत के साथ ही एक हिंदी कविता इसे रोमांचक बनाती है। वीडियो में कहा गया है कि खून में उबल रहे देशभक्ति के जुनून के आगे तूफान और बवंडर कुछ भी नहीं। इसमें आगे कहा गया है, 'मैं भारतीय वायु सेना का योद्धा हूं और मौत को मात देना मेरी फितरत है।' इस कविता में हर जन्म में भारतीय वायु सेना का जांबाज बनने की कामना की गई है और कहा गया है कि भारतीय वायु सेना का जवान आदि है, अंत नहीं।

## मध्य प्रदेश लोकसेवा आयोग की परीक्षा के पाठ्यक्रम में पंडित नेहरू शामिल

- राज्य सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम को बदला गया
- वर्ष 2020 से लागू हो जाएगा यह संशोधित पाठ्यक्रम

**लोकेश सोलंकी, इंदौर**

मध्य प्रदेश लोकसेवा आयोग (पीएससी) की परीक्षा में सफल होने के लिए अब देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के विचारों को भी पढ़ना होगा। 'राज्य सेवा परीक्षा' के लिए पीएससी द्वारा जारी संशोधित पाठ्यक्रम में पंडित नेहरू को शामिल किया गया है। उन्हें दार्शनिक और विचारकों की सूची में राज्यसेवा के पाठ्यक्रम में जगह दी गई है। मध्य प्रदेश लोकसेवा आयोग (पीएससी) संशोधित पाठ्यक्रम राज्यसेवा परीक्षा-2020 से लागू होगा।

नए साल की शुरुआत के साथ ही मध्य प्रदेश लोकसेवा आयोग (पीएससी) ने पाठ्यक्रम में संशोधन की घोषणा कर दी है। राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा के साथ मुख्य परीक्षा के लिए भी नया पाठ्यक्रम घोषित किया है। हालांकि, मध्य प्रदेश लोकसेवा आयोग (पीएससी) नए सिलेबस में प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा के पर्चों की संख्या और परीक्षा योजना में किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया।

यानी मध्य प्रदेश लोकसेवा आयोग (पीएससी) की मुख्य परीक्षा में पहले की ही तरह कुल छह पेपर ही होंगे। इन छह पेपर में से चार पर्चे सामान्य अध्ययन के होंगे, जिनके पाठ्यक्रम को पुनः निर्धारित किया गया है। पहले पर्चे में कोई खास बदलाव नहीं हुआ है।

वहीं, सामान्य अध्ययन के दूसरे पेपर में संविधान, शासन व्यवस्था और राजनैतिक प्रशासन के साथ ही अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र और मानव संसाधन विकास को जोड़ा गया है। इसी पेपर की चौथी इकाई भारतीय राजनीतिक विचारकों की रखी गई है। इसमें विचारकों के रूप में कुल आठ लोगों को शामिल किया गया है। इनमें कौटिल्य, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, डॉ. भीमराव आंबेडकर, राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण (जेपी) और दीनदयाल उपाध्याय के साथ पंडित जवाहरलाल नेहरू शामिल हैं।

### अंकों का विभाजन भी बदला

अब तक राज्य सेवा मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम में कौटिल्य से लेकर गांधी, बुद्ध और शंकराचार्य जैसे 20 विचारकों, दार्शनिकों व समाज सुधारकों के नाम शामिल थे, लेकिन नेहरू को जगह नहीं दी गई थी। असल में बीते वर्षों में पं. नेहरू को सिलेबस से बाहर कर दिया गया था। राज्य सेवा परीक्षा की तैयारी करवा रहे प्रदीप श्रीवास्तव ने बदलाव को बेहतर बताया है। लोक प्रशासन को भी पाठ्यक्रम में खासी जगह दी गई है। कानून वाला हिस्सा हटाया भी गया है। खास बात ये है कि पं. नेहरू को शामिल करने के साथ दीनदयाल उपाध्याय को भी बरकरार रखा गया है। प्रश्न पत्रों में प्रश्नों के अंक का विभाजन और शब्द सीमा भी बदली गई है।

हमने राज्य सेवा की परीक्षा के सिलेबस को बेहतर और भविष्य के अधिकारियों की आवश्यकता के हिसाब से अपडेट किया है। इस फैसले की वजह से विद्यार्थियों के लिए भी सुविधाजनक होगा।
**-रेणु पंत, सचिव, एमपी पीएससी**

## फैसला

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने इस पूरी नीति को लागू करने की एक समयबद्ध योजना तैयार कर ली है, जिसमें अगले पांच सालों में नई शिक्षा नीति को पूरी तरह से लागू करना शामिल है

## नई शिक्षा नीति के अमल पर राज्यों को मिलेगी छूट

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली**

- तैयारी लगभग पूरी, इस महीने कभी भी आ सकती है नीति
- इंफ्रास्ट्रक्चर और शिक्षकों के प्रशिक्षण पर दिया सबसे ज्यादा जोर

मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक। फाइल फोटो

प्रस्तावित नई शिक्षा नीति को लेकर इंतजार अब खत्म होगा। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने इसे लेकर तैयारी लगभग पूरी कर ली है। इसे अब सिर्फ कैबिनेट से मंजूरी मिलना बाकी है। हालांकि शुरुआती ड्राफ्ट की तुलना में इनमें काफी बदलाव देखने को मिलेंगे। इसमें इसके अमल को लेकर राज्यों को पूरी स्वायत्तता दी जा सकती है। वैसे तो मंत्रालय ने इस पूरी नीति को लागू करने की एक समयबद्ध योजना तैयार कर रखी है। जिसमें अगले पांच सालों में नई शिक्षा नीति को पूरी तरह से लागू करना शामिल है।

इस बीच, नीति के अंतिम मसौदे को प्रकाशन के लिए भी भेज दिया गया है। मंत्रालय से जुड़े सूत्रों की मानें तो नीति के शुरुआती ड्राफ्ट में जो बड़े बदलाव किए गए हैं, उनमें स्कूल कॉम्प्लेक्स जैसे सुझावों को फिलहाल अनुपयोगी बताया गया है। साथ ही प्रस्तावित राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की भूमिका को भी बदला गया है। इसकी अध्यक्षता अब मानव संसाधन विकास मंत्री करेंगे। पहले प्रधानमंत्री को इसका अध्यक्ष बनाने की सिफारिश की गई थी। इसके अलावा नीति में स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के इंफ्रास्ट्रक्चर को मजूबत बनाने और शिक्षकों के प्रशिक्षण पर सबसे ज्यादा जोर दिया गया है। वहीं निजी स्कूलों से 'पब्लिक' शब्द को हटाने की सिफारिश को यथावत रखा है। यानी निजी स्कूलों को अब अपने नाम से पब्लिक शब्द को हटाना ही होगा।

प्रस्तावित नई शिक्षा नीति के शुरुआती ड्राफ्ट में यह सारे बदलाव लोगों से मांगे गए सुझावों और चर्चा के बाद ही किए गए है। सूत्रों के मानें तो इस ड्राफ्ट को लेकर प्रधानमंत्री कार्यालय के साथ भी लंबी चर्चा हो चुकी है। ऐसे में इसे अब सिर्फ कैबिनेट के सामने रखा जाना है। इसकी मंजूरी के बाद इसे चरणबद्ध तरीके से देश भर में लागू किया जाएगा।

हालांकि इसमें राज्यों पर कुछ थोपा नहीं जाएगा, बल्कि उन्हें इसे नीति को लागू करने को लेकर प्रोत्साहित किया जाएगा। गौरतलब है कि प्रस्तावित नई शिक्षा नीति के शुरुआती ड्राफ्ट को इसरो के पूर्व प्रमुख और वरिष्ठ वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में गठित एक कमेटी ने तैयार किया था।

## आइआइएम ने शिक्षक भर्ती में आरक्षण से छूट मांगी

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** देश के प्रीमियर 20 भारतीय प्रबंध संस्थानों (आइआइएम) ने मानव संसाधन मंत्रालय से शिक्षकों की भर्ती में अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्लूएस) आरक्षण लागू करने से छूट की मांग की है। अभी आइआइएम में शिक्षकों की भर्ती में यह आरक्षण व्यवस्था लागू नहीं है। लेकिन, एचआरडी मंत्रालय ने फैकल्टी की भर्ती में भी आरक्षण लागू करने को कहा है। अभी प्रबंध संस्थानों में कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के 1975 के आदेश का पालन किया जाता है, जिसमें वैज्ञानिक व तकनीकी पदों को आरक्षण नीति से मुक्त रखा गया है। लेकिन इसे लेकर आइआइएम-अहमदाबाद का मामला हाई कोर्ट में पहुंच गया है। नवंबर, 2019 में मंत्रालय ने सभी आइआइएम को पत्र लिखकर आरक्षण व्यवस्था लागू करने को कहा था। बुधवार को एक और पत्र लिखकर सीधी भर्ती में आरक्षण सुनिश्चित करने को कहा गया है।

## कह के रहेंगे

माधव जोशी

**25** हजार से ज्यादा पर्यटकों ने ताजमहल का दीदार किया साल के पहले दिन। इनमें से भारतीय पर्यटकों की संख्या 19 हजार के करीब रही। विदेशी पर्यटक 2500, सार्क देशों से आए पर्यटक 250 रहे।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
गुरुवार 2 जनवरी 2020

## न्यूज गैलरी

### संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की तीन दिवसीय बैठक आज से

**इंदौर :** आरएसएस की राष्ट्रीय कार्यकारिणी मंडल की तीन दिवसीय बैठक गुरुवार से इंदौर में होगी। इसमें संघ प्रमुख मोहन भागवत के अलावा 300 से ज्यादा पदाधिकारी शामिल होंगे। इसमें बीते वर्ष की गतिविधियों की समीक्षा के अलावा नए साल में संघ की रणनीति पर चर्चा होगी। सीएए को लेकर देश में बन रहे माहौल पर मंथन और भ्रम की स्थिति को दूर करने के लिए भी कार्ययोजना बन सकती है। बैठक में संघ प्रमुख भागवत के साथ भय्या जी जोशी एवं तमाम प्रांत प्रचारक, कार्यवाहक संघ चालक और अखिल भारतीय कार्यकारिणी के 300 से ज्यादा पदाधिकारी शामिल होंगे। बैठक तीन दिन चलेगी, जबकि मोहन भागवत पांच दिन इंदौर में रुकेंगे। वे कुछ अन्य कार्यक्रमों में भी शामिल होंगे। (नईदुनिया)

### 'रावत के मार्गदर्शन में मजबूत होगी देश की सामरिक शक्ति'

**पटना :** बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के रूप में कार्यभार ग्रहण करने पर जनरल बिपिन रावत को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री ने विश्वास जताया है कि जनरल रावत के मार्गदर्शन में देश की सामरिक शक्ति को अधिक मजबूती मिलेगी। उन्होंने कहा है कि जनरल रावत एक उत्कृष्ट सैन्य अधिकारी हैं। (राब्यू)

# महाराष्ट्र कांग्रेस में कर्नाटक जैसी बगावत थामने को लगाए गए खड़गे

**सामंजस्य के प्रयास** ▸ विभागों के बंटवारे पर गठबंधन में मतभेद की खबर

### पुणे के कांग्रेस दफ्तर में तोड़फोड़ मामले में भोर विधायक के 19 समर्थक गिरफ्तार

**नई दिल्ली, एजेंसियां :** महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ गठबंधन के दलों में सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है। ठाकरे सरकार के पहले विस्तार के बाद तो बगावत के सुर तेज होते जा रहे हैं। हाल ये है कि प्रदेश कांग्रेस में कर्नाटक जैसी बगावत को रोकने के लिए पार्टी को वरिष्ठ नेता मल्लिकार्जुन खड़गे को लगाना पड़ा है। वहीं, पुणे में कांग्रेस दफ्तर में मंगलवार को तोड़फोड़ करने के मामले में भोर से पार्टी के विधायक संग्राम थोप्टे के 19 समर्थकों को गिरफ्तार किया गया है। थोप्टे को मंत्री नहीं बनाने से उनके समर्थक नाराज थे। विभागों के बंटवारे को लेकर भी मतभेद है। मंत्रिमंडल विस्तार के दो दिन बाद तक विभागों का बंटवारा नहीं होने के पीछे इसे ही कारण बताया जा रहा है। हालांकि, कांग्रेस और राकांपा ने मतभेद की खबरों को खारिज किया है।

सूत्रों का कहना है कि थोप्टे और सोलापुर से कांग्रेस विधायक और पूर्व मुख्यमंत्री सुशील कुमार शिंदे की बेटी प्रणिति शिंदे के समर्थकों ने तो खुलेतौर पर विरोध जता दिया है, लेकिन कई ऐसे विधायक भी हैं जो मंत्री नहीं बनाए जाने से नाराज हैं और पार्टी मंच पर अपना विरोध जता चुके हैं। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष बालासाहब थोराट ने बुधवार को कहा कि उन्होंने मंगलवार की रात ही थोप्टे से बात की थी और वह मान गए हैं। कांग्रेस एक परिवार है और किसी को कोई शिकायत है तो उसे बातचीत के जरिये दूर कर लिया जाएगा। उन्होंने पार्टी में असंतोष की खबरों को भी खारिज किया और कहा कि गठबंधन सरकार में पार्टी के हिस्से में कम मंत्री पद आए हैं, ऐसे में हर किसी को मंत्री बनाना संभव नहीं है।

मल्लिकार्जुन खड़गे फाइल

मंत्री नहीं बनाए जाने से कांग्रेस और राकांपा विधायकों के बीच नाराजगी के बारे में पूछे जाने पर उप मुख्यमंत्री और राकांपा नेता अजीत पवार ने कहा कि इसमें कुछ भी गलत नहीं है, हर कोई मंत्री बनने की आकांक्षा रखता है।

इस बीच, मंत्रियों के विभागों के बंटवारे को लेकर मतभेद की खबरों की बीच बुधवार को गठबंधन के नेताओं की बैठक हुई। सूत्रों ने बताया कि विभागों के बंटवारे को अंतिम रूप देने के लिए सचिवालय में मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे, कांग्रेस नेता अशोक चव्हाण, बालासाहब थोराट, विजय वडेट्टीकर और नितिन राउत और राकांपा नेता अजीत पवार और खुद जयंत पाटिल और शिवसेना के एकनाथ शिंदे की बैठक हुई।

बताया जा रहा है कि कांग्रेस कृषि, सहकारिता, आवास और ग्रामीण विकास मंत्रालय नहीं मिलने से नाराज बताई जा रही है। इसमें से कृषि शिवसेना और बाकी के विभाग राकांपा के पास हैं।

### दिल्ली के 'मातोश्री' से नियंत्रित होगी ठाकरे सरकार : फड़नवीस

**पालघर, प्रेट्र :** महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा नेता देवेंद्र फड़नवीस ने बुधवार को कहा कि शिवसेना के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार अब मुंबई के नहीं, बल्कि दिल्ली के 'मातोश्री' से नियंत्रित होगी। दिल्ली के 'मातोश्री' से उनका इशारा कांग्रेस हाईकमान की तरफ था।

पालघर जिला परिषद चुनाव के लिए प्रचार के दौरान फड़नवीस ने मुख्यमंत्री और शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे पर निशाना साधते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि सरकार 'मातोश्री' (मुंबई उपनगर में ठाकरे का घर) से नहीं नियंत्रित होगी, बल्कि अब दिल्ली के 'मातोश्री' से नियंत्रित होगी। हालांकि, दिल्ली के मातोश्री का उल्लेख कर उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया। बता दें कि मराठी में मां के लिए मातोश्री का प्रयोग किया जाता है। शिवसेना के संस्थापक बाल ठाकरे जब तक जिंदा थे, तब तक 'मातोश्री' सत्ता का केंद्र हुआ करता था।

# एनजीटी के निर्देशों के उल्लंघन पर विश्वभारती को नोटिस

**जागरण संवाददाता, कोलकाता**

- बंगाल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने विवि प्रशासन से पूछा, क्यों नहीं लगाया जाए 10 लाख रुपये का हर्जाना
- 24 से 26 दिसंबर को आयोजित वार्षिक मेले में किसी भी स्टॉल पर नहीं थे आग बुझाने के उपकरण

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के दिशा-निर्देशों के उल्लंघन बंगाल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने विश्वभारती विश्वविद्यालय प्रशासन को कारण बताओ दिया है। पूछा है कि हाल में संपन्न पौष मेला के दौरान नियमों के उल्लंघन पर विश्वविद्यालय पर 10 लाख रुपये का हर्जाना क्यों नहीं लगाया जाए।

विश्वभारती के रजिस्ट्रार को मंगलवार को भेजे गए बोर्ड के पत्र में कहा गया है कि 24 से 26 दिसंबर को आयोजित वार्षिक मेला के दौरान किसी भी स्टॉल पर आग बुझाने के उपकरण नहीं थे, कुछ कियॉस्क पर कोयले की भट्ठी थी और पर्याप्त जैव-शौचालय भी नहीं थे। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने बिना कोई तारीख बताए विश्वविद्यालय प्रशासन को जल्द अपना जवाब देने को कहा है।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों को वीरभूम जिला प्रशासन और बोलपुर नगरपालिका की मदद से पर्यावरण अनुकूल तरीके से वार्षिक मेला का आयोजन करने के लिए कहा था। यह भी कहा गया था कि वायु प्रदूषण ना हो और

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल फाइल

अपशिष्ट के प्रबंधन भी सुनिश्चित किए जाए। विश्वविद्यालय ने वार्षिक मेला के आयोजन के दौरान एनजीटी के दिशा-निर्देशों को लागू करने का वादा किया था। विश्वभारती के अधिकारियों से संपर्क नहीं हो पाया। कविवर रवींद्रनाथ टैगोर के पिता महर्षि देवेंद्रनाथ ने 1894 में मेला की शुरूआत की थी और विश्वभारती विश्वविद्यालय 1951 से इसका आयोजन कर रहा है।

# मध्य प्रदेश के मंत्रियों की कार्यकर्ताओं और अफसरों से नहीं बैठ रही पटरी

**राज्य ब्यूरो, भोपाल**

- उच्च शिक्षा मंत्री जीतू पटवारी ने रीवा में कार्यकर्ताओं को धक्का देकर बाहर किया
- सामाजिक न्याय मंत्री घनघोरिया भी कार्यकर्ताओं पर बरसे

मध्य प्रदेश में सत्तारूढ़ कांग्रेस की कमलनाथ सरकार के मंत्रियों के व्यवहार में आए बदलाव से पार्टी के नेता और कार्यकर्ता चकित हैं। ताजा मामला उच्च शिक्षा मंत्री जीतू पटवारी का है। उनके द्वारा रीवा में कांग्रेस कार्यकर्ताओं से किया गया व्यवहार और उस पर सामाजिक न्याय मंत्री लखन घनघोरिया का बयान चौंकाने वाला है। वहीं, कुछ मंत्रियों की अधिकारियों से पटरी नहीं बैठ पा रही है। नतीजतन बैठकों में भी शिकवे-शिकायतें होती रहती हैं।

मप्र में सरकार बनने के बाद कांग्रेस के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने कई बैठकों के दौरान कार्यकर्ताओं को आश्वस्त किया था कि मंत्रियों द्वारा उनकी बात सुनी जाएगी। प्रभारी मंत्रियों को भी इस तरह के निर्देश दिए गए थे, मगर पिछले सप्ताह रीवा में उच्च शिक्षा और खेल मंत्री जीतू पटवारी द्वारा कार्यकर्ताओं को धक्का देकर बाहर कर दिया गया। इस घटना पर रीवा के प्रभारी मंत्री लखन घनघोरिया से विंध्य के कार्यकर्ताओं को हार के लिए जिम्मेदार ठहराते हुए यह तंज कस दिया कि वे उसका खामियाजा भुगत रहे हैं।

### प्रभारी मंत्री जिले से दूर

भिंड जिले में रेत के उत्खनन को लेकर स्थानीय कार्यकर्ताओं और नेताओं की शिकायतों पर प्रभारी मंत्री आरिफ अकील ने पुलिस की भूमिका पर एसपी रडोल्फ अल्वारेस सहित अन्य अधिकारियों को लगातार चेतावनी दी और उसके बाद भी सुधार नहीं होने पर जिले से ही दूरी बना ली। ग्वालियर अंचल से मंत्री इमरती देवी व प्रद्युम्न सिंह तोमर रेत खदानों को लेकर आमने-सामने आ गए हैं।

> मुख्यमंत्री के सभी मंत्रियों को निर्देश हैं कि न केवल कांग्रेस कार्यकर्ताओं बल्कि आम जनता की समस्याएं सुनें और विधि सम्मत कार्रवाई करें। अधिकारियों से तालमेल बैठाकर प्रदेश के विकास के लिए काम करें।
>
> **– चंद्रप्रभाष शेखर, संगठन प्रभारी उपाध्यक्ष, मप्र पीसीसी**

**अफसरों से तालमेल की कमी :** कांग्रेस सरकार के कुछ मंत्रियों का अधिकारियों से तालमेल भी नहीं बैठ पा रहा है। इसमें वन मंत्री उमंग सिंघार, आदिम जाति कल्याण मंत्री ओमकार सिंह मरकाम और खाद्य व नागरिक आपूर्ति मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर की तो खबरें मंत्रालय के कक्ष से बाहर भी आने लगी हैं। उमंग सिंघार के अपने अपर मुख्य सचिव एपी श्रीवास्तव से इतनी मतभिन्नता रही कि फाइलों के आगे बढ़ने की गति पर ही विपरीत असर पड़ने लगा है। ओमकार सिंह मरकाम ने एक समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री कमलनाथ से ही अपने विभाग की प्रमुख सचिव दीपाली रस्तोगी की शिकायत करते हुए कह दिया था कि मेरे क्षेत्र के ही काम नहीं हो पा रहे हैं। खाद्य-नागरिक आपूर्ति मंत्री तोमर की उनकी विभाग प्रमुख नीलम शमी राव से पटरी नहीं बैठ रही है।

### सत्तार ने नहीं दिया कोई जवाब

▸ प्रथम पृष्ठ से आगे

मिड डे ने इस पर जब सत्तार की प्रतिक्रिया लेनी चाही तो उनकी तरफ से कोई जवाब नहीं दिया गया। शिवसेना की प्रवक्ताओं नीलम गोरे, मनीषा कयांदे और प्रियंका चतुर्वेदी में से किसी ने भी इस पर कोई टिप्पणी नहीं की। शिवसेना के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने जरूर ठाकरे के फैसले का बचाव करते हुए कहा कि जब सामना में खबर छपी थी, तब अगर सत्तार के दाऊद से संपर्क होता तो उनके खिलाफ कार्रवाई की गई होती, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई इसका मतलब है कि उनका अंडरवर्ल्ड से कोई संबंध नहीं था।

ठाकरे मंत्रिमंडल में मुंबई के मलाड से कांग्रेस विधायक असलम शेख को शामिल किए जाने पर भी सोशल मीडिया पर शिवसेना पर सवाल उठ रहे हैं। शेख ने 1993 के मुंबई विस्फोट मामले में याकूब मेमन के लिए राष्ट्रपति से दया का अनुरोध किया था। तब सामना ने अपने एक संपादकीय में इसका विरोध किया था और मेमन के लिए दया की मांग करने वालों को देश का दुश्मन तक बताया था।

# ममता से लोहा लेने को शाह सीख रहे बांग्ला

**जागरण न्यूज नेटवर्क, कोलकाता**

ममता बनर्जी फाइल

अमित शाह फाइल

अभी बंगाल में विधानसभा चुनाव होने में एक साल से कुछ अधिक वक्त बाकी है। हालांकि, एक ओर जहां तृणमूल प्रमुख ममता बनर्जी पिछले वर्ष लोकसभा चुनाव के बाद से ही अपनी तैयारी में जुटी हैं तो भाजपा भी पीछे नहीं है। भाजपा अध्यक्ष और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने चुनाव की तैयारी अभी से शुरू कर दी है। दरअसल भाजपा 'मिशन 250' के तहत बंगाल में प्रचार करने वाली है। चुनावी रणनीति बनाने में कहीं कोई चूक न रहे और इस मामले में भाषा आड़े न आए, इसके लिए भाजपा अध्यक्ष बांग्ला भाषा सीख रहे हैं। खबर है कि उन्होंने बांग्ला शिक्षक को रखा है। गौर करने वाली बात यह है कि ममता के बांग्ला भाषा में लोगों से संवाद करने के मुकाबले में भाजपा के पास कोई तगड़ा नेतृत्व नहीं है। इसे देखते हुए शाह बांग्ला सीख रहे हैं, ताकि वह कम से कम बांग्ला भाषा समझने व बोलने लगे और बंगाल की सभाओं में अपने भाषणों की शुरुआत बांग्ला में करें, जिससे भाषण प्रभावी लगे।

अपनी सभाओं में ममता भाजपा अध्यक्ष को बाहरी कह कर संबोधित करती हैं। अमित शाह को चुनावी रणनीति का माहिर माना जाता है और हर चुनाव के लिए शाह अलग-अलग रणनीति बनाते हैं। लेकिन पहले महाराष्ट्र और हरियाणा विधानसभा चुनाव में चूकने और झारखंड में पार्टी की हार के बाद अब अमित शाह बंगाल में चुनावी कमान अपने हाथ में रखना चाहते हैं। इसके लिए जरूरी है कायकर्ताओं से संवाद और समन्वय। लिहाजा भाषा कहीं इस रणनीति में आड़े न आए, शाह बांग्ला सीख रहे हैं।

बंगाल भाजपा के एक बड़े नेता के मुताबिक, इसमें कुछ भी नया नहीं है। नेता ने कहा कि भाजपा अध्यक्ष बांग्ला और तमिल सहित देश के अलग-अलग प्रदेशों में बोली जाने वाली चार भाषाएं सीख रहे हैं। गौरतलब है कि कई लोग आश्चर्य करते हैं कि वर्षों गुजरात में बिताने के बावजूद अमित शाह कैसे अच्छी हिंदी बोल लेते हैं। इस पर सूत्रों का कहना है कि गुजरात के बाहर के रहने के दौरान अमित शाह ने हिंदी पर पकड़ बनाई थी।

भाजपा अध्यक्ष बनने से पहले उन्होंने देश भर का दौरा किया और वह प्रमुख तीर्थ स्थानों पर गए। इससे उन्हें देश के तमाम हिस्सों के राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक पहलुओं को समझने में मदद मिली। बताया जाता है कि अमित शाह के इसी रिसर्च का परिणाम था कि वह गुजरात से निकलकर उत्तर प्रदेश और पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में चुनावी अभियान को सफलतापूर्वक आगे बढ़ा सके। बहुत कम लोगों को पता होगा कि बहुभाषी होने के साथ ही अमित शाह ने शास्त्रीय संगीत की भी शिक्षा ली है। खुद को रिलैक्स करने के लिए शाह शास्त्रीय संगीत और योग का सहारा लेते हैं। 294 विधानसभा सीटों वाले बंगाल में भाजपा ने 'मिशन 250' का लक्ष्य तय किया है। लोकसभा चुनाव में भाजपा ने कुल 42 सीटों में से 18 पर जीत हासिल की थी, जबकि तृणमूल को 22 सीटें मिलीं। भले ही तृणमूल ने भाजपा से 4 सीटें ज्यादा हासिल कीं, लेकिन यह पहला मौका है, जब भगवा दल को बंगाल में दो अंकों में लोस सीटें मिली।

# भीमा कोरेगांव युद्ध स्मारक पर जुटे लाखों लोग

**पुणे, एजेंसियां :** भीमा कोरेगांव युद्ध की 202वीं सालगिरह पर बुधवार को महाराष्ट्र के पुणे जिले के पेरने गांव में युद्ध स्मारक 'जय स्तंभ' पर लाखों लोग पहुंचे और श्रद्धांजलि अर्पित की। दो साल पहले यहां बड़े पैमाने पर हिंसा हुई थी, जिसको देखते हुए इस बार सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। सुरक्षा बलों के 10 हजार से ज्यादा जवान और पांच सौ से ज्यादा अधिकारी तैनात किए गए थे और सीसीटीवी और ड्रोन से भी स्थिति पर नजर रखी जा रही थी। आस-पास के क्षेत्रों में इंटरनेट सेवा भी बंद कर दी गई थी।

खबरों के मुताबिक, महाराष्ट्र और देश के अन्य हिस्सों से युद्ध स्मारक पर आठ लाख लोग जमा हुए। इनमें राज्य के उप मुख्यमंत्री अजीत पवार, बहुजन वंचित अघाड़ी के प्रमुख प्रकाश आंबेडकर, केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले और अन्य कई नेता भी शामिल थे। दलित समाज के लोग इस दिन को शौर्य दिवस के रूप में मनाते हैं।

एक जनवरी, 1818 को हुए ऐतिहासिक कोरेगांव-भीमा युद्ध में बाजीराव पेशवा द्वितीय के 28,000 सैनिकों का सामना ईस्ट इंडिया कंपनी की द बंबई नेटिव इंफेंट्री सेना की एक टुकड़ी से हुआ था, जिसमें मात्र 800 महार सैनिक शामिल थे और करीब 12 घंटे तक चले इस युद्ध में महार ने पेशवा की मजबूत सेना को हरा दिया था। उस दिन से हर साल महाराष्ट्र और देश के तमाम हिस्सों से दलित यहां पेशवा की सेना पर ब्रिटिश सेना की जीत का स्मरण करने के लिए जमा होते हैं।

पुणे में बुधवार को भीमा कोरेगांव युद्ध की 202वीं सालगिरह पर उपमुख्यमंत्री अजीत पवार (बाएं से चौथे) को 'जय स्तंभ' की प्रतिकृति भेंट की गई। एएनआइ

2018 में 200वीं सालगिरह पर यहां भीषण हिंसा भड़क गई थी, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हुई थी और कई लोग घायल हुए थे। प्रकाश आंबेडकर ने कहा कि इस बार भी कुछ लोगों ने गड़बड़ी फैलाने की कोशिश की, लेकिन उनके संगठन और प्रशासन ने मिलकर उसे विफल कर दिया। पिछले हफ्ते पुणे पुलिस ने दक्षिणपंथी नेता मिलिंद एकबोटे, संभाजी भिड़े और कबीर कला मंच के सदस्यों को नोटिस जारी कर उनके पुणे जिले में घुसने पर पाबंदी लगा दी थी। पुलिस ने माओवादियों से संपर्क वाले एलगार परिषद के कुछ सदस्यों के पुणे में घुसने पर भी पाबंदी लगा दी थी। एकबोटे को हिंसा भड़काने के आरोप में 2018 में गिरफ्तार किया गया था।

### वरवर राव के घर से कोई हार्ड डिस्क नहीं मिली थी : बचाव पक्ष

**पुणे, प्रेट्र :** एलगार परिषद और माओवादियों के बीच संपर्क के मामले में बचाव पक्ष ने बुधवार को दावा किया कि 2018 में पुलिस को तेलुगु कवि और कार्यकर्ता वरवर राव के पुणे स्थित घर से कोई क्षतिग्रस्त हार्ड डिस्क नहीं मिली थी। भीमा-कोरेगांव हिंसा मामले में वरवर राव समेत नौ लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया था। राव के वकील रोहन नाहर ने निचली अदालत में आवेदन दाखिल कर हार्ड डिस्क को लेकर मीडिया में आ रही खबरों पर स्पष्टीकरण मांगा है। खबरों में बताया जा रहा है कि पुलिस राव के घर से बरामद क्षतिग्रस्त हार्ड डिस्क से डाटा पाने के लिए अमेरिकी जांच एजेंसी एफबीआइ की मदद लेगी। नाहर ने कहा कि पुलिस ने राव और अन्य आरोपितों के घर से बरामद सामान की जो सूची चार्जशीट के साथ दी है, उसमें किसी क्षतिग्रस्त हार्ड डिस्क का जिक्र नहीं है। पुलिस के एक अधिकारी के मुताबिक अगस्त, 2018 में राव के घर से बरामद क्षतिग्रस्त हार्ड डिस्क को चार फोरेंसिक प्रयोगशालाओं में भेजा गया था, लेकिन कहीं भी उससे डाटा हासिल करने में सफलता नहीं मिली।

# 'कांग्रेस और भगवा का संबंध सांड़ को लाल कपड़ा दिखाने जैसा'

**नईदुनिया, भोपाल**

- भोपाल के भाजपा विधायक ने कांग्रेस महासचिव प्रियंका की टिप्पणी पर कसा तंज
- प्रियंका ने उप्र के सीएम आदित्यनाथ के भगवा रंग पर की थी टिप्पणी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के भगवा रंग के कपड़े पहनने पर कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा द्वारा की गई टिप्पणी को लेकर भोपाल के भाजपा विधायक रामेश्वर शर्मा ने तंज कसा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और भगवा का संबंध ठीक वैसा ही है, जैसे सांड़ को लाल कपड़ा दिखाना।

रामेश्वर शर्मा ने कहा कि जिस तरह लाल कपड़ा देखकर सांड़ बिदकता है, ठीक उसी तरह कांग्रेस भी भगवा रंग देखकर 'रिएक्ट' करती है। रामायण के प्रसंग का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस भगवा का राजनीतिक उपयोग उसी तरह करती है, जैसे राक्षस राज रावण ने भगवा पहन और साधु का भेष बनाकर सीता का हरण कर लिया था। शर्मा ने यह भी सवाल उठाया कि प्रियंका गांधी वाड्रा स्वयं भगवा के बारे में कितना जानती हैं? शर्मा ने उनके धर्म को लेकर भी सवाल उठाया है।

उल्लेखनीय है कि पिछले सप्ताह कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा था कि योगीजी भगवा पहनते हैं, लेकिन यह उनका

रामेश्वर शर्मा फाइल

निजी नहीं है, भगवा रंग तो देश का धार्मिक और आध्यात्मिक भाव है। यह रंग हिंदू धर्म का प्रतीक है। इसलिए उन्हें धर्म का पालन करना चाहिए, क्योंकि हिंदू धर्म में हिंसा और बदले की कार्रवाई के लिए कोई स्थान नहीं है।

## रणनीति

संगठन का दरवाजा खोला, लेकिन धर्मनिरपेक्ष चरित्र से समझौता नहीं, बिहार में इसी साल होने हैं विधानसभा चुनाव

# नए साल में राजद की चाल नई, ढाल पुराना

**अरविंद शर्मा, पटना**

बिहार की राजनीति चुनावी साल में प्रवेश कर गई है। राजद के चेहरे सारे तकरीबन वही हैं। हाल भी पुराना है, लेकिन चाल बदल गई है। चाल का मतलब सियासी चरित्र से है। सवर्ण आरक्षण का विरोध करने वाली पार्टी ने अब सबके लिए अपना दरवाजा खोल दिया है। कोई भी आ सकता है। पार्टी में पदाधिकारी बन सकता है और योग्यता है तो टिकट की दावेदारी भी कर सकता है, लेकिन पार्टी की हालिया गतिविधियों और शीर्ष नेतृत्व के बयानों से साफ है कि वह अपने धर्मनिरपेक्ष चरित्र से कोई समझौता नहीं करने जा रही है।

झारखंड में भाजपा से सत्ता छिन जाने के बाद से राजद बिहार को लेकर भी अति उत्साहित है। इसके पहले उपचुनाव ने भी थोड़ी सी उम्मीद जगाई थी। लोकसभा चुनाव में हार के घाव पर मरहम का काम किया था। अब विधानसभा चुनाव पर फोकस है। लालू प्रसाद का कुनबा नए साल में भाजपा के खिलाफ राजनीतिक हमले और तेज करेगा।

नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव की तैयारी जदयू से भी समान दूरी बनाए रखकर सड़क पर आंदोलन खड़ा करने की है। इसके लिए उन्हें कार्यकर्ताओं में ऊर्जा भरने की जरूरत पड़ेगी। लिहाजा वह कदम दर कदम आंदोलन के कार्यक्रम भी तय करते जाएंगे। बिहार बंद के बाद पहली जनवरी को राजद ने सालों भर संघर्ष के लिए संकल्प लिया। अब पांच जनवरी को सभी प्रखंडों में केंद्र सरकार का पुतला जलाया जाएगा। 11 जनवरी को धरना-प्रदर्शन भी किया जाना है। आगे के कार्यक्रम मकर संक्रांति के बाद तय होंगे। तेजस्वी यादव को अपनी टोली के साथ जिलों की यात्रा पर भी जाना है। तिथि जल्द तय होगी।

### हर हाल में वोट बैंक की हिफाजत

नेता प्रतिपक्ष ने घोषणा कर दी है कि मुस्लिम-यादव (माय) समीकरण को तरजीह देने के नाम पर अब किसी को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। इसीलिए उन्होंने संगठन के सारे पदों को अति पिछड़ों एवं एससी-एसटी के लिए 45 फीसद आरक्षित कर दिया है। हालांकि अभीतक जिलों, प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर पर संगठन का विस्तार नहीं हो सका है। फिलहाल खरमास का बहाना है, लेकिन सच्चाई कुछ और है। बदली हुई परिस्थितियों में राजद के सामने अपने वोट बैंक की हिफाजत की चुनौती है। अधिकतर जिलों में यादव और मुस्लिम ही अध्यक्ष हैं। नेतृत्व को डर है कि चुनावी वर्ष में अगर उन्हें छेड़ा गया तो परिणाम पर असर पड़ना तय है। हालांकि राबड़ी देवी ने कह दिया है कि 14 जनवरी के बाद ही संगठन का विस्तार होगा। दावेदार बेकरार हो रहे हैं, किंतु अभी इंतजार के अलावा कोई और उपाय नहीं है।

# मध्य प्रदेश के तीन आइएएस अधिकारियों को केंद्र में जाने की हरी झंडी

**नईदुनिया, भोपाल**

मप्र के तीन प्रमुख सचिव स्तर के अधिकारी जल्द ही केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर जा सकते हैं। 1992 बैच के आइएएस अधिकारी वीएल कांताराव, नीलम शमी राव और 1994 बैच के आइएएस अधिकारी हरिरंजन राव को सामान्य प्रशासन विभाग ने केंद्र में सेवाएं देने के लिए सहमति दे दी है। केंद्र से बुलावा आने पर तीनों अधिकारी केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर जाएंगे।

सूत्रों के मुताबिक, विधानसभा और लोकसभा चुनाव होने के बाद निर्वाचन कार्यालय में अब ज्यादा काम नहीं रह गए हैं। ऐसे में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी वीएल कांताराव को मुख्यधारा में लाने को लेकर राज्य सरकार ने अभी तक कोई संकेत नहीं दिए हैं। वहीं, प्रमुख सचिव खाद्य, नागरिक आपूर्ति नीलम शमी राव भी केंद्रीय प्रतिनियुक्ति पर जाने के लिए प्रयासरत हैं। शुरुआती दौर में उनकी विभागीय मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर से पटरी नहीं बैठ रही थी, लेकिन अब जब तालमेल ठीक हुआ तो वह व्यक्तिगत वजहों से दिल्ली जाना चाहती हैं।

1991 बैच के आइएएस अधिकारी प्रमोद अग्रवाल फरवरी में कोल इंडिया के चेयरमैन कम सीएमडी बनकर जाएंगे। अगस्त 2019 में उनका चयन पब्लिक इंटरप्राइजेज सेलेक्शन बोर्ड द्वारा इस पद के लिए किया गया था। मणिपुर-त्रिपुरा कैडर के आइएएस अधिकारी मोहनलाल मीणा के कैडर को लेकर तस्वीर अब तक साफ नहीं हुई है। केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण (कैट) ने अक्टूबर में मीणा के हक में फैसला देते हुए निर्देश दिए थे कि जब तक केंद्र सरकार उनकी सेवा का निर्धारण नहीं कर लेती है, तब तक वे मध्य प्रदेश में काम करते रहें। कैट ने इस मामले में केंद्र सरकार को निर्णय लेने के निर्देश दिए थे। उधर, मीणा ने सामान्य प्रशासन विभाग में ज्वाइनिंग के लिए आवेदन दिया है, जिस पर कोई निर्णय नहीं हुआ है। दरअसल, विभाग का कहना है कि कैट ने निर्देश केंद्र सरकार को दिए हैं। जनवरी 2019 में केंद्र के निर्देश पर ही मीणा को कार्यमुक्त किया गया था। अब जब तक केंद्र सरकार तस्वीर साफ नहीं देती, तब तक मीणा का मध्य प्रदेश से कोई वास्ता नहीं है। वे 2010 में केंद्र के निर्देश पर ही मध्य प्रदेश में प्रतिनियुक्ति पर आए थे। नियमानुसार प्रतिनियुक्ति अधिकतम सात साल हो सकती है, लेकिन वे तकरीबन नौ साल रहे। मीणा को मणिपुर में पदस्थापना के दौरान उग्रवादी संगठनों की ओर से लगातार जान से मारे जाने की धमकियां मिलती रही हैं।

**2** करोड़ बांग्लादेशी अवैध आप्रवासी भारत में रहते हैं। 2016 में यह जानकारी तत्कालीन गृह राज्यमंत्री किरण रिजिजू ने दी थी। यह आंकड़ा संप्रग सरकार के 2004 के 1.2 करोड़ के आंकड़े से अधिक है।



## न्यूज गैलरी

### देश को हिंदू पाकिस्तान बनाने का हो रहा प्रयास : जावेद अख्तर

**गाजियाबाद :** मजदूर नेता सफदर हाशमी के शहादत दिवस पर गाजियाबाद के झंडापुर पहुंचे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के महासचिव सीताराम येचुरी और गीतकार जावेद अख्तर ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा। जावेद अख्तर ने कहा कि भारत को हिंदू पाकिस्तान बनाने का प्रयास किया जा रहा है। 1947 में धर्म के नाम पर पाकिस्तान बनाया गया। अब हाल यह है कि वहां के बहुसंख्यक मुस्लिमों को ही अपने देश में आजादी नहीं है। यही भारत के हिंदुओं का भी होने वाला है। वहीं, सीताराम येचुरी ने संशोधन कानून को संविधान की धज्जियां उड़ाने वाला बताया। कार्यक्रम में अभिनेत्री शबाना आजमी और कम्युनिस्ट पार्टी की पोलित ब्यूरो सदस्य वृंदा करात भी पहुंचीं। (जासं)

### सीएए पर बने संशय को दूर करे सरकार : कल्बे जव्वाद

**मुजफ्फरनगर :** ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदस्य एवं शिया धर्मगुरु मौलाना कल्बे जव्वाद ने कहा कि सीएए पर बने संशय को दूर करना सरकार की ड्यूटी है। सीएए के विरोध में हिंसा के बाद पुलिस की बर्बरतापूर्ण कार्रवाई पर अफसोस जताया। दो जनवरी तक निर्दोषों की रिहाई नहीं होने पर आंदोलन की चेतावनी दी। (जासं)

### बांग्लादेश ने भारत से लगे सीमा क्षेत्र में मोबाइल सेवा बहाल की

**ढाका :** बांग्लादेश ने भारत के साथ लगे सीमावर्ती इलाकों में मोबाइल नेटवर्क बहाल कर दिया। भारत में नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) लागू होने के बाद सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए बांग्लादेश ने रविवार को मोबाइल नेटवर्क को बंद करने का आदेश दिया था, लेकिन दो दिन बाद ही उसे वापस ले लिया। बांग्लादेश टेलीकम्युनिकेशन रेग्युलेटरी कमीशन (बीटीआरसी) ने रविवार को करीब 2,000 बेस ट्रांसीवर स्टेशनों को बंद करने का निर्देश दिया था। इससे 32 जिलों के एक करोड़ लोग प्रभावित हो गए। फैसला वापस लेने के पीछे सरकार ने कोई कारण नहीं बताया है। बांग्लादेश दूरसंचार नियामक आयोग (बीटीआरसी) ने दूरसंचार सेवा प्रदाताओं, ग्रामीण फोन, टेलीटॉक, रॉबी और बांग्लालिंक को अपने आदेश में रविवार को कहा था कि सीमावर्ती क्षेत्रों में नेटवर्क कवरेज को देश की सुरक्षा के लिए अगले आदेश तक बंद रखा जाना चाहिए। (प्रेट्र)

### ताराचंद और भल्ला की नजरबंदी हटी

**जम्मू :** कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं पूर्व उपमुख्यमंत्री ताराचंद और रमण भल्ला की नजरबंदी को हटा लिया गया है। वहीं, कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीए मीर को बुधवार को पार्टी मुख्यालय जाने की अनुमति भी नहीं मिली। मीर फिलहाल घर में नजरबंद हैं। कुछ पुलिसकर्मी उनके ग्रेटर कैलाश स्थित आवास के बाहर तैनात किए गए हैं। मीर ने कहा कि अगर उन्हें कश्मीर जाने से रोकना था तो इसकी जानकारी पहले ही दे दी जाती। नजरबंदी हटने के बाद रमण भल्ला ने नई बस्ती जम्मू में पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। उन्होंने कहा कि भाजपा लोगों के साथ किए गए वादे भूल गई है। (राब्यू)

### हजरत शेख सलीम चिश्ती मजार की पेंटिंग का हिस्सा गिरा

**आगरा :** फतेहपुर सीकरी स्थित हजरत शेख सलीम चिश्ती की मजार की प्राचीन पेंटिंग का हिस्सा बुधवार को प्लास्टर सहित गिर गया। पुरातत्व विभाग के अधिकारियों ने मलबे को हटवाकर सफाई कराई। मजार में मार्बल बीम 2019 की शुरुआत में चटक गए थे। इन्हें बदलने के लिए 76 लाख रुपये का एस्टीमेट बनाया गया था। काम के लिए पूना की उत्तरा देवी चेरिटेबल ट्रस्ट ने धनराशि दी। जब तक ट्रस्ट द्वारा धनराशि मिलती रही, तब तक काम चलता रहा। पिछले साल अगस्त में ठेकेदार ने काम रोक दिया। अधीक्षण पुरातत्वविद बसंत कुमार स्वर्णकार के मुताबिक प्लास्टर पहले से फूला हुआ था। पेंटिंग का जो हिस्सा बचा है, उसके लिए जल्द ही का काम कराया जाएगा। (जासं)

# कानून मंत्री ने विरोधी राज्यों को दिखाया संविधान का आईना

## रविशंकर बोले ▶ केंद्रीय कानून लागू करना राज्यों का संवैधानिक दायित्व

**माला दीक्षित, नई दिल्ली**

नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) को लेकर कुछ राज्य सरकारों के विरोध और केरल विधानसभा में कानून के खिलाफ प्रस्ताव पारित होने पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए केंद्रीय कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद ने राज्य सरकारों को संविधान का आईना दिखाया है। प्रसाद ने कहा कि आश्चर्य की बात है कि जो सरकारें संविधान की शपथ लेकर सरकार में आई हैं वो बिल्कुल गैर संवैधानिक बात कर रही हैं कि 'हम सीएए को लागू नहीं करेंगे। केंद्रीय कानून लागू करना राज्य सरकारों का संवैधानिक दायित्व है'।

सीएए को लेकर विभिन्न राज्य सरकारों के विरोधी रवैये पर कानून मंत्री ने कहा कि सीएए संसद का पारित किया कानून है। संविधान के अनुच्छेद 246 में कहा गया कि संसद सातवीं अनुसूची की केंद्रीय सूची यानी लिस्ट वन में दिए गए विषयों पर कानून बना सकती है। लिस्ट वन की प्रविष्टि 17 में साफ लिखा है कि नागरिकता संबंधी सारे मामलों पर संसद कानून बना सकती है। राज्यों को उनका कर्तव्य और दायित्व याद दिलाते हुए उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 256 का हवाला दिया और कहा कि इसमें कहा गया है कि राज्य की शासकीय शक्ति इस प्रकार से उपयोग

रविशंकर प्रसाद फाइल

में लायी जाएगी कि संसद के पारित कानून को लागू करे। रविशंकर प्रसाद ने संविधान के प्रावधान उद्धत करते हुए कहा कि संविधान कहता है कि संसद का बनाया कानून पूरे देश में लागू होगा और संसद सातवीं अनुसूची की केंद्रीय सूची यानी लिस्ट वन में शामिल विषय पर कानून बनाने के लिए अधिकृत है। प्रसाद ने नागरिकता पर कानून बनाने की संसद की शक्ति और अधिकार स्पष्ट करते हुए कहा कि संविधान का अनुच्छेद 245 (1) कहता है कि संसद पूरे भारत के लिए या किसी विशेष भाग के लिए कानून बना सकती है। और इस अनुच्छेद का दूसरा भाग कहता है कि किसी कानून को क्षेत्राधिकार के बाहर बताकर गैरकानूनी नहीं ठहराया जा सकता।

उन्होंने कहा कि देश के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि संसद के पारित कानून लागू करना हर राज्य सरकार का संवैधानिक दायित्व है। अगर वे (राज्य सरकारें) संविधान की शपथ लेकर कुर्सी पर बैठी हैं। संविधान की शपथ का मतलब होता है संविधान के प्रावधानों का सम्मान करना और उसके अंतर्गत यह संवैधानिक मर्यादा है कि राज्य संसद के पारित कानून को लागू करें। प्रसाद ने कहा कि वह कहना चाहते हैं कि जो राज्य सरकारें इस तरह का दावा कर रही हैं या उनके प्रभाव से प्रस्ताव पारित हो रहे हैं, वे कृपा करके उचित कानूनी राय लें।

रविशंकर प्रसाद ने कहा कि कट्टरपंथी संगठन पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआइ) की हिंसा में भूमिका पर गृह मंत्रालय जल्द ही कोई निर्णय लेगा। उन्होंने बताया कि पीएफआइ का सिमी से भी संबंध होने का पता चला है।

### केरल के सीएम का दावा, विधानसभा के अपने अधिकार

**तिरुअनंतपुरम, प्रेट्र :** केरल विधानसभा में नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के खिलाफ प्रस्ताव पारित करने के अगले दिन राज्य के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने भाजपा की आलोचना को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि राज्यों में विधानसभाओं के भी अपने विशेषाधिकार होते हैं। विजयन से जब विशेषाधिकार हनन संबंधी कार्रवाई के बारे में पूछा गया तो उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि विधानसभाओं के पास अपने अधिकारों की रक्षा के लिए विशेष अधिकार होते हैं और इनका उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि संविधान के मूलभूत अधिकारों का हनन करने वाले सीएए कानून के खिलाफ प्रस्ताव पारित करने वाला केरल

पिनराई विजयन फाइल

पहला राज्य बन गया है। यह पूछे जाने पर कि राज्यपाल आरिफ मुहम्मद खान सीएए का समर्थन कर रहे हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि वह विभिन्न मुद्दों पर अपनी राय रखने के लिए स्वतंत्र हैं।

## बेगुनाह फंसेगा नहीं, कोई बलवाई बचेगा नहीं : रेड्डी

**जागरण संवाददाता, वाराणसी**

▶ गृह राज्यमंत्री ने विपक्षी दलों को दी चेतावनी

▶ कहा, मुसलमानों को देश के खिलाफ भड़काना देशद्रोह जैसा अपराध

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री जी. किशन रेड्डी ने कहा कि नागरिकता संशोधन कानून के नाम पर हिंसा के लिए भड़काने वालों को चिह्नित किया जा रहा है। यह तो पक्का है कि राजनीतिक दल शामिल रहे। अब जांच के बाद ही पता चलेगा कि कौन-कौन थे। दिल्ली से शुरू हुई हिंसा में आम आदमी पार्टी के नेता का भड़काने वाला वीडियो सामने आया था। हम किसी बेगुनाह को फंसने नहीं देंगे, लेकिन कोई बलवाई बचने नहीं पाएगा। शांति होते ही सभी के खिलाफ कार्रवाई होगी। विपक्षी समझ लें, सीएए और एनपीआर तो लागू होना ही है। पीछे हटने का तो प्रश्न हीं नहीं उठता, क्योंकि यह किसी भी भारतीय के खिलाफ नहीं है।

गृह राज्य मंत्री बुधवार को वाराणसी के सर्किट हाउस में मीडिया से बात कर रहे थे। कहा कि राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने एक बार भी हिंसा करने वालों का विरोध नहीं किया। उन्हें शांति की अपील करनी

जी. किशन रेड्डी फाइल

चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विरोध के नाम पर मुस्लिम वर्ग को गुमराह कर देश के खिलाफ भड़काया जा रहा है। यह देशद्रोह जैसा अपराध है। राहुल पर निशाना साधते हुए कहा कि कह रहे हैं कि सीएए से टैक्स बढ़ेगा। वह जीएसटी को गब्बर सिंह टैक्स बताते-बताते सीएए को भी टैक्स समझ बैठे। पता नहीं उनको कौन ट्यूशन पढ़ाता है। वह सीएए, एनपीआर को पूरी तरह समझ कर सड़क पर आएं।

## देशभर में सीएए की सही तस्वीर दिखाएगी भाजपा

▶ नए साल पर पार्टी मुख्यालय में हुई बैठक

▶ छह नेताओं को सौंपी गई अलग-अलग राज्यों की जिम्मेदारी

**नई दिल्ली, आइएएनएस :** बुधवार को जब पूरा देश नए साल के उत्सव में व्यस्त रहा भाजपा के प्रमुख और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पार्टी मुख्यालय पर भाजपा के वरिष्ठ नेताओं की बैठक बुलाई। इस बैठक का मकसद सीएए के सही रूप को जनता तक पहुंचाना रहा। पार्टी अध्यक्ष ने जनता तक पहुंचने के विषय पर रविवार की बैठक की भी समीक्षा की।

भारतीय जनता पार्टी ने देशवासियों तक पहुंचने के अपने मिशन का दारोमदार अपने छह नेताओं को सौंपा है। शाह के अलावा इस बैठक में ार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा, महासचिव (संगठन) बीएल संतोष और अन्य महासचिव भी मौजूद रहे। सूत्रों के अनुसार बंद दरवाजों के बीच हुई इस बैठक में भाजपा उपाध्यक्ष विनय सहस्त्रबुद्धे भी शामिल हुए। समीक्षा बैठक होने के महज तीन दिन बाद हुई इस बैठक से साफ है कि जनता तक पहुंचने को लेकर भाजपा नेतृत्व कितना गंभीर है। इस गहमागहमी के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इंडिया सपोर्ट्स सीएए अभियान को ट्विटर और नमो ऐप पर शुरू कर चुके हैं। अनिल जैन उत्तर प्रदेश और बिहार में पार्टी का प्रभार संभाल रहे हैं। इन दो राज्यों में अल्पसंख्यकों में सीएए के खिलाफ अधिक विरोध देखा गया था। अविनाश राय को सीएए को लेकर जनता तक पहुंचने के अभियान का जिम्मा छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड और दिल्ली में सौंपा गया है। सरोज पांडे महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, गोवा और दमन व दियु में मुहिम संभालेंगे जबकि सुरेश भट्ट कार्यक्रम का नेतृत्व हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़ और जम्मू-कश्मीर में करेंगे।

पार्टी ने रवींद्र राजू को दक्षिणी राज्य तमिलनाडु, केरल, आंध्र, तेलंगाना, कर्नाटक, अंडमान, पुडुचेरी और लक्ष्यद्वीप का जिम्मा दिया है। पश्चिम बंगाल, ओडिशा, झारखंड और पूर्वोत्तर के लिए बंगाल भाजपा के पूर्व प्रमुख राहुल सिन्हा को प्रभारी बनाया गया है।

इसके अलावा, भाजपा ने अपने पार्टी कार्यालय में जम्मू और कश्मीर को दो अलग केंद्र शासित प्रदेशों में बदलने के बाद इनको देश के नक्शे पर अपने मौजूदा रूप में दिखाने की व्यवस्था की गई है। देश के पुराने नक्शों को हटाकर अब पार्टी कार्यालयों में नए नक्शे लगाए जाएंगे।

## उप्र में पीएफआइ के अब तक 25 सदस्य गिरफ्तार

**राज्य ब्यूरो, लखनऊ :** उत्तर प्रदेश के कई जिलों में नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के विरोध में हिंसा व उपद्रव भड़काने के आरोप में पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआइ) के अब तक 25 सदस्यों को गिरफ्तार किया जा चुका है। इसमें राजधानी के इंदिरानगर में रहने वाला पीएफआइ का प्रदेश अध्यक्ष वसीम अहमद, बाराबंकी में रहने वाला नदीम जो कि प्रदेश कोषाध्यक्ष है और डिविजन प्रेसीडेंट अशफाक प्रमुख हैं। वहीं मेरठ में अमजद, जावेद और शामली के कैराना में अकबर, मो. फैसल, नौशाद व ताहिर आदि शामिल हैं।

फिलहाल उत्तर प्रदेश के गृह विभाग की ओर से केंद्रीय गृह मंत्रालय को पत्र भेजकर पीएफआइ पर प्रतिबंध लगाने की सिफारिश की जा चुकी है। आइजी कानून व्यवस्था प्रवीण कुमार त्रिपाठी ने बताया कि अभी तक पीएफआइ के करीब 25 सदस्यों को गिरफ्तार किया गया है। इसमें से कुछ कोर्ट के आदेश पर जमानत पर भी छूट चुके हैं। सीएए को लेकर लखनऊ, मेरठ, फीरोजाबाद, बिजनौर, कानपुर व गोरखपुर इत्यादि जिलों में उपद्रव व हिंसक प्रदर्शन हुए थे। मालूम हो कि अभी तक हिंसा व उपद्रव के आरोपी करीब 1246 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है, इसमें से 25 पीएफआइ के सदस्य हैं।

## बांग्लादेशी लेखिका का दावा मूल रूप से हिंदू थे बांग्लादेशी

▶ शरबरी जोहरा ने कहा, अपनी हिंदू विरासत से इन्कार नहीं कर सकता बांग्लादेश

**राज्य ब्यूरो, कोलकाता**

अमेरिका में रहने वाली बांग्लादेशी लेखिका शरबरी जोहरा अहमद का कहना है कि मूल रूप से हिंदू होने की वजह से बांग्लादेशी लोग भारतीयों की तरह ही हैं। शरबरी ने कोलकाता में एक न्यूज एजेंसी से बातचीत में कहा कि कैसे बांग्लादेश अपनी हिंदू विरासत से इन्कार कर सकता है? उन्होंने जोर देकर कहा कि हम मूल रूप से हिंदू थे। यहां इस्लाम बाद में आया। उनके मुताबिक, हालांकि अब बांग्लादेशी लोग अपनी जड़ों को भूल गए हैं।

शरबरी का जन्म ढाका में हुआ था और वह जब सिर्फ तीन हफ्ते की थीं, तभी उनका परिवार अमेरिका चला गया था। वह अमेरिका की लोकप्रिय टेलीविजन शो क्वांटिको की पटकथा की सहलेखिका भी हैं। शरबरी ने कहा कि उन्हें इस बात का अफसोस है कि दक्षिणपंथी धार्मिक समूहों के प्रभाव की वजह से एक बंगाली के तौर पर उनकी पहचान बांग्लादेश में खोती जा रही है। बता दें क्वांटिको में बॉलीवुड अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा ने मुख्य भूमिका निभाई है।

**अंग्रेजों ने तबाह कर दिए उद्योग :** शरबरी ने कहा, अंग्रेजों ने हमारा उत्पीड़न किया, हमसे छीना और हमारे लोगों की हत्याएं कीं। उन्होंने कहा कि अविभाजित भारत के ढाका में फलते-फूलते मलमल उद्योग को अंग्रेजों न तबाह कर दिया। लेखिका ने कहा कि उनकी आस्था के सवाल और बांग्लादेश में पहचान के मुद्दे ने उन्हें डस्ट अंडर हर फीट उपन्यास लिखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में इस्लाम राजधर्म है। शरबरी ने विंस्टन चर्चिल को नस्लवादी बताते हुए कहा कि अपने सैनिकों के लिए वह बंगाल से चावल ले गए, लेकिन उन्होंने यहां के लोगों की परवाह नहीं की। शरबरी ने कहा कि अपने शोध के दौरान मुझे पता चला कि करीब 20 लाख बंगाली चर्चिल की वजह से उत्पन्न कृत्रिम अकाल में मर गए थे। आगे कहा कि, जब लोग चर्चित की प्रशंसा करते हैं तो यह वैसा ही है जैसे कि कोई यहूदियों के सामने हिटलर की प्रशंसा करे। शरबरी ने कहा कि चर्चिल भयानक इंसान था। उन्होंने आगे कहा कि उनकी किताब में यह बताने की कोशिश की गई है कि वाकई उस समय क्या हुआ था।

## 56 प्रदर्शनकारियों की वाराणसी में जमानत मंजूर

**जागरण संवाददाता, वाराणसी :** सीएए के विरोध में प्रदर्शन करने के दौरान वाराणसी के बेनियाबाग क्षेत्र से गिरफ्तार किए गए 56 प्रदर्शनकारियों की जमानत अर्जी बुधवार को अपर जिला जज (सप्तम) सर्वेश कुमार पांडेय ने मंजूर कर ली। सभी आरोपी 19 दिसंबर को गिरफ्तार हुए थे और तभी से जेल में बंद थे। 19 दिसंबर को मनीष शर्मा द्वारा बेनियाबाग में जुलूस निकालकर विरोध करना प्रस्तावित था, जिसकी प्रशासन से अनुमति नहीं ली गई थी। इसके बावजूद सैकड़ों लोग एकजुट होकर पुलिस बल से नोकझोंक और नारेबाजी करने लगे थे। थाना प्रभारी चेतगंज प्रवीण कुमार ने मनीष शर्मा सहित 55 अन्य के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया था। इसके बाद सभी को जेल भेज दिया गया था। जमानत प्रार्थनापत्र जैतपुरा निवासी साजिद जमाल उर्फ शाहिद जमाल द्वारा दाखिल किया गया था। 55 अन्य आरोपियों की भी जमानत प्रार्थनापत्र पर सुनवाई करते हुए सभी को रिहा करने का आदेश दिया है।

प्रदर्शन के दौरान महमूरगंज के रहने वाले रविशेखर व उनकी पत्नी एकता को जेल भेज दिया गया था। वे अपनी 14 माह की बेटी चंपक को उसकी दादी के पास छोड़कर सीएए के खिलाफ प्रदर्शन में शामिल होने गए थे। 14 माह की बच्ची की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही थी। इसको लेकर प्रियंका गांधी वाड्रा ने ट्वीट किया था।

## एएमयू के छात्रों ने कहा, पीएफआइ के साथ हैं हम

**जागरण संवाददाता, अलीगढ़ :** सीएए को लेकर उत्तर प्रदेश में हुए बवाल के लिए सरकार भले ही पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआइ) को जिम्मेदार ठहरा रही हो, लेकिन अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में इस संगठन के समर्थन में आवाज उठ रही है। छात्रों ने साफ कहा है कि हम पीएफआइ के साथ हैं। बाबे सैयद पर बुधवार को सत्रहवें दिन भी धरना जारी रहा। समन्वय समिति की अगुआई में छात्रों ने उपद्रव में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि देने के लिए कैंडल भी जलाए। सीएए, एनआरसी व एनपीआर का विरोध जताते हुए हस्ताक्षर अभियान चलाया। मंगलवार को बाबे सैयद से प्रोजेक्टर हटाने पर प्रॉक्टर की कार्रवाई की निंदा करते हुए इस्तीफे की मांग की। छात्रों ने कहा कि उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने राज्य में अराजकता के लिए पीएफआइ को जिम्मेदार ठहराया है। छात्रों ने कहा कि उप मुख्यमंत्री का यह बयान विरोध प्रदर्शन को बंद कराने का एक और प्रयास है, मगर यह कदम आंदोलन को और तेज करेगा। हम पीएफआइ के कार्यकर्ताओं के लिए खड़े हैं और उप मुख्यमंत्री के बयान की निंदा करते हैं।

## सीएए से प्रभावित नहीं होगी किसी की नागरिकता : पासवान

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली**

भारत में नागरिकता को लेकर छिड़ी बहस पर अब तक चुप्पी साधे केंद्रीय उपभोक्ता व खाद्य मंत्री रामविलास पासवान भी सामने आ गए हैं। इसका विरोध करने वालों को आड़े हाथ लेते हुए पासवान ने कहा 'यहां किसी की नागरिकता जाना तो दूर किसी नागरिक के साथ भेदभाव नहीं किया जा सकता है। भारत एक बगीचा है। इसमें हर तरह के फूल हैं। यहां किसी के अधिकार में कटौती करना संभव नहीं है।'

एनपीआर पर संदेह जताने वालों को दो टूक जवाब देने के अंदाज में पासवान ने कहा कि देश में जनगणना 1887 से हो रही है, जो हर 10 साल पर की जाती है। इसमें नागरिक होने का प्रमाण नहीं मांगा जाता है। इसमें सिर्फ परिवार के सदस्यों की संख्या और अन्य ब्योरा संकलित होता है। पासवान ने कहा कि सीएए में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है, जिससे किसी की नागरिकता प्रभावित होती हो। पूर्व गृह मंत्री पी. चिदंबरम के बयानों का जिक्र करते हुए उनकी आलोचना की। उन्होंने कहा कि कुछ लोग तो अनुसूचित जाति और

रामविलास पासवान फाइल

अनुसूचित जनजाति एवं वंचित वर्ग के लोगों के बीच भी भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहे हैं, जो ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि नागरिकता कानून संसद के दोनों सदनों में पारित हुआ है, जबकि राज्यसभा में राजग का बहुमत नहीं है। इससे साफ है कि संप्रग के लोगों ने भी इसका समर्थन किया है। विपक्षी दल जानबूझकर राजनीतिक वजहों से इसका विरोध कर रहे हैं, जो लोकतंत्र में उचित नहीं है। एनआरसी पर उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बातों पर सबको यकीन करना चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा है कि फिलहाल इसकी कोई चर्चा नहीं है। जब कभी इस फैसला लेना होगा तो सभी पक्षकारों से विस्तृत चर्चा की जाएगी। पासवान ने कहा कि इसलिए विपक्ष के फैलाए जा रहे भ्रम से लोगों को बचना चाहिए।

## जम्मू-कश्मीर हाई कोर्ट ने वापस लिए राष्ट्रीय स्तर पर मांगे गए आवेदन

**राज्य ब्यूरो, जम्मू**

जम्मू-कश्मीर हाई कोर्ट ने केंद्र शासित प्रदेशों जम्मू-कश्मीर और लद्दाख की जिला अदालतों में 33 गैर राजपत्रित अधिकारियों की नियुक्ति के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आवेदन आमंत्रित करने संबंधी अपनी अधिसूचना को वापस ले लिया है। हालांकि, इस विज्ञापन और अधिसूचना को वापस लेने का कोई आधिकारिक कारण नहीं बताया गया है, लेकिन माना जा रहा है कि स्थानीय राजनीतिक व सामाजिक संगठनों के विरोध के चलते ही यह अधिसूचना वापस ली गई है।

जम्मू-कश्मीर के नए स्वरूप से पहले अनुच्छेद 370 के चलते राज्य सरकार के अधीन और राज्य न्यायपालिका में अन्य राज्यों के लोगों को रोजगार नहीं दिया जा सकता था। सिर्फ हाई कोर्ट में ही अन्य राज्य के न्यायाधीश नियुक्त किए जा सकते थे। 31 अक्टूबर, 2019 को जम्मू-कश्मीर दो केंद्र शासित राज्यों में पुनर्गठित हो गया। अनुच्छेद-370 के सभी प्रावधान भी पूरी

जम्मू-कश्मीर हाई कोर्ट फाइल

तरह निष्प्रभावी हो गए और नवगठित दोनों केंद्र शासित राज्यों में अन्य राज्यों के लोगों के लिए हर प्रकार की पाबंदियां भी समाप्त हो गईं।

जम्मू-कश्मीर हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल संजय धर द्वारा 26 दिसंबर 2019 को जिला अदालतों में रिक्तियों को भरने संबंधी आवेदन आमंत्रित किए जाने का एक विज्ञापन जारी किया गया। इसके मुताबिक, आवेदन दाखिल करने की अंतिम तिथि 31 जनवरी 2020 थी। हाई कोर्ट ने जम्मू-कश्मीर और लद्दाख की विभिन्न जिला अदालतों के लिए कुल 33 पदों के लिए आवेदन मांगे थे। इनमें जूनियर स्केल स्टेनोग्राफर, टाइपिस्टल, कंपोजिटर, इलेक्ट्रिशियन और चालक के पद शामिल थे। अलबत्ता, गत मंगलवार देर शाम रजिस्ट्रार जनरल संजय धर ने एक और अधिसूचना जारी की। इसमें कहा गया है कि सभी संबंधित लोगों को सूचित किया जाता है कि 26 दिसंबर 2019 को जारी विज्ञापन सूचना, जिसमें जम्मू-कश्मीर हाई कोट में गैर राजपत्रित अधिकारी वर्ग के विभिन्न पदों के लिए आवेदन मांगे गए हैं, उन्हें तत्काल प्रभाव से रद किया जाता है।

इन पदों को भरने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आवेदन आमंत्रित किए गए थे। इसका जम्मू-कश्मीर नेशनल पैंथर्स पार्टी, नेशनल कांफ्रेंस व अन्य गैर भाजपा राजनीतिक दलों ने कड़ा विरोध किया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि इन नौकरियों पर अन्य राज्यों के लोगों के आवेदन स्वीकारने का मतलब स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसरों को कम करना है। इन दलों का कहना था कि जम्मू- कश्मीर और लद्दाख में सरकारी नौकरियों में स्थानीय युवाओं के लिए आरक्षण को सुनिश्चित बनाया जाए।

## लौटी खुशी

पुलिस के ऑपरेशन स्माइल ने दिया परिवार को नववर्ष का तोहफा, परिवार में दो बेटे और दो बेटियां हैं

## छह साल बाद परिवार से मिला केदारनाथ आपदा में लापता बुजुर्ग

**संवाद सहयोगी, चमोली**

पुलिस के ऑपरेशन स्माइल ने 35 वर्ष के शकील अहमद को नववर्ष का ऐसा तोहफा दिया जिसे शायद वह ताउम्र न भुला सकें। केदारनाथ आपदा के बाद जिस पिता को उन्होंने खो दिया था, आज वह उनके सामने हैं। आंखों में आंसू लिए उन्होंने कहा 'खुदा के घर देर है, अंधेर नहीं।' 2013 में ऊधमसिंहनगर जिले के सितारगंज से चमोली जिले के जोशीमठ मजदूरी के लिए घर से निकले जमील अहमद छह साल बाद आज अपने परिवार के साथ हैं।

सैकड़ों परिवारों की तरह केदारनाथ आपदा जमील के परिवार के लिए भी अभिशाप साबित हुई। यात्रा सीजन में वह वर्षों से मजदूरी की तलाश में जोशीमठ अथवा लामबगड़ आते रहते थे। 2013 में भी वह लामबगड़ में मजदूरी करने लगे। वह तारीख तो जमील को याद नहीं है, लेकिन इतना याद है कि अलकनंदा का उफान इस कदर भयानक था कि वह भी

उत्तराखंड में चमोली के गोपेश्वर थाने में बुजुर्ग जमील अहमद (मध्य में), पत्नी मोबिन (बाएं) और बेटे शकील अहमद (दाएं) के साथ। जमील अहमद 2013 में केदारनाथ आपदा में लापता हो गए थे और पुलिस ने आपरेशन स्माइल अभियान के तहत जमील को परिवार से मिलाया। जागरण

उसकी चपेट में आ गए। इसके बाद क्या हुआ उन्हें नहीं पता।

जमील को परिवार से मिलाने वाले ऑपरेशन स्माइल के टीम प्रभारी उप निरीक्षक नितिन बिष्ट ने बताया कि पिछले माह पांच दिसंबर को उन्होंने गोपेश्वर स्थित वृद्धाश्रम में ऐसे लोगों के बारे में पूछा तो वहां वृद्ध के बारे में पता चला। जब बिष्ट वृद्ध से मिले तो उन्होंने सिर्फ इतना बताया कि वह सितारगंज के रहने वाले हैं। बिष्ट के अनुसार, वृद्धाश्रम प्रभारी कुसुम लता डिमरी ने बताया कि 2013 में ये बुजुर्ग बाजार में घूमते मिले तो कोई उन्हें आश्रम छोड़ गया। बुजुर्ग की मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। तब वह घर का पता भी नहीं बता पा रहे थे। आश्रम में इलाज के बाद उनकी सेहत तो सुधरी, लेकिन वह अपने बारे में पूरी जानकारी नहीं दे सके। नितिन ने खुद भी कोशिश की, लेकिन वह ज्यादा कुछ नहीं बता सके।

इस पर नितिन बिष्ट ने 24 दिसंबर को कांस्टेबल चंदन नागरकोटी को बुजुर्ग के परिवार का पता लगाने के लिए सितारगंज भेजा। चंदन पहले भी सितारगंज में तैनात रहे थे, इसीलिए स्थानीय लोगों से भी उनकी पहचान है। चंदन ने बताया कि स्थानीय पुलिस से संपर्क करने के साथ ही उन्होंने जमील की फोटो सोशल मीडिया पर भी पोस्ट कर दी। इसका असर यह हुआ के कामयाबी जल्द मिल गई। जमील के भतीजे वसीम ने यह फोटो देखा तो अपने चाचा को पहचान गए। उन्होंने स्वजनों को सूचना दी। इस पर स्वजनों ने नागरकोटी से मुलाकात की और बताया कि वे लोग सितारगंज के पास चीनती माजरा के रहने वाले हैं।

जलील के परिवार में दो बेटे और दो बेटियां हैं। 30 दिसंबर को नागरकोटी ने मोबाइल पर वीडियो कॉल के जरिये जमील की परिवार के सदस्यों से बात कराई। बात करते हुए जमील की आंखें भी नम थीं और स्वजनों की भी। बुधवार को जमील के बड़े बेटे शकील और उनकी मां मोबिन गोपेश्वर पहुंची। जैसे ही वृद्धाश्रम में तीनों मिले तो हर कोई भावुक हो गया। पत्नी मोबिन ने जमील को बताया कि उन्होंने शकील और दोनों बेटियों की शादी कर दी है। फर्नीचर का काम करने वाले शकील ने बताया कि अब उनके छोटे भाई की शादी होनी है।

## पीएम मोदी की छात्रों संग 'परीक्षा पर चर्चा' अब 20 को

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'परीक्षा पर चर्चा' कार्यक्रम का आयोजन अब 20 जनवरी को होगा। इसमें वह छात्रों व शिक्षकों के साथ परीक्षा के तनाव को हराने के मुद्दे पर चर्चा करेंगे। मानव संधान विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) ने बुधवार को यह जानकारी दी।

पहले 'परीक्षा पर चर्चा' का आयोजन 16 जनवरी को होना था, लेकिन मकर संक्रांति, पोंगल, लोहड़ी, ओणम आदि त्योहारों के मद्देनजर अब इसका आयोजन 20 जनवरी को किया जाएगा। एमएचआरडी ने एक बयान में कहा, 'कार्यक्रम पहले 16 जनवरी 2020 को आयोजित होने वाला था। इसे लेकर छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों में खासा उत्साह देखा जा रहा है। वे न सिर्फ इस अनोखे कार्यक्रम में प्रतिभाग करना चाहते हैं, बल्कि परीक्षा के तनाव को हराने के लिए प्रधानमंत्री का महत्वपूर्ण सुझाव भी पाना चाहते हैं।'

**150** दिन बाद जम्मू-कश्मीर के स्थानीय उपभोक्ताओं ने अपने पोस्टपेड मोबाइल फोन पर एसएमएस सेवा का फायदा उठाया। हालांकि, तकनीकी कारणों से कई जगह यह सुविधा पूरी तरह बहाल नहीं हो पाई।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
गुरुवार 2 जनवरी 2020

# जम्मू-कश्मीर में आतंकियों से मुठभेड़, दो सैनिक शहीद

**शहादत** ▶ जम्मू संभाग के राजौरी के उपजिला नौशहरा में हुई घटना

**जागरण संवाददाता, राजौरी**

नये वर्ष के पहले ही दिन पाकिस्तान की नापाक साजिशें शुरू हो गई हैं। जम्मू संभाग के राजौरी के उपजिला नौशहरा में बुधवार को आतंकियों के साथ करीब सात घंटे चली भीषण मुठभेड़ में सेना के दो जवान शहीद हो गए। वहीं, भाग निकले आतंकियों की तलाश में सुरक्षाबलों ने इलाके को घेर लिया। सेना ने इस अभियान में स्पेशल फोर्स को भी उतार दिया है।

नौशहरा के दब्बड पोठा क्षेत्र में जहां यह मुठभेड़ हुई, वह इलाका भारत-पाकिस्तान नियंत्रण रेखा से करीब 20 किलोमीटर दूर है। माना जा रहा है कि मुठभेड़ में शामिल आतंकी हाल ही में सीमा पार से घुसपैठ कर आए हैं। इनकी संख्या चार से पांच के बीच हो सकती है, लेकिन घुसपैठ के बारे में फिलहाल सेना व सुरक्षा एजेंसियां कुछ भी बताने को तैयार नहीं हैं। जानकारी के अनुसार, नौशहरा में आतंकियों की मौजूदगी की सूचना के बाद सेना, पुलिस व सीआरपीएफ के जवानों ने मंगलवार सुबह से ही तलाशी अभियान शुरू कर दिया था। मंगलवार रात करीब दस बजे आतंकियों व सेना के बीच गोलाबारी शुरू हो गई। यह गोलाबारी बुधवार सुबह पांच बजे तक जारी रही। गोलाबारी में सेना के दो जवान बुरी तरह से घायल हो गए। दोनों को पास के सैन्य अस्पताल ले जाया गया, जहां उपचार के दौरान दोनों जवान शहीद हो गए। शहीदों का उप जिला अस्पताल नौशहरा में पोस्टमार्टम कराने के बाद पार्थिव शरीर संबंधित यूनिट के अधिकारियों के हवाले कर दिया गया। मुठभेड़ में शहीद जवानों की पहचान 29 वर्षीय नायक सावंत संदीप रघुनाथ निवासी ग्राम मुंडे, तहसील करहाद, जिला सतारा, महाराष्ट्र और 25 वर्षीय राइफलमैन अर्जुन थापा मागर निवासी ग्राम रिप, जिला गोरखा, नेपाल के रूप में हुई है।

इस बीच, राजौरी-पुंछ रेंज के डीआइजी विवेक गुप्ता का कहना है कि क्षेत्र में आतंकियों की तलाश में अभियान जारी है। इस अभियान में सेना के दो जवान शहीद हो चुके हैं, हमारा ऑपरेशन जारी है।

अर्जुन थापा की फाइल फोटो। पीआरओ डिफेंस

### राजौरी के महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की सुरक्षा बढ़ाई गई

मुठभेड़ स्थल से आतंकियों के फरार होने के बाद पूरे राजौरी जिले में सभी महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों व सुरक्षाबलों के शिविरों की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। हालांकि आतंकियों के भागने के तमाम रास्तों को सील कर दिया गया है। देर शाम तक सुरक्षाबलों का अभियान जारी रहा।

### दैनिक जागरण ने पहले ही जताई थी आशंका

पाकिस्तान पिछले एक महीने से नियंत्रण रेखा पर भारी गोलाबारी कर रहा है। उसने आतंकियों की घुसपैठ कराने के भी कई प्रयास किए। दैनिक जागरण ने 25 दिसंबर के अंक में आगाह करने के साथ आशंका जताई थी कि खराब मौसम की आड़ में 'पाकिस्तान सफेद बर्फ पर काली साजिश रच रहा है'।

## शहीद बेटे के गम में मां ने तोड़ा दम

**संवाद सहयोगी, हमीरपुर** : बेटे की शहादत का गम न झेल पाई मां ने उसकी अंत्येष्टि के महज 14 घंटे बाद ही दम तोड़ दिया। हिमाचल प्रदेश में हमीरपुर के साथ लगती बजूरी पंचायत के दुलेहड़ा गांव के शहीद वरुण कुमार शर्मा की अंत्येष्टि मंगलवार को हुई थी। उनकी मां 55 वर्षीय विमला देवी ने बुधवार सुबह छह बजे घर पर अंतिम सांस ली।

सियाचिन सीमा पर तैनात 34 वर्षीय वरुण कुमार को कुछ दिन पहले ब्रेन स्ट्रोक के बाद चंडी मंदिर अस्पताल में दाखिल करवाया गया था। रविवार की शाम को वह जिंदगी की जंग हार गए। मंगलवार को बेटे का शव घर के आंगन में पहुंचने पर विमला बेहोश हो गई थी। बेटे की अंत्येष्टि के बाद रातभर वह बेटे के बचपन के दिनों की यादों में खोई रहीं। अंत्येष्टि के महज 14 घंटे बाद ही उन्होंने भी दम तोड़ दिया। बुधवार सुबह जैसे ही गांव के लोगों को शहीद की मां की मौत की सूचना मिली तो वे शोक संतप्त परिवार के घर पर एकत्रित हो गए। वरुण कुमार के दाह संस्कार के कुछ घंटे के बाद ही मां की मौत से हर कोई विचलित दिखा।

**2002 में सेना में भर्ती हुए थे वरुण**: वरुण ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक (बाल) स्कूल हमीरपुर से पढ़ाई की थी। इसके बाद 2002 में वह दो डोगरा रेजीमेंट में भर्ती हो गये। सियाचिन ग्लेशियर में देश की रक्षा में तैनात वरुण अचानक शहीद हो गया था। वरुण की पत्नी शमा शर्मा गृहिणी हैं और उसके दो बेटे हैं। बड़ा बेटा अरमान दूसरी कक्षा में पढ़ता है व छोटा बेटा अयान तीन साल का है। शहीद के बड़े भाई अरुण शर्मा विदेश में रहते हैं।

## तेजाब कांड की दो पीड़िताओं को 14 साल बाद मुआवजा

**जागरण संवाददाता, मंडी**

हिमाचल प्रदेश में मंडी के बहुचर्चित तेजाब कांड की दो पीड़िताओं को 14 साल बाद मुआवजा मिलेगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की मुहिम दोनों पीड़िताओं के लिए नया सवेरा लेकर आई है। ऐतिहासिक फैसले में आपराधिक क्षति मुआवजा बोर्ड ने प्रदेश सरकार को दोनों पीड़िताओं को 25 लाख रुपये मुआवजा देने के आदेश दिए हैं।

प्राधिकरण ने मामले में स्वतः संज्ञान लेकर बोर्ड के समक्ष पीड़िताओं की पैरवी की। बोर्ड के अध्यक्ष, जिला एवं सत्र न्यायाधीश आरके शर्मा और सदस्यों उपायुक्त मंडी ऋग्वेद ठाकुर, जिला पुलिस अधीक्षक गुरदेव शर्मा और मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. जीवानंद चौहान ने निर्णय देते हुए 2005 में मंडी में हुए तेजाब कांड की मुख्य पीड़िता को पीड़िता मुआवजा स्कीम के तहत 13 लाख और सह पीड़िता को 12 लाख रुपये का मुआवजा देने को कहा।

**फैसले में गीता के श्लोक नेत्रम प्रधानम सर्वेन्दरियम का उल्लेख** : बोर्ड के अध्यक्ष आरके शर्मा ने फैसले में गीता के श्लोक 'नेत्रम प्रधानम सर्वेन्दरियम' का उल्लेख किया है। उन्होंने कहा कि इस मामले की मुख्य पीड़िता की आंखों को पहुंची क्षति से उसके रोजाना के कार्य प्रभावित हुए हैं। मानव का चेहरा जैविक आवश्यकताओं के साथ व्यक्तित्व की पहचान के लिए भी सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। चेहरे की बनावट का विघटन व्यक्तिगत पहचान और सामाजिक भूमिका तक पहुंच को प्रभावित करता है। शादी अथवा रोजगार जैसी संभावनाओं पर भी प्रतिकूल असर डालता है।

**क्या था मामला**: 27 मई 2005 को इस मामले की मुख्य पीड़िता बस में बैठ कर घर जा रही थी। इसी दौरान मंडी शहर में दर्जी का काम करने वाला उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर के मकान नंबर 403, गुलाब वाली गली का मुहम्मद मगरूफ बस में चढ़ा। उसने मुख्य पीड़िता पर तेजाब फेंक दिया था। इससे मुख्य पीड़िता समेत बस में सवार 11 लोग घायल हो गए थे।

### हाई कोर्ट ने बरकरार रखी थी सजा

जिला एवं सत्र न्यायालय मंडी ने मुहम्मद मगरूफ को दोषी करार देते हुए 17 जून 2007 को आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी। अभियोजन पक्ष की तरफ से 31 गवाह पेश किए गए थे। दोषी ने फैसले के खिलाफ हाई कोर्ट में अपील की थी। हाई कोर्ट ने छह जनवरी 2012 को सत्र न्यायालय के फैसले को बरकरार रखा था। इसके बाद दोषी सुप्रीम कोर्ट गया वहां भी उसे राहत नहीं मिली। दोषी एक बार पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया था, जिसे बाद में परवाणू से गिरफ्तार कर लिया गया था।

## नेपाल सीमा के पास छिपे दो आतंकियों को लेकर अलर्ट

**जासं, सिद्धार्थनगर** : दो आतंकियों के नेपाल सीमा के पास छिपे होने की खबर मिलने के बाद अलर्ट घोषित किया गया है। यह अलर्ट गोरखपुर व बरेली जोन के लिए जारी किया गया है। केंद्रीय खुफिया एजेंसियों ने ख्वाजा मोइनुद्दीन और अब्दुल समद नाम के दोनों आतंकियों के फोटो जारी किए हैं। दोनों के संबंध दक्षिण भारत से होने की बात कही जा रही है। आखिरी बार उनका लोकेशन बंगाल में मिला था।

मोइनुद्दीन पहले सीरिया गया था। वहां से लौटने के बाद से आतंकी संगठन इंडियन मुजाहिदीन के संपर्क में है। अब्दुल समद का नाम पुणे बम ब्लास्ट में सामने आया था। उसके लश्कर-ए-तैयबा के संपर्क में होने की बात कही जा रही है। इसी ने हवाला के जरिये खाड़ी देशों से मिले रुपयों को आतंकियों तक पहुंचाया था। हथियार भी उपलब्ध कराने में संलिप्तता सामने आई है।

खुफिया विभाग ने अलर्ट जारी किया है। सीमावर्ती थाना व पुलिस चौकियों को निर्देशित किया गया है। एसएसबी के साथ समन्वय स्थापित कर पुलिस संदिग्ध व्यक्तियों की चेकिंग कर रही है।

-विजय ढुल, एसपी सिद्धार्थनगर

## न्यूज गैलरी

### चिन्मयानंद से ब्लैकमेलिंग का आरोपित सचिन जमानत पर रिहा

**शाहजहांपुर** : पूर्व केंद्रीय गृह राज्यमंत्री चिन्मयानंद से ब्लैकमेलिंग का आरोपित सचिन सेंगर बुधवार को जमानत पर रिहा हो गया। जमानतदारों के प्रपत्रों की गाजियाबाद से सत्यापन रिपोर्ट आने के बाद उसकी रिहाई का परवाना जारी हुआ। वह बीस सितंबर से जेल में बंद था। आरोपित सचिन सेंगर की जमानत पांच दिसंबर को हाई कोर्ट से मंजूर हुई थी। अन्य आरोपित विक्रम सिंह व चिन्मयानंद पर दुष्कर्म का आरोप लगाने वाली छात्रा पहले ही जमानत पर रिहा हो चुकी है। चौथे आरोपित संजय सिंह की जमानत पर अभी निर्णय नहीं आया है। (जासं)

### सिक्किम में मिले दिल्ली से लापता दो डॉक्टर

**नई दिल्ली** : क्रिसमस के दिन दिल्ली से लापता हुए एम्स के दो डॉक्टरों को आखिरकर दिल्ली पुलिस ने एक सप्ताह के अंदर सिक्किम के रोलांग इलाके से खोज निकाला। दोनों डॉक्टरों को पुलिस बुधवार को दिल्ली लेकर पहुंची। पुलिस डॉक्टरों से पूछताछ कर आगे की जांच में जुटी हुई है। डीसीपी अतुल कुमार ठाकुर के मुताबिक, 25 दिसंबर को एम्स के रेजिडेंट डॉक्टर हेमा बिंदु और डॉ. दिलीप सत्या अचानक दिल्ली से गायब हो गए थे। डॉ. दिलीप ने आखिरी बार पत्नी को फोन कर बताया था कि वह चर्च जा रहे हैं। उसके बाद से डॉ. हेमा बिंदू और डॉ. सत्या दोनों गायब हो गए थे। परिवार की शिकायत पर हौजखास पुलिस ने अपहरण का मामला दर्ज कर जांच शुरू की। (जासं)

## साल के पहले ही दिन राजधानी व शताब्दी के यात्री बेहाल

**जेएनएन, नई दिल्ली**

कोहरे की वजह से रेल यात्रियों की परेशानी बढ़ गई है, क्योंकि ट्रेनें घंटों देरी से चल रही हैं। नए साल के पहले दिन भी दिल्ली आने वाली 50 से ज्यादा ट्रेनें देरी से पहुंची। विलंब से गंतव्य पर पहुंचने के कारण राजधानी और शताब्दी सहित 14 ट्रेनों के समय में बदलाव करना पड़ा। आने वाले दिनों में परेशानी और बढ़ सकती है। बुधवार को दुर्ग हमसफर लगभग चार घंटे की देरी से रवाना हुई। चंडीगढ़ शताब्दी लगभग साढ़े तीन घंटे की देरी से दिल्ली पहुंची, जिस कारण सवा दो घंटे के विलंब से चंडीगढ़ के लिए रवाना हुई। सियालदह राजधानी पौने तीन घंटे, अगरतला राजधानी तीन घंटे, भुवनेश्वर राजधानी ढाई घंटे और कोलकाता राजधानी पौने दो घंटे की देरी से रवाना हुई।

महाकौशल एक्सप्रेस सात घंटे की देरी से हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर पहुंची। वापसी में यह लगभग साढ़े पांच घंटे की देरी से रवाना हुई। श्रीधाम एक्सप्रेस पौने चार घंटे और बिहार संपर्क क्रांति ढाई घंटे की देरी से रवाना हुई। इसी तरह से कई अन्य ट्रेनें अपने निर्धारित समय से एक से दो घंटे की देरी से रवाना हुई।

कड़ाके की ठंड के बाद बुधवार को दिल्ली में धूप खिली तो लोगों ने थोड़ा सुकून महसूस किया। कनॉट प्लेस में गुनगुनी धूप का आनंद लेते लोग। ध्रुव कुमार

**धूप तो खिली पर राहत नहीं मिली** : इससे पहले साल के पहले दिन कंपकंपाती सर्दी से बहुत ज्यादा राहत नहीं मिली। कई जगह धूप तो निकली, लेकिन सर्द हवाओं से राहत नहीं मिली। पहाड़ी राज्यों में नए साल के जश्न के लिए पहुंचे सैलानियों ने जमकर मस्ती की, लेकिन स्थानीय घरों में ही दुबके रहे। दिल्ली में दो दिन पहले 9.4 रहने वाला अधिकतम तापमान बुधवार को 20.5 था। लेकिन न्यूनतम तापमान 2.4 रहा। दिल्ली में गुरुवार को हल्की बारिश होने और तेज हवा चलने के आसार हैं।

राजस्थान का श्रीगंगानगर 1.5 न्यूनतम तापमान के साथ राज्य में सबसे ठंडा रहा। पिलानी, माउंट आबू, फलौदी, बीकानेर, जोबनेर और चुरू का न्यूनतम तापमान बुधवार को भी 4 से कम रहा। पंजाब में तीन शहरों का तापमान शून्य के करीब पहुंच गया है। लुधियाना सबसे ठंडा रहा। यहां का न्यूनतम तापमान 0.3 डिग्री सेल्सियस रहा। बठिंडा का न्यूनतम तापमान 0.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। यहां 30 साल का रिकॉर्ड टूटा है। पठानकोट का न्यूनतम पारा भी 0.8 तक पहुंच गया। उत्तराखंड के देहरादून में यह सीजन का सबसे सर्द दिन रहा। यहां न्यूनतम तापमान 2.6 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसम विभाग के अनुसार हिमाचल प्रदेश में 2 और 3 को ऊंचाई वाले क्षेत्रों में हल्की बर्फबारी और बारिश की संभावना है। बर्फबारी स्थानीय किसानों व बागवानों को खेती के लिए वरदान साबित हो सकती है।

### बढ़ी परेशानी

- कोहरे की वजह एक से सात घंटे तक की देरी चल रही कई ट्रेनें
- विलंब से गंतव्य पर पहुंचने के कारण 14 ट्रेनों के समय में बदलाव करना पड़ा

## मध्य प्रदेश हाई कोर्ट से ई-मेल पर ली जा सकेगी नकल

**नईदुनिया, ग्वालियर**

मप्र हाई कोर्ट के आदेश की प्रमाणित नकल (सर्टिफाइड कॉपी) लेने के लिए पक्षकारों को अब अब वकील या कोर्ट मुंशियों के भरोसे नहीं रहना पड़ेगा। उन्हें न तो कोर्ट तक आने की जरूरत होगी और न ही मोटी फीस चुकाने की। हाई कोर्ट ने अपनी वेबसाइट पर ई-मेल आईडी पर नकल भेजने का फीचर जोड़ दिया है। यह नकल हर जगह मान्य होगी। फिलहाल इस व्यवस्था का ट्रॉयल चल रहा है। गौरतलब है कि कोर्ट के आदेश की नकल लेने को लेकर पक्षकार व वकीलों में अक्सर विवाद होता है या फिर वकीलों के ऑफिसों में काम करने वाले बाबू प्रमाणित कॉपी देने के लिए 500 से 1000 रुपए तक पक्षकारों से वसूलते हैं। लेकिन अब पक्षकार घर बैठे ही कोर्ट के आदेश की नकल ले सकेंगे।

### ऐसे ले सकते हैं कॉपी

पक्षकार को हाई कोर्ट की वेबसाइट डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू. एमपीएचसी.जीओवी.इन पर लॉगिन करना होगा। साइट पर ई- सर्टिफाइड कॉपी के ऑप्शन पर क्लिक करने के बाद मोबाइल नंबर दर्ज करना होगा। मोबाइल नंबर पर आए ओटीपी को भरने के बाद आपके सामने विकल्प आएंगे। कौन-सी बैंच का ऑर्डर लेना चाहते हैं, आपको बैंच भरनी होगी।

- याचिका की डिटेल भरने के बाद आपके सामने आवेदन आएगा, जिस पर आपको अपना नाम, पता, पिनकोड नंबर भरना होगा। एक्सप्रेस कॉपी लेना चाह रहे हैं या साधारण। इस का भी चुनाव करना होगा। इसके बाद आपको अपना ई-मेल आईडी दर्ज करना होगा।
- कोर्ट फीस गणना के बाद आपके सामने विकल्प आएगा कि आप ऑर्डर की कॉपी कैसे लेना चाहते हैं। ई-मेल, बाय पोस्ट, काउंटर पर आकर। जिस विकल्प का आप चुनाव करेंगे, उसके अनुसार आपको ऑर्डर की नकल उपलब्ध कराई जाएगी।
- नकल की कोर्ट फीस व उसकी कॉपी बनाने में आने वाला खर्च आपको गणना करके स्क्रीन पर नजर आने लगेगा।
- डेबिट या क्रेडिट कार्ड से भी आप पेमेंट कर सकते हैं।
- ईमेल पर नकल लेने के खर्च का आकलन अभी किया जा रहा है।
- वर्तमान में 17 पेज के आदेश की सर्टिफाइड कॉपी लेने का सरकारी खर्च 159 रुपए आता है, लेकिन मुंशी 500 से 1000 के बीच वसूल लेते हैं।

### सीबीआइ ने चार घंटे तक शहर में की जांच

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

सीबीआइ की टीम एडीजी चंद्रशेखर और दलाल को लेकर बुधवार दोपहर बाद लुधियाना पहुंची। उनके साथ राजेश ढांडा भी था। सीबीआइ ने घुमार मंडी स्थित डीआरआइ एडीजी के कार्यालय में दस्तावेजों की छानबीन की और कई कब्जे में ले लिए। इसके बाद वह एडीजी के ग्रैंड वॉक मॉल के सामने स्थित मारवल होम्स में भी छानबीन की। टीम ने ढांडा के कुछ ठिकानों पर भी जांच की। वर्ष 2012 में राजेश ढांडा की कंपनी सेंचुरी निटर्स इंडिया लिमिटेड के परिसर व उनके तमाम ठिकानों पर डीआरआइ ने छापा मारा था। बताया जाता है कि ढांडा पर बोगस बिलिंग और ओवर इनवाइसिंग से करोड़ों रुपये की कर चोरी किए जाने का पता चला था। इसके बाद ढांडा की डीआरआइ अफसरों से नजदीकियां बढ़ गई थीं और वह निर्यातकों और डीआरआइ अधिकारियों के बीच लेन-देन तय करने लगा था।

## वहीदा रहमान को मुंबई जाकर किशोर सम्मान देगी मप्र सरकार

**राज्य ब्यूरो, भोपाल**

राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मान प्रसिद्ध सिने अभिनेत्री वहीदा रहमान को देने मध्य प्रदेश सरकार मुंबई जाएगी। अपने जमाने की खूबसूरत अदाकारा वहीदा (81) को वर्ष 2018-19 का सम्मान दिया जाना है। अस्वस्थता के कारण खंडवा आकर सम्मान लेने में उन्होंने असमर्थता जताई थी, इसलिए मप्र के संस्कृति विभाग की मंत्री डॉ. विजयलक्ष्मी साधौ और वरिष्ठ अफसर मुंबई जाकर उन्हें इस सम्मान से नवाजेंगे।

ख्यात गायक किशोर कुमार की याद में मध्य प्रदेश का संस्कृति विभाग उत्कृष्टता और सृजन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान करता है। सम्मान समारोह का आयोजन किशोर कुमार की जन्म स्थली खंडवा में किया जाता है। 13 अक्टूबर 2019 को किशोर कुमार की पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में वर्ष 2017-18 का सम्मान निर्देशक प्रियदर्शन को दिया गया था। अभिनेत्री वहीदा रहमान का चयन वर्ष 2018-19 के सम्मान के लिए किया गया है। अक्टूबर में वहीदा ने स्वास्थ्यगत कारणों से खंडवा आने से इन्कार कर दिया था। इसलिए राज्य सरकार ने मुंबई जाकर उन्हें सम्मानित करने का फैसला किया।

- 81 वर्षीय अभिनेत्री ने खंडवा आने में जताई थी असमर्थता
- किशोर कुमार की जन्म स्थली खंडवा में होता है सम्मान समारोह

भारतीय सिनेमा की प्रसिद्ध अभिनेत्री वहीदा रहमान को मुंबई जाकर ही राष्ट्रीय किशोर सम्मान से अलंकृत किया जाएगा। कार्यक्रम की तारीख तय नहीं है, लेकिन हमारा प्रयास है कि जनवरी में ही उन्हें सम्मानित किया जाए।
- डॉ. विजयलक्ष्मी साधौ, संस्कृति मंत्री, मप्र

## दुष्कर्म पीड़िता को जिंदा जलाने के मामले में चार्जशीट दाखिल

**जागरण संवाददाता, उन्नाव** : उन्नाव में दुष्कर्म पीड़िता को जिंदा जलाकर मारने के मामले में बुधवार को एसआइटी ने कोर्ट में चार्जशीट दाखिल कर दी। उन्नाव के बिहार थाना क्षेत्र के एक गांव की दुष्कर्म पीड़िता को पांच दिसंबर की सुबह गांव के बाहर जला दिया गया था। दुष्कर्म पीड़िता ने दम तोड़ने से पहले एसडीएम को दिए बयान में गांव के ही शिवम त्रिवेदी और उसके पिता रामकिशोर, शुभम त्रिवेदी व उसके पिता हरिशंकर के साथ गांव के एक अन्य उमेश पर उसे जलाने का आरोप लगाया था। पीड़िता की मौत के बाद एसपी ने मामले की जांच के लिए एएसपी विनोद कुमार पांडेय की अगुवाई में एसआइटी गठित की थी। साथ ही टीम को जल्द से जल्द मामले की जांच कर रिपोर्ट देने के निर्देश भी हुए थे। इसके तहत एसआइटी ने बुधवार को जांच पूरी कर पांचों आरोपितों के खिलाफ चार्जशीट कोर्ट में दाखिल कर दी। पुलिस सूत्रों के मुताबिक पीड़िता द्वारा गांव के जिन पांच लोगों को गुनहगार बताया गया था, एसआइटी की तफ्तीश में उनके द्वारा ही गुनाह किया जाना पाया गया है।

**जनमत**
**मुद्दा**

**क्या 2020 में आप कम से कम एक पौधा रोपकर उसके पेड़ बनने तक देखभाल का संकल्प पूरा करेंगे?**

mudda@jagran.com पर आप अपनी राय हमें भेज सकते हैं। मोबाइल से मैसेज भी कर सकते हैं। **MUDDA** लिखें, स्पेस देकर **YES** या **NO** लिखकर 57272 पर भेजें।

## राजपथ पर नए अवतार में नजर आएगा जम्मू कश्मीर

**झांकी**

राज्य की झांकी में कला-संस्कृति चमक बिखरेगी, मिटेगा भेदभाव का दंश भी ,जम्मू की प्रसिद्ध बसोहली पेंटिंग और कश्मीर की पेपर माछी हस्तकला नजर आएगी नए अवतार में, राज्य के प्रसिद्ध कलाकार वीर मुंशी तैयार कर रहे हैं झांकी

**अशोक शर्मा, जम्मू**

इस बार राजपथ पर नए जम्मू-कश्मीर की झलक दिखेगी। गणतंत्र दिवस समारोह पर निकाली जाने वाली राज्य की झांकी में विकास की बात होगी तो कला संस्कृति की चमक बिखरेगी। बड़ी बात यह कि भेदभाव दंश इस बार नजर नहीं आएगा। जम्मू की प्रसिद्ध बसोहली पेंटिंग और कश्मीर की पेपर माछी हस्तकला नए अवतार में होंगी।

इस बार कला क्षेत्र राज्य का प्रतिनिधित्व कर रहा है। सरकार की योजना 'गांव की ओर' के तहत झांकी में ग्रामीण कलाओं और रोजगार का प्रमोशन भी किया जाएगा। जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी के सचिव मनीर-उल-इस्लाम ने बताया कि जम्मू-कश्मीर की झांकी को राज्य के प्रसिद्ध कलाकार वीर मुंशी तैयार कर रहे हैं। वीर मुंशी इससे पहले भी कई बार जम्मू-कश्मीर की झांकी पेश करने का गौरव प्राप्त कर चुके हैं और इसके लिए सम्मानित किए जा चुके हैं। कश्मीर की हस्तकला पेपर माछी और बसोहली पेंटिंग का दुनिया भर में नाम है, लेकिन समय के साथ यह कला शैलियां लुप्त होने की कगार पर हैं। इनके पूर्णजीवन के लिए सरकार प्रयासरत है। झांकी के माध्यम से दर्शाया जाएगा कि असल में मशीन के युग में होने वाले काम में और हाथ से होने वाले काम में अंतर है। पेपर माछी से जुड़े लोगों और इस हस्तकला के संरक्षण के उद्देश्य से प्रस्ताव भेजा गया है।

2018 की जम्मू-कश्मीर की झांकी। जागरण आर्काइव

बसोहली पेंटिंग की प्रतीकात्मक फोटो। यह पेंटिंग भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं पर आधारित है। जागरण

जम्मू-कश्मीर अपनी कला, वास्तुकला, भाषाओं-बोलियों, रीति रिवाजों, पहनावों, मेलों, त्योहारों, साहित्य, हस्तकला एवं संगीत आदि के लिए प्रसिद्ध है। इस वर्ष दिखाई जाने वाली झांकी में जम्मू-कश्मीर की मिली जुली संस्कृति के अलावा अटल सेतु और उसके आसपास का मनोरम दृश्य दर्शाया जाएगा। झांकी को अंतिम रूप दो जनवरी को दिल्ली में होने वाली बैठक में लिया जाएगा। इस वर्ष पांच उच्च स्तरीय बैठकों का आयोजन हो चुका है, जिसमें कुछ महत्वपूर्ण बदलाव के बाद जम्मू-कश्मीर की झांकी को सहमति मिल चुकी है।

**बसोहली पेंटिंग में प्रभु की लीलाओं का चित्रण...**: प्रसिद्ध बसोहली की चित्रकला भारतीय संस्कृति की धरोहर का जीवंत दस्तावेज है। बसोहली जम्मू कश्मीर के कठुआ जिले का कस्बा है। चित्रकला के मामले में बसोहली को पहाड़ी लघुचित्रकला का स्कूल माना जाता रहा है। बसोहली की चित्रकला की विशेषता गहरी रेखाओं के साथ रंगों का कुशल संयोजन है। जिसमें महाकाव्यों के नायकों को प्रमुख रूप से विषय वस्तु बनाया है। बसोहली की चित्रकला शैली का विकास 17वीं शताब्दी में शुरू हुआ। बसोहली की चित्रकला रागमाला सीरीज में मिलती है। जिसमें भगवान राम की लीलाओं का चित्रण है। भगवान कृष्ण की लीलाएं भी इसमें समाहित होती गईं। वहीं, पेपर माछी कश्मीर का हस्तशिल्प है, जिसे 14 वीं शताब्दी में फारस के मुस्लिम संत मीर सैय्यद अली हमदानी द्वारा लाया गया था। यह मुख्य रूप से पेपर पल्प पर आधारित है। ये श्रीनगर और कश्मीर के अन्य हिस्सों में घरों व कार्यशालाओं में बनाए जाते हैं।

**लद्दाख की झांकी को मंजूरी मिलना मुश्किल**: झांकी में केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख को दर्शाने का मॉडल भेजो गया था, लेकिन दिल्ली में हुई बैठकों में लद्दाख की झांकी को लेकर सहमति बनती नहीं दिखी है। अकादमी के डिप्टी सेक्रेटरी नजीर हुसैन ने बताया कि उन्होंने आवेदन भेजा है कि उन्हें प्रोजेक्ट पर कुछ काम करने का मौका मिले। अगर यह मौका मिलता है तो वह चाहेंगे कि दुनिया के सामने लद्दाख की नई तस्वीर पहुंचे।

**ऋण वसूली न्यायाधिकरण-III, दिल्ली के समक्ष**
संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001

ऋण वसूली अधिकरण (प्रक्रिया निबंधन) 1993 के नियम 2 एवं 15 के साथ पठित बैंक एवं वित्तीय संस्थान अधिनियम 1993 की धारा 19(4) के अंतर्गत सूचना।
ओए नं. 232/2019/डीआरटी-III के मामले में
पंजाब नेशनल बैंक — बनाम — आवेदक
संजीव कुमार एवं अन्य — प्रतिवादी
To,
D-1 श्री संजीव कुमार (कर्जदार)
निवासी फ्लैट नं. डी-435, चतुर्थ तल, यूपीएसआईडी हाउसिंग सेक्टर राजनगर, गाजियाबाद यू.पी., एक्सटेंशन पैक-1, जिला- गौतमबुद्धनगर, उ.प्र.-201308,
यहां भी: सुमन एनीसिल्ट एंड को., ऑफिस-2, 14वां तल, कासना हब, अल्फा कॉर्पोरेट सेक्टर, सेक्टर-16ए, उ.प्र. (201308)
D-2 श्रीमती कविता रानी (सह कर्जदार) पत्नी संजीव कुमार
निवासी फ्लैट नं. डी-435, चतुर्थ तल, यूपीएसआईडी हाउसिंग सेक्टर राजनगर, गाजियाबाद यू.पी., एक्सटेंशन पैक-1, जिला- गौतमबुद्धनगर, उ.प्र.-201308,
यहां भी: एसएनएल एनी सेमर्स प्रा.लि., ऑफिस-2, 14वां तल, कासना हब, अल्फा कॉर्पोरेट सेक्टर, सेक्टर-16ए, उ.प्र. (201308)
चूंकि, उपरोक्त याचिकाकर्ता ने आपके खिलाफ मामला दायर किया है और चूंकि अधिकरण को संतुष्ट कराया गया है कि मामले नोटिस से आपको इसे तामील कराना संभव नहीं है। इसलिए, विज्ञापन के जरिए आपको यह निर्देश देते हुए सूचित किया जाता है कि 20.03.2020 को प्रातः 10.30 बजे इस न्यायाधिकरण के समक्ष हाजिर होंगे।
यह ध्यान रहे कि इस न्यायाधिकरण में उपरोक्त तिथि को हाजिर नहीं होने की स्थिति में, मामले की सुनवाई की जाएगी एवं आपकी अनुपस्थिति में फैसला भी जाएगा।
मेरे हाथ एवं इस न्यायाधिकरण की मुहर सहित 30 दिसंबर, 2019.
न्यायाधिकरण के आदेशानुसार
सहायक रजिस्ट्रार, डीआरटी-III, नई दिल्ली

**ऋण वसूली न्यायाधिकरण-III, दिल्ली के समक्ष**
संसद मार्ग, नई दिल्ली 110001

ऋण वसूली अधिकरण (प्रक्रिया निबंधन) 1993 के नियम 12 एवं 15 के साथ पठित बैंक एवं वित्तीय संस्थान अधिनियम 1993 की धारा 19(4) के अंतर्गत सूचना।
ओए नं. 451/2019/डीआरटी-III के मामले में
पंजाब नेशनल बैंक — बनाम — आवेदक
श्री राकेश सिंह पुंडीर एवं अन्य — प्रतिवादी
To,
D-1 श्री राकेश सिंह पुंडीर पुत्र राजेन्द्र सिंह पुंडीर
निवासी मकान नं. 1004, भूतल, सेक्टर-3, वैट सिटी, गाजियाबाद, उ.प्र.-201001
यहां भी: श्री राकेश सिंह पुंडीर पुत्र राजेन्द्र सिंह पुंडीर, सोसायटी, फ्रेंचुर सोसाइटी कॉरपोरेशन, ए-44/45, सेक्टर-62, नोएडा, उ.प्र.
यहां भी: श्री राकेश सिंह पुंडीर पुत्र राजेन्द्र सिंह पुंडीर, फ्लैट नं. 1216, टावर-8, अलिशान एलो-रॉकेडेली, गोल्फ सिटी एक्स-24, गाजियाबाद, उ.प्र.-201002
यहां भी: श्री राकेश सिंह पुंडीर पुत्र राजेन्द्र सिंह पुंडीर, 4072, ब्लॉक-3, [illegible]
D-2 श्रीमती नीतू पुंडीर पत्नी श्री राकेश सिंह पुंडीर
फ्लैट नं. 1216, टावर-8, अलिशान एलो-रॉकेडेली, गोल्फ सिटी एक्स-24, गाजियाबाद, उ.प्र.-201002
D-3 पी. कावेरी सहकारी आवास समिति लि.
335, दैनिक टॉवर सेक्टर-4, गाजियाबाद, उ.प्र.-201001
यहां भी: पी. कावेरी सहकारी आवास समिति लि., डी-237, पूर्वी तल, विनोद विहार, फेज-1, दिल्ली।
चूंकि, उपरोक्त याचिकाकर्ता ने आपके खिलाफ मामला दायर किया है और चूंकि अधिकरण को संतुष्ट कराया गया है कि मामले नोटिस से आपको इसे तामील कराना संभव नहीं है। इसलिए, विज्ञापन के जरिए आपको यह निर्देश देते हुए सूचित किया जाता है कि 30.03.2020 को प्रातः 10.30 बजे इस न्यायाधिकरण के समक्ष हाजिर होंगे।
यह ध्यान रहे कि इस न्यायाधिकरण में उपरोक्त तिथि को हाजिर नहीं होने की स्थिति में, मामले की सुनवाई की जाएगी एवं आपकी अनुपस्थिति में फैसला भी जाएगा।
मेरे हाथों एवं इस न्यायाधिकरण की मुहर सहित 30 दिसंबर, 2019.
न्यायाधिकरण के आदेशानुसार
सहायक रजिस्ट्रार, डीआरटी-III

भारत की आबादी ही उसकी सबसे बड़ी संपत्ति है। सिर्फ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से उसे सशक्त, कुशल और हुनरमंद बनाया जा सकता है। इसके लिए हमें डिजिटल माध्यमों का भी सहारा लेना पड़ेगा
**मुकेश अंबानी**, चेयरमैन, रिलायंस इंडस्ट्रीज (2017 में एक कार्यक्रम के दौरान)

# जितने ज्यादा हाथ, राष्ट्र निर्माण में उतना अधिक साथ

## खूबी

भारत के पास दुनिया की सर्वाधिक युवा आबादी है। यूनाइटेड नेशंस पापुलेशन फंड की स्टेट ऑफ वर्ल्ड्स पापुलेशन रिपोर्ट के अनुसार 10-24 साल के आयुवर्ग में भारत पहले स्थान पर है।

**41%** देश की आबादी में 20 साल से कम आयुवर्ग की हिस्सेदारी

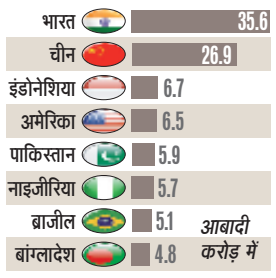


**50%** 20-59 साल की हिस्सेदारी

**9%** 60 साल से अधिक

### बड़ी ताकत

रिपोर्ट के अनुसार यह ऐसा दौर है जब दुनिया में युवाओं की संख्या अब तक की सर्वाधिक है। 10-24 साल के युवाओं की दुनिया में कुल 180 करोड़ आबादी है लेकिन 10 में से 9 युवा कम विकसित देशों में रह रहे हैं।

### भारत की संपदा

रिपोर्ट में कहा गया है कि 10 से 24 आयुवर्ग की भारतीय आबादी में हिस्सेदारी 28 फीसद है। यह देश की असली संपदा है। इनके बूते ही देश आर्थिक कुलांचे भर सकेगा। जरूरत सिर्फ इन युवाओं की बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य में निवेश करने की और उनके अधिकारों को संरक्षित किए जाने की है। यह युवा आबादी ही भविष्य की आविष्कारक, सृजनकर्ता, निर्माता और नेता है, लेकिन वे भविष्य तभी बदल सकेंगे जब उनके पास हुनर होगा, कौशल होगा, वे स्वस्थ होंगे, निर्णय ले सकेंगे और जीवन में अपनी रुचि को आगे बढ़ा सकेंगे।

### गांव ज्यादा युवा

हमारे शहरों में तमाम सुविधाएं, सहूलियतों और ज्यादा जागरूकता के चलते प्रजनन दर कम हो रही है। जबकि गांवों में अभी ऐसा नहीं हो सका है। लिहाजा ग्रामीण क्षेत्र शहरों के मुकाबले ज्यादा युवा हैं। जहां अपार संभावनाएं हैं।

**51.73%** ग्रामीण भारत की आबादी में 24 साल से कम आयु वालों की हिस्सेदारी

**45.9%** शहरी भारत में 24 साल से कम की हिस्सेदारी

आदिम भारतीय समझ में ज्यादा आबादी को कभी बोझ नहीं माना गया। यह धारणा मुखर रही कि बच्चा एक मुंह और दो हाथ के साथ पैदा होता है। कहीं न कहीं इस समझ ने देश की आबादी को महाकाय बनाने में भी अपनी भूमिका निभाई। कुछ दशक पहले तक जो लोग आबादी को समस्या मानते रहे हैं आज वे अपनी सोच बदलने को बेबस हुए हैं। हमारी बड़ी आबादी हमारा बड़ा संसाधन बन चुकी है। दुनिया में भारतीय आबादी की हिस्सेदारी करीब 18 फीसद है। वह अगर बड़ी उत्पादक है तो बड़े उपभोक्ता के रूप में भी घरेलू खपत को बढ़ा रही है। इसी आबादी के बूते अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्था कुलांचे भर रही है। यहां 91 फीसद आबादी 59 साल से कम उम्र की है। जहां दुनिया के अधिकांश देश बीमार और अपेक्षाकृत अधिक बुजुर्ग आबादी के बोझ से दबे हैं वहीं हमारे पास युवा और कार्यशील मानव संसाधन का जखीरा है। यही मानव संसाधन भारत को विश्व शक्ति की ओर बढ़ा रहा है। चुनौती सिर्फ हर हाथ को हुनर और हर दिमाग को कौशल युक्त बनाकर रोजगार से जोड़ने यानी जनसंख्या नियोजन की है। हमारा प्रयास जारी है, सरकारी नीतियां असर दिखा रही हैं। 2020 में युवा संसाधन से बड़ी उम्मीदें हैं।

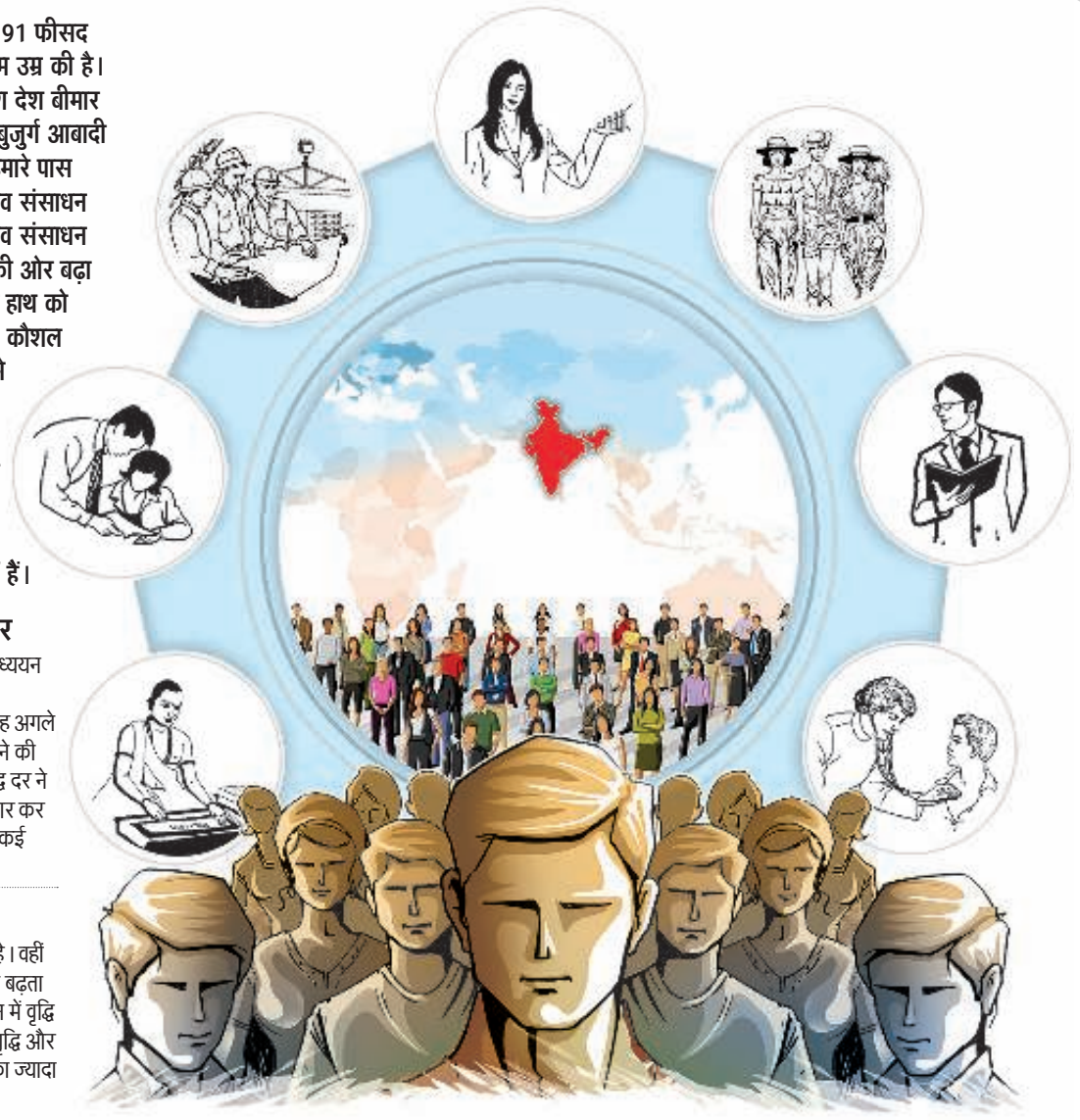

### आश्रितों में कमी

भारत की जनसांख्यिकीय की यह बड़ी अच्छाई बनती दिख रही है। पहले कमाता एक था खाने वाले कई होते थे। यह अनुपात धीरे-धीरे सुधर रहा है। अब कार्यशील आबादी के ऊपर निर्भर बच्चों (0-14) और बुजुर्गों (65-100) का अनुपात घटकर 0.55 रह गया है।

### आर्थिक विकास में मददगार

अर्न्स्ट एंड यंग और फिक्की के एक अध्ययन के अनुसार वर्तमान में भारत एक ऐसे ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है जहां पर वह अगले कई दशकों तक प्रचुर आर्थिक लाभ लेने की स्थिति में है। बड़ी आबादी और तेज वृद्धि दर ने एक ऐसा जनसांख्यिकीय पिरामिड तैयार कर दिया है जिसका लाभ देश-दुनिया को कई दशकों तक मिलता रहेगा।

### विकसित देश होंगे हम

चीन को 2015 से जनसांख्यिकीय खूबियों से मिलने वाला लाभ कम होता गया है। वहीं भारत को 2040 तक इसका लाभ मिलने का अनुमान है। कार्यशील आबादी का बढ़ता अनुपात श्रम उत्पादकता को बढ़ाने का मौका साबित हो सकता है। घरेलू उत्पादन में वृद्धि हो सकती है। सेवाओं से मिलने वाला राजस्व कई गुना बढ़ सकता है। बचत में वृद्धि और कार्यशील आबादी पर आश्रित बुजुर्गों और बच्चों का बोझ घटने से उनकी आय का ज्यादा हिस्सा अर्थव्यवस्था के सकारात्मक पक्षों में लगेगा।

### संसाधनों का बेहतर उपयोग

दुनिया के बहुत से देश हैं जहां पर भारत की तरह ही असीम संपदा है। बावजूद इसके उनका दोहन करने के लिए उपयुक्त लोग नहीं हैं। हालांकि भारत के साथ ऐसा नहीं हैं। संसाधनों के दोहन के लिए एक असीम ऊर्जा मौजूद है। जिसके श्रम से हम इसका इस्तेमाल बेहतर ढंग से कर सकते हैं।

### बड़ा बाजार

भारत दुनिया भर के कारोबारियों के लिए भले ही एक व्यापारिक स्थान हो लेकिन यह भी सत्य है कि यही व्यापार उस देश की अर्थव्यवस्था को आगे ले जाने में एक महत्वपूर्ण कारक बनता है। सवा सौ करोड़ से ज्यादा भारतवासियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना किसी एक के बस की बात नहीं है। ऐसे में यह जनसंख्या निवेश को भी प्रोत्साहन करेगी। खासतौर पर उपभोक्ता सामान बनाने वाली वो कंपनियां जिन्हें रोजमर्रा की जरूरत का सामान बेचना है।

### दूसरे देशों को भी उम्मीद

भारत के अलावा दुनिया के दूसरे देशों में जनसंख्या वृद्धि दर ऋणात्मक है। कार्यशील जनसंख्या धीरे-धीरे कम हो रही है। इससे इन देशों में रोजगार की संभावनाएं बढ़ेंगी। ऐसे में यह देश भारतीय नागरिकों की रोजगार की समस्याओं का बेहतर निदान कर सकते हैं।

### नए विचार, नया आगाज

एक अनुमान के मुताबिक, देश की जनसंख्या में हर साल करीब एक करोड़ नए लोग जुड़ते जाएंगे। ऐसे में यह संख्या नए विचारों को जन्म देगी। उम्मीद की जा रही है कि नया टैलेंट अपने साथ नई ऊर्जा लेकर आएगा और देश में औद्योगिक और अन्य संस्थानों में राष्ट्र निर्माण की दिशा में ज्यादा और बेहतर काम होगा।

### जनसांख्यिकी लाभ

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) ने कहा है कि 'जनसांख्यिकी लाभांश' के कारण जापान और चीन जैसे दुनिया के कई देशों ने अपनी विकास क्षमता को बढ़ाया है। जापान का जनसांख्यिकी लाभांश 2004 में, इटली का 2002 में खत्म हो चुका है। वहीं कोरिया का 2027 में, स्पेन का 2014 में, चीन का 2031 में और ब्राजील का 2038 में खत्म होगा। हालांकि भारत का जनसांख्यिकी लाभांश 2055 में खत्म होगा।

### विदेशी मुद्रा का सवाल

दुनिया के दूसरे मुल्कों में रह रहे भारतीय हर साल करोड़ों डॉलर की मुद्रा भारत भेजते हैं। 2017 की तुलना में 2018 में यह राशि दोगुनी हो गई थी। आगामी वर्षों में इस राशि के और ज्यादा बढ़ने का अनुमान लगाया जा रहा है। दुनिया के दूसरे देशों में जितने भारतीय जाएंगे वो विदेशी मुद्रा भेजते रहेंगे।

## खामी

### कुशल बनाम अकुशल श्रम

93 फीसद भारतीय श्रमशक्ति असंगठित क्षेत्र में काम करती है। श्रमशक्ति के इस बड़े हिस्से का औपचारिक कौशल विकास तंत्र से दूर-दूर का नाता नहीं है। मुश्किल से 2.5 फीसद असंगठित श्रमशक्ति औपचारिक कौशल विकास कार्यक्रम से जुड़ पाती है। इसी तरह संगठित क्षेत्र की 11 फीसद श्रमशक्ति का ही औपचारिक स्तर पर कौशल विकास हो पाता है। इसी तरह असंगठित क्षेत्र में 12.5 फीसद श्रमशक्ति और संगठित क्षेत्र की 10.4 फीसद श्रमशक्ति का ही अनौपचारिक कौशल विकास हो पाता है।

### भविष्य में कुशल श्रम की जरूरत

2020 तक 200 करोड़ अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या के साथ 2025 तक हम दुनिया की सबसे बड़ी श्रमशक्ति होंगे। इसी दौरान हम अपने कौशल विकास कार्यक्रमों के बूते 4.7 करोड़ कुशल श्रमशक्ति तैयार कर सकते हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि इसी समयावधि के दौरान दुनिया में 5.65 करोड़ कुशल कामगारों की बड़ी कमी होगी। यह कमी भारत के कुशल श्रमशक्ति से पूरी की जा सकेगी।

### अनुमान

2025 तक भारत की जनसंख्या 1.4 अरब तक पहुंचने का अनुमान है। उस दौरान जो जनसंख्या पिरामिड होगा उसमें 15-64 आयु वर्ग का सर्वाधिक विस्तार होगा। कार्यशील आबादी की संख्या 2011 में 76.1 करोड़ के मुकाबले बढ़कर 2020 में 86.9 करोड़ होगी। नतीजतन 2020 तक देश जनसांख्यिकीय बोनस का अनुभव करता रहेगा। इस दौरान कार्यशील आबादी की वृद्धि दर कुल आबादी की वृद्धि दर से अधिक होगी।

### कौशल विकास

हर हाथ को हुनर और हर दिमाग को कौशल युक्त करने के लिए भारत ने कौशल विकास कार्यक्रम में तेजी दिखाई है। सरकार के थिंक टैंक इंस्टीट्यूट ऑफ अप्लाइड मैनपॉवर रिसर्च के अनुसार 2022 तक 24.9 से 29.0 करोड़ लोगों को कौशल प्रदान करने की जरूरत होगी। अगले दशक तक हर साल करीब 1.2 करोड़ लोग देश की श्रमशक्ति में शामिल होंगे। देश की कुल प्रशिक्षण क्षमता 43 लाख है। करीब 64 फीसद लोग हर साल सामान्य कौशल विकास से दूर रह सकते हैं। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में हमारे यहां प्रति वर्ष 55 लाख छात्रों का नामांकन होता है जबकि चीन में यह आंकड़ा 9 करोड़ और अमेरिका में 1.13 करोड़ है।

# दुनिया में पहुंचा दिया वड़ियों का जायका

**राजीव शर्मा** • लुधियाना

लुधियाना की प्रख्यात अमृतसरियां दी हट्टी ने पापड़ और वड़ियों में देश ही नहीं बल्कि विदेश में भी नाम कमाया है। घरेलू बाजार के अलावा यहां की बनी लजीज वड़ियां ऑस्ट्रेलिया और कनाडा सहित विदेशी बाजार में पहुंच रही हैं। नई पीढ़ी के युवा संचालक अमनप्रीत सिंह की सूझबूझ ने पारिवारिक कारोबार को ब्रांड बना दिया है। नामी बहुराष्ट्रीय रिटेल चेन के स्टोर्स में भी उपलब्ध हैं। दिलचस्प यह कि 82 साल पहले महज सौ रुपये से शुरू हुआ छोटा सा कारोबार आज करोड़ों में जा पहुंचा है।

**दादाजी की रेसिपी में नया इनोवेशन कर खड़ा किया जीआरडी ब्रांड, दे रहे रोजगार**

अमृतसरियां दी हट्टी के युवा संचालक अमनप्रीत सिंह बताते हैं कि पापड़ और वड़ियां तैयार करने की खास रेसिपी उनके दादा पॉल सिंह ने तैयार की थी। आज उसी रेसिपी के दम पर तीसरी पीढ़ी कारोबार को विस्तार दे चुकी है। साल 2000 में अमरप्रीत सिंह ने भी शिक्षा पूरी करने के बाद पारिवारिक कारोबार से जुड़ना ही बेहतर समझा। उन्होंने कारोबार को और विस्तार देने के लिए पापड़-वड़ियों में नई इनोवेशन करना शुरू की। साथ ही जीआरडी ब्रांड के तहत अपने उत्पादों की मार्केटिंग शुरू की। अमनप्रीत ने बताया कि रेसिपी के मद्देनजर सारे उत्पाद मशीन की जगह हाथों से ही तैयार कराते हैं। लिहाजा सैकड़ों लोगों को रोजगार भी मुहैया करा रहे हैं।

# सूझबूझ से रोजगार...

**तेजी से बदलती तकनीक की दुनिया सिर्फ हमारे जीवन को आसान नहीं बना रही, नए-नए रास्ते भी खोल रही है। बस, जरूरत माहौल को भांपने, कुछ नया करने की ललक और काबिलियत की है। ऐसे युवा उद्यमी, जो अपनी सूझबूझ से न केवल अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए भी नई राह बना रहे हैं, उन लोगों के लिए प्रेरणा हैं, जो नौकरियों की कमी का बहाना बनाकर बेकारी में वक्त गुजार खुद को और सिस्टम को कोसते हैं। संभावनाओं की कहीं कमी नहीं है, यह भी जरूरी नहीं कि भरपूर लागत और उच्चशिक्षा पैमाना है, जरूरत केवल आइडिया की है। दुनिया केवल आइडिया के पीछे भाग रही है। भारत में भी आइडिया को साकार करने के लिए स्टार्टअप योजना मौजूद है। आप भी कुछ सोचें...**

## जैविक अवशेष से बना रहे पशुआहार

**रंजन दवे** • जोधपुर

वेस्ट फूड मटेरियल को पौष्टिक पशु आहार में तब्दील कर रोजगार सृजित कर रहे जोधपुर निवासी इन इंजीनियरिंग छात्रों ने पिछले चार साल में अपने उद्यम की विशिष्ट पहचान बना ली है। इनका उद्यम क्रिमांशी राजस्थान में पशु आहार के लिए ख्यात हो गया है। युवाओं का कहना है कि कृषि और पशु पालन से जुड़े लोगों को इस रूप में कारगर सहयोग देने के साथ ही ग्रामीण अंचलों में स्वरोजगार का सृजन इनके स्टार्टअप की अवधारणा में शामिल है।

कंपनी के सीईओ निखिल बोहरा बताते हैं, इस पशु आहार के इस्तेमाल से पशुओं की मेडिकल देखभाल में 70 फीसद तक कमी आई। वहीं, दुग्ध उत्पादन में 25 फीसद तक की बढ़ोतरी। हम बाजारों में और घरों में उपयोग में लाई जाने वाली हरी सब्जियां और फलों के अवशेष को एकत्रित करते हैं।

तैयार हो रहे उत्पादों के साथ स्टार्टअप क्रिमांशी के फाउंडर। • नईदुनिया

हमारी कंपनी अब राजस्थान के अलावा मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, केरल, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में भी यूनिट डालने जा रही है। इस प्रोजेक्ट को सरकार की ओर से भी सहायता मिल रही है। सरकार ने हमें हरसंभव मदद देकर प्रोत्साहित किया है। राजस्थान सरकार के साथ-साथ रीको, सीआएआइई अमहदाबाद, विल ग्रो जैसे संस्थानों ने हमारे स्टार्टअप को सराहा है। अब पोल्ट्री और फिशरीज क्षेत्र में भी हम पशु आहार उपलब्ध कराने की योजना बना रहे हैं। इससे अनेक रोजगार सृजित होंगे।

# तीन लाख में खुद का इंटरनेट

**सुधीर सक्सेना** • लखीमपुर

हिमालय ने माइक्रोसॉफ्ट में मोटे पैकेज पर इंजीनियर की नौकरी पाने के बावजूद जॉब छोड़ी और इस स्टार्टअप के जरिये अपने शहर में खुद का अलग इंटरनेट नेटवर्क खड़ा कर दिया। वह भी महज तीन लाख रुपये खर्च करके। अब हिमालय दिग्गज मोबाइल कंपनियों की तरह लखीमपुर, उप्र में 25 किमी की रेंज तक लोगों को इंटरनेट सेवाएं प्रदान कर ठीकठाक कमाई कर रहे हैं। उनकी योजना पूरे जिले में इसका विस्तार करने की है।

लखीमपुर निवासी ज्ञानेंद्र गिरि बेटे हिमालय को इंजीनियर बनाना चाहते थे। पिता का सपना पूरा करने के लिए हिमालय ने देहरादून की पेट्रोलियम यूनिवर्सिटी से वर्ष 2016 में कंप्यूटर साइंस से बीटेक किया। पुणे में माइक्रोसॉफ्ट कंपनी में जॉब ऑफर मिला तो तत्काल ज्वाइन कर लिया, पर संतुष्ट नहीं हुए। दो साल नौकरी की, फिर जॉब छोड़कर नोएडा चले गए। वहां 2018 में इंटरनेट कनेक्टिविटी नेटवर्किंग में स्टार्टअप किया। पहला प्रयास असफल रहा, लेकिन वे हारे नहीं। गोला आकर नए सिरे से प्रयास किया।

हिमालय ने भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण में 10 मई 2019 को गो-गोला कम्युनिकेशन प्राइवेट लिमिटेड के नाम से अपनी कंपनी रजिस्टर कराई। लोहे की पाइप, रॉड और अन्य जरूरी उपकरण खरीदकर इंटरनेट टॉवर बनाना शुरू किया। टॉवर से इंटरनेट सिग्नल कंट्रोल रूम की डिवाइस तक पहुंचाने के जरूरी उपकरण लगाए और जुलाई 2019 से इंटरनेट सर्विस शुरू हो गई। इसमें तकरीबन तीन लाख रुपये का खर्च आया।

गोला की गन्ना विकास समिति में गो गोला इंटरनेट पर काम करते कर्मी। • जागरण

**गो गोला...**

- **माइक्रोसॉफ्ट में इंजीनियर की नौकरी छोड़ शुरू की खुद की कंपनी**
- **गो-गोला कम्युनिकेशन बनाकर 30 फीट ऊंचे टॉवर तैयार किए**

**दो टॉवर लगाए, 25 किमी में रेंज:** हिमालय के टॉवर की एयर रेंज लगभग 25 किलोमीटर है। गन्ना विकास समिति के 16 कंप्यूटरों का इंटरनेट गो-गोला से चल रहा है। कुछ बैंकों के साथ कुल 64 लोगों ने फिलहाल इसका कनेक्शन ले रखा है। गो-गोला इंटरनेट नेटवर्क 50 एमबीपीएस की स्पीड दे रहा है। यह सिर्फ इंटरनेट आधारित नेटवर्क है, इसमें स्पीड कम नहीं होती। न्यूनतम 444 रुपये प्रति माह शुल्क पर कनेक्शन देते हैं।

स्टार्टअप के लिए राह आसान नहीं थी। टेक्नालॉजी की जानकारी होने के चलते रास्ता बनाता गया। इंटरनेट आज हर किसी की जरूरत है। इसलिए खुद का नेटवर्क खड़ा किया। वैसे कम्युनिकेशन के क्षेत्र में बड़ी कंपनियां हैं, लेकिन हम अपने काम से संतुष्ट हैं। जल्द ही पूरे जिले में सस्ता नेट कनेक्शन देंगे।
**हिमालय**, फाउंडर, स्टार्टअप गो-गोला कम्युनिकेशन

# क्राल समुदाय को तरक्की की राह दिखा रहीं साइमा

**मिट्टी के बर्तनों को मॉडर्न लुक देकर हजारों साल पुरानी कला को दिया नया जीवन**

माटी को आकार देतीं साइमा सफी। • जागरण

**रजिया नूर** • श्रीनगर

श्रीनगर की साइमा शफी पेशे से सरकारी जूनियर इंजीनियर (जेई) है। कुछ समय पहले परिवार के साथ चंडीगढ़ घूमने गई थी तो वहां ब्रांडेड शोरूमों में मिट्टी के आकर्षक बर्तन देखे। दाम हजारों में थे। तब उसे कश्मीर के क्राल समुदाय का खयाल आया। ये समुदाय हजारों वर्षों से मिट्टी के बर्तन बनाता रहा है, लेकिन इनकी कला आधुनिकता के दौर में दम तोड़ गई। कश्मीर वापसी के बाद बेंगलुरु जाकर साइमा ने खुद मिट्टी के बर्तनों को मॉर्डन लुक बनाना सीखा। अब कश्मीर में वह क्राल समुदाय को यह कला निश्शुल्क सिखा रही हैं। तीन सौ से अधिक लोग इस कला को सीख चुके हैं। अब नए रूप में सामने आ रही इनकी कला को देश-विदेश में पसंद किया जा रहा है।

पुरातत्व विभाग के विशेषज्ञों के मुताबिक वादी में मिट्टी के बर्तन बनाने की कला का इतिहास 3000 ईसा पूर्व पीछे तक जाता है। विशेषज्ञों को श्रीनगर से सटे बुजहामा में खोदाई में मिले मिट्टी के विभिन्न बर्तन इस बात पर मुहर लगाते हैं। पुलवामा जिले के गुफक्राल इलाके (गुफा कश्मीरी में गुफा तथा क्राल कश्मीरी में मिट्टी की वस्तुएं बनाने वाले लोग) में प्राचीन गुफाएं हैं। कश्मीर में क्राल समुदाय की आबादी का पुख्ता आंकड़ा पता नहीं है, लेकिन दावा है कि इनकी आबादी डेढ़ लाख से अधिक है।

कई दशकों से कश्मीर में मिट्टी की वस्तुएं लोकप्रिय रही हैं। क्राल समुदाय बर्तन बनाकर भरण पोषण करते थे। पूजा में कश्मीरी पंडित मिट्टी के बर्तन इस्तेमाल करते थे। वर्ष 1989 में आतंकवाद के चलते पंडितों के सामूहिक पलायन से प्राचीन कला को भी धक्का लगा। रही सही कसर प्लास्टिक, स्टील, नान स्टिक कुकवेयर, ग्लावेयर ने पूरी कर दी।

बड़गाम के चरारे शरीफ इलाके के 57 वर्षीय अब्दुल रहमान ने कहा कि कई वर्षों पहले हमारे काम की बड़ी मांग थी। घर के सभी सदस्य इस काम में जुटे रहते थे। साइमा के कारण फिर उम्मीद जगी है कि हमारा यह काम फिर से रफ्तार पकड़ लेगा। मिट्टी के बर्तनों पर मॉडर्न टच लोग पसंद कर रहे हैं। अब खूब कमाई हो रही है। गांदरबल के वाकूरा के मुहम्मद सुभान ने कहा कि साइमा के कारण लोग हमारी कला के बारे में जानने लगे हैं। मुझे केवल माता क्षीर भवानी मेले पर मिट्टी के दीये बनाने का काम मिलता था। अब मुझे विभिन्न वस्तुओं विशेषकर खाने के बर्तनों और मिट्टी के दीये बनाने के बड़े आर्डर मिल रहे हैं। उन्हें पिछले साल माता क्षीर भवानी मेले पर पांच लाख दीये बनाने का आर्डर भी मिला था।

श्रीनगर के डाउन टाउन सफाकदल के की 28 वर्षीय साइमा शफी बताती हैं कि उन्होंने पोटरी (मिट्टी से वस्तुएं बनाने की कला) का कोर्स करने की सोची। वह तीन महीने की छुट्टी लेकर बेंगलुरू में क्ले स्टूडियो में कला सीखने चली गईं। वापस आकर घर में क्ले स्टूडियो खोला। मिट्टी के बर्तनों को मॉडर्न टच देने का हुनर सीखने के लिए क्राल समुदाय के लोगों के साथ स्थानीय युवा आने लगे हैं। साइमा कहती हैं कि दफ्तर से वापसी पर और छुट्टी का पूरा दिन वह क्ले स्टूडियो में गुजारती हैं। मैंने उन्हें समझाया कि यदि हम इस काम में आधुनिकता लाएं तो आपका हुनर और निखरेगा...।

## जला रहे घरों का चूल्हा

**सुनील शर्मा** • कोलकाता

जी हां, 61 वर्षीय रणधीर सिंह के कारण ही आज उनके गांव के 100 से अधिक लोगों के घरों में चूल्हा जल रहा है। वैशाली, बिहार के फतेहपुर बुजुर्ग गांव के रहने वाले रणधीर इकोनॉमिक्स (ऑनर्स) की डिग्री हासिल कर हावड़ा चले आए और कड़ी मेहनत कर मां जगदम्बा इलेक्ट्रिकल नाम से दो कारखाने खोले। इन कारखानों में उन्होंने स्थानीय युवकों को रोजगार देने के साथ ही अपने गांव के 100 से अधिक युवकों को काम दिया। बेरोजगारों को रोजगार देने का सिलसिला उन्होंने 1998 से शुरू किया और निरंतर जारी रखा।

# बदली किसानों की किस्मत

**ऋषि दीक्षित** • आगरा

किसान अजीतपाल सिंह ने एटा, उप्र के करीब एक दर्जन गांवों में किसानों की किस्मत बदल दी है। उन्होंने जब से बेबी कॉर्न (मक्का) की पैदावार शुरू क्षेत्र में समृद्धि ने दस्तक दे दी। इससे वे अपना भरण-पोषण तो कर ही रहे हैं, क्षेत्र में बड़ी संख्या में गरीब महिला-पुरुषों को रोजगार भी मुहैया करा रहे हैं।

भूड़नगरिया निवासी प्रगतिशील किसान अजीतपाल सिंह ने बताया कि करीब 15 वर्ष पहले आलू से तौबा कर बेबी कॉर्न की खेती शुरू की थी। किसानों से वर्तमान में बेबी कॉर्न 50 रुपये प्रति किलो की दर से खरीदा जा रहा है। एक बीघा में औसतन ढाई से तीन क्विंटल बेबी कॉर्न पैदा होता है। अजीत ने बताया कि फसल का अवशेष पशु चारे के काम आता है, वह भी तीन से साढ़े तीन हजार रुपये प्रति बीघे के हिसाब से बिक जाता है। बीज, खाद और सिंचाई का कुल मिलाकर जो खर्चा आता है वह दो से ढाई हजार रुपये प्रति बीघा आता है।

अजीतपाल सिंह

फसल में प्राकृतिक खतरा भी कम ही रहता है क्योंकि फसल कच्ची ही बाजार में जाती है। यही नहीं अब क्षेत्र में इसौली और भूड़नगरिया में दो पैकेजिंग इकाइयां भी खुल गई हैं, जहां स्थानीय महिला-पुरुषों को रोजगार मिल गया है।

बेबी कॉर्न का उपयोग मुख्यतः थाई व्यंजनों में ज्यादा होता है। कभी-कभी इसका भाव दो सौ रुपये प्रति किलो तक पहुंच जाता है।

दैनिक जागरण
सुधार की शुरुआत आज से ही करें, उसे कल पर न छोड़ें

# सिर उठाता अतिवाद

नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ देश के विभिन्न हिस्सों में हुई हिंसा के पीछे कट्टरपंथी इस्लामिक संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया यानी पीएफआइ का हाथ होने की आशंका गहराना चिंताजनक है। उत्तर प्रदेश पुलिस की मानें तो राज्य के विभिन्न हिस्सों में बड़े पैमाने पर जो हिंसा हुई वह इस संगठन की साजिश के चलते ही हुई। पुलिस ने इस संगठन के कुछ संदिग्ध सदस्यों को गिरफ्तार भी किया है। हिंसक गतिविधियों में पीएफआइ की लिप्तता संबंधी खुफिया सूचनाओं के चलते यदि केंद्रीय गृह मंत्रालय उस पर पाबंदी के बारे में विचार-विमर्श करने को बाध्य है तो इसका मतलब है कि मामला कहीं अधिक गंभीर हैं। पीएफआइ झारखंड में पहले से ही प्रतिबंधित है और कुछ अन्य राज्यों में भी उसकी गतिविधियां संदिग्ध पाई गई हैं। तथ्य यह भी है कि इसे प्रतिबंधित संगठन स्टूडेंट इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया यानी सिमी के सहयोगी समूह के तौर पर देखा जाता है। पीएफआइ ने कुछ ही समय में केरल से निकलकर जिस तरह देश के कई राज्यों में अपनी जड़ें जमा ली हैं उससे यही पता चलता है कि उसकी विचारधारा तेजी से फैल रही है। यह कोई शुभ संकेत नहीं, क्योंकि भले ही यह संगठन मुसलमानों और दलितों के अधिकारों की बात करता हो, लेकिन उसके तेवर और तौर-तरीके सवाल खड़े करने वाले हैं।

पीएफआइ के कई सदस्य हिंसक गतिविधियों में शामिल पाए गए हैं और केरल में तो उनके ठिकानों से आतंकी संगठनों का समर्थन करने वाला साहित्य और हथियार भी बरामद किए जा चुके हैं। इसके बावजूद विडंबना यह है कि केरल के राजनीतिक दल पीएफआइ को संरक्षण देने को तत्पर रहते हैं। केरल विधानसभा में पक्ष-विपक्ष की सहमति से नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ प्रस्ताव पारित होना यही बताता है कि अंध विरोध की राजनीति किस तरह अपनी हदें पार कर रही है। नागरिकता कानून विरोधी हिंसा में पीएफआइ और ऐसे ही अन्य अतिवादी संगठनों की हिस्सेदारी के अंदेशे के बाद भी विपक्षी दल अपने रुख-रवैये को बदलने से जिस तरह इन्कार कर रहे हैं उससे वे सबसे अधिक नुकसान मुस्लिम समाज का ही कर रहे हैं। वे अपने संकीर्ण राजनीतिक हितों की खातिर मुस्लिम समाज की छवि से खेल रहे हैं। बेहतर हो कि मुस्लिम समाज खुद ही इस पर गौर करे कि उसका इस्तेमाल कौन लोग किस मकसद से कर रहे हैं? उसे इस पर भी गंभीरता से ध्यान देना चाहिए कि पीएफआइ सरीखे अतिवादी संगठन उसे मुख्यधारा से दूर ले जाने का ही काम कर रहे हैं। नागरिकता कानून के विरोध को मुस्लिम हित का मसला बनाने वाले दावा कुछ भी करें, उन्हें मुसलमानों का हितैषी बिल्कुल भी नहीं कहा जा सकता।

# देर आयद दुरुस्त आयद

उत्तराखंड में मानव-वन्यजीव संघर्ष थामने को वन विभाग ने इस साल अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता में शामिल किया है। इसे देर से उठाया गया सही कदम माना जा सकता है। दरअसल 71 फीसद वन भूभाग वाले उत्तराखंड में फूल-फल रहा वन्यजीवों का कुनबा निश्चित रूप से राज्य को दुनिया में अलग पहचान दिलाता है। बावजूद इसके तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। वह मनुष्य एवं वन्यजीवों के बीच छिड़ी जंग। राज्य गठन के वक्त ही यह समस्या विरासत में उत्तराखंड को मिली थी। तब से लगातार ही इससे पार पाने को सरकार से लेकर शासन और वन विभाग के स्तर पर बातें तो खूब हुईं, मगर धरातल पर कहीं कोई कदम नहीं उठाए गए। यह अनदेखी ही भारी पड़ रही है और इसका खामियाजा मनुष्य व वन्यजीव दोनों को कीमत देकर चुकाना पड़ रहा। प्रदेश का शायद ही कोई क्षेत्र ऐसा होगा, जहां यह जंग नजर न आती हो। रोजाना ही वन्यजीवों के हमले सुर्खियां बन रहे हैं। विभागीय आंकड़ों को ही देखें तो दो दशक में जंगली जानवरों के हमलों में 822 लोगों की जान गई, जबकि 2800 से ज्यादा घायल हुए हैं। यही नहीं, इस अवधि में 1700 से ज्यादा गुलदार, हाथी व बाघों की मौत हुई। अंदाजा लगाया जा सकता है कि जंग किस कदर चिंताजनक स्थिति में पहुंच चुकी है। यदि समय रहते इसे थामने के उपाय कर लिए गए होते तो आज हालात ऐसे नहीं होते। खैर, अब जबकि पानी सिर से ऊपर बहने लगा है तो सिस्टम भी नींद से जागा है। वन महकमे ने मानव-वन्यजीव संघर्ष रोकने को इस साल अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता में शामिल कर प्रभावी कदम उठाने का इरादा जताया है। इसके तहत मनुष्य और वन्यजीव सामंजस्य के साथ रहें, इस पर खास जोर रहेगा। यही नहीं, वन्यजीव प्रभावित क्षेत्रों में विभाग की क्विक रिस्पांस टीमों का गठन तेज किया गया है तो ग्राम स्तर पर विलेज वालेंटरी प्रोटेक्शन फोर्स बनाई जा रही हैं। संवेदनशील इलाकों में वन्यजीवरोधी बाड़, मजबूत सौर ऊर्जा बाड़ समेत अन्य कई कदम उठाए जा रहे हैं। इसके साथ ही जितने संरक्षित क्षेत्र हैं, वहां ईको डेवलपमेंट कमेटियां गठित की जा रही हैं। इन कमेटियों के सदस्यों को तकनीकी रूप से दक्ष किया जाएगा, ताकि वे स्वरोजगार कर आर्थिकी संवार सकें। साथ ही मनुष्य की जंगल पर निर्भरता कम से कम हो। वन पंचायतों को भी सक्रिय किया जा रहा है। उम्मीद की जानी चाहिए कि महकमा अपनी कार्ययोजना को मजबूती के साथ धरातल पर उतारेगा।

**राज्य में गहराते मानव-वन्यजीव संघर्ष को थामने की दिशा में इस साल ऐसे उपायों को गति मिलेगी, जिससे मनुष्य भी महफूज रहें और वन्यजीव भी**

# नागरिकता कानून का कुतर्क भरा विरोध

डॉ. सुधांशु त्रिवेदी

**असम की कांग्रेस सरकार ने जो चाहा, जो मनमोहन सिंह ने कहा और जो गांधी जी का मंतव्य था वही तो मोदी सरकार ने सीएए के जरिये किया है**

पूर्व गृह और वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने 'संवैधानिक मूल्यों को बचाने का समय' शीर्षक से आलेख लिखकर केंद्र की मोदी सरकार पर अनेक आरोप लगाए। उसमें यथार्थ है या छल, यह समझा जाना चाहिए। अक्टूबर 2019 में आइएमएफ की प्रथम महिला प्रबंध निदेशक ने वाशिंगटन में नया पदभार ग्रहण करते समय कहा कि 90 प्रतिशत विश्व मंदी के दौर में है। अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य और व्यापार के संगठन अंकटाड ने भी विश्व के वाणिज्यिक विकास की दर अगले वर्ष के लिए घटाकर प्रस्तुत की है। इस खुली अर्थव्यवस्था के दौर में भारत पर उसका प्रभाव स्वाभाविक है। फिर भी आज हमारा विदेशी मुद्रा भंडार सर्वोच्च स्तर पर है और मोदी सरकार आने के बाद व्यापार करने की सुगमता की अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में भारत 140वें से 63वें स्थान तक पहुंचा है। विगत छह महीने में सरकार ने इतने बड़े निर्णय लिए हैं जितने पूरे 70 वर्ष में नहीं लिए जा सके। स्त्रियों के सम्मान, राष्ट्रीय एकता, अखंडता और सुरक्षा से जुड़े हुए तीन तलाक, अनुच्छेद 370 और नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) जैसे युगांतकारी कानून एक संवेदनशील, परंतु सुदृढ़ भारत के भविष्य की आधार शक्ति बनने जा रहे हैं, परंतु इन सारे निर्णयों में बकौल चिदंबरम जी संवैधानिक संकट नजर आता है। वह स्वयं एक बड़े वकील भी हैं। क्या वह एक भी बिंदु उद्धृत कर सकते हैं जो सीएए में भारतीय संविधान की भावना के विपरीत हो।

सीएए जब पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों को संरक्षण देने की बात करता है तो यह भारत की प्राचीन परंपरा के अनुरूप तो है ही, बल्कि इन मजहबी हुकूमतों को पंथनिरपेक्ष लोकतांत्रिक भारत का जवाब है, जो हमारे क्षेत्रीय दायित्व के अनुरूप है। नागरिकता अधिनियम में कहीं भी मुस्लिम शब्द का उल्लेख नहीं है, परंतु सर्वाधिक बवाल उसी को लेकर किया जा रहा और प्रश्न पूछा जा रहा कि हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और ईसाई को ही क्यों, मुस्लिमों को क्यों नहीं? इस प्रश्न के राजनीतिक और नैतिक दो प्रकार के उत्तर हैं। राजनीतिक दृष्टि की बात करें तो स्वयं असम प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने 2012 में अपने प्रस्ताव में लिखा था 'कि विभाजन के बाद से अमानवीय यातना झेल रहे और असम में आए हुए बंगाली हिंदू, बौद्ध, ईसाई और अन्य अल्पसंख्यकों की नागरिकता के अधूरे कार्य को पूरा करने का समय आ गया है।' 20 अप्रैल, 2012 को असम के कांग्रेसी मुख्यमंत्री तरुण गोगोई यही अनुरोध करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री को पत्र लिखते हैं। 2003 में मनमोहन सिंह ने तत्कालीन गृहमंत्री आडवाणी जी से बांग्लादेश जैसे देशों के अल्पसंख्यकों के लिए नागरिकता का आग्रह किया। स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस कार्यसमिति ने 25 सितंबर, 1947 को प्रस्ताव पारित किया कि 'कांग्रेस पाकिस्तान के सभी गैर-मुस्लिमों (जो सीमा पार से आ रहे हैं)के जीवन और सम्मान की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध है और भविष्य में भी प्रतिबद्ध रहेगी।'

महात्मा गांधी ने भी 26 सितंबर, 1947 को अपनी प्रार्थना सभा में कहा था कि पाकिस्तान से हिंदू और सिख कभी भी और किसी भी तरीके से यहां आ सकते हैं और यह भारत की सरकार का प्रथम कर्तव्य है कि उन्हें सिर्फ शरण ही नहीं, बल्कि रोजगार और जीवन बेहतर करने की व्यवस्था सुनिश्चत करे। वास्तव में जो असम की कांग्रेस सरकार ने चाहा, जो मनमोहन सिंह ने कहा, जो नेहरू की कांग्रेस का प्रस्ताव था और जो महात्मा गांधी का मंतव्य था वही तो मोदी सरकार ने नागरिकता कानून में प्रावधान किया है। चिदंबरम जी यह बताएं कि यदि सीएए संविधान विरुद्ध है तो क्या गांधी, नेहरू और आपकी पूरी पार्टी और सरकारें संविधान विरुद्ध थीं?

यदि नैतिक पक्ष पर विचार किया जाए तो देश के विभाजन के बाद वहां हिंदू, सिख, बौद्ध, ईसाई आदि तो फंस गए थे और पाकिस्तान के मुसलमान तो गांधी के सपनों का भारत तोड़कर जिन्ना की कुटिल नीति के सारथी बनकर हिंसा का तांडव करके पाकिस्तान छीन कर ले गए थे। उनके लिए नागरिकता की मांग करना क्या स्वतंत्रता आंदोलन की संपूर्ण भावना के साथ द्रोह करना नहीं है? सीएए का विरोध तो एक तरफ पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों के प्रति घनघोर असंवेदनशीलता और भारत विभाजन के खलनायकों के प्रति ममता दिखाने का अक्षम्य अपराध है। कहा जा रहा है कि पाकिस्तान के शिया, अहमदिया और मुहाजिर प्रताड़ित हैं तो उन्हें शरण क्यों नहीं? क्या कोई विपक्षी नेता बता सकता है कि इस वर्ग के कितने पाकिस्तानियों ने भारत में इस आधार पर शरण मांगी है। दूसरी ओर मनमोहन सरकार के समय यह आंकड़ा सामने आया था कि एक लाख 14 हजार से कुछ अधिक पाकिस्तानी हिंदुओं ने भारत में नागरिकता के लिए आवेदन किया है। संसद में सुखबीर बादल ने यह बोला कि अफगानिस्तान के 75000 सिख नागरिकता की प्रत्याशा में हैं। साफ है कि जो दुखियारे नागरिकता मांग रहे हैं उन पर तो सितम और जो मांग ही नहीं रहे हैं उस पर करम। पाकिस्तान के प्रथम प्रधानमंत्री लियाकत अली मुहाजिर थे। प्रथम विदेशी मंत्री जफरउल्ला खां अहमदिया थे और जिन्ना मूलतः शिया थे। पाकिस्तान के कट्टरपंथी तबके ने इन वर्गों को सत्ता से बेदखल करने के लिए षड्यंत्र किया तो यह पाकिस्तान के आंतरिक सत्ता संघर्ष का हिस्सा है न कि धार्मिक भेदभाव का।

अब तो जो राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर जनगणना का स्वाभाविक अंग है उस पर भी राजनीति शुरू हो गई है। राहुल, प्रियंका कह रहे हैं कि 2010 के एनपीआर और 2020 के एनपीआर में अंतर है। यह हास्यास्पद तर्क है। देश का कोई भी प्रोफार्मा दस साल में कुछ संशोधनों के साथ ही आता है। 2010 का प्रोफार्मा भी 2000 से बहुत अलग था। एक प्रश्न यह है कि माता-पिता का नाम और स्थान क्यों मांगा जा रहा है? पहली बात एनपीआर में कोई कागजात नहीं मांगे जा रहे हैं, सिर्फ जानकारी मांगी जा रही है। वह भी इसलिए कि आयुष्मान भारत जैसी योजना में परिवार के सभी सदस्यों की जानकारी आवश्यक है। मां-बाप के निवास स्थान के पीछे तर्क यह है कि यदि कोई मुंबई या दिल्ली में कार्यरत है और उसके मां-बाप यूपी या बिहार में कहीं रहते हैं तो अगर उनका निवास स्थान नहीं ज्ञात होगा तो उस स्थान से जुड़े अस्पतालों में उन्हें स्वास्थ्य बीमा की सुविधा मुंबई या दिल्ली के कार्ड पर कैसे मुहैया कराई जाएगी?

आज भारत की 75 प्रतिशत आबादी 25 साल से कम की है। इसमें लगभग सभी कभी न कभी स्कूल गए हैं। गत 25 वर्षों में स्कूल जाने वाला कौन से बालक-बालिका हैं, जिसने माता-पिता का नाम और निवास स्थान स्कूल में न दिया हो? समस्या केवल असम और बंगाल के उन घुसपैठियों को होगी जो छल-बल से अथवा वहां की सरकारों की मिलीभगत से पिछले 25-30 वर्षों में नागरिकता ले चुके हैं। जो लोग एनपीआर का विरोध कर रहे हैं वे क्या घुसपैठियों को संरक्षण दे रहे हैं?

(लेखक भाजपा के राज्यसभा सदस्य हैं)

response@jagran.com

# पड़ोस के अल्पसंख्यकों की घातक अनदेखी

दिव्य कुमार सोती

**पाक से भारत आने वालों में ज्यादातर दलित हिंदू हैं, फिर भी कई दलित नेता नागरिकता कानून के विरोध में लगे हैं**

वर्ष 1971 के भारत-पाक युद्ध में अमेरिका पाकिस्तान का साथ दे रहा था, पर पूर्वी पाकिस्तान में पाक फौज द्वारा किए जा रहे जनसंहार ने ढाका में तैनात अमेरिकी विदेश विभाग के अधिकारियों को अंदर तक झकझोर दिया था। वे वाशिंगटन को भेजे जा रहे अपने खुफिया संदेशों में बांग्ला भाषियों और खास तौर से पूर्वी पाकिस्तान में रहने वाले हिंदुओं के भीषण नरसंहार का आंखों देखा हाल लिख रहे थे। यूं तो झगड़ा पश्चिमी पाकिस्तान के उर्दू भाषी और पूर्वी पाकिस्तान के बांग्ला भाषी मुसलमानों के बीच था पर पाक फौज के जनरलों और जमात-ए-इस्लामी के मौलानाओं को लगता था कि बंगाली मुसलमान बंगाली हिंदुओं के सांस्कृतिक प्रभाव में आकर इस्लाम से भ्रष्ट हो चुके हैं और इसलिए पाकिस्तान से अलग होना चाहते हैं। इसी कारण हिंदुओं पर खास तौर पर जुल्म ढाया जा रहा था। हिंदुओं की मार-काट इतनी बर्बर थी कि ढाका में तैनात अमेरिकी राजनयिकों को अपनी सरकार की पाकिस्तानपरस्त नीति की निंदा करते हुए एक विरोध पत्र वाशिंगटन को भेजना पड़ा। यह अमेरिका के इतिहास में राजनयिकों के द्वारा भेजा गया पहला ऐसा पत्र था। इस जनसंहार और उससे उपजे शरणार्थी संकट से निपटने के लिए भारत को हस्तक्षेप करना पड़ा और इसके चलते ही बांग्लादेश का जन्म हुआ। शुरू में तो यह धर्मनिरपेक्ष देश था पर कुछ अर्से बाद ही वह 1975 में इस्लामिक देश में बदल गया और फिर वहां के इस्लामिक कट्टरपंथियों ने हिंदू अल्पसंख्यकों पर अत्याचार करना शुरू कर दिया। इस अत्याचार के पहले शिकार दलित हिंदू बने, क्योंकि वही ज्यादा असहाय थे।

1947 में पूर्वी पाकिस्तान यानी आज के बांग्लादेश में हिंदुओं की जनसंख्या तकरीबन 31 प्रतिशत थी जो आज मात्र 8 प्रतिशत के करीब रह गई है। इस अवधि में बांग्लादेश की कुल आबादी तकरीबन सवा तीन गुना बढ़ चुकी है। न्यूयार्क स्टेट यूनिवर्सिटी की शोधकर्ता शची दस्तीदार ने 2008 में किए गए अपने शोध में पाया था कि 4 करोड़ 90 लाख हिंदू बांग्लादेश से गायब हो चुके हैं। धार्मिक आधार पर उत्पीड़न की ऐसी दूसरी मिसाल नहीं है। जाहिर है या तो इन हिंदुओं को मार डाला गया या धर्म परिवर्तन या फिर पलायन के लिए मजबूर कर दिया गया। यही हाल अफगानिस्तान में हुआ, जहां 1970 के दशक में हिंदू और सिखों की जनसंख्या सात लाख हुआ करती थी। यह वर्तमान में घटकर मात्र 2500 रह गई है। पिछले तीन दशक में 90 फीसद सिख और हिंदू अफगानिस्तान छोड़ कर भाग चुके हैं और बाकी इस्लामिक कट्टरपंथीयों का निशाना बन चुके हैं। पाकिस्तान में भी हालात कुछ अलग नहीं हैं। 1947 में बंटवारे के समय वहां हिंदुओं की जनसंख्या 15 प्रतिशत थी जो आज मात्र डेढ़-दो प्रतिशत रह गई है। अब जरा इसकी तुलना भारत से कीजिए। 1951 से 2011 के बीच मुसलमानों की जनसंख्या में भागीदारी 9.6 प्रतिशत से बढ़कर 14.2 प्रतिशत हो गई, जबकि हिंदुओं की जनसंख्या का प्रतिशत 84.1 प्रतिशत से घटकर 78.6 हो गया।

आखिर नागरिकता कानून को भेदभाव भरा बताने वाले यह क्यों नहीं देख रहे कि पाकिस्तान, बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के साथ ऐसा क्या किया जा रहा कि वे लाखों की संख्या में गायब होते जा रहे हैं? इसे बंटवारे के बाद पाकिस्तान के कश्मीर पर हुए हमले के दौरान उसके कब्जे में आए शहरों मे हुए घटनाक्रम से आसानी से समझा जा सकता है। पीओके के मीरपुर जिले की हिंदू आबादी तकरीबन10000 थी जो शरणार्थियों के आने के चलते 25000 तक बढ़ गई थी। इनमें से मात्र 2000 लोग ही जीवित भारत पहुंच पाए। सैकड़ों की संख्या में अपहृत हिंदू महिलाओं को झेलम, रावलपिंडी और पेशावर में बेच दिया गया। पाकिस्तान, बांग्लादेश में आज भी गैर-मुस्लिमों पर हमले बेहद आम हैं। स्थितियां ऐसी बन चुकी हैं कि गैर मुस्लिमों के पास इन देशों को छोड़कर भागने या इस्लाम को कुबूल करने या फिर जानवरों जैसा जीवन जीने और मारे जाने के अलावा कोई चारा नही। इसका एक प्रमाण पाकिस्तान के हिंदू क्रिकेटर दानिश कनेरिया हैं।

मानवाधिकार संगठनों और पाक मीडिया की की मानें तो पाकिस्तान में हर साल तकरीबन 1000 हिंदू लडकियों का अपहरण कर लिया जाता है और अपहरणकर्ता जबरन उनका धर्म बदलवा कर उनसे शादी कर लेते हैं। इनमें बड़ी तादाद नाबालिग लड़कियों की होती है। पाकिस्तानी महिला पत्रकार आयशा असगर की मानें तो पाकिस्तान में हर महीने 20-25 हिंदू और ईसाई लड़कियां बलात्कारियों का शिकार बनती हैं। स्थितियां इतनी विकट हैं कि पेशावर जैसे इलाकों में हिंदू और सिख शवों का दाहकर्म न कर पाने के कारण उन्हें दफनाने के लिए मजबूर हैं। हिंदू मंदिरों और गुरूद्वारों पर हमले होते ही रहते हैं।

पाकिस्तान हिंदू कांउसिल की मानें तो धार्मिक उत्पीड़न के चलते 5000 हिंदू हर साल भारत पलायन कर रहे हैं। 1947 में बंटवारे के बाद पाकिस्तान में बचे हिंदुओं में से ज्यादातर दलित और आदिवासी हैं, जिन्हें पाकिस्तान सरकार ने भारत नहीं आने दिया था। पाकिस्तान में भारत के पहले उच्चायुक्त श्रीप्रकाश ने अपने संस्मरणों में लिखते हैं कि जब उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लियाकत अली से प्रार्थना की कि इन लोगों को भारत जाने दिया जाए तो लियाकत ने जवाब दिया कि अगर इन्हें जाने दिया तो कराची की गलियां और शौचालय कौन साफ करेगा? पाकिस्तान में दलितों की दुर्दशा का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि पाकिस्तान के पहले कानून मंत्री बनने वाले दलित नेता जोगेंद्रनाथ मंडल तक को भागकर भारत में शरण लेनी पड़ी थी। पाकिस्तान से भारत भाग कर आ रहे हिंदुओं में ज्यादातर संख्या दलितों और आदिवासियों की है, लेकिन कई दलित नेता भी नागरिकता कानून के विरोध में जुटे हुए हैं। आखिर इन्हें दलित हितैषी कैसे कहें? सीएए के जो आलोचक यह कहते हैं कि यह धर्म के आधार पर भेदभाव कर समानता के अधिकार का हनन करता है, वे यह भूल जाते हैं कि भारतीय संविधान युक्तियुक्त वर्गीकरण की अनुमति देता है। समानता का संवैधानिक सिद्धांत यह है कि असमान परिस्थिति वाले समूहों के साथ समानता का व्यवहार असमानता उत्पन्न करता है। पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में मुसलमानों का धर्म राज्य द्वारा संरक्षित है जबकि इस्लाम से इतर किसी धर्म को कोई संरक्षण नहीं है। इसीलिए वहां से आने वाले मुस्लिमों और गैर-मुस्लिमों से समानता का व्यवहार नहीं किया जा सकता।

(लेखक कांउसिल फार स्ट्रैटेजिक अफेयर्स से संबद्ध सामरिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

## ऊर्जा

### काल चक्र

काल चक्र में नए-पुराने के मायने नहीं होते, यह अतीत वर्तमान-भविष्य की त्रिपक्षीय किंतु एकल, अनवरत अस्मिता है। काल की परिकल्पना एक चक्र के रूप में की गई है जो क्रमशः आगे की ओर घूमता रहता है और कभी पूर्व अवस्था में नहीं लौटता। इस चक्र की धुरी वर्तमान है जिसके एक छोर पर अतीत है तो दूसरे पर भविष्य। 'एक नदी में दो बार नहीं नहाया जा सकता' से आशय है कि गुजर चुकी परिस्थिति हूबहू उसी रूप में पुनः नहीं आएगी। उद्भव होते रहने यानी जीवंतता की शर्त है परिवर्तनशीलता, जो सृष्टि को चलायमान रखती है। स्थितियां-परिस्थितियां स्थाई नहीं रहतीं, इन्हें बदलना ही है। स्थाई है तो मनुष्य का दिव्य स्वरूप, जिसे अपने मूल स्थान यानी परम शक्ति में समा जाना है।

प्रकृति का विधान है, एकबारगी जीवन में ढाल लिए गए व्यवहार और सोच में निरंतर संवृद्धि होती रहेगी। हृदय में प्रेम, सौहार्द, दया, जिन भी भावों को संजोते और सिंचित करेंगे, वही भाव कालांतर में गहराते रहेंगे। तो भी, अपनाई गई जीवनशैली में त्रुटियां देख सकने और संशोधन के लिए प्रतिबद्ध और सहर्ष तत्पर सुधी जन अथक प्रयास से जीवन को नई दिशा दे डालते हैं। वर्तमान को अतीत से हेय मानने वाले या सदा सुनहरे भविष्य के ख्यालों में मग्न रहने वाले वर्तमान सुखों से वंचित रहेंगे। समय की परिवर्तनशीलता को समझने वाले विश्वस्त रहते हैं कि जब वे दिन न रहे तो ये दिन भी न रहेंगे। जीवन के प्रत्येक क्षण का आस्वादन लेना उसका स्वभाव होता है। कल कुछ नहीं होगा, वह आएगा ही नहीं। यह प्रवृत्ति जीवन में अनायास पसर जाने वाली नीरसता और नैराश्य को निरस्त करती है, उसके जीवन को बोझिल नहीं बनने देती। आशा और प्रफुल्लता से सराबोर, वह सार्थक जीवन बिताने में विश्वास रखता है। वह जीवन में अनिवार्यतः आतीं उलझनों और समस्याओं के समक्ष घुटने नहीं टेक देता। उसे अहसास रहता है कि जीवन पथ की मनुष्य की परख उसकी विफलताओं से नहीं, बल्कि उसके पुनः उठने और अदम्य साहस तथा उत्साह के साथ कर्मशील रहने से होती है।

हरीश बड़थ्वाल

# वन से मिली खुशियों की सौगात

बाल मुकुंद ओझा

**वन हमसे लेता कुछ नहीं है, पर देता बहुत कुछ है। ऐसे में वन क्षेत्र में वृद्धि की खबर मानव जीवन के लिए सुखद कही जा सकती है**

वन मानव का स्वाभाविक मित्र रहा है। सुख और दुख, दोनों में वन ने अपनी मित्रता निभाई है। हमने अवश्य अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर अपने मित्र वन पर कुल्हाड़ी चलाई है। वन हमसे लेता कुछ नहीं है, पर देता बहुत कुछ है। ऐसे में वन क्षेत्र में वृद्धि की खबर मानव जीवन के लिए सुखद कही जा सकती है। देश और दुनिया में बढ़ते प्रदूषण के बीच भारत के लिए यह राहत की खबर है। पिछले दो वर्षों में देश के हरित क्षेत्र में 5,188 वर्ग किमी की बढ़ोतरी हुई है। 2014 से 2019 के दौरान वन क्षेत्र में 13 हजार वर्ग किमी का इजाफा हुआ है। इसमें सबसे ज्यादा योगदान कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, केरल, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश का रहा है। इन प्रदेशों में वन क्षेत्र में अच्छी बढ़ोतरी हुई है, जबकि पूर्वोत्तर राज्यों में जंगल क्षेत्र पहले के मुकाबले घटा है। फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया-2019 रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया में भारत ही एक ऐसा देश है जहां घने, मध्यम और कम घने जंगलों में एक साथ वृद्धि देखने को मिली है। देश का कुल वन क्षेत्र 712249 वर्ग किमी है। वहीं जंगल और पेड़ों से आच्छादित क्षेत्र 807276 वर्ग किमी है जो देश के कुल क्षेत्रफल का 24 फीसद है। एक क्षेत्र जहां पेड़ों का घनत्व अत्यधिक रहता है उसे वन कहते हैं।

जैसे-जैसे सभ्यता का विकास हुआ वैसे-वैसे मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वृक्षों को काटना आरंभ कर दिया। वनों की लगातार कटाई होती गई और वातावरण पर भी इसका प्रभाव पड़ा। वन का मतलब केवल पेड़ नहीं है, बल्कि यह एक संपूर्ण जीवंत समुदाय है। जंगल हमारे जीवन की बुनियाद है जो हमारे पर्यावरण के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक स्थिति को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वन इंसानों और विभिन्न जीव-जंतुओं तथा पर्यावरण को कई प्रकार के लाभ पहुंचाता है। पेड़ों की जड़ें मिट्टी को जकड़े रखती हैं। इस प्रकार वे भारी बारिश के दिनों में मृदा का अपरदन और बाढ़ भी रोकती हैं। पेड़ कार्बन डाईऑक्साइड अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। मनुष्य और अन्य किसी भी प्राणी का जीवन ऑक्सीजन के बिना नहीं चल सकता। पेड़ पृथ्वी के लिए सुरक्षा कवच का काम करते हैं और जंगली जंतुओं को आश्रय प्रदान करते हैं। पेड़ प्रकाश का परावर्तन घटाते हैं, ध्वनि को नियंत्रित करते हैं और हवा की दिशा को बदलने एवं गति को कम करने में मदद करते हैं।

वृक्ष और वन भू-जल को भी संरक्षित करते हैं। जैव-विविधता की रक्षा भी वनों की रक्षा से ही संभव है। विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए बहुमूल्य वनौषधियां हमें जंगलों से ही मिलती हैं। दुनिया में जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक विकास और आधुनिक जीवन शैली की वजह से प्राकृतिक वनों पर मानव समाज का दबाव बढ़ता जा रहा है। इसे ध्यान में रखकर मानव जीवन की आवश्यकताओं के हिसाब से वनों के संतुलित दोहन तथा नए जंगल लगाने के लिए भी विशेष रूप से काम करने की जरूरत है।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

## मेलबाक्स

### अतार्कित सुझाव

डॉ. भरत झुनझुनवाला ने अपने आलेख 'नए साल की आर्थिक चुनौतियां' में भारत की अर्थव्यवस्था में दिख रही सुस्ती के पीछे जिन वजहों को गिनाया है और उनके समाधान के लिए जिन तरीकों की बात की है, उनमें से अधिकांश से सहमत नहीं हुआ जा सकता। कार्यशील आबादी के आधार पर लेखक ने जो यह निष्कर्ष निकाला है कि फिलहाल हमारी बड़ी जनसंख्या हमारी पूंजी है, न कि बोझ, वह सही नहीं। यह समझना होगा कि बढ़ी हुई कार्यशील आबादी तभी तक एक संसाधन है, जब तक वह गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्यों में लगी हुई हो, लेकिन ऐसे रोजगार की कमी की स्थिति में वह अपराध, नशे की लत और विध्वंसक कार्यों में शामिल हो सकती है। दूसरी बात, अधिक जनसंख्या अधिक प्रदूषण का कारण बनती है, जिससे निपटने के लिए सरकारों को अपनी आय का एक बड़ा भाग खर्च करना पड़ता है। फलतः विकास के कार्यों के ऊपर खर्च करने की उसकी क्षमता कमजोर होती है। लेखक ने एक बात और कही है कि केंद्र सरकार को वित्तीय घाटा, जो वर्तमान में 3.4 प्रतिशत के संतोषजनक स्तर पर है, की कीमत पर भी सड़क, बिजली और वाईफाई उपलब्ध कराने पर खर्च बढ़ाना चाहिए। यह सलाह खतरनाक है। राजकोषीय अनुशासन किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। उसके अनियंत्रित होने की स्थिति में अर्थव्यवस्था की साख प्रभावित होगी, जिससे महंगाई बढ़ेगी और निवेश गिरेगा, जो अंततः रोजगार, उत्पादन और निर्यात सभी को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। मेरा मानना है कि बीते दिनों सरकार ने अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक सुधार के लिए जो इंसॉल्वेंसी एंड बैंक्रप्सी कोड लागू किया है तथा जीएसटी में भी आवश्यक सुधार किए हैं, वे देश की अर्थव्यवस्था पर दूरगामी असर डालेंगे। इनके अलावा प्रमुख रोजगार बहुल क्षेत्र एमएसएमई सेक्टर के रिवाइवल की भी जरूरत होगी।

chandankarn9470@gmail.com

### श्रेष्ठ है भारतीय संस्कृति

ब्रिटेन के लोगों को दुनिया के सबसे उन्नतिशील व सभ्य संस्कृति का वाहक माना जाता है। लेकिन इनका इतिहास क्रूरता से भरा पड़ा है। ब्रितानी शासकों ने भारत को कितना नुकसान पहुंचाया, इसका अब समग्र आकलन करना बहुत मुश्किल है। इन्होंने भारत, चीन तथा अफ्रीका आदि के अपने उपनिवेशों में एक मोटे आकलन के अनुसार तीन करोड़ भारतीयों को तो सीधे भूख से मारा, 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के असफल होने पर प्रतिशोध में जो इस महाद्वीप के लोगों के साथ क्रूरतम व्यवहार किया, उसके सामने एडोल्फ हिटलर का यहूदियों को मारने की संख्या कुछ भी नहीं है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 के बाद ब्रिटिश सेना ने जिस प्रकार भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों और उनके परिवारों से चुन-चुनकर बदला लिया उसका दुनिया में कोई अन्य उदाहरण नहीं है। कैरेबियाई कॉलोनियों में एक-एक अंग्रेज भूस्वामी के पास हजारों एकड़ जमीन और उनके खेतों में काम करने के लिए सैकड़ों दास-दासियों के झुंड हुआ करते थे। अपने मालिक के खेतों में काम करते-करते मर जाना ही इनकी नियति थी। दुनिया के देशों से इन्होंने धन बटोरा है। इनकी उन्नति के पीछे का क्रूर चेहरा यही है। ये अगर कहीं दयालुता दिखाते हैं तो उसके पीछे इनका कोई मकसद होता है। निःस्वार्थभाव से मदद करने का स्वभाव भारत के लोगों में देखने को ज्यादा मिलता है। भारत के लोग सदा दयालु व परोपकारी रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी को पश्चिमी संस्कृति की नकल करने के बजाय अपनी संस्कृति पर गर्व करना चाहिए।

निर्मल कुमार शर्मा, गाजियाबाद

### मुद्दा ठीक नहीं

ज

**18.5** करोड़ टन दूध का उत्पादन होता है वार्षिक तौर पर भारत में और इस लिहाज से हमारा देश विश्व में प्रथम स्थान पर है। दूध के मामले में हम न केवल आत्मनिर्भर हैं, बल्कि दुग्ध उत्पादों का निर्यात करने की स्थिति में भी हैं।



आजकल

# हर मुद्दे पर उचित नहीं है विवाद

राजेश माहेश्वरी
स्वतंत्र पत्रकार

**नागरिकता संशोधन कानून के बाद अब राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर शुरू होने से पहले ही विवाद शुरू होता दिख रहा है। केंद्र सरकार ने जनगणना 2021 की प्रक्रिया शुरू करने के साथ ही राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर को अपडेट करने की मंजूरी दे दी है। इसी वर्ष अप्रैल से सितंबर के बीच होने वाली इस जनगणना पर 8,500 करोड़ रुपये खर्च होने की संभावना है। ऐसे में यह समझना-समझाना आवश्यक है कि यह देश के नागरिकों के आंकड़े जुटाने वाली प्रक्रिया है**

प्रतीकात्मक

नागरिकता संशोधन कानून के विरोध में जिस तरह की हिंसक घटनाएं देश के कई राज्यों में घटी, उनका जितनी निंदा की जाए उतना कम है। असल में जिस कानून का देश के नागरिकों से कुछ लेना देना ही नहीं है, उस पर हिंसा समझ से परे है। दरअसल सरकार के हर निर्णय का विरोध करना विपक्ष ने अपना धर्म समझ लिया है। अपने राजनीतिक उद्देश्य पूरा करने के लिए षड्यंत्र के तहत जब राजनीतिक दल आम लोगों को उसमें शामिल कर विरोध करने लगते हैं तो अनियंत्रित भीड़ विस्फोटक स्थितियां पैदा कर देती है।

जैसाकि केंद्र सरकार ने फैसला लिया है कि राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) का काम जल्द ही शुरू किया जाएगा, तो इसे जानने की भी जरूरत है। जनगणना आयोग ने कहा है कि एनपीआर का उद्देश्य देश के प्रत्येक 'सामान्य निवासी' का एक व्यापक पहचान डाटाबेस तैयार करना है। देश में बड़ी आबादी ऐसी भी है, जो एनआरसी और एनपीआर में अंतर नहीं समझती। इसलिए इसमें अंतर समझना-समझाना आवश्यक है।

सीधे शब्दों में कहा जाए तो एनपीआर देश में रहने वाले निवासियों का राष्ट्रीय डाटा तैयार करने की रूटीन कवायद है। आबादी के स्तर पर बदलाव स्वाभाविक हैं, क्योंकि कोई दिवंगत होता है, तो कोई जन्म लेता है, कोई कामकाज के सिलसिले में अपना पुश्तैनी घर, गांव या कस्बा भी छोड़ता है। बदलाव के ऐसे असंख्य आंकड़े सामने कैसे आएंगे या सरकार की जानकारी में कैसे होंगे? सरकारें और प्रशासन इसी आधार पर योजनाओं और नीतियों के प्रारूप तय करते हैं। लेकिन चूंकि देश में नागरिकता कानून से लेकर एनआरसी की बातें चल रही हैं, ऐसे में सरकार के हर कदम को विपक्षी दल उससे जुड़ा बता रहे हैं जिससे भ्रम की स्थिति पैदा हो रही है।

ऐसा नहीं है कि एनपीआर जैसी कवायद केवल भारत में ही होती है। विश्व के अधिकतर देशों में इसका प्राविधान है। महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय एनपीआर की व्याख्या इस तरह करता है- एनपीआर देश के सामान्य निवासियों का एक रजिस्टर है। यह नागरिकता अधिनियम 1955 और नागरिकता (नागरिकों का पंजीकरण और राष्ट्रीय पहचान पत्र) नियम-2003 के प्राविधानों के तहत स्थानीय, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर तैयार किया जा रहा है। प्रत्येक सामान्य निवासी के लिए एनपीआर में पंजीकरण कराना अनिवार्य है। एक सामान्य निवासी एनपीआर के उद्देश्यों के तहत वह व्यक्ति है, जो पिछले छह महीने या उससे अधिक समय से स्थानीय क्षेत्र में रहता है या जो अगले छह महीने या उससे अधिक समय तक उस क्षेत्र में निवास करने का इरादा रखता है। इसका उद्देश्य देश में हर सामान्य निवासी का एक व्यापक पहचान डाटाबेस तैयार करना है। डाटाबेस में जनसांख्यिकीय के साथ-साथ बायोमीट्रिक विवरण शामिल होंगे। प्रत्येक निवासी के लिए यह जनसांख्यिकीय विवरण आवश्यक है, जिसके तहत नाम, मां-पिता या पति का नाम, लिंग, जन्म तिथि, वैवाहिक स्थिति, जन्म स्थान, राष्ट्रीयता, वर्तमान पता, वर्तमान पते पर रहने की अवधि, स्थायी निवास पता, व्यवसाय, शैक्षणिक योग्यता से लेकर वर्तमान स्थिति की जानकारी देनी होगी।

आबादी के आंकड़ों के हिसाब से योजनाओं का प्रारूप बनता है और वो जमीन पर उतर पाती हैं। गौरतलब तथ्य यह है कि भारत में 3.5 करोड़ से ज्यादा आदिवासी हैं। कुछ भटकी प्रजातियां भी हैं और कुछ हजार सिर्फ अनेक फसल काटने वाले समुदाय हैं। कई लाख बेघरबार और भीख मांगकर गुजारा करनेवाले हैं। ये सभी अस्थायी और अस्थिर निवासी हैं। बेशक वे सभी 'भारतीय' ही होंगे। योजनाओं और सुविधाओं का लाभ उन्हें भी मिलना चाहिए। आंतरिक सुरक्षा वहां भी एक संवेदनशील समस्या है। तो समय-समय पर उनका हिसाब-किताब क्यों नहीं होना चाहिए? वर्ष 2003 में तत्कालीन वाजपेयी सरकार ने एक नियम बनाया था- नागरिकों के पंजीकरण और राष्ट्रीय पहचान कार्ड जारी करना। लिहाजा एनपीआर देश के स्वाभाविक निवासियों का रजिस्टर है। इसका पालन यूपीए सरकार ने भी पायलट प्रोजेक्ट के आधार पर किया।

जनसंख्या का आंकड़ा भी जानना जरूरी है। सामाजिक, आर्थिक, लैंगिक अनुपात के यथार्थ भी सामने आने चाहिए। सवाल है कि इस विश्लेषण में ऐसी कौन-सी साजिशें छिपी हैं, जिनके मद्देनजर बंगाल की ममता बनर्जी सरकार और केरल की वामपंथी सरकार ने एनपीआर की प्रक्रिया लागू करने से इन्कार किया है। कांग्रेस भी खामोश है। एनपीआर की अधिसूचना केंद्र सरकार ने 31 जुलाई 2019 को जारी की थी। उसके बाद लगभग सभी राज्य सरकारें अधिसूचना जारी कर चुकी हैं। गृह मंत्री अमित शाह और सूचना-प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर भी इन तथ्यों को स्पष्ट कर चुके हैं। सरकार यह भी स्पष्ट दावा कर रही है कि एनआरसी और एनपीआर में कोई संबंध नहीं है। एनपीआर का डाटाबेस एनआरसी में इस्तेमाल नहीं किया जाएगा। तो ओवैसी सरीखे नेता किस आधार पर यह अफवाह फैला रहे हैं कि एनपीआर ही एनआरसी का पहला कदम है? बहरहाल, कई विपक्षी दल इसे भी राजनीतिक मुद्दा बनाने की कोशिश में लग गए। अच्छा हुआ कि गृह मंत्री अमित शाह ने समय पर सफाई दे दी। देश को मालूम होना चाहिए कि उसके यहां कौन-कौन रहते हैं। विपक्षी दलों व अन्य संगठनों की भी जिम्मेदारी है कि वह इस मामले में राजनीति करने की बजाय लोगों को सही जानकारी दें। हर मामले में राजनीति और विवाद से देश और देशवासियों का नुकसान होना लाजिमी है। जब तक आपके पास आंकड़े नहीं होंगे, तब तक आप विकास का खाका नहीं खींच पाएंगे। राजनीतिक दलों का ध्यान देश की जनता की भलाई के बारे में सोचना होना चाहिए। देश की सुरक्षा और विकास से जुड़े कार्यों में बेवजह का विवाद पैदा करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता है। गृह मंत्री इस मामले में अपनी राय एक साक्षात्कार के माध्यम से देश के समक्ष साफ कर चुके हैं, अब इस मामले में राजनीति बंद होनी चाहिए।

# आबादी नियंत्रण पर भी बने कानून

अश्विनी उपाध्याय
अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट

वर्तमान में सवा सौ करोड़ भारतीयों के पास 'आधार' है। देश भर में बड़ी संख्या में नागरिक बिना आधार के हैं। लगभग पांच करोड़ बंगलादेशी और रोहिंग्या घुसपैठिये अवैध रूप से भारत में रहते हैं। इससे स्पष्ट है कि देश की जनसंख्या सवा सौ करोड़ से कहीं बहुत अधिक है। यदि संसाधनों की बात करें तो हमारे पास कृषि योग्य भूमि दुनिया की लगभग दो प्रतिशत है, पीने योग्य पानी लगभग चार प्रतिशत है, और जनसंख्या दुनिया की 18 प्रतिशत है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स, साक्षरता दर, रोजगार दर व जीवन की गुणवत्ता जैसे अनेक वैश्विक इंडेक्स में हम बहुत पीछे हैं। इसका बड़ा कारण देश के संसाधनों पर अत्यधिक भार ही है।

वर्ष 1976 में संसद के दोनों सदनों में विस्तृत चर्चा और विचार विमर्श के बाद 42वां संविधान संशोधन विधेयक पास हुआ था और संविधान की सातवीं अनुसूची की तीसरी सूची (समवर्ती सूची) में 'जनसंख्या नियंत्रण और परिवार नियोजन' वाक्य जोड़ा गया। 42वें संविधान संशोधन द्वारा केंद्र सरकार और सभी राज्य सरकारों को 'जनसंख्या नियंत्रण और परिवार नियोजन' के लिए कानून बनाने का अधिकार दिया गया, पर इतने वर्षों बाद भी प्रभावी जनसंख्या नियंत्रण कानून नहीं बन पाया है।

इस संबंध में पहली बार सार्थक पहल अटल बिहारी वाजपेयी सराकर द्वारा की गई जब 11 सदस्यीय संविधान समीक्षा आयोग (वेंकटचलैया आयोग) ने दो वर्ष तक विचार-विमर्श के बाद संविधान में आर्टिकल 47ए जोड़ने और जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाने का सुझाव दिया था, लेकिन उसे भी आज तक लागू नहीं किया गया। अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 20 फरवरी 2000 को बनाया गया संविधान समीक्षा आयोग आजाद भारत का सबसे प्रतिष्ठित आयोग है। सुप्रीम कोर्ट के तब के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस वेंकटचलैया इसके अध्यक्ष तथा जस्टिस सरकारिया, जस्टिस जीवन रेड्डी और जस्टिस पुन्नैया इसके सदस्य थे। भारत के पूर्व अटॉर्नी जनरल और संविधान विशेषज्ञ केशव परासरन तथा सोली सोराबजी और लोकसभा के पूर्व महासचिव सुभाष कश्यप इसके सदस्य थे। पूर्व लोकसभा अध्यक्ष पीए संगमा इसके सदस्य थे।

वेंकटचलैया आयोग द्वारा चुनाव सुधार, प्रशासनिक सुधार और न्यायिक सुधार के लिए दिए गए सुझाव भी आज तक लंबित हैं। अधिकांश राजनीतिक दलों के नेता सांसद और विधायक, बुद्धिजीवी, समाजशास्त्री, पर्यावरणविद, शिक्षाविद, न्यायविद, विचारक और पत्रकार इस बात से सहमत हैं कि देश की 50 प्रतिशत से ज्यादा समस्याओं का मूल कारण जनसंख्या विस्फोट है। टैक्स देने वाले 'हम दो-हमारे दो' नियम का पालन करते हैं, लेकिन मुफ्त में रोटी कपड़ा मकान लेने वाले आबादी को अनियंत्रित कर रहे हैं।

जब तक दो करोड़ बेघरों को घर दिया जाएगा तब तक 10 करोड़ बेघर और पैदा हो जाएंगे इसलिए एक नया कानून ड्राफ्ट करने में समय खराब करने की बजाय चीन के जनसंख्या नियंत्रण कानून में ही आवश्यक संशोधन कर उसे संसद में पेश करना चाहिए। कानून मजबूत और प्रभावी होना चाहिए और जो व्यक्ति इस कानून का उल्लंघन करे उसका राशन कार्ड, वोटर कार्ड, आधार कार्ड, बैंक खाता, बिजली कनेक्शन और मोबाइल कनेक्शन बंद करना चाहिए। इसके साथ सरकारी नौकरी और चुनाव लड़ने तथा पार्टी पदाधिकारी बनने पर आजीवन प्रतिबंध लगाना चाहिए। ऐसे लोगों को सरकारी स्कूल, हॉस्पिटल सहित अन्य सरकारी सुविधाओं से वंचित करना चाहिए।

एक प्रभावी जनसंख्या नियंत्रण कानून के बिना रामराज्य नामुमकिन है, इसलिए सरकार को आगामी सत्र में चीन की तर्ज पर एक मजबूत और प्रभावी जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाना चाहिए।

खरी-खरी

## नए वर्ष का पहला रॉन्ग नंबर

अरविंद तिवारी

जिंदगी के दरिया में आप भले ही कुशल तैराक रहे हों, पर ऐसा समय भी आता है जब आपकी समस्त पेशबंदियां धरी की धरी रह जाती हैं।

पहली जनवरी को ही इस वर्ष की पहली मिस कॉल आई। हम इसे मिस कॉल इसलिए कह रहे हैं, क्योंकि ये किसी 'मिस' की कॉल थी। मैंने हैलो बोला, तो उधर से किसी महिला ने मधुर आवाज में कहा- 'क्यों, अभी तक घर पर ही बैठे हो? कब निकलोगे! मैं तुम्हारा इंतजार कर रही हूं।'

इस कॉल को सुनकर मेरा एकाकीपन उसी तरह बह गया, जैसे बरसात में नाले की ठहरी हुई गंदगी बह जाती है। मैं कुछ सोच पाता कि तभी महिला बोल पड़ी- 'कुछ बोलो ना, अब होठ क्यों सिल गए तुम्हारे?' कहीं मैं सचमुच बाढ़ में न बह जाऊं, इसलिए मैंने तुरंत अपना परिचय दिया। उधर से महिला ने 'सॉरी, रॉन्ग नंबर' कहकर फोन काट दिया। महिला ने मुझे गलती से अपना बॉयफ्रेंड समझ लिया होगा। पति तो खैर नहीं ही समझा होगा।

सप्ताह भर पहले भी एक रॉन्ग नंबर से कॉल आया था। उठाते ही वह बोला- 'मौर्य साब, वो एमपी के सीहोर वाला पचास किलो आटा भेज देना।' मुझे खुशी इस बात की हुई कि अगला भी मेरी तरह अच्छी क्वालिटी का आटा खाता है। पर मैं आटा भेजने की स्थिति में नहीं था, क्योंकि अपना ही आटा पहले से गीला था। इसलिए मैंने बता दिया कि मैं कौन बोल रहा हूं। उधर से बोला गया- 'सॉरी, रॉन्ग नंबर! हमने तो मोहनलाल मौर्य मसाले वाले के यहां फोन लगाया था।'

इन दिनों रॉन्ग नंबर कॉल्स के सौजन्य से हम अपना नाम, पता बदल बैठे हैं। हमसे भी कई बार रॉन्ग नंबर लग जाता है। एक संपादक जी से हम गाहे-बगाहे बात करते रहते थे। दो दिन पहले उसी नंबर पर फोन किया, तो उधर से आवाज आई, 'यह उत्तर प्रदेश पुलिस का हेल्पलाइन नंबर है, कहिए क्या सेवा करें!' अब उत्तर प्रदेश पुलिस इन दिनों जिस तरह की सेवा कर रही है, यह सोचकर ही हमारी तो घिग्घी बंध गई। हमने तुरंत रॉन्ग नंबर कहकर फोन काटा। हमने नंबर जांचा तो वह संपादक जी का ही था। मित्रों ने बताया, हो सकता है संपादक जी तुम्हारे अयाचित कॉल्स से तंग आ गए हों और पिंड छुड़ाने का यह तरीका निकाल लिया हो।

ट्वीट-ट्वीट

भगवा रंग हमारी संस्कृति, सभ्यता और सनातन का प्रतीक है, किसी पार्टी के बाप की जागीर नहीं।
आचार्य प्रमोद@AcharyaPramodk

वित्त मंत्री द्वारा अगले पांच वर्षों के दौरान अवसंरचना से जुड़ी 102 लाख करोड़ रुपये की परियोजनाओं की घोषणा बहुत महत्वाकांक्षी है। खासतौर से इस बात को देखते हुए कि यह भारत के मौजूदा जीडीपी के 40 प्रतिशत से भी अधिक है। फिर भी विदेशी, सरकारी और निजी निवेश के सहारे अगले पांच-छह वर्षों में इसे संभव बनाया जा सकता है।
मिन्हाज मर्चेंट@MinhazMerchant

वक्त हमेशा चलायमान रहता है। उसे कोई भी रोक नहीं सकता। सवाल यही है कि क्या हम अपने वक्त का बेहतर तरीके से इस्तेमाल कर पाते हैं या नहीं। हम अतीत को तो नहीं बदल सकते, अलबत्ता बेहतर भविष्य के लिए जरूर कुछ कर सकते हैं। इसलिए इस दिशा में सोचना चाहिए।
दलाई लामा @DalaiLama

हिमाचल प्रदेश डायरी

# उम्मीद न होती तो क्या होता

नवनीत शर्मा
राज्य संपादक, हिमाचल प्रदेश

उम्मीद न होती तो क्या होता? ये सवाल अक्सर सिर उठाता है। आस, आशा, उम्मीद ये तमाम पर्यायवाची वस्तुतः होने और बने रहने की इच्छा के समानार्थक हैं। साल सिर्फ कैलेंडर में नहीं बदला, जमीन पर भी बदला है। क्या पाया, क्या खोया से कहीं आगे आकर उम्मीदें फिर जवान हो उठी हैं। सेब के रंग और आकार को बढ़ाने की उम्मीद यानी बर्फ...। सर्दी में कांगड़ी का एहसास यानी नई योजनाओं, संकल्पों, प्रकल्पों और इरादों से मिलने वाली ऊर्जा।

और यह उम्मीद की ताकत ही है कि पहाड़ टूट कर भी खड़ा हो जाता है। उदासी के उस आलम के बीच भी जहां सियाचिन में एक जवान बर्फ का शिकार हो जाए और उसके बारह घंटे के बाद उसकी मां भी बेटे के रास्ते पर चल दे। पहाड़ जानता है कि इस उदास मंजर के बीच भी पहाड़ की माताएं टूटेंगी नहीं। बहादुरी का यह क्रम जनरल जोरावर सिंह से शुरू होकर भंडारी राम, लाला राम तक आता है। फिर देश की आजादी के बाद इस सिलसिले को अपनी बहादुरी से नवाजते हैं पहले परमवीर चक्र विजेता मेजर सोमनाथ शर्मा और वहां से यह रास्ता कैप्टन विक्रम बतरा तक आता है। इस बीच कितने ही उड़ी और पठानकोट आए होंगे। इसी जज्बे को जब भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शिमला में याद करते हैं, हिमाचल को गर्व की अनुभूति होती है। बहादुरी पुरस्कारों में यह छोटा सा राज्य सबसे आगे दिखता है। लेकिन हिमालयन रेजिमेंट अब भी दूर की कौड़ी है। ये बात नई नहीं है लेकिन इसे दोहराया जाना इसलिए आवश्यक है ताकि सनद रहे। हिमालयन रेजिमेंट के लिए पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी सहमत थे, लेकिन तत्कालीन रक्षामंत्री जॉर्ज फर्नांडीज ने कहा कि अब राज्य के नाम पर रेजिमेंट नहीं हो सकती। फिर तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल ने हिमालयन रेजिमेंट की बात रखी, लेकिन हुआ कुछ नहीं। यह सवाल इसलिए है कि हिमाचल प्रदेश शांत प्रदेश है। नागरिकता संशोधन विधेयक पर लगभग पूरा देश सुलगा था, लेकिन हिमाचल में ऐसी एक भी घटना सामने नहीं आई। यही हिमाचल होना है। यहां वैचारिक मतभेदों के लिए स्थान है, पर सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने की प्रवृत्ति नहीं है।

प्रतीकात्मक

सेना ही क्यों, राजनीति में भी हिमाचल दिखता है। यहां से राष्ट्रीय दलों में भी हिमाचली उत्साह नेतृत्व की भूमिका में है। हिमाचल प्रदेश का सीना गर्व से फूलता है, जब यहां के सेना से संबद्ध अंतरराष्ट्रीय शूटर विजय कुमार शर्मा के नाम पर मध्य प्रदेश में शूटिंग रेंज का नामकरण किया जाता है। विज्ञान, चिकित्सा में भी नामी लोग हैं हिमाचल प्रदेश के। डॉ. अरुण शर्मा से लेकर डॉ. टीएस महंत उम्मीदों के ऐसे पेड़ हैं जिनकी हवाएं भावी पीढ़ी के पुरुषार्थ को थपकी देकर उत्साहित करती रहेंगी। डॉ. अरुण देश के पहले ऐसे डॉक्टर है, जिन्होंने कार्डियोवैस्कुलर रेडियोलॉजी एंड एंडोवैस्कुलर इंटरवेंशन में सुपर स्पेशलाइजेशन डिग्री पाई है।

कुछ उम्मीदें ऐसी हैं जिनके याद करते ही फानी बदायुंनी याद आते हैं :

कुछ कटी हिम्मत-ए-सवाल में उम्र
कुछ उम्मीद-ए-जवाब में गुजरी।

भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड में हिमाचल का हिस्सा, रेल विस्तार, हवाई विस्तार, पौंग बांध विस्थापितों का पुनर्वास और शानन जैसी परियोजनाएं... कब तक छोटे भाई की भूमिका में रहना होगा? छोटे भाई की भूमिका में रहने की एक उम्र, एक अवधि तो होती ही होगी। केंद्रीय मदद की ओर ताकने वाले हिमाचल को यह मदद मिल जाए, उसका अपना हिस्सा मिल जाए तो क्या बागवानी के विस्तार और विस्तीर्ण नहीं हो सकते?

सच यह है कि हिमाचल प्रदेश के लिए साल बदलने का अर्थ केवल कैलेंडर बदलने से नहीं जुड़ता। हिमाचल प्रदेश अपने आप में विलक्षण अनुभव इसलिए है, क्योंकि यह उन मौसमों को जीता है। अटल सुरंग ने एक भरोसा दिलाया है कि उम्मीद बनी रहे तो कभी न कभी पूरी भी होती है। इससे ना केवल लद्दाख और लेह पास आ जाएंगे, बल्कि हमारी सेना को रसद पहुंचाने और अन्य रणनीतिक संदर्भों में भी भरपूर मदद मिलेगी।

इसके बाद उम्मीद है शहरी नियोजन में। शिमला पर्यटन की रुत में रेंगने पर विवश हो जाता है। शिमला की जमीन पर पांव धरने की जगह नहीं होती। स्काई बस की अवधारणा आज बेशक हवा में उड़ा दी जाने वाली बात लगे, लेकिन शिमला में उसे हवा में ही उड़ना होगा। यह नए मुख्य सचिव को भी देखना है कि राजधानी के संकुचन को कैसे कम किया जाए।

कितने भी मौसम बदलें, साल बदलें, हिमाचल का शांतिप्रियता का मूल चरित्र न बदले, यही नए साल में अपनी प्रार्थना है। हिमालय की प्रकृति है कि वह अपनी गोद में सबको जगह देता है। कई राज्यों के लोग इसीलिए आजीविका कमाने आते हैं कि यहां अपराध कम है। यहां लघु बिहार, छोटा झारखंड, छोटा नेपाल, छोटा उत्तर प्रदेश और कहीं-कहीं तो दक्षिण भारत भी है। पूरे देश को जगह देने वाले हिमाचल को भी देश के दिल में जगह मिलनी ही चाहिए।

जागरण जनमत — कल का परिणाम

**क्या आप नागरिकता संशोधन कानून का समर्थन करते हैं?**

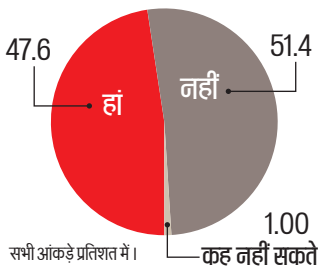


सभी आंकड़े प्रतिशत में।

**आज का सवाल**

क्या इन्फ्रा सेक्टर को मिले 102 लाख करोड़ रुपये के पैकेज से अर्थव्यवस्था को अपेक्षित तेजी मिलेगी?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y**, **N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
**Y** -हां, **N**-नहीं, **C**-कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

स्कूटी पर बैठकर मस्ती है आसान,
पर मस्ती में कट गया मालिक का चालान।
मालिक का चालान भरेगा अब वह पैसा,
यह योगी का राज चले ना ऐसा-वैसा!
चलीं प्रियंका मैम शान दिखलाने झूठी,
रहा बैठ पछताय आज मालिक स्कूटी!!
- ओमप्रकाश तिवारी

चिंताजनक

# क्यों महंगा हो रहा दूध

पुष्पेंद्र सिंह
अध्यक्ष, किसान शक्ति संघ

**दूध के दाम बढ़ने के कारणों का विश्लेषण करने के लिए वर्तमान आर्थिक परिस्थितियों और दूध के एक दशक की कीमतों व संबंधित नीतियों का आकलन करना होगा**

देश में दूध के बढ़ते दामों से चिंतित केंद्र सरकार के पशुपालन और डेयरी मंत्रालय ने दूध के उत्पादन, उपलब्धता और बढ़ती कीमतों के आकलन के लिए तीन जनवरी को सभी प्रमुख निजी और सहकारी क्षेत्र की डेयरियों की एक बैठक बुलाई है। प्याज के मामले में किरकिरी होने के बाद सरकार दूध के मामले में सतर्क होकर उचित कदम उठाना चाहती है।

पिछले दिनों सहकारी क्षेत्र की डेयरियों ने दूध के दाम तीन रुपये प्रति लीटर तक बढ़ा दिए। यह पिछले सात महीनों के भीतर दूध की कीमतों में यह दूसरी बढ़ोतरी है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार नवंबर में उपभोक्ता खाद्य महंगाई दर 10 प्रतिशत पर पहुंच गई जो पिछले छह वर्षों का सबसे उच्चतम स्तर है। इसका मूल कारण खाद्य पदार्थों विशेषकर सब्जियों, दूध आदि की महंगाई दर बढ़ना है।

उल्लेखनीय है कि भारत 18.5 करोड़ टन वार्षिक दूध उत्पादन के साथ विश्व में प्रथम स्थान पर है। हम दूध के मामले में आत्मनिर्भर ही नहीं, बल्कि दुग्ध उत्पादों को अन्य देशों के बाजारों में निर्यात करने की स्थिति में भी हैं। यदि दूध समेत पशुपालन से होने वाली संपूर्ण आमदनी का आकलन करें तो 28 लाख करोड़ रुपये की कृषि जीडीपी में दूध और पशुपालन क्षेत्र की हिस्सेदारी लगभग 30 प्रतिशत है।

फरवरी 2010 में दिल्ली में फुल-क्रीम दूध के दाम 30 रुपये प्रति लीटर थे, जो मई 2014 में 48 रुपये प्रति लीटर हो गए। इस अवधि में 11 प्रतिशत की औसत उपभोक्ता खाद्य महंगाई दर को देखते हुए यह बढ़ोतरी बहुत अधिक भी नहीं थी। मोदी सरकार के पहले पांच वर्षों के कार्यकाल में दिल्ली में फुल-क्रीम दूध के दाम मई 2014 में 48 रुपये प्रति लीटर से बढ़कर मई 2019 में 54 रुपये प्रति लीटर पर पहुंचे। यानी मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में उपभोक्ताओं के लिए दूध के मौद्रिक दाम औसतन 2.5 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से बढ़े। इस अवधि में 3.3 प्रतिशत की औसत उपभोक्ता खाद्य महंगाई दर और दुग्ध उत्पादन की बढ़ती लागत को समायोजित करने के लिए दूध के दाम कम से कम सात प्रतिशत प्रति वर्ष की मामूली मौद्रिक दर से भी बढ़ाए जाते तो भी मई 2019 में दिल्ली में फुल-क्रीम दूध के दाम लगभग 65 रुपये प्रति लीटर होते, जबकि यह 56 रुपये प्रति लीटर ही है।

दूध के क्षेत्र में सक्रिय अमूल जैसी सहकारी संस्थाओं के कारण एक तरफ तो उपभोक्ताओं को दूध के बहुत अधिक दाम नहीं चुकाने पड़ते, वहीं दूसरी तरफ उपभोक्ताओं द्वारा दूध पर खर्च किए गए एक रुपये में से लगभग 75 पैसे किसानों तक पहुंचते हैं। दूध के दाम 10 रुपये प्रति लीटर कम मिलने के कारण देश का दुग्ध उत्पादक किसान लगभग एक लाख करोड़ रुपये प्रति वर्ष का घाटा सह रहे हैं। यानी पिछले पांच वर्षों में किसानों को दूध के उचित एवं लाभकारी मूल्य नहीं मिले, उल्टे हर साल महंगाई और लागत बढ़ने के कारण दुग्ध उत्पादक किसानों को काफी घाटा झेलना पड़ा। इस कारण सबसे पहले तो किसानों ने पशुओं की संख्या कम कर दी। दूसरा, दुग्ध उत्पादन की बढ़ती लागत को देखते हुए पशुओं को किसान उचित मात्रा में पोषक आहार नहीं खिला पाए। दुग्ध उत्पादन में घाटे के कारण बीमार पशुओं के इलाज और रखरखाव पर होने वाले खर्चे में भी कटौती करनी पड़ी। तीसरा, पिछले पांच वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों में बेसहारा पशुओं की संख्या बढ़ी है। पशु-गणना 2012 के अनुसार देश में बेसहारा पशुओं की संख्या 53 लाख थी। एक अनुमान के अनुसार इस वक्त लगभग एक करोड़ बेसहारा पशु हैं, जो दुधारू पशुओं के हरे चारे को बड़ी मात्रा में चट कर जाते हैं। पशु-आहार में काम आने वाली फसलों को भी ये नुकसान पहुंचाते हैं। इससे दुधारू पशुओं के लिए चारे की उपलब्धता घट जाती है। इससे चारा महंगा हो जाता है और दुग्ध उत्पादन की लागत बढ़ जाती है। भारतीय चारागाह और चारा अनुसंधान संस्थान के अनुसार देश में हरे चारे की 64 प्रतिशत और सूखे चारे की 24 प्रतिशत कमी है। चौथा, पिछले कुछ वर्षों में पशु-आहार जैसे खल, चूरी, छिलका आदि के दाम भी काफी बढ़े हैं जिस कारण दुग्ध उत्पादन की लागत में काफी वृद्धि हुई है। पांचवां, इस वर्ष विलंब से आए मानसून के कारण कई राज्यों में पहले तो सूखा पड़ा, फिर बाद में अत्यधिक बारिश और बाढ़ की स्थिति बन गई जिस कारण भी चारे की उपलब्धता घटी है। छठा, वर्ष 2019-20 का देश का कुल बजट 27.86 लाख करोड़ रुपये है। इसमें से पशुपालन और डेयरी कार्य के बजट को पिछले वर्ष के 3,273 करोड़ से घटाकर इस वर्ष 2,932 करोड़ रुपये कर दिया गया। दूध उत्पादन जैसी अति महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि का बजट कम करना उचित नहीं है। सातवां, अक्टूबर से मार्च के बीच का समय दूध के अधिक उत्पादन का सीजन होता है जिस दौरान दूध के दाम कम बढ़ते हैं। गर्मियों में दूध का उत्पादन कम हो जाता है और दाम बढ़ जाते हैं। इस बार सर्दियों में दाम बढ़ाने के बावजूद डेयरियों की दूध की खरीद में गिरावट आना अच्छा संकेत नहीं है।

प्रतीकात्मक

इन सबका असर अब दुग्ध उत्पादन और दूध की कीमतों में दिखने लगा है। दूध की कम कीमत मिलने से घाटे के कारण यदि किसान पशुपालन से विमुख हो गए तो पहले से ही संकट से जूझ रही कृषि व ग्रामीण अर्थव्यवस्था और गहरे संकट में फंस जाएगी। देश की दूध की बढ़ती मांग की आपूर्ति और दुग्ध उत्पादन में आत्मनिर्भरता बनाए रखने के लिए दुग्ध उत्पादक किसानों को लाभकारी मूल्य देना होगा, अन्यथा दूध की कीमतें भी प्याज की राह पर जा सकती हैं।

**30** फूड टेस्टिंग किट खरीदने के लिए 20 करोड़ रुपये खर्च करेगा खाद्य सुरक्षा नियामक एफएसएसएआइ देशभर में अपने राज्य स्तरीय फील्ड अधिकारियों के लिए। नई किट ज्यादा तेज, बेहतर और पहले से सस्ती होंगी।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
गुरुवार 2 जनवरी 2020

हिमाचल प्रदेश

# सुरक्षा के लिए सतर्क रहें

शांति के लिए पहचान बनाने वाले राज्य हिमाचल प्रदेश की वादियां अगर अशांत हो रही हैं तो यह समाज और सरकार के लिए गंभीर चिंता का विषय है। प्रदेश में चोरी, लूटपाट, डकैती, दुष्कर्म और हत्या जैसे संगीन अपराध निरंतर बढ़ रहे हैं। हालात इस कदर बिगड़ गए हैं कि रिश्तों की मर्यादा को भी तार-तार करने से परहेज नहीं किया जा रहा। हैरत है कि अवैध संबंधों में बाधक बने बेटे की हत्या का आरोप मां पर लगा है। एक सप्ताह में ही इस तरह की दो घटनाएं सामने आ चुकी हैं। दोनों मामलों की पुलिस जांच कर रही है। पड़ोसी राज्यों के साथ सटे क्षेत्रों और राज्य के औद्योगिक क्षेत्रों में अपराध दर बड़ी तेजी से बढ़ रही है। कई बार तो पड़ोसी राज्यों के लोग प्रदेश की सीमा के भीतर अपराध कर फरार हो जाते हैं। ताजा मामला कांगड़ा जिला के फतेहपुर के निकट खटियाड़ का है। यहां पर एक वृद्ध दुकानदारों को गाड़ी से इसलिए रौंद दिया, क्योंकि उसने मछली खिलाने के बाद पैसे की मांग की थी। पंजाब के हाजीपुर क्षेत्र के कुछ युवा गाड़ी से खटियाड़ आए थे। यहां पर उन्होंने एक दुकान पर मछली खाई। जब दुकानदार ने उनसे पैसे मांगे तो वे उससे उलझ पड़े और अपने वाहन में सवार हो गए। दुकानदार भी उनकी गाड़ी के पीछे भागा तो उन युवकों ने गाड़ी को पीछे कर उसे रौंद दिया। पुलिस ने गाड़ी को कब्जे में ले लिया है और मामले की जांच जारी है। इस तरह की वारदातें बढ़ने से लोगों में भय होना लाजिमी है। आज समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। अधिकांश लोगों की सोच का स्तर गिर रहा है। आज ज्यादतर लोग एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में अंधे हो गए हैं। स्वार्थ ने उनकी सोच पर पहरा लगा दिया है। वे समाज के हित की बात न कर सिर्फ अपने ही हित की चिंता में लगे रहते हैं। इसी गलाकाट दौड़ में आगे निकल जाने के लिए हर अच्छे-बुरे साधनों का बेहिचक इस्तेमाल कर रहे हैं। यही मानसिकता समाज में बढ़ते अपराध की एक वजह बन रही है। ऐसे लोगों को सोचना चाहिए कि इस तरह वे किसी का भला नहीं कर रहे हैं।

**समाज में अपराध तभी बढ़ता है, जब लोग सतर्क नहीं होते। अपराधियों को उनकी सही जगह पहुंचाने के लिए सबको एक होना होगा**

इसके साथ ही यह बात भी उतनी ही सही है समाज में अपराध तभी बढ़ता है जब समाज में सतर्कता का अभाव होता है, लेकिन कहीं न कहीं पुलिस प्रशासन की भी ढील रहती है कि सीमांत क्षेत्रों में इस तरह की वारदातें होने के बावजूद वहां पर पुलिस बल अधिक सतर्क क्यों नहीं किया जाता। सीमांत क्षेत्रों में नशीले पदार्थों की भी धड़ल्ले से तस्करी की जा रही है। नशे के कारण यहां मौतें भी हो रही हैं इसके बावजूद नशे के सौदागर अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहे हैं। हैरानी की बात है कि इन क्षेत्रों में महिलाएं भी नशे के कारोबार में संलिप्त पाई जा रही हैं। कई बार पुलिस कार्रवाई भी करती है, लेकिन इस काले कारोबार पर पूरी तरह अंकुश नहीं लग पाया है। अपराध पर अंकुश लगाने के लिए जरूरी है कि लोग सतर्क रहे हैं, यदि कोई संदिग्ध गतिविधि देखें तो उसकी जानकारी तत्काल पुलिस को दें।

जम्मू-कश्मीर

# स्वच्छता में पिछड़ता जम्मू

स्मार्ट सिटी की तरफ कदम बढ़ा रही जम्मू-कश्मीर की दोनों राजधानियां श्रीनगर एवं जम्मू बुरी तरह से प्रदूषण की चपेट में हैं। इन शहरों में वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण अपने चरम पर पहुंचना चिंता का विषय है। जम्मू-कश्मीर प्रशासन प्रदूषण रोकने के लिए प्लास्टिक वेस्ट को ठिकाने लगाने में फिसड्डी साबित हुआ है। शहरी क्षेत्रों के स्वच्छता सर्वेक्षण की दो तिमाही के नतीजों पर शहरी विकास मंत्रालय द्वारा जारी रिपोर्ट में जम्मू शहर कुल 733 में से 318वें नंबर पर आया है। जबकि श्रीनगर शहर 45वें स्थान पर रहा। विडंबना है कि केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में प्लास्टिक कूड़े के निस्तारण की कार्ययोजना तक नहीं बनाई। गत वर्ष मई में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने जम्मू-कश्मीर पर एक करोड़ रुपये का जुर्माना भी किया। आलम यह है कि स्मार्ट सिटी की तरफ कदम बढ़ा रहे श्रीनगर एवं जम्मू गंभीर प्रदूषण की चपेट में हैं। गंभीरता का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि जम्मू शहर में तवी नदी में 14 बड़े नाले गिर रहे हैं। विडंबना है कि सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट परियोजना वर्ष 2008 में शुरू तो हुई, लेकिन पुराने शहर को सीवरेज से नहीं जोड़ा गया है। तवी नदी में गिरने वाले गंदे नालों की निकासी के लिए अलग से पाइप लाइन नहीं बिछाई गई है। जिससे रोजाना जम्मू में चार सौ मीट्रिक टन कचरा निकल रहा है। जिसमें प्लास्टिक वेस्ट सबसे घातक है। इस वेस्ट को ठिकाने

प्रतीकात्मक

लगाने के लिए कोई वैज्ञानिक तरीका अभी तक नहीं अपनाया गया है। इतना ही नहीं श्रीनगर और जम्मू शहर में सालिड वेस्ट मैनेजमेंट प्रोजेक्ट के लिए कोई योजना नहीं है। जहां तक ध्वनि प्रदूषण का सवाल है। अंबफला चौक पर यह 79.31 डेसिबल है, गुम्मट चौक पर 81.06 डेसिबल तक पहुंच गया है। जम्मू मेडिकल कॉलेज चौक पर भी यह ध्वनि प्रदूषण 75.88 डेसिबल है, जो खतरे से ऊपर है। अगर उप राज्यपाल प्रशासन जम्मू को स्मार्ट सिटी बनाने में वाकई गंभीर है तो सीवरेज, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट, प्लास्टिक कचरा निस्तारण जैसी महत्वकांक्षी योजनाओं के क्रियान्वयन पर गंभीरता दिखानी होगी। अन्यथा जम्मू स्वच्छता की दौड़ में हर बार पिछड़ता रहेगा।

प्रदूषण की बढ़ती समस्या से हम सब वाकिफ हैं। हमारे सामने वायु प्रदूषण के रूप में एक बड़ी चुनौती खड़ी है। वायु प्रदूषण मुद्दे को अक्सर केवल बड़े महानगरों के लिए एक चिंता का विषय माना जाता रहा है, लेकिन अब छोटे नगर और शहर भी इस समस्या से जूझ रहे हैं। 102 शहरों में निर्धारित वायु की गुणवत्ता कम पाई गई है। लैंसेट प्लैनेट हेल्थ 2019 में प्रकाशित ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज स्टडी के अनुसार 2017 के दौरान भारत में क्रमशः 6 लाख और 4 लाख 80 हजार लोगों की मौत का कारण बाहरी और घरेलू वायु प्रदूषण को माना गया। वायु प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जिसका तत्काल कोई समाधान नहीं है, लेकिन इसे कम करने के लिए लगातार प्रयास करते रहना होगा। यही स्थिति आज जल के साथ भी है। हमारा जीवन जल पर निर्भर है, लेकिन हमने खुद ही इसे प्रदूषित कर दिया है। आज कई बीमारियां प्रदूषित जल की देन हैं। प्रदूषित जल के पीने से मरने वालों की संख्या लाखों में है।

इसी प्रकार से ध्वनि प्रदूषण से इंसान में चिड़चिड़ापन, तनाव, बेवजह चिंता रहना आदि की शिकायत होती हैं। लोगों को भी चाहिए कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक हों, क्योंकि अगर इसमें विलंब हुआ तो आने वाली पीढ़ियां हमें कतई माफ नहीं करेंगी। राज्यपाल को चाहिए कि मामले को गंभीरता से लें।

पंजाब

# खजाने की चिंता

बड़े उद्योगों के बजाय छोटे उद्योगों को ही बिजली पर सब्सिडी देने की सिफारिश कर पंजाब का वित्त विभाग आर्थिक तंगी के दौर से गुजर रहे सूबे के खजाने को बचाने की दिशा में उपयुक्त कदम उठाने जा रहा है। ऐसे कदमों की ही इस समय जरूरत भी है, क्योंकि यह तो मानना पड़ेगा कि राज्य की खस्ता माली हालत के लिए मुफ्त में सौगातें बांटने या सब्सिडी देने का चलन भी जिम्मेदार है। सच तो यह है कि इस चलन का एक बड़ा कारण सियासी लाभ उठाना है। एक बार सरकार ने किसानों को मुफ्त में बिजली देने की घोषणा की तो उसके बाद आने वाली सरकारें इसे खत्म करने का जोखिम उठाने का साहस नहीं कर सकीं। उल्टा यह देखा जाता रहा है कि अब किस वर्ग को लुभाया जाए। बड़े उद्योगों को बिजली पर सब्सिडी देने का एलान भी ऐसी ही कवायद मानी जा सकती है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक तरफ तो सरकार पर दो लाख करोड़ रुपये के करीब का कर्ज चढ़ चुका है, उसके पास कर्मचारियों को वेतन देने के लिए धन नहीं है, दूसरी तरफ इस तरह से सौगातें बांटी जा रही

प्रतीकात्मक

हैं। किसानों को ही खेतों में ट्यूबवेल के लिए मुफ्त में बिजली देने से सरकार पर छह हजार साठ करोड़ रुपये का भारी भरकम बोझ पड़ता आ रहा है। इसलिए लगातार विकराल होते जा रहे आर्थिक संकट के मद्देनजर वित्त विभाग की यह सिफारिश महत्वपूर्ण है कि बिजली पर सब्सिडी केवल छोटे उद्योगों को ही दी जाए, बड़ों को नहीं। वैसे तो पहले ही यह होना चाहिए था, लेकिन अब देर से ही सही, सरकार को इसमें सुधार कर लेना चाहिए ताकि अनुमानित एक हजार करोड़ रुपये सालाना की बचत हो सके। बचत के इस तरह के उपाय करके ही आर्थिक संकट को कम किया जा सकता है। यह कहने में कोई संकोच नहीं कि मुफ्त में जब कोई सुविधा मिलती है तो उपभोक्ता कहीं न कहीं उसका दुरुपयोग भी करता ही है, इसलिए मुफ्त के बजाय सब्सिडी पर सुविधा प्रदान करना फिर भी ठीक है, लेकिन वह भी तर्कसंगत होना चाहिए। उद्योगों को बिजली के अलावा और अन्य क्षेत्रों एवं मदों पर भी सरकार को गंभीरता से विचार करना चाहिए।

**इन दिनों लगातार विकराल होते जा रहे आर्थिक संकट के मद्देनजर पंजाब के वित्त विभाग की यह सिफारिश काफी महत्वपूर्ण है कि बिजली पर सब्सिडी केवल छोटे उद्योगों को ही दी जाए, बड़ों को नहीं**

बंगाल

# तृणमूल की यात्रा

तृणमूल कांग्रेस ने अपना 22वां स्थापना दिवस बुधवार को नागरिक दिवस के रूप में मनाया। तृणमूल की दो दशकों से अधिक लंबी इस यात्रा ने कई उतार-चढ़ाव देखे। इस बीच बंग भूमि की सियासत को भी नए-नए अनुभवों से गुजरना पड़ा। तृणमूल कांग्रेस की स्थापना से पहले 1997 तक कांग्रेस पार्टी का परचम लहरा रही ममता बनर्जी को वामपंथियों के खिलाफ मोर्चा खोलने के लिए अपनी नई पार्टी बनानी पड़ी थी। इसके पहले वह सांसद और केंद्र की कांग्रेस सरकार में मंत्री रह चुकी थीं, लेकिन उनके आक्रामक तेवर को तृणमूल बनने के बाद ही विस्तार मिला। वामपंथ के लाल किले को उखाड़ फेंकने के लिए ममता ने संकल्प लिया और कामयाब भी हुईं। पर इस यात्रा में उन्हें कभी कांग्रेस के साथ तो कभी भाजपा के साथ समझौता करना पड़ा।

ममता ने अवसर की नब्ज समझने में कभी चूक नहीं की। जब जिसे चाहा झटक दिया और मौका आने पर पकड़ लिया। उनकी इसी होशियारी ने दो बार से बंगाल की सत्ता पर उन्हें काबिज होने का मौका दिया। अब वह तीसरी बार बंगाल का किला अपने नाम करने का उपक्रम कर रही हैं।

ममता ने माकपा से लड़ने के लिए 2008 में उसी कांग्रेस से समझौता किया जिसे छोड़कर वह आई थीं। कांग्रेस के साथ समझौते के बाद उन्हें नई ताकत मिली थी। तृणमूल से सांसद बनने के बाद भी वह समझौते की राजनीति कर केंद्र की सरकार में भी शामिल हुईं। बतौर रेल मंत्री उनका कार्यकाल याद किया जाता है। रेल मंत्री रहते हुए उन्होंने कई चर्चित फैसले लिए। ममता ने भाजपा से हाथ मिलाया और तब वामपंथियों को घेरने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पर राजनीति के बदलते परिदृश्य का अनोखा खेल बंगाल में देखने को मिला। जिस कांग्रेस के साथ मिलकर ममता ने वामपंथ के किले में सेंध लगाई अब वही वामपंथी और कांग्रेसी एक साथ हो गए हैं। कांग्रेस-वामो की साझा आवाज ममता सरकार के खिलाफ गूंज रही है और दोनों ममता के लिए चुनौती भी बन रहे हैं। ममता एक तरफ कांग्रेस-वामो के निशाने पर हैं तो दूसरी तरफ दिल्ली में भाजपा के गढ़ को ध्वस्त करने के लिए विपक्षी एका का भी नारा दे रही हैं। भाजपा ने इस दफा लोकसभा चुनाव में ममता की जमीन खिसका दी और बंगाल की 18 सीटों पर कब्जा जमाकर 2021 में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए नई चुनौती खड़ी कर दी है। ममता बनर्जी का फिर इम्तिहान होना है। बंगाल के आवाम की कसौटी पर वह कितना खरा उतरेंगी, उसका पूर्वाभ्यास भी इसी वर्ष होने जा रहे निकाय चुनाव में होना है। इसके लिए वह भरसक कोशिश भी करती दिखाई दे रही हैं।

**तृणमूल की स्थापना के बाद वामपंथ का किला ध्वस्त करने के लिए ममता ने कभी कांग्रेस की मदद ली थी, लेकिन आज कांग्रेस-वामो मिलकर ममता को चुनौती दे रहे हैं**

ममता बनर्जी जानती हैं कि अब राज्य में उनकी मुख्य लड़ाई भाजपा से है। शायद इसीलिए वह उसके खिलाफ काफी मुखर नजर आ रही हैं। राज्य हो या केंद्र जहां कहीं भी उन्हें मौका मिल रहा है, वहां भाजपा का विरोध करने से चूक नहीं रही हैं। नोटबंदी हो, जीएसटी हो, नागरिकता संशोधन कानून हो या फिर अब राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर का फैसला हो अगर किसी ने केंद्र पर सबसे तीखा हमला बोला है तो वह ममता बनर्जी ही रही हैं। अब देखना है कि आगामी विधानसभा चुनाव में उन्हें इसका कितना फायदा मिलता है। उनके राजनीतिक भविष्य की दिशा उसके नतीजों के बाद ही तय होगी।

डाटागीरी

# 18 साल से कम के 30 लाख लोग करते हैं अल्कोहल का प्रयोग

नेशनल डेस्क, नई दिल्ली

देश में 10 से 17 वर्ष की आयु के 30 लाख लोग अल्कोहल लेते हैं। यह जानकारी बीते दिनों संसद में सामाजिक न्द्याय एवं सशक्तीकरण मंत्रालय ने संसद में दी है। साथ ही यह भी बताया गया है कि इस आयुवर्ग में अल्कोहल लेने वालों की संख्या में इजाफा 1.3 फीसद की दर से हुआ है। वहीं, इसी आयुवर्ग के 20 लाख लोग भांग का प्रयोग करते हैं। इसका इस्तेमाल करने वालों की संख्या में 0.9 फीसद की दर से इजाफा देखा गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, इस आयुवर्ग के 40 लाख लोग अफीम का इस्तेमाल करते हैं और इनमें वृद्धि की दर 1.8 फीसद है। सीडेटिव (शामक औषध) और इन्हेलेंट लेने वालों की संख्या क्रमशः 20 लाख और 30 लाख है। इसे लेने वालों की संख्या में इजाफे की बात की जाए तो सीडेटिव का प्रयोग करने वालों में 0.58 फीसद और इन्हेलेंट का प्रयोग करने वालों में 1.17 फीसद की दर से वृद्धि देखी गई है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि चार लाख से अधिक लोग एम्फैटेमिन प्रकार के नशीले पदार्थ (एटीएस) का प्रयोग करते हैं। इनके प्रयोग करने वालों की संख्या में 0.18 फीसद की दर से वृद्धि देखी गई है। इसके बाद कोकीन और हल्लुसिनोंगे का प्रयोग करने वालों का नंबर आता है। 10 से 17 साल की आयु में इसका प्रयोग करने वालों की संख्या दो-दो लाख है और इनमें वृद्धि क्रमशः 0.06 फीसद और 0.07 फीसद की दर से दर्ज की गई है।

**5.1 करोड़ वयस्क अल्कोहल का करते हैं प्रयोग:** इस रिपोर्ट में 18 से 75 आयु वर्ग के लोगों के आंकड़ों के बारे में भी बताया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, 15.1 करोड़ वयस्क अल्कोहल का प्रयोग करते हैं और इनमें 17.10 फीसद की दर से वृद्धि दर्ज की गई है। वहीं, 2.9 करोड़ वयस्क भांग का इस्तेमाल करते हैं और इनमें 3.30 फीसद की दर से वृद्धि देखी गई है। अफीम की बात की जाए तो 1.9 करोड़ वयस्क इसे लेते हैं और इनमें वृद्धि 2.1 फीसद की दर से देखी गई है। सीडेटिव का प्रयोग 1.1 करोड़ लोग और इन्हेलेंट का 60 लाख करते हैं। इनमें वृद्धि क्रमशः 1.21 फीसद और 0.58 फीसद की दर से देखी गई है। इसके अलावा एटीएस का प्रयोग 20 लाख वयस्क करते हैं और इनमें वृद्धि की दर 0.18 फीसद रही, जबकि हल्लुसिनोंगे और कोकीन का इस्तेमाल करने वालों में क्रमशः 0.13 फीसद और 0.11 फीसद की दर से वृद्धि देखी गई।

ये आंकड़े 2018 में राष्ट्रीय स्तर पर किए गए एक सर्वेक्षण के द्वारा एकत्र किए गए हैं। मंत्रालय ने अपने जवाब में यह भी बताया था कि नशीले पदार्थों के प्रयोग में कमी लाने के लिए 2018-25 के लिए नेशनल एक्शन प्लान फॉर ड्रग डिमांड रिडक्शन (एनएपीडीडीआर) तैयार किया गया है और इसे लागू किया जा रहा है।

### दो राज्यों में पाबंदी

बता दें कि गुजरात और बिहार में शराब बेचने पर पाबंदी है। वहीं, 10 ऐसे राज्य हैं जहां की 20 फीसद से ज्यादा आबादी अल्कोहल लेती है। इनमें छत्तीसगढ़, त्रिपुरा, पंजाब, अरुणाचल प्रदेश और गोवा प्रमुख हैं। बिहार और गुजरात को छोड़ दें तो राजस्थान और मेघालय में शराब पीने वाले लोग सबसे कम हैं। राजस्थान में 2.1 फीसद और मेघालय में 3.4 फीसद लोग शराब पीते हैं। वहीं, त्रिपुरा की 62 फीसद आबादी अल्कोहल का प्रयोग करती है। छत्तीसगढ़ में 57.2 प्रतिशत और पंजाब में 51.70 प्रतिशत लोग शराब पीते हैं।

| 10-17 आयु वर्ग के बच्चे और किशोर | | | 18-75 आयु वर्ग के वयस्क | |
|---|---|---|---|---|
| नशे का प्रकार | वृद्धि | संख्या | वृद्धि | संख्या |
| अल्कोहल | 1.30 | 30 लाख | 17.10 | 15.10 करोड़ |
| भांग | 0.90 | 20 लाख | 3.30 | 2.90 करोड़ |
| अफीम | 1.80 | 40 लाख | 2.10 | 1.90 करोड़ |
| सीडेटिव | 0.58 | 20 लाख | 1.21 | 1.10 करोड़ |
| इन्हेलेंट | 1.17 | 30 लाख | 0.58 | 60 लाख |
| कोकीन | 0.06 | दो लाख | 0.11 | 10 लाख |
| एटीएस | 0.18 | चार लाख | 0.18 | 20 लाख |
| हल्लुसिनोंगे | 0.07 | दो लाख | 0.13 | 20 लाख |

# सेबों की मिठास को गाढ़ा कर देती है चिल्ले कलां की बर्फ

## कश्मीर में अच्छी बर्फबारी से बागवानों को अगले सीजन में सेब की अच्छी पैदावार की उम्मीद

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

अपने बाग में चक्कर लगा रहा ताहिर अब्बास बार-बार जमीन की नमी का जायजा ले रहा है। साथ ही वह पास खड़े अपने साथी को पेड़ों की छंटाई का काम जल्द पूरा करने के लिए कह रहा है। अपने साथी से वह कहता है, लाला दुआ करो कि पेड़ न टूटे, इस बार न सिर्फ पैदावार अच्छी होगी, सेब पहले से ज्यादा रसीला और मजबूत होगा। सेंटरोज भी खूब रसीला होगा। हालात ठीक रहे तो हम पूरी तरह फायदे में रहेंगे। वर्तमान में कश्मीर में चिल्ले कलां (सबसे ठंडे 40 दिन) के दौरान अच्छी बर्फबारी हो रही है।

कश्मीर में सालाना 20 लाख मीट्रिक टन सेब पैदा होता है। करीब सात लाख परिवार सेब उत्पादन और इसके कारोबार से जुड़े हैं। कश्मीर घाटी का शायद ही कोई हिस्सा होगा, जहां सेब पैदा न होता हो। उत्तरी कश्मीर में जिला बारामुला के अंतर्गत सोपोर और दक्षिण कश्मीर में शोपियां व कुलगाम सेब उत्पादन में वादी के अन्य जिलों में अग्रणी हैं।

श्रीनगर-पुलवामा-शोपियां मार्ग पर स्थित छत्तरगाम में रहने वाले ताहिर का सेब और आलू बुखारा जिसे स्थानीय भाषा में सेंटरोज कहते हैं, का बाग है। ताहिर ने कहा कि इस बार नवंबर-दिसंबर में बर्फ खूब गिरी है। जनवरी में भी हिमपात की उम्मीद है। यह बर्फ हम किसानों और बागवानों के लिए नेमत है। यही बर्फ ज्यादा देर तक पहाड़ों पर जमी रहेगी, जिससे गर्मियों में नदी-नालों में पर्याप्त पानी होगा। जमीन में जितनी नमी होगी, हमारा फल उतना रसीला होगा।

कश्मीर में बर्फ से लदे सेब के पेड़। जागरण

बर्फबारी और बारिश के कारण चिलिंग आवर्स पूरे होने की उम्मीद है। एक सीजन में 800 से 1600 घंटे चिलिंग आवर्स की जरूरत होती है। सेब की अलग-अलग किस्मों के लिए चिलिंग आवर्स अलग-अलग होते हैं। सेब की रॉयल किस्म के लिए सबसे अधिक चिलिंग आवर्स चाहिए। मौसम ऐसे ही मेहरबान हुआ तो पैदावार अच्छी होगी।

-डॉ. एमएम शर्मा, बागवानी निदेशक

### मौसम की मेहरबानी से हिमाचल भी भरेगा जेब

**रमेश सिंगटा, शिमला:** मौसम की मेहरबानी से सेब इस बार हिमाचल की समृद्धि के रंग भरेगा। इससे प्रदेश के खजाने में बढ़ोतरी होगी। इस बार हुई बर्फबारी से सेब के लिए जरूरी चिलिंग आवर्स पूरे होने के आसार हैं। ऐसा हुआ तो बागवान बाग-बाग हो जाएंगे। हिमाचल में सेब से करीब चार लाख बागवान परिवारों की रोजी-रोटी जुड़ी हुई है। हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था में सेब का करीब चार हजार करोड़ रुपये का अहम योगदान है। चिलिंग आवर्स सेब की गुणवत्ता के लिए आवश्यक हैं। इसका सीधा संबंध बर्फबारी व बारिश से होता है। हिमाचल में पिछले वर्ष दिसंबर में बर्फबारी हुई व बारिश भी अच्छी हुई थी। इससे सेब की पैदावार अच्छी होने की उम्मीद जताई जा रही है। अगर आगे भी मौसम ऐसे ही मेहरबान रहा तो फ्लावरिंग भी अच्छी होगी। इससे फल की सेटिंग भी उतनी ही बढ़िया हो पाएगी।

### क्या हैं चिलिंग आवर्स

बागवानी विशेषज्ञों के अनुसार सेब की बढ़िया पैदावार के लिए कड़ाके की सर्दी बेहद जरूरी है। दिसंबर से लेकर मार्च तक के चार महीने में औसतन 1200 चिलिंग आवर्स यानी 1200 सर्द घंटे पूरे हों तो सेब के पौधों से पैदावार बेहतर होती है। सेब के पौधे में फल लगने के लिए सात डिग्री सेल्सियस से कम तापमान बेहद जरूरी है। पौधे नवंबर व दिसंबर में सुप्त अवस्था में होते हैं। उन्हें इस अवस्था से बाहर आने के लिए सात डिग्री सेल्सियस का तापमान औसतन 1200 घंटे तक चाहिए। ये 1200 घंटे चार माह में पूरे हो जाने चाहिए। यदि चार माह में 1200 चिलिंग आवर्स पूरे हो जाएं तो सेब के पौधों में फल की सेटिंग बहुत अच्छी होती है। इससे उत्पादन बंपर होता है। जब चिलिंग आवर्स पूरे हो जाएं तो सेब की फ्लावरिंग बेहतर होगी और फल की गुणवत्ता भी अच्छी होती है। यदि मौसम दगा दे जाए और चिलिंग आवर्स पूरे न हों तो पौधों में कहीं फूल अधिक आ जाते हैं और कहीं कम। इससे फलों की सेटिंग प्रभावित हो जाती है।

# बड़ी इंडस्ट्री खा रही बिजली सब्सिडी का दो तिहाई हिस्सा

इन्द्रप्रीत सिंह, चंडीगढ़

- बाजार में टिकने के लिए सब्सिडी की ज्यादा जरूरत छोटी इंडस्ट्री को है
- पंजाब के वित्त विभाग ने कहा, बड़ी इंडस्ट्री से सुविधा वापस लें तो बचेंगे 1100 करोड़

पंजाब का खजाना इस समय संकट के दौर से गुजर रहा है। उसको संकट से निकालने के लिए भी केवल बैठकें ही हो रही हैं, फैसला नहीं लिया जा रहा। वित्तमंत्री मनप्रीत बादल के आग्रह पर ही मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने अपने आवास पर बैठक बुलाते हुए सभी विभागों से खर्चे कम करने और आमदनी के स्रोत बढ़ाने के उपाय बताने के लिए कहा। जब वित्त विभाग ने इस पर अपनी रिपोर्ट तैयार करके दी तो कैप्टन अमरिंदर सिंह ने कोई फैसला नहीं लिया।

दो सप्ताह पहले वित्त विभाग ने उद्योगों को दी जा रही बिजली सब्सिडी पर सवाल उठाया और कहा कि सब्सिडी की जरूरत केवल छोटी इंडस्ट्री को है। वहीं, सरकार की ओर से 1500 करोड़ की सालाना सब्सिडी में से दो तिहाई यानी 1140 करोड़ रुपये की सब्सिडी मात्र 8316 यूनिट्स को ही दी जा रही है। सबसे छोटी इंडस्ट्री को 1500 करोड़ रुपये में से मात्र 138 करोड़ ही मिलते हैं, जबकि इनकी गिनती 99444 बनती है। इसी तरह मीडियम दर्जे की इंडस्ट्री को 175 करोड़ रुपये की सब्सिडी मिलती है, जबकि उनकी गिनती 31499 है। ऐसे में अगर मीडियम और स्मॉल स्केल इंडस्ट्री दोनों को जोड़ लिया जाए तो सब्सिडी 313 करोड़ रुपये ही बनती है, जबकि गिनती 1,30,943 यूनिट्स बनती है।

वित्त विभाग का मानना है कि बड़ी इंडस्ट्रीज अपने उत्पादन के कारण टिक सकती हैं। उन्होंने अपना ज्यादातर हिस्सा सोलर, को-जेनेरेशन आदि से भी चलाया हुआ है। वहीं, छोटी इंडस्ट्री पूरी तरह से सरकारी सब्सिडी पर ही टिक पाएगी। उन्होंने कहा कि बड़ी इंडस्ट्री को सब्सिडी बंद करने से सरकार के लगभग 1100 करोड़ रुपये बचेंगे। बताया जाता है कि इस मीटिंग में मुख्यमंत्री ने वित्त विभाग के सुझाव पर कोई फैसला नहीं लिया। उधर, केंद्र सरकार द्वारा जीएसटी की क्षतिपूर्ति राशि न दिए जाने से वित्त विभाग अपने खर्चे में कटौती करने के बारे में सोच रहा है।

कैप्टन सरकार ने सत्ता में आने से पहले इंडस्ट्री को पांच रुपये प्रति यूनिट के हिसाब से बिजली देने का वादा किया था। इस फैसले को लागू करने से सरकार पर सालाना 1500 करोड़ रुपये का बोझ पड़ा है। एक विभागीय अधिकारी का कहना है कि इसका लाभ केवल बड़ी इंडस्ट्री को ही मिल रहा है, जबकि सरकार को सहायता केवल छोटे और मध्यम दर्जे की इंडस्ट्री को करनी चाहिए।

## उत्तराखंड के नेशनल पार्कों में ड्रोन से फोटो व वीडियोग्राफी का रास्ता खुला

**केदार दत्त, देहरादून :** छह नेशनल पार्क, सात अभयारण्य और चार कंजर्वेशन रिजर्व वाले उत्तराखंड में अब ड्रोन की नजर से कुदरती नजारों व वन्यजीवन का दीदार हो सकेगा। वन्यजीव पर्यटन को बढ़ावा देने के मद्देनजर इन क्षेत्रों में नैनो ड्रोन (250 ग्राम से कम वजनी) से फोटो व वीडियोग्राफी के लिए वन विभाग सशर्त अनुमति जारी करेगा। विभाग ने इसके लिए दरों के निर्धारण को शासन से आग्रह किया है। हालांकि, सुरक्षा की दृष्टि से अंतर्राष्ट्रीय सीमा से लगे क्षेत्रों में ड्रोन के उपयोग की इजाजत किसी भी दशा में नहीं दी जाएगी। जैव विविधता के मामले में धनी उत्तराखंड में वन्यजीव पर्यटन को हर साल चार से पांच लाख सैलानी यहां पहुंचते हैं। इनमें भी पर्यटकों की पहली पसंद विश्व प्रसिद्ध कार्बेट और राजाजी नेशनल पार्क हैं। इसे देखते हुए महकमे ने अन्य संरक्षित क्षेत्रों में भी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ड्रोन से फोटो व वीडियोग्राफी के रोमांच का तड़का डालने की पहल की है। उत्तराखंड फॉरेस्ट ड्रोन फोर्स के समन्वयक डॉ. पराग मधुकर धकाते बताते हैं कि ड्रोन से एरियल फोटो-वीडियोग्राफी से आकर्षण बढ़ेगा और पर्यटक अन्य क्षेत्रों का रुख भी करेंगे। उन्होंने कहा कि तमाम अवसरों पर ड्रोन से फोटो-वीडियोग्राफी का चलन बढ़ा है। ऐसे में डीजीसीए की गाइडलाइन के अनुरूप विभाग ने वन्यजीव पर्यटन में नैनो ड्रोन की सशर्त अनुमति देने का निश्चय किया है। शासन से दरों का निर्धारण होने के बाद ही कदम बढाए जाएंगे।

# तृणमूल ने 'नागरिक दिवस' के रूप में मनाया 22वां स्थापना दिवस

जागरण संवाददाता, कोलकाता

- बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने ट्वीट कर कार्यकर्ताओं का जताया आभार
- कहा, लोगों के हित में हमारी लड़ाई है जो जारी रहेगी

अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (एआइटीएमसी) ने बुधवार को अपना 22वां स्थापना दिवस 'नागरिक दिवस' के रूप में मनाया। सुबह ट्वीट करते हुए पार्टी प्रमुख और बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि आज राज्य भर में बूथ स्तर पर 'नागरिक दिवस' मनाया जाएगा क्योंकि हम सभी नागरिक हैं। बनर्जी ने अपने ट्वीट में लिखा, 'आज तृणमूल ने 22 वर्ष पूरा कर लिया। पार्टी की ओर से मां, माटी (मिट्टी), मानुष (मनुष्य) को श्रद्धेय प्रणाम। जो सभी कार्यकर्ता-समर्थक निःस्वार्थ भाव से पार्टी के लिए काम करते हैं उनका अभिनंदन। लोगों के आर्शीवाद के बगैर आज तृणमूल इस मुकाम पर नहीं पहुंच पाती। आज राज्य भर में बूथ स्तर पर 'नागरिक दिवस' मनाया जाएगा। हम सभी नागरिक हैं। लोगों के हित में हमारी लड़ाई है जो जारी रहेगी। जय हिंद, जय बांग्ला।'

उल्लेखनीय है कि बीते सप्ताह ही ममता बनर्जी ने पार्टी कार्यकर्ताओं को स्थापना दिवस को 'नागरिक दिवस' के रूप में मनाने का निर्देश दिया था। वह नागरिकता संशोधन कानून (सीएए), राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एनआरसी) व राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) के मुद्दे पर आक्रामक रुख अपनाए हुए हैं। कोलकाता में 11 दिनों के अंदर पांच बार सड़क पर उतर कानून का विरोध जता चुकी हैं और अब वह जिलों में

ममता बनर्जी फाइल

भी कानून के खिलाफ पैदल मार्च निकाल रही हैं।

पार्टी की ओर से भी विधानसभा स्तर पर उक्त मुद्दे पर विरोध-प्रदर्शन जारी है। माना जा रहा है कि स्थापना दिवस के दिन सीएए-एनआरसी के खिलाफ संदेश देकर तृणमूल सुप्रीमो ने यह स्पष्ट कर दिया है कि पार्टी आगामी नगर निकाय चुनाव और 2021 विधानसभा चुनाव में इसे मुद्दा बनाएगी। इससे पहले बीते साल इसी मुद्दे पर उपचुनाव लड़ी तृणमूल को तीनों ही सीटों पर जीत मिली थी। बताते चलें कि 1 जनवरी 1998 को स्थापित तृणमूल कांग्रेस के वर्तमान में लोकसभा में 22 जबकि राज्यसभा में 13 सीटें हैं।

दैनिक जागरण
# सबरंग
साहित्य के...
नई दिल्ली, गुरुवार, 2 जनवरी, 2020
सुझाव व प्रतिक्रिया के लिए लिखें : sabrang@nda.jagran.com
https://www.facebook.com/jagransabrang/

# हिंदी प्रकाशन जगत का कोना हुआ सूना

स्मृति शेष

श्याम सुंदर
1 सितंबर 1927- 28 दिसंबर 2019

मुझे ठीक से याद है कि दिसंबर 1996 की बात है, मैंने एक दिन प्रभात प्रकाशन के बोर्ड नंबर पर फोन किया था। फोन उठाने वाले को बताया कि मैं एक साहित्यिक पत्रिका के लिए सालभर में छपी महत्वपूर्ण किताबों पर एक लेख लिख रहा हूं। मुझे प्रभात प्रकाशन के कर्ताधर्ता से बात करनी है। मुझे होल्ड करवाकर फोन ट्रांसफर किया गया। उधर से आवाज आई नमस्कार, मैं श्याम सुंदर बोल रहा हूं। मैंने अपना परिचय दिया और फोन करने का उद्देश्य बताया। श्याम सुंदर जी ने ध्यानपूर्वक मुझे सुना और फिर कहा कि कल कार्यालय आ जाइए, आपसे किताबों पर भी बात हो जाएगी और जो किताब आपको चाहिए वो मिल भी जाएगी।

दिल्ली विश्वविद्यालय के पास विजय नगर इलाके में रहता था। बस से नियत समय पर आसफ अली रोड स्थित प्रभात प्रकाशन के कार्यलय पहुंच गया। श्याम सुंदर जी ने तुरंत बुला लिया और स्नेह पूर्वक बातचीत की। किताबों के बारे में लंबी चर्चा हुई। उस वर्ष प्रकाशित कई किताबें मंगवाकर सबके बारे में बताया और फिर कहा कि जो पुस्तकें चाहिए ले जाइए। कुछ पुस्तकें मेरी पढ़ीं हुई थीं तो उनका कवर ले आया और उसके अलावा तीन पुस्तकें और लीं। उस दिन श्याम सुंदर जी ने इतना स्नेह दिया, पूरी बातचीत के दौरान मुझे इस बात का एहसास करवाते रहे कि मैं बहुत महत्वपूर्ण हूं। ये श्याम सुंदर जी की खासियत थी कि वो सामने वाले को बहुत सम्मान देते थे। इस मुलाकात के बाद मेरी उनसे बहुत ज्यादा मुलाकात नहीं हुई लेकिन फोन पर कई बार बातें हुईं। हर बार उनसे बात करके कुछ नया सीखने और समझने की दृष्टि मिलती थी।

श्याम सुंदर जी ने दिल्ली के चावड़ी बाजार इलाके से अपना कामकाज शुरू किया और 1958 में प्रभात प्रकाशन की शुरुआत की थी। चावड़ी बाजार के उस दफ्तर से लेकर 1996 में आसफ अली रोड के दफ्तर तक आने का सफर उनके संघर्ष की कहानी बयां करता है। जिस प्रभात प्रकाशन की शुरुआत श्याम सुंदर जी ने की थी आज वो हिंदी का शीर्ष प्रकाशक बन चुका है और हिंदी के अलावा अन्य भाषाओं में भी पुस्तकों का प्रकाशन करता है। एक अनुमान के मुताबिक आज प्रभात प्रकाशन हर दिन एक नए पुस्तक का प्रकाशन करता है। श्याम सुंदर जी मथुरा के रहने वाले थे लेकिन उनकी पढ़ाई प्रयागराज मे हुई। वहीं वो राष्ट्रीय स्वयंसेवक के पूर्व सरसंघचालक रज्जू भैया के संपर्क में आए और स्वयंसेवक बने। जब उन्होंने दिल्ली आकर प्रभात प्रकाशन की शुरुआत की तो उन्होंने विश्व साहित्य से हिंदी जगत का तो परिचय करवाया ही बांग्ला और अन्य भारतीय भाषाओं की महत्वपूर्ण कृतियों का हिंदी में अनुवाद करवा कर प्रकाशित किया। श्याम सुंदर जी का एक बड़ा योगदान ये रहा कि उन्होंने हिंदू धर्म, संस्कृति और दर्शन की पुस्तकों का प्रकाशन करा, पाठकों तक पहुंचाया और भारतीय ज्ञान परंपरा को मजबूत किया। 1971 में जब भारत पाकिस्तान युद्ध हुआ तो उस वक्त देशभक्ति की भावना जगाने वाली पुस्तकों का प्रकाशन भी श्याम सुंदर जी ने किया किया। उनके इस कदम को फील्ड मार्शल जनरल मॉनेक शॉ ने बहुत सराहा था। साहित्य में गहरी अभिरुचि के चलते वो इस बात की कमी शिद्दत से महसूस करते थे कि भारतीयता को केंद्र में रखकर कोई हिंदी साहित्यिक पत्रिका नहीं निकल रही है। उन्होंने ऐसी एक पत्रिका, 'साहित्य अमृत' की योजना बनाई जिसको अटल बिहारी वाजपेयी और विद्या निवास मिश्र का सक्रिय सहयोग मिला। आज ये पत्रिका साहित्य जगत में बेहद समादृत है।

1 सितंबर 1927 के जन्मे श्याम सुंदर जी का 28 दिसंबर 2019 को 93 वर्ष की आयु में निधन हो गया। अपने काम को लेकर उनकी लगन को इस बात से समझा जा सकता है कि जिस दिन उनका निधन हुआ उस दिन तक वो कार्यलय में आए थे। प्रकाशन जगत के इस पुरोधा को श्रद्धांजलि।

**अनंत विजय**

विश्व पुस्तक मेला 2020

# साहित्यिक महाकुंभ का शृंगार किताबें

किताबों का अद्भुत संसार...बच्चे हों या युवा हर वर्ग की पसंद होता है यह साहित्यिक कुंभ। जागरण आर्काइव

**कभी सिरहाने रखी रहती है तो कभी शेल्फ में रखी आपको तकती रहती है... कभी चंद पन्ने पढ़ने की फुर्सत होती है और कभी मीलों की दूरी भी इसके साथ में छोटी लगती है...किताब ही है जिससे जिंदगी अलग ही अंदाज में रूबरू होती है। किताबों की इन्हीं सीढ़ियों पर चल...एक अलग ही दुनिया की पहचान होती है...तभी तो आप भी हर वर्ष आयोजित होने वाले किताबी कुंभ की बेसब्री से बाट जोहते हैं। हिंदी साहित्यिक जगत ने इस पुस्तक कुंभ को कैसे पुष्पित पल्लवित होते देखा...रूबरू करा रही हैं प्रियंका दुबे मेहता व मनु त्यागी :**

किताबें वो मांझी...जो सागर का सफर करा देती हैं। कभी केवट बनती हैं कभी प्रेरक बनती हैं, मझधार से भी किताबी सीढ़ियां पार तरती हैं। जीवन की उलझी पहेलियों का जवाब बुनती हैं। यही सब तलाशने तो दूर-दूर से भी लेखक, पाठक, प्रकाशक हर साल चले आते हैं विश्व पुस्तक मेला रूपी महाकुंभ में। साहित्य के इस महाकुंभ का शृंगार किताबें ही तो हैं। हर वर्ग की हर किस्म की हर भाषा की हर बोली की हर अवसर की...। बस जैसी आपकी पसंद वैसी आपके सामने हाजिर हो जाती हैं। आपकी नजरें लाखों किताबों के बीच भी अपनी पसंद चुन लेती हैं। यही तो होती हैं किताबें। देश-विदेश की किताबें और साहित्यकारों का जमघट, नई व पुरानी पुस्तकों पर चर्चा, नए लेखकों को प्रोत्साहन और पुराने लेखकों द्वारा समीक्षा... सब कुछ है इस पुस्तक मेले में।

**जब किताब चोर को मिला मान** : मेरे जीवन का पहला पुस्तक मेला मुझे जो याद आता है वह 1965 में मुंबई में शुरू हुआ था। इसके बाद दिल्ली आई तो यहां भी हर बार मेले में जाने के लिए उत्साहित रहती थी। मुझे कुछ कुछ याद आ रहा है उस समय नेशनल बुक ट्रस्ट यानी एनबीटी के चेयरमैन करतार सिंह दुग्गल थे। वे मेले में हर शाम चर्चा कराया करते थे। एक भाषा के दो लेखक एक सीनियर और एक नवोदित। लेखकों को इसमें बहुत महत्व मिलता था। सभी को अपनी बात रखने और लोगों से अपनी रचनाओं के बारे में खुलकर जानने का अवसर मिलता था। मुझे पहली बार पंजाबी की नवोदित लेखक के तौर पर आमंत्रित किया गया था और मेरी पुस्तक 'गुलबानों' को पहला सम्मान मिला था। उस समय नानक सिंह जैसे बड़े सीनियर उपन्यासकार को बुलाया गया था। तब मेले में फिल्मी साहित्य पसंद अभिनेताओं को भी देखने व उनसे मिलने का अवसर मिल जाता था। एक बार बलराज साहनी वहां पहुंचे थे। वे आते तो सारा दिन घूमते फिरते और शाम को चर्चा सुनते थे। उन्होंने गैलरी में बुलाया और मेरी रचनाओं पर बातें की। बाद में वे अपने घर ले गए थे। इसी दौरान जब हम टेंट में बैठ कर चर्चा कर रहे थे तो अचानक कोई एक आदमी को पकड़ कर लाया कि इस आदमी ने किताबें चुराई हैं। बलराज साहनी ने कहा कि इस आदमी को फौरन छोड़ दो। उन्होंने इस व्यक्ति से पूछा कौन कौन सी किताबें चाहिए। बाद में उसे बहुत सी किताबें देकर बाइज्जत विदा किया गया। इस तरह के कई वाकए होते थे। मेले में लोगों से मिलना-जुलना, किताबों के समुंदर की धाराओं में अपने आपको बहा देने जैसा होता था।

अजीत कौर

**साहित्य और साहित्यकारों का मिलन** : पस्तकों और लेखकों से रूबरू करवाने का एक सुनहरा आयोजन जैसा है। एक समय था जब इस मेले का फैलाव बहुत ज्यादा होता था। आज तो जगह की वजह से यह मेला बहुत सिमट सा गया है। मुझे अब भी याद है जब मेले के शुरुआती वर्षों में लोगों से मिलना जुड़ना और किताबों पर चर्चा करना अलग ही तरह से होता था। उसमें एक मिठास होती थी, वक्त को भी फुर्सत होती थी। शुरुआती दौर में छोटे से लेकर बड़े नामचीन साहित्यकार वहां पहुंचते थे और एक दूसरे की किताबों पर चर्चा करते थे। वहां प्रकाशकों के पास या अलग से साहित्यकारों की किसी विषय पर चर्चा होती थी। पूरा दिन मिलना जुड़ना व बैठकी होती थी। यह साहित्य और साहित्यकारों का मिलन मेला कहा जा सकता है जहां कि विश्व के कोने-कोने से लोग एक आंगन में होते हैं। यहां पहुंच कर साहित्य के प्यासों की वह प्यास बुझ जाती है। हम साहित्य के केंद्र यानी दिल्ली में हैं ऐसे में हमारा लेखकों से मिलना जुड़ना तो यहीं हो जाता है लेकिन जो लोग दूर दराज से आते हैं उन्हें इस मेले में आकर बहुत फायदे होते हैं। लोग दूर से अपने पसंदीदा लेखकों को एक नजर देखना चाहते हैं। यह मेला साहित्य के तीर्थ से कम नहीं है। मुझे शुरुआत से ही इस पुस्तक कुंभ की एक बात और अच्छी लगती है कि यहां चलते चलते बातें व मुलाकातें होती हैं जो कि एक जिंदा तस्वीर की तरह हमेशा के लिए जेहन में बस जाती हैं। पहले खाने पीने के लिए स्टॉल नहीं लगते थे लेकिन अब यह अच्छा बदलाव देखने को मिलता है। मेले का आकार छोटा हो गया है लेकिन साहित्य प्रेमियों का आकर्षण लगातार गहरा रहा है। हालांकि मुझे जिन दुर्लभ किताबों की तलाश रहती है वह इस मेले में नहीं मिल पाती। खुशी इस बात की होती है कि अब मेले में नए-नए मनोरंजन के साधनों में बिजनेस के साथ भी साहित्यिक चीजें उभर कर आ रही हैं।

नासिरा शर्मा

**हर साल उत्साहित रहती हूं**: इस बार तो बहुत ठंड है, घर से निकलने का मन नहीं है लेकिन पुस्तक मेला तो जाना ही है। उम्र भले 80 है लेकिन लिखना पढ़ना...वो कैसे कम हो सकता है। साहित्यकारों के लिए तो यह विशेष अवसर होता है। मैं कभी मिस नहीं करती। यहां मेरी किताबों पर चर्चा भी हुई है। जब मैं हैदराबाद से यहां आई थी और पहली बार इस विश्व पुस्तक मेले को देखा तो एक अलग ही तरह की अनुभूति हुई थी। तभी से एक रिश्ता बन गया था इस मेले से। यहां वाणी प्रकाशन और राजकमल जैसे बड़े-बड़े प्रकाशक आते हैं। मुझे इस मेले में कश्मीर पर बोलने और अपनी पुस्तक 'ऐलान गली जिंदा है' पर चर्चा करने के लिए भी आमंत्रित किया गया था। यहां पाकिस्तान से लेकर हर मुल्क के लेखक आते हैं। और अब तो वैसे भी मेले में व्यापक बदलाव आए हैं। पहले कोर्स की किताबें ज्यादा होती थीं। साहित्य ज्यादा नहीं होता था। अब विश्व भर का साहित्य और उसकी जानकारी मिल जाती है। व्यवस्थाएं बेहतर हो गई हैं। एक तरह से भूमंडलीकरण का नमूना पेश करता है विश्व पुस्तक मेला। विदेश के साहित्यकारों से लेकर अनुवादक तक... हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू व क्षेत्रीय भाषाओं तक का संगम होता है। मुझे हर तरह की किताबें मिल जाती हैं। अब अलग-अलग मंच बनने लगे हैं। नई किताबों के लोकार्पण में काफी संख्या में लोग आ जाते हैं। बहुत अच्छा लगता है किताबों व रचनाकारों के बीच जाकर प्रशंसकों से मिलकर। अब नयापन यह है कि नए लेखकों को भी मंच मिल रहा है। साहित्य के अलावा भी कई चीजों से रूबरू होने का मौका मिलता है। बच्चों के लिए भी अलग-अलग किताबें मिलने लगी हैं। मैं पहली बार 1980 में दिल्ली आई तो भव्य मेले को देखा था। पिछले चार-पांच साल से मैं चर्चा आदि में हिस्सा लेने जाती हूं। लगातार इस पुस्तक मेले में बढ़ती लोगों की संख्या प्रमाण है कि न साहित्य प्रेमियों की कमी है और न पाठकों की।

चंद्रकांता

**गहरे रिश्ते भी बने इस मेले में** : पुस्तक मेला शुरुआती दौर में भी भव्य था और आज भी है। किताबों की बातें, लेखकों और प्रशंसकों से मुलाकातें...सब कुछ बहुत सुंदर संस्मरण दे जाने वाला होता है। वैसे लेखक एक दूसरे की तारीफ बहुत कम ही करते हैं लेकिन इस मंच पर एक दूसरे की प्रशंसा करते लेखकों को देखा जा सकता है। जब भी मैं दिल्ली में होती हूं, इस मेले में जाती हूं। मैं डोगरी भाषा की कवयित्री होने के नाते भी बुलाई गई हूं। अब मेले और किताबों दोनों में बड़ा बदलाव आया है। बच्चों और पाठकों की पसंद के अनुरूप किताबें लिखना और उसे मेले में रखने का भी ट्रेंड आ गया है। मुझे पुस्तक मेले में बहुत से कभी न टूटने वाले संबंध मिले। कृष्णा सोबती से यहीं मुलाकात हुई थी और फिर पूरी जिंदगी मैत्री रही। हुआ यूं था कि धर्मवीर भारती की पत्नी पुष्पा भारती ने मुझे कृष्णा सोबती की पुस्तक 'जिंदगीनामा' पढ़ने के लिए दी थी। मैं मुंबई से दिल्ली पहुंची तो पुस्तक मेले में अचानक उनसे मुलाकात हो गई। वे मुझसे बहुत प्यार से मिलीं। फिर वहां से मैं उनके पुराने घर गई उनकी मां से मिली। उनसे प्रगाढ़ रिश्ता कायम हो गया। मुझे इस्मत आपा (इस्मत चुगताई) मिलीं जब भी वे मुंबई से आती थीं, वे पुस्तक मेले में जरूर जाती थीं।

पद्मा सचदेव

**बच्चों का होता था खास कोना** : मुझे ठीक से याद है पहले पुस्तक मेला बहुत बड़ा होता था। सात-आठ हॉल में किताबों का खजाना होता था। एक सिरे से शुरू होकर अंतिम हॉल तक जाने में हर कोई बेहद थक जाता था। ऐसा नहीं यह सामान्य फैलाव था, बेहद वजनी किताबें होती थीं। बच्चों के लिए बहुत अच्छे सेक्शन हुआ करते थे। युवा भी बहुत आते थे। अब भले बहुत छोटा पुस्तक मेला हो गया लेकिन एक चीज हमेशा एक जैसी रही कि जहां किताब 50-100 रुपये किलो से लेकर 20-30 रुपये में भी मिला करती थीं, और भी मिलती हैं वहां सबसे ज्यादा भीड़ रही। अब कोई पढ़ने का भले शौकीन न रहा हो लेकिन शोकेस में सजाने के लिए तो चंद किताबें मिल ही जाती थीं। शुरू-शुरू के दिनों की बात करूं पुस्तक कुंभ का फैलाव तो बहुत था लेकिन प्रकाशक और पाठक सिर्फ रुचिकर होते थे। अब तो कोई भी घूमने के बहाने चला जाता है। पहले तो लोग दूर-दूर से बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश से पाठक, लेखक यहां मेले में आया करते थे। एक तरह से उन्हें दिल्ली की सर्दी का लुत्फ उठाने का अवसर मिल जाता और साथ ही किताबों का संसार भी। कुछ और प्रसंग बताता हूं यहां लेखक तो खूब आते थे, लेकिन अतिथि के तौर पर नहीं महज मेले में दर्शक, पाठक के तौर पर...अब इतने बड़े-बड़े साहित्यकार और उन्हें कोई पूछता नहीं, तो इस बात से उन्हें तकलीफ होती थी और सभी की अपनी तुनक भी होती थी ईगो में एक-दूसरे से बात न करने की। बाद में प्रकाशक लेखकों को भी अपने स्टॉल पर बैठाने लगे। लेखक की किताब बिकती थी वो उस पर ऑटोग्राफ देते थे। एक बार प्रकाशक ने राजेंद्र यादव को बुलाकर बैठा लिया। लेकिन हुआ क्या पूरा दिन बीत गया किसी ने उनका ऑटोग्राफ नहीं लिया। कई बार ऐसा भी होता था कि लेखक खुद ही अपने चार-पांच चेले चपाटों को बुला लेते थे कि तू मेरी किताब खरीदने आना, मैं ऑटोग्राफ दूंगा। खूब प्रसंग हुए ऐसे भी। धीरे-धीरे दूरदर्शन चैनल के माध्यम से इस मेले के आयोजनों को प्रसार मिलने लगा। और बाद में तो अब प्रकाशक, लेखक खूब अच्छा माहौल बना लेते हैं इस मेले में। एक और खास बात यह रही है कि यह मेला हमेशा से ही कड़क सर्दियों के समय में आयोजित हुआ है सो उस समय चाट-पकौड़ी और चाय वालों की दुकान भी गजब हिट हो जाती थी, थोड़ी महंगी होती थी लेकिन जायका बढ़िया होता था।

सुधीश पचौरी

**स्कूल के बच्चों के लिए हों आयोजन**: एक पाठक, एक शिक्षक और फिर एक लेखक तीन नजरों से मैंने इस साहित्यिक महाकुंभ को देखा है। सब कुछ अच्छा है लेकिन कुछ ऐसी चीजें हैं जिनकी कमी भी खलती है...वक्त के साथ इस कुंभ का जितना विस्तार हुआ उतने ही प्रकाशक, लेखक भी बढ़े। आप भी कभी देखिएगा वहां छोटे प्रकाशक होते तो हैं लेकिन बड़ों की तरह उन्हें कोई तरजीह नहीं देता। जबकि इन प्रकाशकों के पास भी कई बेहतरीन किताबें होती हैं। बात वही होती है न आज वही ज्यादा बिकता है जो दिखता है। लेखक की भूख अब लिखकर प्रसिद्धि पाने तक सीमित हो गई है सो उसे लगता है बड़े प्रकाशक की तरफ ही ध्यान केंद्रित किया जाए। कई बार अच्छी किताबें चर्चा से दूर ही रह जाती हैं और बाद में 100 रुपये किलो के भाव बिकने वाली किताबों में आ गिरती हैं। पहले इसमें 'मेला' कम और पुस्तक संस्कृति ज्यादा झलकती थी। मैं आपको जयपुर साहित्य उत्सव का अनुभव बताता हूं वहां सबसे ज्यादा स्कूल के बच्चे आते हैं। किताबों से जुड़े आयोजन होते हैं और लेखकों से स्कूली पाठकों को सीधे रूबरू होने का अवसर होता है। होना भी यही चाहिए। एक तरफ हम कहते हैं कि अब किताब पढ़ने वाले कम हो रहे हैं और दूसरी तरफ स्कूल स्तर के ही बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित नहीं कर पाते। होना तो यह चाहिए कि मेला आयोजक की ओर से हर स्कूल को आमंत्रित करना चाहिए कि स्कूल के बच्चों को पुस्तक मेले में जरूर लेकर आएं। अब की अपेक्षाकृत पहले बच्चे ज्यादा आते थे। अब आते तो हैं लेकिन एक 'भीड़' के रूप में। इतने सारे प्रकाशक होते हैं यदि वे चाहें तो बच्चों को केंद्रित करते हुए कुछ अच्छे आयोजन करा सकते हैं। बच्चों के किताबी कॉर्नर मिल जाएंगे लेकिन वहां भी उन्हें जयपुर साहित्य उत्सव की तरह जोड़ने में सफल नहीं हैं। अब इसकी समृद्धता भाती तो बहुत है लेकिन चलताऊ होना भी खलता है।

कमल किशोर गोयनका

**4** से 12 जनवरी तक आयोजित होगा 28 वां विश्व पुस्तक मेला

बच्चे भी रहते हैं उत्साहित। जागरण आर्काइव

यहां तो सभी वाद्य यंत्र एक से बढ़कर एक हैं। भाटिया म्यूजिकल स्टोर में वाद्य यंत्र पसंद करता ग्राहक। जागरण

# यहां की फिजाओं में भी संगीत की खनक

काम की दुकान

**खुलने का समय**
सुबह 10 बजे से रात 10 बजे तक।

**ऐसे पहुंचे**
जोर बाग मेट्रो स्टेशन से 10-15 मिनट पैदल चलकर मार्केट पहुंचा जा सकता है।

एक कुशल कलाकार जब गिटार के तारों को छेड़ता है तो मन के तार भी झंकृत हो उठते हैं। तबले की थाप पर कदम थिरकने लगते हैं। बांसुरी की सुरीली धुन जैसे कानों में रस घोल रहे हों। ये साज ही तो है जिससे निकलने वाली धुन संगीत प्रेमियों के दिलोदिमाग पर अपना प्रभाव छोड़ जाती है। साज के बिना संगीत की कल्पना भी कर सकते। साज और संगीत का ऐसा ही संगम दक्षिणी दिल्ली के खन्ना मार्केट स्थित शॉप नंबर-2 भाटिया म्यूजिकल स्टोर में देखने को मिलता है। यहां केवल तबला, गिटार, हारमोनियम ही नहीं, आधुनिक और इलेक्ट्रॉनिक वाद्य यंत्र भी उपलब्ध है। तभी तो दूर दूर से संगीत प्रेमी यहां खरीदारी करने आते हैं। यह यहां का सबसे पुराना और पहला म्यूजिकल स्टोर है, जिसे संदीप भाटिया ने शुरू किया। वर्ष 1992 में भाटिया म्यूजिकल स्टोर किदवई नगर में खोला गया। वहीं, 2001 से यह खन्ना मार्केट की शोभा बढ़ा रहा है।

**खन्ना मार्केट की खास दुकान** : करीब 19 वर्षों से संदीप भाटिया खन्ना मार्केट में भारतीय व पश्चिमी देशों के वाद्य यंत्र संगीत प्रेमियों को उपलब्ध कराते आ रहे हैं। यहां गिटार, पियानो, बैंड, तबला, सितार के अलावा कई तरह की बांसुरी समेत सैकड़ों वाद्य यंत्र मिलते हैं। संदीप कहते हैं कि वे केवल वाद्य यंत्र बेचते ही नहीं हैं तानपुरा और हारमोनियम रिपेयर भी किए जाते हैं। इससे ग्राहकों को कहीं और जाने की जरूरत नहीं पड़ती।

**खास उपकरण हैं दुकान की शोभा** : यहां कुछ ऐसे वाद्य यंत्र भी मिल जाएंगे, जिनके नाम शायद आपने पहली बार सुने हों। इनमें थंडर ड्रम जिसमें से तूफान जैसी आवाज निकलती है। ट्रंपेट की आवाज वाला काजू, हैप्पी ड्रम, गुबगुबी आदि उपकरण बच्चों को बेहद पसंद आते हैं। यहां हर प्रकार के गिटार और आकर्षक बेल्ट भी ग्राहकों के बजट में उपलब्ध हैं। आपकी जैसी जरूरत है उसके हिसाब से खरीदारी कर सकते हैं। पांच हजार रुपये से लेकर डेढ़ लाख रुपये तक के गिटार के अलावा बैंबू फ्लूट, टीक फ्लूट व स्टील फ्लूट आदि कई प्रकार की बांसुरी उपलब्ध हैं। वहीं, पियानो व हारमोनियम की बात करें तो छह हजार रुपये से एक लाख रुपये तक, ढोलक 1500 रुपये से साढ़े छह हजार रुपये, बांसुरी 600 से 20 हजार रुपये और सितार 12500 से 25 हजार रुपये तक में उपलब्ध है।

**बड़े बड़े कलाकार भी हैं ग्राहक**: दुकान की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यहां आम से लेकर खास लोग तक वाद्य यंत्र खरीदने व रिपेयर कराने आते हैं। उनके ग्राहकों की सूची में सबसे लोकप्रिय नाम मैथिली ठाकुर का है। संगीत की दुकान में बीते कुछ वर्षों में मैथिली ठाकुर ने खासा नाम कमाया है। वह यहां अक्सर यहां आती रहती हैं। इसके अलावा पूर्व क्रिकेटर अजय जडेजा, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की पत्नी गुरशरण कौर, मोनटेक सिंह आहलुवालिया की पत्नी, पंजाबी गायक जस्सी, अशोक मस्ती व हरभजन मान जैसी बड़ी-बड़ी हस्तियां शामिल हैं।

**रितु राणा**

# ज्ञान और संस्कार सब कुछ है यहां

फुर्सत का ज्ञान

स्वामी विवेकानंद एक ऐसे आदर्श पुरुष और संत, जिन्हें लोग अपनी प्रेरणा मानते हैं। उनके जीवन दर्शन को आत्मसात कर सफलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं। अगर उनकी जीवनी, उनके दर्शन को जानना है, भारतीय संस्कृति और सभ्यता को जीवन में उतारना चाहते हैं तो रामकृष्ण (आरके) आश्रम मार्ग स्थित रामकृष्ण मिशन पुस्तकालय पहुंच जाएं। यहां एक से बढ़कर एक दुर्लभ किताबें मिलेंगी। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी। उन्हीं से प्रेरित होकर स्वामी अंबिकानंद ने 1927 में इस आश्रम की नींव रखी थी। तब यह इलाका लुटियन जोन में आता था। आश्रम में सबसे पहले 1944 में एक रीडिंग रूम स्थापित किया गया। उसके बाद 1956 में पुस्तकालय की स्थापना की गई।

**पचास हजार पुस्तकों का विशाल संग्रह**: चाहे आप किसी भी भाषा के पाठक क्यों न हों, यहां आपको अपनी भाषा में सैकड़ों महत्वपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध हो जाएंगी। हिंदी में आठ हजार, अंग्रेजी में 23 हजार, बंगाली में साढ़े चार हजार, संस्कृत में तीन हजार व अन्य भाषाओं में करीब 500 पुस्तकें उपलब्ध हैं। अगर आप प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं तो भी आपकी जरूरतें यहां पूरी हो जाएंगी। प्रतियोगी परीक्षाओं की हजारों पुस्तकें यहां खास तौर से छात्रों के के लिए रखी गई हैं। इसके अलावा 831 दुर्लभ पुस्तकें भी हैं। यहां बुद्धिज्म, हिंदू दर्शन, मनोविज्ञान, भूगोल, योग, सामान्य ज्ञान, जीवन दर्शन, नीति शास्त्र, संगीत, उपनिषद, वेद आदि पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। चाहें तो आप यहां बैठकर रोजाना 10 अखबार व 150 शीर्षक वाली पत्रिकाएं पढ़ सकते हैं। पुस्तकालय प्रभारी डॉ. एस मजूमदार कहते हैं कि पुस्तकालय का उद्देश्य शोध को बढ़ावा देना है।

**ऑनलाइन भी कर सकते हैं पढ़ाई**: अगर आपके पास हर रोज यहां आकर पढ़ने का समय नहीं है तो भी चिंता की बात नहीं। यहां ऑनलाइन सुविधा भी उपलब्ध है, जिससे आप घर बैठे पढ़ाई कर सकते हैं। मिशन की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस से पुस्तकों की जानकारी ले सकते हैं। यहां मौजूद 831 दुर्लभ पुस्तकों का भी डिजिटाइजेशन किया गया है, जिसे डी स्पेस ओपन सोर्स साफ्टवेयर में जाकर आसानी से पढ़ा जा सकता है। लेकिन इन पुस्तकों को आप केवल पढ़ सकते हैं। सेव करने और प्रिंट निकालने की सुविधा नहीं है।

ऐसे शांत वातावरण में भला किसका मन किताबों से दूर जाना चाहेगा। आरके आश्रम में कुछ इसी तरह अध्ययनरत नजर आते हैं पाठक। जागरण

**ऐसे पहुंचे**
आरके आश्रम मेट्रो स्टेशन के ठीक सामने ही है आश्रम।

**खुलने का समय**
सुबह 8 बजे से लेकर रात 8 बजे तक यहां पढ़ाई कर सकते हैं। सोमवार को अवकाश होता है।

**शोध के लिए स्वामी विवेकानंद की 1300 पुस्तकों का संग्रह**: आप शोधार्थी हैं और स्वामी विवेकानंद की पुस्तकों पर शोध करना चाहते हैं तो 1300 पुस्तकों का संग्रह है। इनमें पार्लियामेंट ऑफ रिलीजंस 1963, पवहारी बाबा 1940, शिक्षा प्रसंग 1958 आदि शामिल हैं। यहां रामकृष्ण व विवेकानंद पर लिखी पुस्तकें फ्रेंच, जापानी, असमी, उर्दू, मराठी व पंजाबी भाषा में भी उपलब्ध हैं। यहां एक रीडिंग हॉल भी बनाया गया है, जहां छात्र शांत व एकांत वातावरण में बैठ किताबों का अध्ययन करते हैं। यहां लड़के और लड़कियों के बैठने के लिए अलग-अलग हॉल की भी व्यवस्था है।

**831 दुर्लभ किताबें**: शैव मत 1955 : डॉ. यदुवंशी, योग वशिष्ठ : कृष्ण पंथ, लाइट ऑफ ट्रुथ 1927 : सरस्वती दयानंद, लाइफ ऑफ हेमाचार्य 1936 : पटेल मणिलाल, शंकराचार्य का इतिहास 1950 : उदयवीर शास्त्री, तर्क भाषा 1937 : मिश्रा केशव, संख्या सूत्रम 1990 : भट्टाचार्य रामाशंकर, सिद्धांत बिंदु 1956 : सरस्वती मधुसूदन, आस्पेक्ट ऑफ सोशल एंड पॉलिटिकल सिस्टम ऑफ मनु स्मृति 1948 : अय्यंगर केवी रंगास्वामी, 2500 ईयर्स ऑफ बुद्धिज्म 1956 : बापत पीवी, श्री रामकृष्ण 1356 : अक्षय कुमार समेत कई ऐसी दुर्लभ पुस्तकों का यहां खजाना है। इतना ही नहीं, शंकराचार्य की विवेकाचुरामनी 1900, अपरोक्षानुभूति 1955, वाक्यवृत्ति एंड आत्माजनानोपदेशाविधि ऑफ श्री शंकराचार्य, चटर्जी बंकिम चंद्र, दुर्गेश नंदिनी 1947 व कपाल कुंडला जैसी आध्यात्मिक पुस्तकों का संग्रह है।

**रवींद्रनाथ पर भी कर सकते हैं शोध** : अगर रवींद्रनाथ टैगोर को पढ़ना चाहते हैं। उन पर किसी तरह का शोध करने का मन हो तो यहां राजा ओ रानी 1952, चंडालिका 1949, मुकुट 1952, गृहप्रवेश 1948, विश्वभारती 1951, फाल्गुनी, राजश्री, राजा, मुक्ति उपाय, समूह 1928, शांति निकेतन 1959, यात्री 1946 आदि कई खास पुस्तकें हैं।

**किताबों के अलग अलग सेक्शन**: किताबों के लिए यहां अलग-अलग सेक्शन बनाए गए हैं। प्रथम तल पर हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली व संस्कृत की किताबों का संग्रह है। वहीं भूतल पर प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले बच्चे बैठकर पढ़ाई करत हैं। एनसीईआरटी की आठवीं से 12वीं कक्षा तक की पुस्तकों के अलावा मेडिकल साइंस, सीए, मैनेजमेंट, हिंदी व अंग्रेजी साहित्य आदि पुस्तकें भी उपलब्ध हैं।

**ऐसे पाएं सदस्यता**: सदस्यता के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु के पाठकों को आश्रम में आवेदन करना पड़ता है। 50 वर्ष से अधिक आयु के पाठक सीधे सदस्यता ले सकते हैं। यहां एक बार में सिर्फ 200 लोगों को ही सदस्यता मिलती है। वार्षिक सदस्यता शुल्क 500 रुपये और एक हजार रुपये सिक्योरिटी चार्ज जमा कराना होता है। साथ में पहचान पत्र व फोटो संलग्न कराने पड़ते हैं। विवेकानंद रीडिंग हॉल में पढ़ने के लिए मासिक शुल्क एक हजार रुपये और सिक्योरिटी चार्ज दो हजार रुपये जमा कराने होंगे। विवेकानंद हॉल में 46 सीट पुरुषों व 24 सीट महिलाओं के लिए उपलब्ध हैं।

**रितु राणा**

## उत्तर प्रदेश में बेरोजगारी लगभग दो गुना हुई

**नई दिल्ली** : बीते वर्ष उत्तर प्रदेश में बेरोजगारी में लगभग दो गुना वृद्धि हुई। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (सीएमआइई) की ओर से जारी आंकड़ों में बताया गया है कि 2018 के मुकाबले 2019 के दौरान उत्तर प्रदेश में बेरोजगारी लगभग दो गुना बढ़ी है। 2019 में यूपी की औसत बेरोजगारी 9.5 परसेंट है, जबकि 2018 के दौरान यह 5.91 परसेंट रही थी। 2011 की जनगणना के मुताबिक यूपी की जनसंख्या करीब 20 करोड़ है, जो कि राष्ट्रीय जनसंख्या का करीब 16 परसेंट है। (आइएएनएस)

स्टील मार्केट की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद सेल ने शानदार प्रदर्शन किया है। दिसंबर में हमारी बिक्री रिकॉर्ड रही है। भविष्य में भी हम यह प्रदर्शन जारी रखेंगे।

— अनिल कुमार चौधरी
चेयरमैन, सेल

| | | |
|---|---|---|
| सेंसेक्स | 41,306.02 | ▲ 52.28 |
| निफ्टी | 12,182.50 | ▲ 14.05 |
| सोना प्रति दस ग्राम | ₹ 39,818 | ▼ ₹131 |
| चांदी प्रति किलोग्राम | ₹ 47,655 | ▼ ₹590 |
| $ डॉलर | ₹ 71.22 | ▼ ₹0.14 |
| क्रूड (ब्रेंट) प्रति बैरल | $ 66.03 | |

# कॉस्ट ऑफ डूइंग बिजनेस पर भी ध्यान दे सरकार : नरेंद्रन

**जासं, जमशेदपुर**

टीवी नरेंद्रन। फाइल फोटो

- उत्पादन लागत कंपनियां कम कर सकती हैं, लेकिन कारोबार की लागत पर सरकार की पहल जरूरी
- टाटा स्टील ने नॉलेज मैनेजमेंट के चौथे संस्करण 4.0 का किया शुभारंभ

टाटा स्टील कंपनी के सीईओ व एमडी टीवी नरेंद्रन ने कहा है कि केंद्र व राज्य सरकार ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के साथ कॉस्ट ऑफ डूइंग बिजनेस पर भी ध्यान दे। टाटा स्टील सहित कोई भी कंपनी अपने यहां उत्पादन लागत में तो कमी ला सकती है लेकिन कॉस्ट ऑफ डूइंग बिजनेस सहित बाहरी तत्व उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं होते हैं। नरेंद्रन बुधवार को नए साल के मौके पर टाटा स्टील के अधिकारियों और कर्मचारियों को संबोधित कर रहे थे।

नरेंद्रन ने कहा कि कंपनी और कर्मचारियों को फ्यूचर के लिए रेडी रहने की जरूरत है। कंपनी का स्लोगन है कि हम कल भी बनाते हैं। इसी से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना है। उन्होंने भविष्य की जरूरत के आधार पर कंपनी को तैयार रखने, बदलाव की ओर बढ़ने और नई टेक्नोलॉजी को आत्मसात करने का मंत्र दिया। नरेंद्रन ने कहा कि शेयरधारकों की शिकायत रहती है कि करोड़ों की कंपनी की शेयर वैल्यू बहुत कम है। इसलिए हमें इस दिशा में विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इस दौरान कंपनी प्रबंधन ने नॉलेज मैनेजमेंट के चौथे संस्करण 4.0 का शुभारंभ किया। इस नई पहल के तहत टाटा स्टील ने गूगल के साथ समझौता कर अपने नॉलेज मैनेजमेंट को और विस्तार दिया है। इसके तहत यदि किसी कर्मचारी के पास बेहतर तकनीकी जानकारी है तो वह इसे नॉलेज मैनेजमेंट में डाल सकता है। इस पोर्टल में नई जानकारी अपलोड होने पर उसे सभी कर्मचारी देख पाएंगे।

# किराया वृद्धि के बाद अब यूजर चार्ज वसूलने का प्रस्ताव

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली**

- उन्नत व साफ-सुथरे रेलवे स्टेशनों के उपयोग लिए देना पड़ सकता है शुल्क
- यात्री यातायात से होने वाले घाटे की भरपाई के लिए रेलवे तलाश रही रास्ता
- अगले 10 साल में 50 लाख करोड़ का निवेश लक्ष्य पाने के लिए भी आमदनी बढ़ाना जरूरी

यात्री किरायों में एक से चार पैसे प्रति किमी की मामूली वृद्धि से ऑपरेटिंग रेशियो में भले ही सुधार हो जाए, लेकिन इससे रेलवे की माली हालत में विशेष सुधार होने वाला नहीं है। इसलिए आने वाले समय में रेलवे आमदनी बढ़ाने के लिए कुछ और कदम उठा सकती है। इनमें यात्रियों से स्टेशनों पर यूजर चार्ज की वसूली शामिल है।

रेलवे को यात्री यातायात में सालाना 46 हजार करोड़ का घाटा हो रहा है। नए साल में किराये में की गई बढ़ोतरी से उसे महज 2300 करोड़ रुपये प्राप्त होंगे। यानी इस बढ़ोतरी से सिर्फ पांच फीसद घाटे की ही भरपाई होगी। बाकी 95 फीसद की भरपाई के लिए या तो उसे सरकार से बजटीय मदद लेनी पड़ेगी या फिर माल ढुलाई और अन्य उपायों का सहारा लेना पड़ेगा।

रेलवे अधिकारियों का कहना है कि किरायों में बढ़ोतरी का निर्णय डरते-डरते लिया गया है। पहले प्रति किलोमीटर 10 पैसे तक की बढ़ोतरी का प्रस्ताव था। लेकिन देश की मौजूदा राजनीतिक स्थितियों को देखते हुए इसे चार पैसे पर सीमित करने का निर्णय लिया गया। यह निर्णय भी कैग की रिपोर्ट के दबाव में लिया गया है जिसमें बढ़ते ऑपरेटिंग रेशियो को लेकर सवाल उठाए गए थे। मौजूदा बढ़ोतरी के जरिये ऑपरेटिंग रेशियो को 95-96 फीसद के तर्कसंगत स्तर तक लाने में कामयाबी मिलेगी।

रेलवे का लक्ष्य महज ऑपरेटिंग रेशियो पर काबू पाना नहीं है। उसकी योजनाएं बड़ी हैं, जिसमें अगले दस वर्षों में 50 लाख करोड़ रुपये के निवेश का लक्ष्य हासिल किया जाना है, यानी हर साल पांच लाख करोड़ रुपये। इसमें से आधा पैसा निजी क्षेत्र से आएगा, जबकि बाकी ढाई लाख करोड़ सरकार और रेलवे मिलकर जुटाएंगे। अभी रेलवे की वार्षिक योजना 1.65 लाख करोड़ की है। इस बार बजट में इसके बढ़कर 1.80 लाख करोड़ रुपये होने की संभावना है। इस तरह 70 हजार करोड़ रुपये का इंतजाम रेलवे को हर साल खुद करना होगा। इसके लिए किराये और माल भाड़े के अलावा कमाई के नए व गैर-परंपरागत तरीकों की ईजाद व अमल आवश्यक हो गया है।

प्रतीकात्मक फोटो

### माल ढुलाई बढ़ाने पर जोर

इसलिए रेलवे सबसे पहले तो माल ढुलाई बढ़ाने के नए तरीके तलाश कर उन्हें लागू करेगी। उदाहरण के लिए ऑटोमोबाइल उत्पादों तथा एफएमसीजी व रोजमर्रा की ऐसी वस्तुओं की ढुलाई बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा, जिनकी ढुलाई प्राय: सड़कों से होती है।

### यात्री राजस्व भी बढ़ाने की तैयारी

फ्रेट कॉरिडोर की खुल चुकी लाइनों का लाभ उठाकर यात्री यातायात के वॉल्यूम में भी बढ़ोतरी की जाएगी। दिसंबर तक पूर्वी और पश्चिमी फ्रेट कॉरिडोर्स की 2000 किलोमीटर लाइनों पर मालगाड़ियों की आवाजाही शुरू हो जाएगी। इससे रेलवे के दो सर्वाधिक व्यस्त दिल्ली-मुंबई व दिल्ली-हावड़ा के रूट कुछ हद तक खाली हो जाएंगे। ऐसा होने से इन रूटों पर यात्री ट्रेनों को अधिक संख्या में और तेज गति से चलाया जा सकेगा। इससे यात्री राजस्व में वृद्धि होगी।

### कंटेंट ऑन डिमांड से कमाई की उम्मीद

किराये से इतर उपायों में रेलवे का इरादा ट्रेनों में 'कंटेट ऑन डिमांड' की सुविधा देकर आमदनी का बड़ा स्रोत तैयार करने का है। इसमें यात्रियों को पामटॉप पर मनचाही फिल्में देखने और म्यूजिक सुनने का मौका मिलेगा। रेलवे बोर्ड चेयरमैन विनोद यादव की मानें तो निजी कंपनियों के माध्यम से इस सुविधा को सभी ट्रेनों में उपलब्ध कराने का प्रस्ताव है।

## न्यूज गैलरी

### समय से आपत्तियां सुलझाएं आयकर अधिकारी : सीबीडीटी

**नई दिल्ली** : सीबीडीटी ने आयकर विभाग से कहा है कि प्रधानमंत्री द्वारा समीक्षा किए जाने से पहले सभी तरह की टैक्स संबंधित आपत्तियों को दूर कर लिया जाए। सीबीडीटी का यह निर्देश ऐसे समय में आया है, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आठ जनवरी को सेंट्रलाइज्ड पब्लिक ग्रीवेंसेस रिड्रेस एंड मॉनिटरिंग सिस्टम (सीपीजीआरएएसएस) की समीक्षा करने वाले हैं। प्रधानमंत्री प्रत्येक महीन प्रोएक्टिव गवर्नेंस एंड टाइमली इम्पीमेंटेशन (प्रगति) प्लेटफॉर्म के अंतर्गत प्रशासनिक कार्यों में प्रगति की समीक्षा करते हैं। यह उसी का हिस्सा है। (प्रेट्र)

### भारत-मॉरिशस में जल्द पूरा होगा फ्री-ट्रेड एग्रीमेंट

**नई दिल्ली** : भारत और मॉरिशस में प्रस्तावित फ्री-ट्रेड एग्रीमेंट अपने अंतिम दौर में है। वाणिज्य मंत्रालय ने कहा कि इसको लेकर दोनों पक्षों के बीच के बीच बातचीत पूरी हो चुकी है। इस समझौते के माध्यम से दोनों देशों को आपसी व्यापार में बराबर का मौका दिया जाएगा। मंत्रालय ने बताया कि इस समझौते में वस्तु एवं सेवाएं, रूल्स ऑफ ओरिजन, व्यापार में आने वाली तकनीकी बाधाएं और विवादों के उपचार जैसे प्रबंध किए गए हैं। (प्रेट्र)

### 2.5 लाख करोड़ के कार्यों को पूरा करने में लगा है सीपीडब्ल्यूडी

**नई दिल्ली** : केंद्र सरकार ने कहा है कि सेंट्रल पब्लिक वर्क डिपार्टमेंट (सीपीडब्ल्यूडी) 2.5 लाख करोड़ रुपये मूल्य के तीन हजार कार्यों को पूरा करने में लगा है। इन कार्यों में लेह और कारगिल का राजभवन और सचिवालय निर्माण भी शामिल है। सीपीडब्ल्यूडी के महानिदेशक प्रभाकर सिंह ने बताया कि विभाग ने लेह और कारगिल में प्रस्तावित कार्यों को पूरा करने के लिए वहां अपनी एक शाखा खोली है। (एएनआइ)

### सेल की बिक्री में रिकॉर्ड इजाफा

**नई दिल्ली** : बीते साल दिसंबर में सेल की बिक्री में 47 परसेंट का उछाल आया है। सरकारी क्षेत्र की इस अग्रणी कंपनी ने कहा कि दिसंबर 2019 की अवधि के दौरान कंपनी ने रिकॉर्ड बिक्री दर्ज की है। इस दौरान कंपनी ने 16.8 लाख टन स्टील बेचा। इससे पहले नवंबर, 2019 के दौरान कंपनी ने 36 परसेंट की वृद्धि दर्ज की थी। कंपनी ने कहा कि चुनौतीपूर्ण स्थितियों में वह लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रही है। (प्रेट्र)

# फिर एक लाख करोड़ के पार जीएसटी

**अच्छे संकेत** ▶ दिसंबर, 2019 में जीएसटी राजस्व संग्रह 1.03 लाख करोड़ रुपये रहा

## सरकार की उम्मीद से अब भी कम है जीएसटी वसूली

**जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली**

**1.14** लाख करोड़ रुपये वसूली का हर महीने लक्ष्य

**1.009** लाख करोड़ रुपये की रही औसत वसूली

जीएसटी संग्रह में बढ़ोतरी के लिए सरकार लगातार प्रयासरत है। प्रतीकात्मक फोटो

नए साल के पहले दिन वस्तु एवं सेवाकर (जीएसटी) के मोर्चे से सरकार के लिए अच्छी खबर आई। ताजा आंकड़ों के मुताबिक, दिसंबर में लगातार दूसरे महीने जीएसटी संग्रह एक लाख करोड़ रुपये की सीमा को पार कर गया है। चालू वित्त वर्ष में पांचवीं बार जीएसटी संग्रह का आंकड़ा एक लाख करोड़ के पार गया है। नवंबर और दिसंबर में लगातार दो महीने एक लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का जीएसटी संग्रह दिखाता है कि सुस्त पड़ी अर्थव्यवस्था में कुछ सुगबुगाहट होने लगी है।

आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, दिसंबर, 2019 में जीएसटी संग्रह 1,03,184 करोड़ रुपये रहा है। दिसंबर, 2018 के 94,726 करोड़ रुपये के मुकाबले यह 16 फीसद ज्यादा है। हालांकि इस साल नवंबर के मुकाबले यह थोड़ा कम है। नवंबर में जीएसटी संग्रह 1,03,492 करोड़ रुपये रहा था।

फिलहाल लगातार दो महीने एक लाख करोड़ का स्तर छूने के बाद भी सवाल यही है कि क्या जीएसटी संग्रह उम्मीद के मुताबिक है? इसका सीधा सा जवाब है 'नहीं'। क्योंकि वित्त मंत्रालय ने चालू वित्त वर्ष में हर महीने औसतन 1.14 लाख करोड़ रुपये के जीएसटी संग्रह का लक्ष्य रखा है। अप्रैल से दिसंबर, 2019 के दौरान औसतन सिर्फ 1,00,928 करोड़ रुपये का जीएसटी संग्रह रहा है।

वित्त मंत्रालय के मुताबिक दिसंबर के जीएसटी संग्रह में केंद्रीय जीएसटी (सीजीएसटी) की राशि 19,962 करोड़ रुपये और राज्य के जीएसटी (एसजीएसटी) की राशि 26,792 करोड़ रुपये की रही है। इंटग्रेटेड जीएसटी (आइजीएसटी) की राशि 48,099 करोड़ रुपये की रही है। अधिभार की राशि 8,331 करोड़ रुपये है। फिलहाल वित्त मंत्रालय पिछले वर्ष के दिसंबर के मुकाबले जीएसटी संग्रह में 16 फीसद के इजाफे को बहुत अच्छा मान रहा है। इस अवधि में आइजीएसटी में भी नौ फीसद का इजाफा हुआ है। दिसंबर में गुड्स इंपोर्ट में 10 फीसद की गिरावट होने से इसे संतोषजनक माना जा सकता है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने पिछले हफ्ते ही उम्मीद जताई थी कि आगे हर महीने जीएसटी संग्रह एक लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रहेगा। चालू वित्त वर्ष के पहले नौ महीनों में पांच बार जीएसटी संग्रह एक लाख रुपये से ज्यादा रहा है, लेकिन इसमें सिर्फ अप्रैल, 2019 में ही यह वित्त मंत्रालय के लक्ष्य के करीब (1.138 लाख करोड़ रुपये) रहा।

**जम्मू-कश्मीर में दिखी अच्छी बढ़त** : वित्त मंत्रालय की तरफ से राज्यवार जीएसटी संग्रह के जो आंकड़े दिए गए हैं उनके मुताबिक जम्मू-कश्मीर में दिसंबर, 2019 के दौरान संग्रह 409 करोड़ रुपये रहा है जो दिसंबर, 2018 के मुकाबले 40 फीसद ज्यादा है। पंजाब (1290 करोड़ रुपये) में 11 फीसद, हिमाचल प्रदेश (699 करोड़ रुपये) में 18 फीसद, उत्तराखंड (1213 करोड़ रुपये) में 15 फीसद, हरियाणा (5365 करोड़ रुपये) में 15 फीसद, उत्तर प्रदेश (5489 करोड़ रुपये) में 11 फीसद और बिहार (1016 करोड़ रुपये) में 12 फीसद की बढ़ोतरी हुई है। झारखंड (1943 करोड़ रुपये) एकमात्र ऐसा राज्य है जहां संग्रह तीन फीसद कम रहा है।

# दिसंबर में ऑटोमोबाइल सेक्टर का मिलाजुला रहा प्रदर्शन

- मारुति और महिंद्रा की बिक्री में आई तेजी
- टाटा और ह्यूंडई का प्रदर्शन रहा खराब

**नई दिल्ली, प्रेट्र** : देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी और महिंद्रा एंड महिंद्रा की घरेलू कार बिक्री में दिसंबर, 2019 में तेजी दर्ज की गई है। हालांकि सभी कंपनियों के लिए 2019 का आखिरी महीना बहुत अच्छा नहीं रहा। दिसंबर में टाटा, ह्यूंडई और टोयोटा की बिक्री में गिरावट आई है।

मारुति सुजुकी इंडिया ने बताया कि दिसंबर में इसकी कार बिक्री में 2.4 परसेंट का इजाफा हुआ है। इस दौरान कंपनी ने 1,24,375 कारें बेची। दिसंबर, 2018 में कंपनी ने 1,21,479 कारें बेची थीं। समीक्षाधीन अवधि में कंपनी के कॉम्पैक्ट सेग्मेंट में रिकॉर्ड 65,673 कारों की बिक्री हुई। इस सेग्मेंट में नई वैगनआर, स्विफ्ट, सेलेरिओ, इग्निस, बलेनो और डिजायर जैसे मॉडल आते हैं। इस दौरान कंपनी के यूटिलिटी वाहनों की बिक्री में भी 17.7 परसेंट का उल्लेखनीय इजाफा हुआ।

देश की अग्रणी कार निर्माता कंपनी महिंद्रा एंड महिंद्रा ने भी सुस्ती को धता बताते हुए समीक्षाधीन अवधि के दौरान घरेलू बाजारों में 37,081 कारें बेची। इससे पहले दिसंबर, 2018 में इसने 36,690 कारें बेची थीं। कंपनी ने अपने प्रदर्शन पर संतोष जताते हुए नए साल में बीएस-6 वाहनों के साथ बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार होने की बात कही है।

दिसंबर, 2019 में टाटा मोटर्स की बिक्री में 12 परसेंट की गिरावट आई है। समीक्षाधीन अवधि में कंपनी ने घरेलू बाजारों में 44,254 वाहन बेचे। वहीं दिसंबर, 2018 में कंपनी ने 50,440 वाहन बेचे थे। टाटा मोटर्स ने बताया कि पिछले साल दिसंबर में उसका ध्यान खुदरा बिक्री पर रहा। कंपनी अपने पुराने स्टॉक को घटाने पर ध्यान दे रही थी। टाटा मोटर्स के प्रेसिडेंट (यात्री वाहन बिजनेस यूनिट) मयंक पारिख ने बताया कि कंपनी इसी महीने से बीएस-6 वाहन उतारना शुरू कर देगी और आने वाले महीनों में इन वाहनों का स्टॉक बढ़ाया जाएगा।

ह्यूंडई ने बताया कि दिसंबर, 2019 के दौरान उसने 37,953 कारें बेचीं, जबकि इससे पिछले वर्ष की इसी अवधि में कंपनी ने 42,093 कारें बेची थीं। इस तरह कंपनी की बिक्री में 9.8 परसेंट की गिरावट दर्ज की गई। समीक्षाधीन अवधि में टोयोटा किर्लोस्कर मोटर्स की घरेलू बिक्री में 45 परसेंट की गिरावट आई। इस अवधि में कंपनी ने 6,544 वाहन बेचे।

# देरी के कारण महंगी हुईं इन्फ्रा सेक्टर की कई परियोजनाएं

**388** परियोजनाओं पर बढ़ गई चार लाख करोड़ से ज्यादा की लागत

**119** परियोजनाएं पांच साल या इससे ज्यादा की देरी से चल रही हैं

**नई दिल्ली, प्रेट्र** : इन्फ्रा परियोजनाओं में देरी का खामियाजा उनकी बढ़ी हुई लागत के रूप में चुकाना पड़ रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, समय से पूरा नहीं हो पाने के कारण 150 करोड़ या इससे ज्यादा के बजट वाली 388 परियोजनाओं की लागत चार लाख करोड़ रुपये से ज्यादा बढ़ गई है।

केंद्रीय सांख्यिकी मंत्रालय 150 करोड़ या इससे ज्यादा बजट वाली परियोजनाओं पर नजर रखता है। ऐसी कुल 1,636 परियोजनाओं में से 563 परियोजनाएं देरी से चल रही हैं, जिनमें 388 परियोजनाओं की लागत बढ़ गई है। मंत्रालय की ओर से अक्टूबर, 2019 के लिए जारी रिपोर्ट के अनुसार, '1,636 परियोजनाओं की कुछ लागत 19,52,524.85 करोड़ रुपये थी और अब इनके पूरा होने तक कुल लागत 23,53,108.80 करोड़ रुपये पर पहुंचने का अनुमान है। इस तरह परियोजनाओं की कुल लागत 4,00,583.95 करोड़ रुपये यानी 20.52 फीसद बढ़ गई है।' रिपोर्ट के अनुसार, अक्टूबर तक इन परियोजनाओं पर कुल 10.32 लाख करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं, जो कुल अनुमानित लागत का 43.86 फीसद है। देरी से चल रही कुल 563 परियोजनाओं में से 185 परियोजनाओं में एक से 12 महीने, 123 परियोजनाओं में 13 से 24 महीने, 136 परियोजनाओं में 25 से 60 महीने और 119 परियोजनाओं में 61 महीने या इससे ज्यादा की देरी हो चुकी है। इस तरह 563 परियोजनाएं औसतन 38.74 महीने की देरी से चल रही हैं।

# दृष्टिबाधित लोगों के लिए आरबीआइ ने पेश किया मनी एप

**मुंबई, आइएएनएस** : रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआइ) ने दृष्टिबाधित लोगों के लिए करेंसी पहचान एप पेश किया है। मोबाइल एडेड नोट आइडेंटिफायर (मनी) नाम के इस मोबाइल एप्लीकेशन की मदद से दृष्टिबाधित व्यक्ति करेंसी नोट की पहचान कर सकेंगे। आरबीआइ का यह एप एंड्रॉयड प्ले स्टोर और आइओएस एप स्टोर से मुफ्त में डाउनलोड किया जा सकता है।

आरबीआइ ने बताया कि यह एप महात्मा गांधी सीरीज के सभी नए और पुराने करेंसी नोटों की पहचान करने में सक्षम होगा। कैमरे की मदद से यह एप नोट की तस्वीर खींचेगा और उसके मूल्य की जानकारी ऑडियो के जरिये देगा। नोटबंदी के बाद महात्मा गांधी सीरीज के नए नोटों की डिजाइन में अहम परिवर्तन किए गए हैं। हाल के वर्षों में 10, 20, 50, 100, 200, 500 और 2000 रुपये के नए नोट जारी किए गए हैं।

# नए साल के पहले दिन शेयर बाजारों ने की सतर्क शुरुआत, हल्की बढ़त दर्ज

- सेंसेक्स में 52 और निफ्टी में 14 अंक की मामूली तेजी
- 102 लाख करोड़ रुपये के इन्फ्रा प्रोजेक्ट के खाके ने बढ़ाई उम्मीद

**मुंबई, प्रेट्र** : 2019 के आखिरी सत्र में गिरावट के बाद नए साल में निवेशकों ने सतर्कता बरती। साल के पहले सत्र में देश के प्रमुख शेयर बाजार हल्की बढ़त दर्ज करने में सफल रहे। इस दौरान फाइनेंशियल, आइटी, एफएमसीजी और पावर सेक्टर के शेयरों में तेजी देखी गई। बुधवार को बीएसई के 30 शेयरों वाले सेंसेक्स में 52.28 अंक की वृद्धि दर्ज की गई। इस दौरान यह 41,306.02 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं एनएसई का 50 शेयरों वाला निफ्टी 14.05 अंक की हल्की बढ़त के साथ 12,182.50 पर बंद हुआ।

सेंसेक्स पैक में पावर ग्रिड के शेयरों में सबसे ज्यादा 2.76 परसेंट का इजाफा हुआ। एनटीपीसी, महिंद्रा एंड महिंद्रा, एलएंडटी, एचयूएल, एचडीएफसी लिमिटेड और इन्फोसिस के शेयर भी बढ़त के साथ बंद हुए। वहीं टाइटन, इंडसइंड बैंक, बजाज ऑटो के शेयर लाल निशान पर बंद हुए। सेक्टोरियल फ्रंट पर बीएसई में पावर, यूटिलिटीज, आइटी और एफएमसीजी सेक्टर के शेयरों में 1.78 परसेंट की तेजी आई। ऑटो, मेटल्स और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स सेक्टर के शेयरों में 1.40 परसेंट की गिरावट देखी गई।

जानकारों के मुताबिक वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा जारी 102 लाख करोड़ रुपये के इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट की रुपरेखा का शेयर बाजार पर सकारात्मक असर पड़ा। इन प्रोजेक्ट्स में से करीब एक चौथाई एनर्जी सेक्टर से संबंधित हैं। इसके अलावा इसमें रेलवे, सिंचाई, मोबिलिटी, शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़े प्रोजेक्ट भी शामिल हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में निवेश से खपत बढ़ाने में मदद मिलेगी।

बुधवार को डॉलर के मुकाबले रुपये की कीमत में 14 पैसे का सुधार आया। इस दौरान एक डॉलर की कीमत 71.22 रुपये रही। पिछले सत्र में यह 71.36 रुपये के भाव पर बंद हुआ था। जानकारों के मुताबिक चीन-अमेरिका में प्राथमिक व्यापार समझौते को लेकर सकारात्मक खबरों से रुपये के भाव में सुधार देखा गया। इस बीच सोना-चांदी के भाव में गिरावट दर्ज की गई। बुधवार को दिल्ली के प्रमुख सराफा बाजारों में सोना 131 रुपये की गिरावट के साथ 39,818 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बिका। चांदी 590 रुपये गिरकर 47,655 रुपये प्रति किलोग्राम के भाव पर बंद हुई।

## उम्मीद

आगामी बजट में विशेष कदम की तैयारी में केंद्र सरकार, जैविक खेती वाला क्षेत्र घोषित हो सकते हैं पूर्वी राज्य, आदिवासी क्षेत्रों को बनाया जाएगा एग्रीकल्चर एक्सपोर्ट जोन

# दूसरी हरित क्रांति को परवान चढ़ाने की हो रही तैयारी

**सुरेंद्र प्रसाद सिंह, नई दिल्ली**

किसानों की आमदनी को दोगुना करने और खाद्यान्न सुरक्षा को मजबूत बनाने की दिशा में बढ़ते हुए सरकार दूसरी हरित क्रांति को परवान चढ़ाने की तैयारी में है। देश के पूर्वी राज्यों में इसकी रफ्तार बढ़ाने का प्रावधान आगामी बजट में किया जा सकता है। प्राकृतिक संसाधनों वाले पूर्वी क्षेत्र के राज्यों से कृषि क्षेत्र को बड़ी उम्मीदें हैं। इन पूर्वी राज्यों को जैविक खेती वाला क्षेत्र घोषित किया जा सकता है। वहीं आदिवासी क्षेत्रों को 'एग्रीकल्चर एक्सपोर्ट जोन' में तब्दील करने की तैयारी है।

दूसरी हरित क्रांति वैसे तो पुरानी योजना है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इस पर बहुत फोकस नहीं किया गया। सरकार अब इसे रफ्तार देने की तैयारी में है। बिहार और बंगाल में अगले दो साल में विधानसभा चुनाव भी हैं, जिसके मद्देनजर यह क्षेत्र राजनीतिक रूप से भी काफी अहम हो गया है।

कृषि मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक पहली हरित क्रांति वाले राज्य पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में फसलों की उत्पादकता की वृद्धि दर स्थिर हो गई है। गेहूं व चावल की लगातार खेती से इन राज्यों में मिट्टी और भूजल की स्थिति बहुत खराब हो गई है। इस गंभीर चुनौती से निपटने के लिए यहां फसलों के विविधीकरण पर जोर दिया जा रहा है। हरियाणा ने इस दिशा में संतोषजनक पहल की है, जिसका उल्लेख प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले महीने 'मन की बात' में किया था।

दूसरी हरित क्रांति वाले राज्यों में पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और असम शामिल हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश को छोड़कर बाकी राज्यों में भूजल का बड़ा भंडार है। यह नदियों के कारण बाढ़ से प्रभावित रहने वाला क्षेत्र है, जहां मत्स्य पालन की पूरी संभावना है। सूत्रों के मुताबिक आम बजट में सरकार इन राज्यों को रासायनिक व कीटनाशक मुक्त कृषि उत्पाद वाला क्षेत्र घोषित कर सकती है। जैविक खेती में जहां लागत कम हो जाती है, वहीं इसकी उपज के मूल्य बाजार में अधिक मिलते हैं। यहां के किसानों को रासायनिक खेती से सतत विकास वाली कृषि की ओर शिफ्ट करने की योजना है, जो पर्यावरण के अनुकूल भी है।

**सघन खेती को प्रोत्साहन** : धान की खेती के बाद देश में 1.16 करोड़ हेक्टेयर खेत परती छोड़ दिया जाता है, जिसका 82 फीसद हिस्सा इन चिन्हित पूर्वी राज्यों का है। दूसरी हरित क्रांति वाले राज्यों में फसलों की सघन खेती को प्रोत्साहित कर उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। यह क्षेत्र खाद्यान्न सुरक्षा की दृष्टि से अगुआ बन सकता है। यहां के छोटी जोत वाले किसानों को भी जैविक खेती से अच्छा लाभ मिल सकता है। झारखंड, ओडिशा और छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्रों में आमतौर पर जैविक खेती होती है, जिसे एग्रीकल्चरल एक्सपोर्ट जोन के रूप में तब्दील किए जाने की संभावना है।

प्रतीकात्मक फोटो

### खाद्यान्न सुरक्षा के लिए पूर्वी राज्यों पर बढ़ाया जाएगा फोकस

खाद्यान्न सुरक्षा के मद्देनजर सरकार का फोकस अब पूर्वी राज्यों पर होने वाला है। हालांकि इसी उद्देश्य से वर्ष 2011-12 में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत 400 करोड़ की लागत से पूर्वी क्षेत्र के राज्यों में दूसरी हरित क्रांति का बिगुल फूंका गया था। इसका नतीजा उत्साहजनक रहा। पहले ही साल में इन राज्यों में 70 लाख टन धान का अतिरिक्त उत्पादन हुआ। इसके चलते अगले साल इस मद में 1000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया। बाद के वर्षों में योजना थोड़ी मंद पड़ गई थी, जिसे अब विशेष तरजीह दी जा सकती है।

# बिना सब्सिडी वाली एलपीजी और विमान ईंधन की कीमत बढ़ी

**नई दिल्ली, प्रेट्र** : बिना सब्सिडी वाला घरेलू गैस (एलपीजी) सिलेंडर 19 रुपये मंहगा हो गया है। विमान ईंधन (एटीएफ) की कीमत में भी 2.6 परसेंट का इजाफा किया गया है। ग्लोबल ऑयल मार्केट में तेजी के चलते कीमत प्रभावित हुई है। बाजार में बिकने वाला 14.2 किलोग्राम का बिना सब्सिडी वाला एलपीजी सिलेंडर 714 रुपये का हो गया है। पहले इसकी कीमत 695 रुपये थी।

पिछले पांच महीनों के दौरान बिना सब्सिडी वाले सिलेंडर पर 139.50 रुपये की वृद्धि हुई है। सब्सिडी वाले कोटे के तहत हर कनेक्शन पर प्रति वर्ष 12 एलपीजी सिलेंडर दिए जाते हैं। इस सिलेंडर की कीमत 495.86 रुपये है। सब्सिडी कोटा खत्म होने के बाद गैर-सब्सिडी वाला सिलेंडर खरीदना होता है। एटीएफ की कीमत में 1,637.25 रुपये प्रति किलोलीटर का इजाफा हुआ है। दिल्ली में इसकी कीमत 64,323.76 रुपये प्रति किलोलीटर हो गई है।

**6** सऊदी युद्ध बंदियों को छोड़ने का दावा किया यमन के हाउती विद्रोहियों ने। यह दावा संकेत देता है कि सऊदी अरब और इरान समर्थित हाउती विद्रोही संयुक्त राष्ट्र के समझौते पर आगे बढ़ रहे हैं। जिसका मकसद अरब के सबसे गरीब मुल्क में शांति स्थापित करना है।

# ऑस्ट्रेलिया में आग से कटे इलाकों में समुद्र के रास्ते मदद

**पर्थ, एजेंसियां :** ऑस्ट्रेलिया में जंगलों में लगी आग से कटे इलाकों में राहत और बचाव कार्य युद्धस्तर पर शुरू कर दिए गए हैं। नौसेना के जहाज और सैन्य विमानों से इन इलाकों में पानी, भोजन और ईंधन भेजा जा रहा है। न्यू साउथ वेल्स और विक्टोरिया राज्य में चार मौतों के बाद अब तक आग की चपेट में आने से 14 लोगों की मौत हो चुकी है।

विक्टोरिया के आपातकालीन आयुक्त एंड्रयू क्रिस्प ने बुधवार को बताया कि नौसेना का एक दल मल्लकूटा में राहत सामग्री लेकर जा रहा है। इसके अलावा हेलीकॉप्टर से भी राहत सामग्री भेजी जा रही है। फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है, लेकिन पूरे राज्य में आग का खतरा अब भी बरकरार है। न्यू साउथ वेल्स के कंजोला पार्क में आग से 50 संपत्तियां पूरी तरह नष्ट हो गईं।

**मल्लकूटा में कार और नौकाओं में लोगों ने बिताई रात :** दक्षिणपूर्व ऑस्ट्रेलिया के मल्लकूटा शहर में मंगलवार सुबह चार हजार स्थानीय लोगों और पर्यटकों को अपनी जान बचाने के लिए समुद्र की ओर भागना पड़ा था। इन लोगों ने कार और नौकाओं में किसी तरह रात गुजारी। मंगलवार देर रात हवाओं के दिशा बदलने से लोगों ने राहत की सांस ली है।

**आग की चपेट में है जापान के क्षेत्रफल जितना हिस्सा :** ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी आग से लगभग पचास लाख हेक्टेयर जमीन प्रभावित हुई है। यह क्षेत्रफल जापान के भूभाग के बराबर है।

**रॉयल कमीशन से जांच की मांग :** ऑस्ट्रेलिया की ग्रींस पार्टी के रिचर्ड डी नटाल ने जंगलों में लगी आग की जांच रॉयल कमीशन से कराने की मांग की है। उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर प्रधानमंत्री स्कॉट मौरिसन ने उनकी यह मांग नहीं मानी तो वह संसदीय आयोग से इसकी गुहार लगाएंगे। बता दें कि ऑस्ट्रेलिया कोयल और तरल प्राकृतिक गैस का दुनिया में सबसे बड़ा निर्यातक है। खास बात यह है कि जंगलों में लगी आग के बावजूद प्रधानमंत्री मौरिसन ने कोयला उत्पादन कम करने से साफ इन्कार कर दिया है।

ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी आग में फंसे लोगों के लिए भोजन और ईंधन लेकर बुधवार को सिडनी से रवाना हुआ नौसेना का जहाज। एपी

जंगलों में लगी भीषण आग से जीव-जंतु बुरी तरह से प्रभावित हैं। कंगारू जान बचाने के लिए सुरक्षित ठिकानों की ओर भाग रहे हैं। एएफपी

# करतारपुर गुरुद्वारे में तीन दिन को गैर सिख श्रद्धालुओं का प्रवेश रोका

**लाहौर, प्रेट्र :** पाकिस्तान के करतारपुर में स्थित गुरुद्वारा दरबार साहिब में गुरु गोविंद सिंह की जयंती के मौके पर तीन दिन के लिए गैर सिख श्रद्धालुओं के प्रवेश पर रोक रहेगी। इस आशय की आधिकारिक जानकारी बुधवार को दी गई।

यह वही गुरुद्वारा है जहां सिखों के पहले गुरु नानकदेव जी ने शरीर त्याग किया था। इसी गुरुद्वारे के दर्शन के लिए भारत के पंजाब प्रांत में स्थित गुरदासपुर जिले के डेरा बाबा नानक धाम से करतारपुर को सड़क मार्ग से जोड़ा गया है। गुरुद्वारे की प्रशासनिक व्यवस्थाओं से जुड़े ट्रस्ट के प्रवक्ता आमिर हाशमी ने बताया है कि पाकिस्तान सरकार ने तीन जनवरी से पांच जनवरी तक दरबार साहिब गुरुद्वारे में गैर सिखों के जाने पर रोक लगा दी है। इस दौरान सिखों के दसवें गुरु गोविंद सिंह की जयंती का समारोह मनाया जाएगा और बड़ी संख्या में पाकिस्तान और भारत के सिख एकत्रित होंगे।

हाशमी ने बताया कि जयंती का मुख्य समारोह पांच जनवरी को होगा। एक अनुमान के अनुसार शनिवार और रविवार को 20 हजार से ज्यादा गैर सिख श्रद्धालु गुरुद्वारे में आते हैं, उन्हें रोकने से गुरुद्वारे में होने वाली भीड़ से बचा जा सकेगा और सिख श्रद्धालु सुविधाजनक तरीके से अपनी धार्मिक गतिविधियां पूरी कर पाएंगे। ट्रस्ट के प्रमुख आमिर अहमद ने जयंती समारोह के आयोजन के लिए सुविधाजनक व्यवस्थाएं करने के अधीनस्थ अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। उल्लेखनीय है कि बीते नौ नवंबर को करतारपुर कॉरीडोर का उद्घाटन हुआ था।

▶ गुरु गोविंद सिंह जयंती समारोह के चलते पाकिस्तान सरकार का कदम

करतारपुर गुरुद्वारा। फाइल

# गुलाम कश्मीर की जनता समस्याओं से बेहाल

**गिलगित, एएनआइ :** गुलाम कश्मीर के लोग दूषित पानी और जलनिकासी का समुचित साधन न होने से परेशान हैं। शहर का गंदा पानी सीधे गिलगित नदी में गिरता है, इस नदी का पानी बिना शोधन के ही पीने के लिए आपूर्ति होता है। सीवर का पानी भी इसी नदी में डाला जाता है जिसके चलते शहरवासियों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं गंभीर होती जा रही हैं। गंदगी से उफन रही नदी के पानी के गिलगित की जलनिकासी व्यवस्था और सीवर सिस्टम बर्बाद हो गया है। इसके चलते नालियों और सीवर का गंदा पानी सड़कों पर उफन रहा है। जो सरकारी अधिकारी सफाई व्यवस्था के लिए जिम्मेदार हैं, वे न तो व्यवस्था सुधार में रुचि ले रहे हैं और न ही जनता की शिकायत सुन रहे हैं। स्थानीय कारोबारियों के अनुसार सड़कों पर गंदा पानी भरने की वजह से कई इलाकों का कारोबार प्रभावित हो रहा है। ग्राहक वहां नहीं आना चाहते हैं। कमोबेश बस्तियों और कॉलोनियों की भी यही दशा है। लोग बुरे हालात में रहने को मजबूर हैं। अब इन लोगों की उम्मीद मुख्यमंत्री और प्रशासन के उच्चाधिकारियों से ही बची है। उन तक आवाज पहुंचाने के लिए वे अपने प्रतिनिधियों और संचार सुविधाओं का सहारा ले रहे हैं।

## न्यूज गैलरी

### नववर्ष के दिन अमेरिका में गोलीबारी में सात लोग घायल

**हंटिंगटन :** अमेरिका के वेस्ट वर्जीनिया में नए साल के दिन एक हुक्का बार में हुई गोलीबारी में कम से कम सात लोग घायल हो गए। घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया है और उनकी स्थिति अभी स्पष्ट नहीं है। हंटिंगटन पुलिस विभाग के अंतरिम पुलिस प्रमुख रे कोर्नवेल ने बुधवार को कहा कि गोलीबारी की घटना यहां स्थित कुल्दुरे हुक्का बार में हुई। घटना के समय बार के भीतर लगभग 50 लोग थे। (एपी)

### जर्मनी के चिड़ियाघर में आग से कई जानवरों की मौत

**बर्लिन :** नए साल के प्रारंभ पर हो रही आतिशबाजी के बीच जर्मनी के क्रेफेल्ड चिड़ियाघर में आग लगने से कई जानवरों की मौत हो गई। अधिकारियों ने बताया कि आग से गोरिल्ला और चिंपैंजी जैसे कई जानवारों की जान चली गई। स्थानीय मीडिया में आग की वजह आतिशबाजी बताई गई है। हालांकि जू के अधिकारियों ने इसकी पुष्टि नहीं की है। (एपी)

### श्रीलंका के सेना प्रमुख को मिली सीडीएस की कमान

**कोलंबो :** श्रीलंका के सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल शवेंद्र सिल्वा देश के नए कार्यकारी चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ बन गए हैं। मंगलवार को सीडीएस पद से एडमिरल रविंद्र विजेगुनारत्ने के इस्तीफे के बाद राष्ट्रपति गोतबाया ने सिल्वा की नियुक्ति की। (एएनआइ)

# सैकड़ों और सैनिक इराक भेज रहा अमेरिका

**उठाया कदम** ▶ बगदाद स्थित दूतावास पर हुए हमले के बाद उठाया कदम

## रविवार को ईरान समर्थित हिजबुल्ला गुट पर किए गए अमेरिका के हमलों में 25 लड़ाके मारे गए थे।

**बगदाद, एएफपी :** इराक में अमेरिकी दूतावास पर हमले के बाद अमेरिका ने सैकड़ों और सैनिकों को पश्चिम एशिया भेजने का निर्णय लिया है। मंगलवार को बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारी राजधानी बगदाद स्थित अमेरिकी दूतावास के अंदर घुस गए थे और उन्होंने वहां आगजनी भी की थी।

डेथ ऑफ अमेरिका जैसे नारे लगा रहे ये प्रदर्शनकारी बीते रविवार को किए गए अमेरिकी हवाई हमलों का विरोध कर रहे थे। ईरान समर्थित हिजबुल्ला गुट पर किए गए इन हमलों में 25 लड़ाके मारे गए थे। अमेरिका ने इस गुट पर अमेरिकी ठेकेदार की हत्या का आरोप लगाया है। अमेरिकी विदेश मंत्री माइक पोंपियो ने इस हमले को आतंकी साजिश करार दिया था और हमलावरों में से एक की पहचान अबू महदी अल मुहांदिस के रूप में की थी। मुहांदिस ईरान समर्थित हश्द अल-शाबी का दूसरे नंबर का प्रमुख है।

अमेरिकी रक्षा मंत्री मार्क एस्पर ने मंगलवार को कहा कि 82वीं एयरबोर्न डिवीजन की त्वरित प्रतिक्रिया इकाई के करीब 750 सैनिकों को अगले कुछ दिनों में पश्चिम एशिया भेजने की तैयारी है। उन्होंने कहा, 'यह तैनाती अमेरिकी कर्मियों और प्रतिष्ठानों पर बढ़ते खतरों के मद्देनजर उठाए जा रहे हैं।' मंगलवार को हुए हमले के बाद दूतावास की सुरक्षा कड़ी करने के लिए अमेरिका ने नौसैनिकों के एक त्वरित प्रतिक्रिया दल को पहले ही पश्चिम एशिया रवाना कर दिया था।

**ट्रंप ने ईरान के साथ युद्ध की संभावना को खारिज किया :** पाम बीच में छुट्टियां मना रहे अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने पत्रकारों से संक्षिप्त बातचीत में कहा, ईरान की स्थिति को बहुत अच्छी तरह से संभाला गया है। जहां तक उसके साथ युद्ध की बात है तो यह अच्छा विचार नहीं है। मुझे शांति पसंद है। इससे पहले ट्रंप ने दूतावास पर हमले के लिए ईरान को जिम्मेदार ठहराया था और अमेरिकियों की हत्या के दुष्परिणाम झेलने की धमकी दी थी।

ट्रंप ने कहा था, 'हमारे किसी भी प्रतिष्ठान में किसी की भी जान जाने या किसी भी प्रकार की क्षति के लिए ईरान पूरी तरह जिम्मेदार होगा। उसे इसके लिए बड़ी कीमत चुकानी होगी। यह धमकी नहीं है, खतरा है। नववर्ष मुबारक हो।'

बगदाद में अमेरिका के दूतावास पर हमले के बाद बुधवार को दूतावास भवन में छत पर मुस्तैद अमेरिकी सैनिक। एएफपी

## खामेनी बोले, धमकियों का सामना करने को तैयार है ईरान

**तेहरान, एएफपी :** ईरान के सर्वोच्च नेता ने इराक पर अमेरिका के हवाई हमलों की कड़ी निंदा करते हुए बुधवार को चेतावनी दी कि वह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा उनके देश के खिलाफ दी गई धमकियों का सामना करने के लिए तैयार हैं। अयातुल्ला अली खामेनी ने सरकारी टेलिविजन पर प्रसारित एक भाषण में कहा कि वह, सरकार और ईरान राष्ट्र इस अमेरिकी अपराध की निंदा करते हैं। सप्ताहांत के हमले के बाद खामेनी की यह पहली टिप्पणी है।

खामेनी ने रविवार को हशद अल-शाबी के उग्रवादियों पर हुए अमेरिका के भीषण हमलों का हवाला देते हुए अपने आधिकारिक ट्विटर अकाउंट पर पोस्ट किया कि ईरान सरकार, राष्ट्र तथा वह अमेरिकी कार्रवाई की कड़ी निंदा करते हैं। अमेरिकी हवाई हमलों में कताइब हिजबुल्लाह (हिजबुल्ला ब्रिगेड) के कट्टरपंथी गुट के कम से कम 25 लड़ाके मारे गए थे। अमेरिका ने इस गुट पर अमेरिकी ठेकेदार की हत्या का आरोप लगाया है। इससे पहले ट्रंप ने ईरान को चेतावनी दी थी। खामेनी ने अपने टेलीविजन संबोधन में कहा, ट्रंप आक्षेप नहीं लगा सकते हैं। इसका ईरान से कोई लेनादेना नहीं है।

# गैंगस्टर की तरह दबाव बना रहा अमेरिका : किम जोंग

▶ उत्तर कोरिया के सर्वोच्च नेता ने दी नए रणनीतिक हथियारों की धमकी

▶ ट्रंप ने किम से आग्रह किया कि वह परमाणु निरस्त्रीकरण को लेकर अपनी प्रतिबद्धता पर कायम रहें

**सियोल, एपी :** परमाणु वार्ता में जारी गतिरोध पर गहरी निराशा जाहिर करते हुए उत्तर कोरिया के सर्वोच्च नेता किम जोंग उन ने नए रणनीतिक हथियारों की धमकी दी है। परमाणु हथियारों और अंतरमहाद्वीपीय मिसाइलों के परीक्षणों पर खुद से लगाई गई रोक को खत्म करने का एलान करते हुए किम ने कहा कि अमेरिका गैंगस्टर की तरह दबाव बना रहा है। किम ने परमाणु वार्ता बहाल करने के लिए अमेरिका को अपने बर्ताव में बदलाव लाने के लिए 2019 के आखिर तक का वक्त दिया था।

उत्तर कोरिया की सरकारी न्यूज एजेंसी केसीएनए के अनुसार, किम ने सत्तारूढ़ वर्कर्स पार्टी की चार दिवसीय बैठक में बुधवार को कहा, 'हम अमेरिका को उत्तर कोरिया के साथ बुरा बर्ताव करने नहीं देंगे। अमेरिका अगर उत्तर कोरिया के प्रति अपनी शत्रुतापूर्ण नीति जारी रखता है तो कोरियाई प्रायद्वीप में परमाणु निरस्त्रीकरण कभी नहीं होगा।

हम अपनी सुरक्षा के लिए नए रणनीतिक हथियार विकसित करेंगे।' किम के इस बयान पर दक्षिण कोरिया के एकीकरण मंत्रालय के प्रवक्ता ली सेंग-मिन ने कहा, उत्तर कोरिया अपने नए हथियार को दिखाने के लिए इस तरह की धमकी दे रहा है। इससे कूटनीतिक दबाव बनाने में कोई मदद नहीं मिलेगी।

**ट्रंप बोले, प्रतिबद्धता पर कायम रहें किम :** अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने किम से आग्रह किया कि वह परमाणु निरस्त्रीकरण को लेकर अपनी प्रतिबद्धता पर कायम रहें। उन्होंने कहा, 'हमने एक करार पर हस्ताक्षर किया है। मेरा मानना है कि वह अपने शब्द पर कायम रहने वाले इंसान हैं।' ट्रंप और किम के बीच दो बार परमाणु वार्ता हो चुकी है। दोनों नेताओं की गत फरवरी में वियतनाम में हुई वार्ता उत्तर कोरिया पर लगे प्रतिबंधों को हटाने की मांग पर बेनतीजा समाप्त हुई थी। तब से दोनों देशों में परमाणु वार्ता ठहरी हुई है।

किम जोंग उन। फाइल

# सन क्रीम पर पाबंदी लगाने वाला पहला देश बना पलाऊ

**गेरुलमुड, आइएएनएस :** प्रशांत महासागरीय देश पलाऊ सन क्रीम के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने वाला पहला देश बन गया है। पर्यटकों के बीच मशहूर पलाऊ में नए साल से सन क्रीम पर यह प्रतिबंध उसमें इस्तेमाल होने वाले खतरनाक रसायन के चलते लगाया गया है। 20 हजार की आबादी वाले देश ने ऑक्सीबेंजोन और ऑक्टीनोजेट रसायनों से बनी क्रीम पर पाबंदी की घोषणा पहले ही कर दी थी।

पलाऊ अपनी समुद्री सुंदरता के लिए जाना जाता है। कोरल रीफ से घिरे इसके द्वीप विभिन्न प्रकार के जीवों के घर हैं। इंटरनेशनल कोरल रीफ फाउंडेशन के मुताबिक, सन क्रीम के तौर पर इस्तेमाल होने वाले रसायन समुद्री जीवों के लिए जहर के समान हैं।

पाबंदी लागू करते हुए पलाऊ के राष्ट्रपति टॉमी रेमेंगेसाऊ ने कहा कि हमें अपने वातावरण को बचाना होगा। गौरतलब है कि वन्यजीवों पर खतरनाक असर को देखते हुए अमेरिका के वर्जिन आइलैंड्स और हवाई प्रांत में भी सन क्रीम पर पाबंदी लगाई जा चुकी है।

# हांगकांग में नए साल पर प्रदर्शनकारियों ने निकाला जुलूस

**हांगकांग, एजेंसियां :** बुधवार को नए साल के मौके पर हांगकांग में लोकतंत्र समर्थक आंदोलनकारियों द्वारा निकाले गए जुलूस में हजारों लोग शामिल हुए। इस दौरान नेताओं ने लोगों से 2019 में शुरू हुए आंदोलन को नए साल में भी बरकरार रखने का आह्वान किया। उधर, हांगकांग में ही नए साल के आगमन पर आधी रात को रैली निकाल रहे लोकतंत्र समर्थकों की कई जगह पुलिस से झड़प हुई। प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने आंसू गैस छोड़ी और रबर की गोलियां दागीं। प्रदर्शनों का सिलसिला बुधवार सुबह तक जारी रहा।

इस जुलूस का आयोजन सिविल ह्यूमन राइट्स मोर्चा ने किया था। समय से बहुत पहले ही लोग विक्टोरिया पार्क में एकत्र होने लगे। फ्रंट से जुड़े जिमी शैम ने वहां एकत्रित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि अपनी मांगों को पूरा कराने के लिए शहर की सरकार पर दबाव बनाने के लिहाज से इस जुलूस का आयोजन किया गया है। हमें पूरी उम्मीद है कि सरकार भविष्य में होने वाले आंदोलनों को दबाने की पूरी कोशिश करेगी, इसलिए हमें इससे लड़ने के लिए तैयार रहना होगा। जुलूस के दौरान लोग प्रमुख मांगों वाला बैनर लिए थे, जिसमें शहर में स्वतंत्र चुनाव कराने, विरोध प्रदर्शनों को दबाने के लिए पुलिस द्वारा की गई कार्रवाई की स्वतंत्र जांच कराने के साथ ही आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किए गए 6500 लोगों को माफी देने की मांग की गई है।

**प्रदर्शनकारियों ने आग लगाकर यातायात किया अवरुद्ध :** मोंग कोक जिले में प्रदर्शनकारियों ने सड़कों को अवरुद्ध करने के साथ ही बैरिकेड में आग लगाकर यातायात बाधित कर दिया। इसके जवाब में पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े और प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए रबर की गोलियां दागीं।

पड़ोसी यो मा टेई जिले में भी बुधवार तड़के पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर पांच राउंड आंसू गैस के गोले छोड़े। विभिन्न जिलों में लोगों ने मानव श्रृंखला बनाकर सड़कें जाम कीं और नारे लगाए। इस दौरान कुछ प्रदर्शनकारी शॉपिंग मॉल में भी घुस गए और लोगों से 2020 में भी आंदोलन जारी रखने का आग्रह किया। महीनों से चले आ रहे विरोध-प्रदर्शनों के चलते हांगकांग की अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई है। हांगकांग की जीडीपी 2.9 फीसद पर जा पहुंची है।

हांगकांग में नए साल के आगमन पर आधी रात को लाखों लोकतंत्र समर्थकों ने रैली निकालकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। इस दौरान पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच झड़प भी हुई। रायटर

# तालिबान के हमलों में अफगानिस्तान में 26 सुरक्षाकर्मियों की मौत

**काबुल, एपी :** अमेरिका के साथ शांति वार्ता स्थगित होने के बाद आतंकी संगठन तालिबान ने अफगानिस्तान में हमले तेज कर दिए हैं। इन हमलों में देश के विभिन्न प्रांतों में 26 सुरक्षाकर्मी मारे गए। कुंदुज प्रांत के काउंसिल प्रमुख मुहम्मद अयूबी ने बताया कि मंगलवार रात आतंकी हमले में चेकपोस्ट पर तैनात दस सैनिकों की मौत हो गई। इसी दिन बल्ख प्रांत में एक अन्य हमले में नौ पुलिसकर्मियों की मौत हो गई।

इस हमले के बाद से चार पुलिसकर्मी लापता हैं। मंगलवार को ही तखर प्रांत में आतंकियों के साथ मुठभेड़ में सात सुरक्षाकर्मियों की जान चली गई। तालिबान ने इन सभी हमलों की जिम्मेदारी ली है। अफगानिस्तान में तालिबान शासन खत्म होने के बाद पिछले 18 वर्षों में आतंकियों के खिलाफ जंग में सैकड़ों सुरक्षाकर्मियों को अपनी जान गंवानी पड़ी। अमेरिकी सेना को भी इस जंग में भारी नुकसान उठाना पड़ा है। अमेरिका इसलिया यहां शांति के लिए कई बार वार्ता कर चुका है।

# महिलाओं के खिलाफ हिंसा की पोप फ्रांसिस ने की निंदा

**वेटिकन सिटी, रायटर :** पोप फ्रांसिस ने नए साल के अपने पहले संदेश में आधुनिक समाज में महिलाओं पर होने वाली हिंसा की घोर निंदा की है। उन्होंने दुनिया की इस आधी आबादी का शोषण बंद करने की अपील करते हुए कहा, 'महिलाओं पर होने वाली हर हिंसा से ईश्वर का अनादर होता है।' पोप ने बुधवार को सेंट पीटर्स बेसिलिका में हजारों लोगों को संबोधित किया। उन्होंने कहा, 'किस तरह एक महिला के शरीर का विज्ञापन, लाभ और पोर्नोग्राफी के लिए शोषण किया जाता है। महिला के शरीर को उपभोक्तावाद से मुक्त किया जाए। उनका सम्मान किया जाना चाहिए।' महिला अधिकारों की वकालत करने वाले पोप ने नए साल के संदेश में भी शरणार्थियों का मुद्दा उठाया। उन्होंने क्रिसमस पर अपने सालाना संदेश में शरणार्थियों की दशा की ओर दुनिया का ध्यान खींचा था। उन्होंने सभी देशों से उन शरणार्थियों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाने की अपील की थी, जो संघर्ष, सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल के साथ ही अन्याय या प्राकृतिक आपदाओं के चलते विस्थापित हुए हैं।

# मथुरा में बुलियन कारोबारी दंपती सहित पुत्री की हत्या, पुत्र गंभीर

**जागरण संवाददाता, मथुरा**

नोटबंदी के दौरान करोड़ों की हेराफेरी में घिरे मथुरा शहर के बहुचर्चित आरएस बुलियन फर्म के मालिक, उनकी पत्नी और बेटी की हत्या कर दी गई, जबकि 10 वर्षीय बेटे की हालत गंभीर है। बुधवार सुबह कार में तीन शव मिले। सभी के सिर में गोली लगी है। पुलिस पूरे मामले को खुदकशी मान रही है। कार में मिले एक कागज पर प्रवर्तन निदेशालय से परेशान होने की बात लिखी गई है। बाकी पत्र पढ़ने में नहीं आ रहा है।

शहर के गऊघाट निवासी बुलियन कारोबारी नीरज अग्रवाल 2018 से परिवार सहित मयूर विहार (दिल्ली) में रहते थे। वह मंगलवार को पत्नी नेहा अग्रवाल, बेटे शौर्य और बेटी धान्या के साथ मथुरा में जगन्नाथपुरी स्थित ससुराल आए थे। रात करीब 11 बजे अपनी ससुराल से स्वजनों सहित दिल्ली के लिए कार से रवाना हुए थे। बुधवार सुबह यमुना एक्सप्रेस वे के माइलस्टोन 105 पर पुल के नीचे सर्विस रोड पर गांव झज्जर के पास ही नीरज अग्रवाल की कार खड़ी थी। पुलिसकर्मियों ने कार में झांककर देखा तो चारों खून से लथपथ थे। पुलिस ने कार के पिछले शीशे तोड़े तो बेटे शौर्य अग्रवाल की सांसें चल रही थीं, जबकि नीरज अग्रवाल, नेहा अग्रवाल और धान्या अग्रवाल की सिर में गोली लगने से मौत हो गई थी। ड्राइविंग सीट पर नीरज अग्रवाल का शव पड़ा था, उनके सीधे हाथ में पिस्टल थी। पीछे की सीट पर नेहा और धान्या के शव पड़े थे। सभी के सिर में गोलियां लगी थीं। शौर्य को पुलिस ने हॉस्पिटल भिजवाया। उसे दिल्ली रेफर कर दिया गया।

**शिकायतकर्ताओं के खिलाफ हत्या की रिपोर्ट:** हत्याकांड की रिपोर्ट बुलियन कारोबारी के साले ने उनकी फर्जीवाड़े की शिकायत करने वाले तीन लोगों के विरुद्ध दर्ज कराई है। हत्या का कारण आरोपितों और कारोबारी के बीच मुकदमा चलना बताया गया है।

बुलियन कारोबारी नीरज अग्रवाल के परिवार की फोटो। सौजन्य : सोशल मीडिया

### करोड़ों का कालाधन सफेद करने का था आरोप

बुलियन कारोबारी नीरज अग्रवाल व उनकी पत्नी नेहा अग्रवाल पर नोटबंदी के दौरान सौ करोड़ रुपये से अधिक के कालेधन को सफेद करने की शिकायत आरोपितों ने की थी। माना जा रहा है कि इसी बात को लेकर इनके बीच रंजिश थी। रंजिश की बात मृतक नीरज अग्रवाल के पिता ने भी पोस्टमार्टम हाउस पर पत्रकारों को बताई।

### लगा था 18.55 का करोड़ का जुर्माना भी

नोटबंदी के दौरान करोड़ों रुपये की हेराफेरी किए जाने के मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने मामले की जांच शुरू की तो बुलियन कारोबारी सुर्खियों में आए। उन पर वाणिज्य कर विभाग ने इस मामले में 18.55 करोड़ रुपये का जुर्माना किया था। इसकी वसूली नहीं हो सकी थी। जुर्माना वसूलने को छापेमारी हुई, तो कारोबारी दिल्ली में जाकर बस गए।

तहरीर के आधार पर हत्या की रिपोर्ट दर्ज की गई है। वैसे साक्ष्य खुदकशी की ओर से इशारा कर रहे हैं। जांच में जो सामने आएगा, उसके आधार पर कार्रवाई की जाएगी। कार से मिले कागज की फारेंसिक जांच कराई जा रही है।

**-शलभ माथुर, एसएसपी, मथुरा**

# चीनी सेना ने शांति बनाए रखने के वादे को दोहराया

**राज्य ब्यूरो, जम्मू**

भारतीय व चीनी सेना के अधिकारियों ने बुधवार को पूर्वी लद्दाख में बॉर्डर पर्सनल मीटिंग (बीपीएम) में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति बनाए रखने के वादे को दोहराया। नए साल पर बीपीएम का आयोजन चीनी सेना के आग्रह पर किया गया था।

दोनों देशों के बीच हुई बैठक में एक दूसरे को यकीन दिलाया गया कि छोटे मोटे विवाद बातचीत से सुलझा कर क्षेत्र में शांति बरकरार रखी जाएगी। पूर्वी लद्दाख के चुशुल सेक्टर के चीन बीपीएम हट मोल्डो गेरीसन व दौलत बेग ओल्डी में हुई बॉर्डर पर्सनल मीटिंग में भारतीय सेना के दल का नेतृत्व ब्रिगेडियर एचएस गिल व कर्नल मनोज कुमार ने किया। चीनी सेना के दल का नेतृत्व वरिष्ठ कर्नल बाल मिन व लेफ्टिनेंट कर्नल ली मिंग जू ने किया। दोनों तरफ से अधिकारियों ने एक दूसरे को नववर्ष की मुबारकबाद दी। अधिकारियों ने सीमा पर सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने और संबंधों में बेहतरी लाने पर जोर दिया। इस दौरान चीन व भारत की संस्कृति को दर्शाते सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। दोनों सेनाओं के सौहार्दपूर्ण माहौल में शांति व सेना संबंधी मुद्दों पर बातचीत की गई।

इसके अलावा दोनों देशों के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति बनाए रखने के लिए किए गए समझौतों पर अमल करने की बात भी कही गई। पूर्वी लद्दाख में भारत व चीनी सेना के बीच लगभग हर तीन महीने बाद राष्ट्रीय पर्वों पर बॉर्डर पर्सनल मीटिंग का आयोजन कर शांति बनाए रखने के लिए आपसी मुद्दों पर चर्चा की जाती है।

मुझे भरोसा है कि हमारी टीम इस साल होने वाले टोक्यो ओलंपिक के फाइनल में पहुंच सकती है।
— मनप्रीत सिंह, हॉकी खिलाड़ी, भारत

## बाबर आजम बोले, अपनी गलतियों पर काम किया

**कराची, प्रेट्र :** पाकिस्तान के शीर्ष बल्लेबाज और टी-20 कप्तान बाबर आजम ने कहा कि उन्होंने 2019 में अपनी गलतियों से सबक लेकर टेस्ट क्रिकेट की बारीकियां सीखी। उन्होंने कहा, 'पिछले साल मैंने अपनी गलतियों से सबक सीखा और रन बनाने में कामयाब रहा। जितना अधिक आप टेस्ट क्रिकेट खेलोगे, उतना ही उसकी बारीकियां समझने में मदद मिलेगी।'

## विश्व रैंकिंग में छह भारतीय पहलवान हुए शामिल

**अनिल भारद्वाज, गुरुग्राम :** युनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग (यूडब्ल्यूडब्ल्यू) की तरफ से विश्व रैंकिंग लिस्ट जारी की गई है। पहली बार विश्व रैंकिंग लिस्ट में भारत के छह पहलवान शामिल हैं। नववर्ष पर जारी लिस्ट में भारत के दीपक पूनिया को नंबर एक रैंकिंग मिली है और बजरंग पूनिया व राहुल अवारे के अलावा विनेश फोगाट नंबर दो की रैंकिंग पर है। इसके अलावा सीमा व मंजू तीसरे स्थान पर रही है।

विश्व कुश्ती चैंपियनशिप 2019 में 86 किग्रा में रजत पदक जीतने वाले दीपक रैंकिंग में दुनिया के नंबर एक पायदान पर काबिज हुए हैं। अपनी पहली विश्व चैंपियनशिप में पदक जीतने वाले दीपक ने विश्व रैंकिंग में बड़ी छलांग लगाई है। पूनिया ने 2019 में जूनियर विश्व कुश्ती चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक और सीनियर में रजत पदक जीतकर देश का नाम रोशन किया था। वहीं 65 किग्रा में कांस्य पदक जीतने वाले भारत के स्टार पहलवान बजरंग पूनिया दूसरे पायदान पर बने हुए हैं। बजरंग का विश्व चैंपियनशिप में सेमीफाइनल मुकाबला विवादित रहा था जिसको लेकर भारतीय कुश्ती महासंघ ने विरोध दर्ज कराया था और यूडब्ल्यूडब्ल्यू ने माना था कि निर्णय देने में चूक हुई है। 61 किग्रा भार वर्ग में पहली बार विश्व कुश्ती प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीतने वाले राहुल अवारे भी दूसरा स्थान हासिल करने में कामयाब रहे। राहुल की यह सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग हैं। रैंकिग लिस्ट में चार महिला पहलवान भी शामिल हैं। 50 किग्रा में सीमा को तीसरा स्थान मिला है और 53 किग्रा में विनेश फोगाट को दूसरा स्थान मिला है। विश्व रैंकिंग में विनेश पहली बार सर्वश्रेष्ठ रैंकिग पर पहुंची हैं। 59 किग्रा में मंजू को तीसरा और इसी वर्ग में पूजा ढांडा को पांचवां स्थान मिला है।

# नए साल में टीम इंडिया का सबसे बड़ा टेस्ट न्यूजीलैंड में

## कीवी दौरे पर पांच टी-20, तीन वनडे और दो टेस्ट मैचों की सीरीज खेलेगा भारत, न्यूजीलैंड में भारतीय टीम का टेस्ट में रहा है खराब प्रदर्शन

**21** टेस्ट सीरीज अभी भारत और न्यूजीलैंड के बीच हुई है जिसमें 11 बार भारतीय टीम ने अपने नाम की है जबकि कीवी टीम पांच बार जीत हासिल कर सकी है। पांच सीरीज ड्रॉ पर समाप्त हुई है

**3-1** से भारतीय टीम ने पहली बार न्यूजीलैंड में टेस्ट सीरीज जीती थी। यह चार मैचों की टेस्ट सीरीज थी और भारत का यह न्यूजीलैंड में पहला दौरा था

**09** टेस्ट सीरीज भारतीय टीम ने अभी तक न्यूजीलैंड में खेली हैं जिसमें भारतीय टीम सिर्फ दो बार ही जीत दर्ज कर सकी है। सात बार कीवी टीम ने सीरीज पर कब्जा किया है जबकि दो सीरीज ड्रॉ रही हैं

**जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली :** विराट कोहली की टीम के लिए पिछला साल शानदार रहा था जिसमें टीम ने कई टेस्ट सीरीज अपने नाम की। ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका और बांग्लादेश को टेस्ट सीरीज में शिकस्त देने के बाद भारतीय टीम को अब अपनी अगली टेस्ट सीरीज न्यूजीलैंड के खिलाफ उसके घर में खेलनी है। भले ही इस साल टीम को टी-20 विश्व कप खेलना है, लेकिन भारतीय खिलाड़ियों का असली टेस्ट न्यूजीलैंड दौरे पर ही होगा जहां टीम का इतिहास खराब रहा है। टीम को आगामी पांच जनवरी से घर में ही श्रीलंका के खिलाफ तीन टी-20 और फिर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन वनडे की सीरीज खेलनी है लेकिन टीम की निगाह 24 जनवरी से शुरू होने वाले न्यूजीलैंड दौरे पर ही टिकी है। भारत को न्यूजीलैंड दौरे पर पांच टी-20, तीन वनडे और दो टेस्ट खेलने हैं। इस दौरान एक तीन दिवसीय अभ्यास मैच भी होगा।

भारतीय टीम अभी तक न्यूजीलैंड दौरे पर सिर्फ दो बार ही टेस्ट सीरीज जीत पाई है। कोहली की टीम के साथी खिलाड़ी भी मानते हैं कि न्यूजीलैंड का दौरा काफी मुश्किल रहेगा। इस साल ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में होने वाले टी-20 विश्व कप को देखते हुए कोहली एंड कंपनी इस प्रारूप के पांच मैच खेलेगी, लेकिन टीम का सबसे बड़ा टेस्ट पांच दिन तक चलने वाले मैचों की सीरीज में ही होगा।

**श्रीलंका और ऑस्ट्रेलिया से भी भिड़ंत :** भारतीय टीम के नए साल की शुरुआत श्रीलंकाई टीम के खिलाफ होगी। भारत इस टीम के खिलाफ पहला टी-20 पांच जनवरी को गुवाहाटी में खेलेगी। कोहली सेना ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहला वनडे 14 जनवरी को खेलेगी। हालांकि इससे पहले भारतीय टेस्ट टीम के बल्लेबाज हनुमा विहारी भी कह चुके हैं कि उनका ध्यान भी न्यूजीलैंड के दौरे पर है और वह वहां बेहतरीन प्रदर्शन करके टीम को अपना योगदान देना चाहते हैं। हालांकि न्यूजीलैंड का दौरा करने वाली एशियाई टीमों के लिए सिरदर्द ही रहा है क्योंकि वहां मौसम बदलता रहता है और तेज गेंदबाजों को वहां की पिचें काफी रास आती हैं।

भारतीय बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे ● फाइल फोटो, ट्विटर

### न्यूजीलैंड में भारत का टेस्ट सीरीज में प्रदर्शन

| विजेता | सत्र | कुल मैच | अंतर |
|---|---|---|---|
| भारत | 1967/68 | चार | 3-1 |
| ड्रॉ | 1975/76 | तीन | 1-1 |
| न्यूजीलैंड | 1980/81 | तीन | 1-0 |
| न्यजीलैंड | 1989/90 | तीन | 1-0 |
| ड्रॉ | 1993/94 | 01 | 0-0 |
| न्यूजीलैंड | 1998/99 | 02 | 1-0 |
| न्यूजीलैंड | 2002/03 | 02 | 2-0 |
| भारत | 2008/09 | 03 | 1-0 |
| न्यूजीलैंड | 2013/14 | 02 | 01 |

### भारत का न्यूजीलैंड दौरा

| दिनांक | मैच | स्थान |
|---|---|---|
| 24 जनवरी | पहला टी-20 | ऑकलैंड |
| 26 जनवरी | दूसरा टी-20 | ऑकलैंड |
| 29 जनवरी | तीसरा टी-20 | हैमिल्टन |
| 31 जनवरी | चौथा टी-20 | वेलिंगटन |
| दो फरवरी | पांचवां टी-20 | माउंट माउंगानुई |
| पांच फरवरी | पहला वनडे | हैमिल्टन |
| आठ फरवरी | दूसरा वनडे | ऑकलैंड |
| 11 फरवरी | तीसरा वनडे | माउंट माउंगानुई |
| 14 से 16 फरवरी | अभ्यास मैच | हैमिल्टन |
| 21 से 25 फरवरी | पहला टेस्ट | वेलिंगटन |
| 29 फरवरी से चार मार्च | दूसरा टेस्ट | क्राइस्टचर्च |

## न्यूजीलैंड में मौसम के अनुरूप ढलना होगा : रहाणे

**नई दिल्ली :** भारतीय टेस्ट टीम के उपकप्तान रहाणे का मानना है कि वेलिंगटन और क्राइस्टचर्च में चलने वाली हवाओं से निपटने की तैयारी करनी होगी। यहीं दोनों टेस्ट होने हैं। रहाणे ने कहा, 'हमने वहां 2014 में भी खेला था। वहां धीरे-धीरे हवाएं चलती हैं। हालात के अनुरूप ढलना काफी अहम होगा। पिछले दौरे पर मैं वेलिंगटन में खेला था, लेकिन क्राइस्टचर्च में हम लंबे समय बाद खेलेंगे। वेगनर ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हाल ही में बेहतरीन प्रदर्शन किया है। आप सिर्फ एक नाम नहीं ले सकते। बल्लेबाजी इकाई के तौर पर आपको सभी का सम्मान करना होगा। मेजबान टीम को हालात की बखूबी जानकारी होगी, लेकिन हमें अपना स्वाभाविक खेल दिखाना होगा। अलग-अलग तरह की गेंदबाजी से निपटने के अलग तरीके हैं। हर किसी का अपना तरीका है। कुछ खिलाड़ी क्रीज के बाहर रहना पसंद करते हैं और कुछ क्रीज के भीतर।' उन्होंने कहा कि न्यूजीलैंड में शरीर के पास खेलना काफी अहम होगा। रहाणे ने कहा, 'कीवियों के सामने आपको बेसिक्स पर ध्यान देना होगा। तकनीक के बारे में ज्यादा नहीं सोच सकते। शरीर के एकदम करीब खेलना जरूरी है। रफ्तार और गति बिलकुल अलग तरह की होगी।' सीरीज से पहले रहाणे भारत-ए के लिए न्यूजीलैंड-ए के खिलाफ चार दिवसीय मैच खेलेंगे। उन्होंने कहा, 'भारत-ए का दौरा भी साथ में रखना अच्छा है। इससे तैयारी पुख्ता होगी।' 2014 में न्यूजीलैंड से हारने वाली भारत की टीम काफी युवा थी, लेकिन तब से अब तक काफी कुछ बदल गया है। रहाणे ने कहा, 'उस समय न्यूजीलैंड में पहली बार युवा टीम गई थी। हमने उस सीरीज से काफी कुछ सीखा और नंबर वन बनने के हमारे सफर की शुरुआत हुई। हम उस समय टेस्ट रैंकिंग में छठे और सातवें स्थान पर थे।'

## कोहली के दिल के करीब है टेस्ट क्रिकेट : शास्त्री

भारतीय कप्तान विराट कोहली और मुख्य कोच रवि शास्त्री ● फाइल फोटो, एएनआइ

**नई दिल्ली :** कप्तान विराट कोहली और कोच रवि शास्त्री के मार्गदर्शन में भारतीय टीम ने अपनी इस साल की प्राथमिकताएं तय कर ली हैं। खेल का लंबा प्रारूप यानी टेस्ट इन दोनों के दिल के करीब है, साथ ही विदेशी जमीन पर जीतना भी लक्ष्य की सूची में है। टेस्ट क्रिकेट से कोहली के प्रेम को लेकर शास्त्री ने कहा, 'किसी भी चीज से ज्यादा जब एक खिलाड़ी मुख्य रूप से टेस्ट क्रिकेट का प्रचार-प्रसार करता है। साफ तौर पर दिखता है कि वह टेस्ट क्रिकेट को पसंद करता है और इसका लुत्फ उठाता है, इसलिए जब कोई बच्चा यह देखेगा कि एक सुपर स्टार टेस्ट को पसंद करता है तो आप उसका अनुसरण करना चाहेंगे। चाहे वह भारतीय हो, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, श्रीलंका, चाहे कहीं का हो।'

भारत को अब नए साल में न्यूजीलैंड का दौरा करना है और कोच को लगता है कि एक बार फिर जसप्रीत बुमराह के नेतृत्व वाले आक्रमण के पास विदेशी किला फतह करने का मौका है। शास्त्री से जब पूछा गया कि उन्हें कब यह अहसास हुआ कि यह गेंदबाजी ग्रुप भारत को शीर्ष पायदान पर ले जा सकता है, इस पर कोच ने कहा, 'इसमें कोई सवाल ही नहीं है। मुझे इस बात को लेकर संदेह नहीं था कि अगर ये लोग अपने शानदार प्रदर्शन को जारी रखते हैं तो यह आक्रमण बेहद शानदार होगा। सच्चाई यह है कि ये लोग एक इकाई के तौर पर गेंदबाजी करना सीख गए हैं और इससे फर्क आया है। आप जिस तरह से बल्लेबाजी इकाई के तौर पर काम करते हैं, गेंदबाजी में भी वही बात लागू होती है।'

उन्होंने कहा, 'विराट से साथ यह है कि वह हर दिन सुधार कर रहे हैं। वह मैदान पर जो जुनून, ऊर्जा लेकर आते हैं, वह शानदार है। मैंने किसी और कप्तान को इस तरह की ऊर्जा मैदान पर लाते हुए नहीं देखा। हां, रणनीति के हिसाब से कुछ जगहें ऐसी हैं, जहां समय के साथ, अनुभव के साथ वह बेहतर होंगे। मैंने अपने जीवन में एक परफेक्ट कप्तान नहीं देखा। आप ऐसे कप्तान देखेंगे, जिनके मजबूत और कमजोर पक्ष अलग-अलग होंगे। उनके पास एक जगह मजबूती हो सकती है तो दूसरी तरफ वह पिछड़े हुए हो सकते हैं और वहां कोई और बेहतर हो सकता है इसलिए आपको अंत में परिणाम देखने होते हैं।'

# दशक की टीमों के कप्तान बने धौनी

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** भारत के करिश्माई पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धौनी को बुधवार को ईएसपीएन क्रिकइन्फो की दशक की वनडे और टी-20 टीम का कप्तान चुना गया, जबकि विराट कोहली को टेस्ट टीम का कप्तान नियुक्त किया गया।

23 सदस्यीय समिति ने चयन इस आधार पर किया कि खिलाड़ी ने कम से कम 50 टेस्ट खेले हों या पारंपरिक प्रारूप में छह साल से सक्रीय हो। वनडे के लिए 75 मैचों और टी-20 के लिए 100 मैचों की अनिवार्यता थी। टेस्ट एकादश में ऑफ स्पिनर आर अश्विन को भी चुना गया, जो कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव और युजवेंद्रा सिंह चहल के आने के बाद से बाहर हैं। इंग्लैंड के एलिस्टेयर कुक और न्यूजीलैंड के केन विलियमसन भी टीम में हैं। कोहली ने 54.97 की औसत से 7202 टेस्ट रन बनाए हैं, जबकि अश्विन ने 362 विकेट लिए हैं। कोहली तीनों प्रारूपों में चुने गए अकेले भारतीय हैं, जबकि रोहित शर्मा ने वनडे एकादश में जगह बनाई है।

एमएस को दी गई वनडे और टी-20 टीमों की जिम्मेदारी, कोहली को चुना गया दशक की टेस्ट टीम का कप्तान

महेंद्र सिंह धौनी ● फाइल फोटो, ट्विटर

जसप्रीत बुमराह, कोहली और धौनी टी-20 टीम में हैं।

टी-20 टीम में वेस्टइंडीज के पांच खिलाड़ी क्रिस गेल, ड्वेन ब्रावो, सुनील नरेन, कीरोन पोलार्ड और आंद्रे रसेल शामिल हैं। महिला टीमों में मिताली राज और झूलन गोस्वामी वनडे और टी-20 टीम में हैं। ऑस्ट्रेलिया की मेग लेनिंग को कप्तान चुना गया है।

**पिछले दशक की टेस्ट टीम :** विराट कोहली (कप्तान), एलिस्टेयर कुक, डेविड वार्नर, केन विलियमसन, स्टीव स्मिथ, बेन स्टोक्स, एबी डिविलियर्स (विकेटकीपर), रविचंद्रन अश्विन, जेम्स एंडरसन, डेल स्टेन और रंगना हेराथ।

**पिछले दशक की वनडे टीम :** महेंद्र सिंह धौनी (कप्तान, विकेटकीपर), एबी डिविलियर्स, ट्रेंट बोल्ट, हाशिम अमला, रॉस टेलर, मिशेल स्टार्क, रोहित शर्मा, लसित मलिंगा, विराट कोहली, शाकिब अल हसन, इमरान ताहिर।

**पिछले दशक की टी-20 टीम :** महेंद्र सिंह धौनी (कप्तान, विकेटकीपर), एबी डिविलियर्स, ड्वेन ब्रावो, क्रिस गेल, राशिद खान, सुनील नरेन, कीरोन पोलार्ड, लसित मलिंगा, विराट कोहली, आंद्रे रसेल और जसप्रीत बुमराह।

**पिछले दशक की महिला टीम :** मेग लेनिंग (कप्तान), मिताली राज, डेन वान निकर्क, स्टेफनी टेलर, साराह टेलर (विकेटकीपर), अन्या श्रुबसोल, सूजी बेट्स, एलिस पैरी, झूलन गोस्वामी, डिएंड्रा डॉटिन, अनिसा मुहम्मद।

# हार्दिक पांड्या ने की नताशा के संग सगाई

**जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली:** भारतीय ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या ने नए साल के मौके पर सोशल मीडिया पर अभिनेत्री और अपनी गर्लफ्रेंड नताशा स्टेनकोविक के साथ सगाई की घोषणा की।

हार्दिक ने सर्बिया की रहने वाली नताशा के साथ अपनी सगाई का एलान करने के लिए इंस्टाग्राम का सहारा लिया। नताशा रियलिटी शॉ 'बिग बॉस' में भाग ले चुकी हैं और उन्होंने बादशाह के प्रसिद्ध म्यूजिक वीडियो 'बंदूक' के अलावा कुछ बॉलीवुड फिल्मों में आइटम डांस किया है। 27 साल की नताशा के साथ हार्दिक ने इंस्टाग्राम पर तस्वीर पोस्ट करने के साथ अमिताभ बच्चन की फिल्म 'शान' के गाने 'मैं तेरा, तू मेरी, जाने सारा हिंदुस्तान' को कोट किया है। इस तस्वीर में नताशा सगाई की अंगूठी दिखाती नजर आ रही हैं।

भारतीय कप्तान कोहली ने हार्दिक और नताशा की सगाई की खबर को 'सुखद आश्चर्य' बताया है। कोहली ने इन दोनों को बधाई देते हुए इंस्टाग्राम पर पोस्ट किया, 'शुभकामनाएं हार्दिक, क्या सुखद आश्चर्य है। आप दोनों को भविष्य के लिए शुभकामनाएं।'

हार्दिक के साथ नताशा ● इंस्टाग्राम

# धुएं के कारण प्रभावित हो सकता है ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलैंड मैच

**सिडनी, एएफपी :** ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच शुक्रवार से शुरू होने वाले सीरीज का अंतिम व तीसरा टेस्ट धुएं के कारण प्रभावित हो सकता है। यह धुआं न्यूसाउथ वेल्स राज्य में 100 से अधिक पेड़ों के जलने से पूरे सिडनी शहर में फैला हुआ है। हाल के सप्ताहों में सिडनी के निवासियों के लिए वायु की गुणवत्ता एक नियमित चिंता का विषय रही है और शुक्रवार को धुएं की स्थिति सबसे खराब होने की उम्मीद है। ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी भीषण आग ने अधिकांश राज्यों को प्रभावित किया है। यही नहीं, इसमें कई लोगों की जान भी जा चुकी है।

ज्यादातर समय सिडनी में व्यतीत करने वाले न्यूजीलैंड के ऑफ स्पिनर विल समरविले ने कहा, 'शहर में फैला धुआं काफी चिंताजनक है। यह काफी भयानक है, चौंकाने वाला है और यह इतने लंबे समय से चल रहा है, इससे जल्द निपटना होगा। मुझे नहीं पता कि मैच का क्या होना है। काफी लोग बात कर रहे हैं कि धुएं के चलते खेल पर असर पड़ेगा।'

**दुविधा**
- दोनों देशों के बीच सीरीज का तीसरा टेस्ट शुक्रवार से
- जंगल में लगी आग के चलते शहर में फैला हुआ है धुआं

**बीबीएल पर भी पड़ा असर :** हाल ही में कैनबरा में बिग बैश लीग (बीबीएल) का एक मैच इसी के चलते रद कर दिया गया था। सिडनी टेस्ट रद करने का अंतिम फैसला मैच रेफरी रिची रिचर्डसन लेंगे। वह अंपायरों के साथ हवा की गुणवत्ता और दृश्यता की बारीकी से निगरानी करेंगे। उसके बाद कोई निर्णय लेंगे। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के कोच जस्टिन लैंगर की मानें तो वह मैदान में हवा के परीक्षण के बाद ही खेल जारी रखने के पक्ष में हैं। यही नहीं, लैंगर बारिश की उम्मीद भी लगाए हैं क्योंकि इस समय सिडनी को इसकी काफी जरूरत है।

**ऑस्ट्रेलियाई टीम में कोई बदलाव नहीं :** लैंगर ने कहा कि इस टेस्ट मैच के लिए टीम में बदलाव की संभावना नहीं है। हालांकि, मेजबान टीम पहले ही सीरीज जीत चुकी है। लैंगर ने कहा, 'बदलाव करना मुश्किल होगा। हमें इंतजार करना होगा। अगले दो दिन में पता चलेगा कि विकेट कैसा है।' ऑस्ट्रेलिया ने पहले दोनों टेस्ट चार दिन के भीतर ही जीत लिए थे। स्पिनरों की मददगार सिडनी की पिच पर नाथन लियोन के बैकअप के तौर पर स्वेपसन को उतारा जा सकता है। न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियमसन और हेनरी निकोलस फ्लू के कारण अभ्यास नहीं कर सके। टीम अधिकारियों ने हालांकि कहा कि वे शुक्रवार तक फिट हो जाएंगे।

# दूसरे टेस्ट से ब्रॉड को बाहर करें : पीटरसन

**केपटाउन, आइएएनएस :** पूर्व कप्तान केविन पीटरसन को लगता है कि इंग्लैंड को दक्षिण अफ्रीका के साथ खेले जाने वाले दूसरे टेस्ट मैच को जीतने के लिए जेम्स एंडरसन या स्टुअर्ट ब्रॉड में से किसी एक को बाहर करना होगा। दोनों टीमों के बीच दूसरा मैच शुक्रवार से न्यूलैंडस में शुरू हो रहा है।

पीटरसन ने ट्वीट किया, 'अगर इंग्लैंड को मैच जीतना है तो उसे न्यूलैंडस में ब्रॉड या एंडरसन को बाहर कर एक अतिरिक्त बल्लेबाज को खेलाना होगा।' इससे पहले, मंगलवार को इंग्लैंड के कोच क्रिस सिल्वरवुड ने भी ऐसे संकेत दिए थे कि इन दोनों अनुभवी खिलाड़ियों में से किसी एक को बाहर बैठा स्पिनर के लिए जगह बनाई जा सकती है। इंग्लैंड को दक्षिण अफ्रीका ने पहले मैच में 107 रनों से मात दी थी। वहीं मेहमान टीम अपने खिलाड़ियों की बीमारी से भी परेशान है। वहीं, इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर के दूसरे टेस्ट में खेलने पर संदेह के बादल मंडरा रहे हैं। ऐसी खबरें हैं कि आर्चर की कोहनी में चोट है। आर्चर ने बुधवार को अभ्यास सत्र में सिर्फ छह गेंद डालीं और इसके बाद वह बाहर चले गए जिससे यह सवाल उठने लगा है कि वह दूसरे टेस्ट मैच में खेल पाएंगे या नहीं।

**लैंगर ने दी कैप:** क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने बुधवार को एक भावुक पल साझा किया जब टीम के कोच जस्टिन लैंगर ने 80 साल के विकलांग प्रशंसक को सिडनी क्रिकेट मैदान (एससीजी) पर टीम की ट्रेनिंग कैप दी। सीए ने इसका एक वीडियो शेयर किया है और बताया कि उस बुजुर्ग प्रशंसक का नाम बिल डीन है। सीए ने बताया कि डीन न्यू साउथ वेल्स में लगी जंगल में आग से पीड़ित हैं। सीए ने लिखा कि बाकी ऑस्ट्रेलियाई लोगों की तरह बिल डीन भी हालिया दौर में मुश्किलों से गुजर रहे हैं। उनका गृहनगर लिथगो आग की चपेट में आ गया और उनके दामाद का घर लगभग पूरी तरह से तबाह हो गया।

**आगाज** | शुक्रवार से ऑस्ट्रेलिया के तीन शहरों में शुरू होगी नई टीम चैंपियनशिप

# एटीपी कप के साथ शुरू होगा टेनिस का नया दौर

**सिडनी, एएफपी :** स्पेन के दिग्गज खिलाड़ी राफेल नडाल और सर्बिया के नोवाक जोकोविक की मौजूदगी में नए टीम चैंपियनशिप एटीपी कप के माध्यम से शुक्रवार से 2020 में पुरुष टेनिस के नए दौर की शुरुआत होने जा रही है। तीन से 12 जनवरी तक होने वाले इस टूर्नामेंट में भाग ले रहे सितारों की निगाहें साल के पहले ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट ऑस्ट्रेलियन ओपन से पहले जीत के साथ नए सत्र की शुरुआत करने पर होगी।

ऑस्ट्रेलिया के तीन शहरों में होने वाले इस नए टूर्नामेंट में 24 टीमों को छह ग्रुपों में बांटा गया है। ग्रुप चरण के बाद नॉकआउट चरण के मुकाबले खेले जाएंगे। ग्रुप चरण में हर दिन तीनों शहरों में दो सिंगल्स और और एक डबल्स मुकाबले खेले जाएंगे जहां दो मुकाबले जीतने वाली टीम विजयी घोषित की जाएगी। यह पुरुषों की टीम चैंपियनशिप में खेला जाने वाला तीसरा टूर्नामेंट है। इससे पहले पुरुष टीम चैंपियनशिप में डेविस कप और लेवर कप आयोजित किए जाते हैं।

एटीपी कप से पहले पर्थ में रोटनेस्ट द्वीप पर क्रेफिश को देखते स्पेन के टेनिस स्टार राफेल नडाल ● एएफपी

### ब्रिसबेन ओपन से हटीं वीनस

**ब्रिसबेन, एएफपी :** अमेरिका की टेनिस स्टार वीनस विलियम्स ने अभ्यास के दौरान लगी चोट का हवाला देकर सत्र के पहले टूर्नामेंट ब्रिसबेन ओपन से अपना नाम वापस ले लिया है। हालांकि उन्होंने इस महीने के आखिर में होने वाले ऑस्ट्रेलियन ओपन में खेलने की उम्मीद जताई। वीनस ने कहा, 'मैं ब्रिसबेन में नहीं खेल सकूंगी क्योंकि अभ्यास के दौरान मुझे अचानक चोट लग गई। उम्मीद है कि ऑस्ट्रेलियन ओपन में खेलूंगी।' आयोजक वीनस के विकल्प का एलान गुरुवार को करेंगे।

### एटीपी कप

- **ग्रुप-ए (ब्रिसबेन)**- सर्बिया, फ्रांस, दक्षिण अफ्रीका, चिली
- **ग्रुप-बी (पर्थ)**- स्पेन, जापान, जॉर्जिया, उरुग्वे
- **ग्रुप-सी (सिडनी)**- बुल्गारिया, बेल्जियम, ग्रेट ब्रिटेन, मोल्दोवा
- **ग्रुप-डी (पर्थ)**- रूस, इटली, अमेरिका, नॉर्वे
- **ग्रुप-ई (सिडनी)**- ऑस्ट्रिया, क्रोएशिया, अर्जेंटीना, पोलैंड
- **ग्रुप-एफ (ब्रिसबेन)**- जर्मनी, यूनान, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया

**फेडरर की खलेगी कमी :** इस टूर्नामेंट में स्विट्जरलैंड के दिग्गज खिलाड़ी रोजर फेडरर की कमी खलेगी जिन्होंने इस टूर्नामेंट से अपना नाम वापस ले लिया था। साथ ही एंडी मरे और जापान के केई निशिकोरी भी चोट की वजह से एटीपी कप का हिस्सा नहीं होंगे। निक किर्गियोस और जोकोविक को लगता है कि यह टूर्नामेंट शानदार साबित होगा।

# चार साल पुराना प्रदर्शन दोहराना चाहेंगे स्टोक्स

**केपटाउन, एएफपी :** दक्षिण अफ्रीकी टीम के खिलाफ शुक्रवार से यहां न्यूलैंड्स में शुरू हो रहे दूसरे टेस्ट में जब इंग्लैंड की टीम मैदान पर उतरेगी तो बेन स्टोक्स अपने शानदार प्रदर्शन में से एक को दोहराना चाहेंगे, लेकिन इस बार हालात पहले से अलग होंगे।

चार साल पहले स्टोक्स ने यहां ताबड़तोड़ बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए 198 गेंदों पर 258 रन ठोक डाले थे, जिसमें 11 छक्के भी शामिल थे। इस दौरान उन्होंने जॉनी बेयरस्टो के साथ छठे विकेट के लिए विश्व रिकॉर्ड साझेदारी निभाते हुए 399 रन जोड़े थे। बेयरस्टो ने भी 191 गेंदों पर नाबाद 150 रन की पारी खेली थी। हालांकि, इंग्लैंड की टीम चार टेस्ट मैचों की सीरीज के उस टेस्ट में उतरने से पहले 1-0 से आगे थी। इस बार इंग्लैंड की टीम को सेंचुरियन में खेले गए सीरीज के पहले टेस्ट में हार का सामना करना पड़ा है और अब उसे पुरानी लय हासिल करने की जरूरत है। इस बार इंग्लैंड के कप्तान जो रूट दबाव में हैं, क्योंकि उनकी टीम का हाल में घर से बाहर खराब रिकॉर्ड रहा है। स्टोक्स तब इंग्लैंड के लिए करिश्माई खिलाड़ी बनने की राह पर थे, जिसे 2019 के दौरान उन्होंने और मजबूती दी। हालांकि, बेयरस्टो और पीछे चले गए हैं। सेंचुरियन में एक और नौ के स्कोर के साथ असफल रहे बेयरस्टो का न्यूलैंड्स में खेलना मुश्किल नजर आ रहा है। सेंचुरियन में वह इसलिए खेले थे, क्योंकि ओली पॉप बीमार थे।

दक्षिण अफ्रीकी टीम को अपनी अंतिम एकादश में एक बदलाव करना पड़ सकता है। चोटिल एडेन मार्करैम की जगह सलामी बल्लेबाज पीटर मलान को टेस्ट पदार्पण का मौका मिल सकता है।

**चुनौती**
- दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैंड के बीच दूसरा टेस्ट कल से
- 2016 में न्यूलैंड्स में बेन ने ठोके थे ताबड़तोड़ 258 रन

मैं सीनियर भारतीय टीम में जगह बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हूं। मैं रन बनाना जारी रखूंगा।
– प्रियांक पंचाल, बल्लेबाज, गुजरात रणजी टीम

## तकनीक पर काम कर रही हैं बैडमिंटन खिलाड़ी सिंधू

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** आलोचना या उम्मीदों के बोझ से विश्व चैंपियन शटलर पीवी सिंधू पर कोई असर नहीं पड़ता और उन्होंने कहा कि वह इस साल टोक्यो ओलंपिक में पदक जीतने के लिए अपने खेल में सुधार करने पर ध्यान दे रही हैं। वह अपनी तकनीक पर काम कर रही हैं। सिंधू ने 2019 में विश्व चैंपियनशिप का खिताब जीता, लेकिन सत्र के बाकी टूर्नामेंटों में से अधिकतर में वह शुरुआती दौर से आगे बढ़ने में नाकाम रहीं।

## न्यूज गैलरी

### दंतेवाड़ा के दिव्यांग बच्चे के जब्जे को तेंदुलकर का सलाम

**दंतेवाड़ा :** महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने नए साल पर दंतेवाड़ा से वायरल एक वीडियो को अपने ट्विटर अकाउंट पर साझा किया है। यह वीडियो दंतेवाड़ा के कुआकोंडा ब्लॉक का है, जिसमें एक दिव्यांग बालक सामान्य बच्चों के साथ क्रिकेट खेल रहा है। वीडियो दंतेवाड़ा जिले के बेंगलुर पंचायत (कटेकल्याण) में रहने वाले मड्डाराम कवासी का है, जो सातवीं में पढ़ता है। डोमाराम कवासी का बेटा मड्डाराम भले ही पैरों से लाचार है, लेकिन उसमें क्रिकेट खेलने की ऐसी ललक है कि वह सामान्य बच्चों के साथ खेलकर रन बटारने में पीछे नहीं रहता। यही वजह है कि उसके दोस्त भी उसे साथ खिलाने पर एतराज नहीं करते। यह बात उसे अन्य बच्चों से अलग करती है। यह वीडियो पालनार के गोलू सिन्हा ने पिछले दिनों फेसबुक पर साझा किया था जो अन्य माध्यम से सचिन तेंदुलकर तक पहुंची। (नईदुनिया)

### डफिन को मिलेगा फायदा

**मेलबर्न :** ऑस्ट्रेलिया की महिला जेस डफिन क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) की नई मातृत्व नीति का फायदा उठाने वाली पहली क्रिकेटर बनेंगी। सीए ने अपनी महिला क्रिकेटरों को 12 महीने का वेतन सहित मातृत्व अवकाश देना शुरू किया है, जिसका फायदा अब डफिन को मिलेगा। डफिन ने खुद को अगले टी-20 महिला विश्व कप के लिए खुद को अनुपलब्ध बताया है। 2015 में डफिन ऑस्ट्रेलिया की ओर से पिछली बार खेलती नजर आई थीं लेकिन महिला बिग बैश लीग में प्रदर्शन के आधार पर घरेलू मैदान पर होने वाले महिला विश्व कप में उनकी वापसी की उम्मीद की जा रही थी। (रायटर)

### डकार रैली में अलोंसो

**मैड्रिड :** स्पेन के फर्नांडो अलोंसो डकार रैली में हिस्सा लेने वाले पहले फॉर्मूला-1 चैंपियन बनेंगे। डकार रैली सऊदी अरब में रविवार से शुरू हो रही है। अलोंसो के मुताबिक, यह मेरे करियर की अभी तक की सबसे बड़ी चुनौती है। मुझे इसके लिए शून्य से तैयारी करनी होगी। अलोंसो 2005 और 2006 में एफ-1 चैंपियनशिप जीत चुके हैं। अभी तक कुल 20 एफ-1 ड्राइवरों ने डकार रैली में हिस्सा लिया है, लेकिन अलोंसो इसमें हिस्सा लेने वाले पहले विश्व चैंपियन होंगे। जैकी लेक्स डकार रैली में हिस्सा लेने वाले पहले एफ-1 ड्राइवर बने थे। (आइएएनएस)

# विलियमसन तब भी बेहतरीन खिलाड़ी थे : कोहली

**तारीफ ▶ विराट ने अंडर-19 विश्व कप के दिनों को किया याद**

### 2008 में सेमीफाइनल में कोहली की टीम ने दी थी न्यूजीलैंड को मात

**नई दिल्ली, प्रेट्र :** अंडर-19 विश्व कप 2008 में भले ही भारतीय टीम और युवा विराट कोहली का बोलबाला रहा हो, लेकिन भारतीय कप्तान ने न्यूजीलैंड के केन विलियमसन को उस टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी करार दिया। कोहली की अगुआई वाली भारतीय टीम ने विलियमसन की न्यूजीलैंड की टीम को सेमीफाइनल में हराया था। उन टीमों में रवींद्र जडेजा, ट्रेंट बोल्ट और टिम साउथी जैसे खिलाड़ी भी थे।

कोहली ने कहा, 'मुझे याद है जब केन के खिलाफ खेला था। वह टीम में सबसे अलग थे और उनका बल्लेबाजी कौशल भी सबसे जुदा था। उस समय केन के अलावा स्टीव स्मिथ भी अपनी टीम के लिए खेल रहे थे। आइसीसी अंडर-19 विश्व कप मेरे करियर का अहम पड़ाव था। इससे हमें आगे बढ़ने के लिए अच्छी नींव मिली। मेरे दिल और दिमाग में इसकी खास जगह है।'

कोहली जहां 2008 विश्व कप के सितारे थे, वहीं 2010 में बेन स्टोक्स, जोस बटलर और जो रूट जैसे सितारे उभरे। स्टोक्स ने भारत के खिलाफ एक मैच में 88 गेंद में छह छक्कों के साथ 100 रन बनाए थे।

विराट कोहली। फाइल फोटो, एएफपी

### पाक गेंदबाज नसीम शाह अंडर-19 विश्व कप से बाहर

**कराची, प्रेट्र :** पाकिस्तान ने तेज गेंदबाज नसीम शाह को अंडर-19 विश्व कप टीम से यह कहकर वापस बुला लिया कि अब वह सीनियर स्तर पर खेलने के लिए तैयार हैं। हाल ही में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने वाले शाह की जगह मुहम्मद वसीम जूनियर को शामिल किया गया। मुख्य कोच मिस्बाह उल हक और गेंदबाजी कोच वकार युनूस का मानना है कि उन्हें जूनियर टीम से हटा लेना चाहिए। पीसीबी के सीईओ वसीम खान ने कहा कि नसीम ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपनी उपयोगिता साबित कर दी है। यही वजह है कि पीसीबी ने उन्हें अगले साल होने वाले जूनियर विश्व कप की टीम से हटाने का फैसला किया है। जूनियर विश्व कप 17 जनवरी से शुरू होगा।

## पूर्व कप्तान एंजेलो मैथ्यूज की श्रीलंका टी-20 टीम में वापसी

**कोलंबो, प्रेट्र :** पूर्व कप्तान एंजेलो मैथ्यूज को भारत के खिलाफ पांच जनवरी से गुवाहाटी में शुरू होने वाली तीन टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैचों की सीरीज के लिए बुधवार को श्रीलंका की टीम में चुना गया। इस 32 वर्षीय ऑलराउंडर ने 16 महीने तक बाहर रहने के बाद श्रीलंका की टी-20 टीम में वापसी की है। मैथ्यूज ने अपना आखिरी टी-20 अंतरराष्ट्रीय अगस्त 2018 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेला था। श्रीलंका क्रिकेट ने कहा कि 16 सदस्यीय टीम की अगुआई तेज गेंदबाज लसिथ मलिंगा करेंगे। शुरू में तेज गेंदबाज नुवान प्रदीप को टीम में रखा गया था, लेकिन अभ्यास सत्र के दौरान चोटिल हो जाने के कारण उनकी जगह पर एक अन्य तेज गेंदबाज कासुन रजिता को लिया गया है। श्रीलंकाई टीम गुरुवार को भारत पहुंचेगी। हालांकि आइपीएल में खेलने के कारण टीम के कई खिलाड़ियों को भारत की पिचों का अनुभव है।

**टीम :** लसिथ मलिंगा (कप्तान), दानुष्क गुणातिलका, अविष्का फर्नांडो, एंजेलो मैथ्यूज, दासुन शनाका, कुसाल परेरा, निरोशन डिकवेला, धनंजय डिसिल्वा, इसुरु उदाना, भानुका राजपक्षे, ओशदा फर्नांडो, वानिंदु हसरंगा, लाहिरु कुमारा, कुसाल मेंडिस, लक्षण संदाकन और कासुन राजिता।

# उम्र में धोखाधड़ी के कारण मनजोत कालरा निलंबित

**जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली**

**शर्मनाक**

- डीडीसीए के लोकपाल ने लगाया एक साल का निलंबन, नहीं खेल पाएंगे रणजी ट्रॉफी
- पिछले अंडर-19 विश्व कप के फाइनल में जड़ा था शतक

पिछले अंडर-19 विश्व कप के फाइनल में शतक जड़ने वाले बायें हाथ के सलामी बल्लेबाज मनजोत कालरा को अंडर-16 और अंडर-19 के दिनों में उम्र में कथित धोखाधड़ी करने के लिए डीडीसीए के निवर्तमान लोकपाल ने रणजी ट्रॉफी खेलने से एक साल के लिए निलंबित कर दिया।

इसी तरह के अपराध में हालांकि दिल्ली की सीनियर टीम के उप कप्तान नीतिश राणा को कुछ समय के लिए छोड़ दिया गया है, क्योंकि यह साबित करने के लिए अधिक दस्तावेजों की मांग की गई है कि उन्होंने जूनियर स्तर पर उम्र में धोखाधड़ी की थी। एक अन्य अंडर-19 खिलाड़ी शिवम मावी का मामला बीसीसीआइ को सौंपा गया है क्योंकि वह सीनियर क्रिकेट में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हैं।

निवर्तमान लोकपाल न्यायमूर्ति (सेवानिवृत) बदर दुरेज अहमद ने अपने कार्यकाल के अंतिम दिन आदेश पारित किया। उन्होंने कालरा को आयु वर्ग क्रिकेट में दो साल के लिए खेलने से प्रतिबंधित कर दिया, लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि उन्हें इस सत्र में रणजी ट्रॉफी में खेलने से रोक दिया गया। बीसीसीआइ रिकॉर्ड के अनुसार, कालरा की उम्र 20 साल 351 दिन है। वह पिछले सप्ताह दिल्ली अंडर-23 की तरफ से बंगाल के खिलाफ खेले थे जिसमें उन्होंने 80 रन बनाए थे। वह रणजी टीम में शिखर धवन की जगह लेने की कतार में थे, लेकिन अब वह नहीं खेल पाएंगे।

राणा के मामले में लोकपाल ने डीडीसीए से उनके स्कूल से पूछताछ करने के लिए कहा है। उन्होंने जन्म प्रमाणपत्र से संबंधित विशेष दस्तावेजों को जुटाने और उन्हें अगली सुनवाई में पेश करने के लिए कहा है। लेकिन सवाल यह है कि जब पुराने लोकपाल नहीं हैं तो क्या लोकपाल पद पर नियुक्त किए गए न्यायमूर्ति दीपक वर्मा नए सिरे से जांच करेंगे? किसी को यह भी समझ में नहीं आ रहा है कि कालरा को उम्र में धोखाधड़ी के लिए सीनियर स्तर की क्रिकेट खेलने से क्यों रोका गया है।

# चार दिवसीय टेस्ट के पक्ष में नहीं ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी

- अनुभवी स्पिनर लियोन ने चार दिवसीय टेस्ट को हास्यास्पद बताया, लैंगर भी बदलाव के इच्छुक नहीं

**सिडनी, प्रेट्र :** आइसीसी के चार दिवसीय टेस्ट मैचों के प्रस्ताव को 'हास्यास्पद' करार देते हुए ऑस्ट्रेलिया के शीर्ष स्पिनर नाथन लियोन ने इसका कड़ा विरोध किया, जबकि मुख्य कोच जस्टिन लैंगर भी पारंपरिक प्रारूप में बदलाव के पक्ष में नहीं है। इसके अलावा ऑस्ट्रेलियाई कप्तान टिम पेन और बल्लेबाज ट्रेविस हेड भी पांच दिवसीय टेस्ट के पक्ष में हैं। लियोन का बयान ऐसे समय में आया है जबकि क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के सीईओ केविन रॉबर्ट्स ने कहा कि उनका बोर्ड चार दिवसीय टेस्ट में दिलचस्पी रखता है और वे इस साल के आखिर में अफगानिस्तान के खिलाफ इस तरह का मैच खेल सकते हैं।

लियोन ने कहा, 'मैं पूरी तरह से इसके खिलाफ हूं और मुझे उम्मीद है कि आइसीसी इस पर विचार तक नहीं करेगी। आप दुनिया भर में खेले गए बड़े मैचों पर गौर करो तथा मैं जिन सर्वश्रेष्ठ टेस्ट मैच का हिस्सा रहा वे आखिरी तक रोमांचक बने रहे। मैं पारंपरिक हूं और जो भी मुझे जानता है उसे पता है कि मैं बहुत अधिक बदलाव का पक्षधर नहीं हूं, इसलिए मैं पांच दिवसीय टेस्ट मैचों का पक्ष लूंगा। लेकिन, अगर चार दिवसीय टेस्ट मैच टेस्ट क्रिकेट को जीवंत बनाए रखते हैं तो इस पर गौर किया जा सकता है। लेकिन, मैं पांच दिवसीय मैच इसलिए पसंद करता हूं क्योंकि मैं नीरस हूं और मैं बहुत अधिक बदलाव पसंद नहीं करता।' लियोन ने इस संदर्भ में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 2014 में एडिलेड में खेले गए टेस्ट मैच का उदाहरण दिया, जिसे मेजबान टीम ने अंतिम घंटे में जीता था।

# इनेस्ता के क्लब विसेल कोबे ने जीती ट्रॉफी

**फुटबॉल डायरी**

**टोक्यो, रायटर :** स्पेन की विश्व कप विजेता टीम के सदस्य रहे आंद्रे इनेस्ता और लुकास पोडोस्की की अगुआई में जापानी फुटबॉल क्लब विसेल कोबे ने काशिमा एंटर्ल्स को 2-0 से हराकर इंपेरर्स कप फाइनल में शानदार जीत दर्ज की। टोक्यो ओलंपिक के लिए निर्मित नेशनल स्टेडियम में यह पहला फुटबॉल मैच खेला गया।

नवनिर्मित स्टेडियम में पहला गोल आत्मघाती साबित हुआ। एंटर्ल्स के डिफेंडर टोमोया इनुस्की खेल के 18वें मिनट में गेंद को अपने ही गोल पोस्ट में डाल बैठे। इस गोल के 20 मिनट बाद कोबे के स्ट्राइकर नोरियकी फुजुमातो ने स्कोर करके अपनी टीम को दोहरी बढ़त दिलाई। हाल के वर्षों में कोबे के मालिक हिरोशी मिकितानी ने क्लब के साथ कई बड़े नामों को जोड़ा है जिसका नतीजा यहां देखने को मिला। इस मैच के साथ ही बार्सिलोना और एटलेटिको मैड्रिड के पूर्व दिग्गज खिलाड़ी डेविड विया का भी कोबे के साथ सफर समाप्त हो गया, जो 37 साल की उम्र में संन्यास ले रहे हैं। हाल के समय में विया फिटनेस की समस्या से गुजर रहे हैं और वह इस मुकाबले के आखिरी कुछ मिनटों में ही मैदान पर उतरे।

### साल के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी बनने की कगार पर माने

**जोहानिसबर्ग, एएफपी :** इंग्लिश फुटबॉल क्लब लिवरपूल के स्टार स्ट्राइकर सादियो माने 2020 में अफ्रीकी फुटबॉल में सुर्खियां बटोरने के लिए तैयार हैं। मिस्र में सात जनवरी को होने वाले कार्यक्रम में माने का साल का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी बनना तय माना जा रहा है। अल हाजी डियॉफ के बाद माने यह सम्मान हासिल करने वाले मिस्र के दूसरे खिलाड़ी बनेंगे।

जीत के बाद विजेता ट्रॉफी के साथ जश्न मनाते विसेल कोबे फुटबॉल क्लब के खिलाड़ी। रायटर

## विविध

# माघ मेले में बसने लगी संतों की वैभवशाली दुनिया

**अमरदीप भट्ट, प्रयागराज**

- त्रिवेणी मार्ग, काली सड़क, महावीर मार्ग, खाक चौक क्षेत्र में लग रहे शिविर

माघ मेला क्षेत्र में तंबुओं का शहर बसने के साथ अब साधु-संन्यासियों के वैभव से भरी दुनिया भी आबाद होने लगी है। त्रिवेणी मार्ग, काली सड़क, महावीर मार्ग, खाक चौक, अक्षयवट मार्ग सहित अन्य रास्तों के किनारे संतों के शिविर लगने शुरू हो गए हैं। इनमें प्रवचन स्थल, कल्पवासियों के लिए कुटिया, पूजन और भंडारा रसोई के इंतजाम 10 जनवरी तक कर लिए जाने की तैयारी है। जमीन आवंटन में अव्यवस्था के चलते कुछ संतों में नाराजगी भी है।

शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती के लिए त्रिवेणी मार्ग पर जमीन मिली है। बुधवार को जमीन पर भूमि पूजन हुआ। मुख्य रूप से मनकामेश्वर मंदिर के प्रभारी ब्रह्मचारी श्रीधरानंद, स्वामी विद्या चेतन महाराज, लवकुश महाराज, आचार्य दिवाकर शास्त्री, आचार्य देवेंद्र त्रिपाठी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल सहित अन्य संन्यासी शामिल रहे। अखिल भारतीय दंडी संन्यासी प्रबंध समिति का शिविर सेक्टर चार और पांच में ओल्ड जीटी मार्ग पर लगने की शुरुआत हो गई है। महामंत्री स्वामी ब्रह्माश्रम देव का कहना है कि शिविर में सभी इंतजाम 10 जनवरी तक पूरे कर लिए जाएंगे, क्योंकि इसके बाद मेला शुरू हो जाएगा और कल्पवासी भी बस जाएंगे।

श्रीमद् परमहंस आश्रम टीकरमाफी अमेठी का शिविर काली सड़क पर लगने लगा है। यह शिविर थाना कल्पवासी के समीप तुलसी चौराहा पर बसाया जा रहा है। टीकरमाफी आश्रम के महंत स्वामी हरिचैतन्य ब्रह्मचारी ने कहा कि दूर-दराज से आने वाले भक्तों के रहने, कल्पवासियों के रहने के इंतजाम, प्रवचन स्थल, पंडाल व भंडारे का स्थान चिह्नित कर काम शुरू करा दिया गया है। फिलहाल टीन की चादरों से बाउंड्री बनाई गई है। कई अन्य संत संन्यासियों के शिविर भी महावीर मार्ग पर बस रहे हैं। उधर, माघ मेले के सबसे अहम क्षेत्र खाक चौक में खाक चौक प्रबंध समिति की ओर से आश्रम व शिविर लगाने की प्रक्रिया तेज है। काशी सुमेरु पीठ के पीठाधीश्वर स्वामी नरेंद्रानंद सरस्वती ने कहा है कि मेला प्रशासन ने कई बार तारीख देने के बाद मंगलवार को उन्हें जमीन देने से साफ इन्कार कर दिया है। मेला प्रशासन की मनमानी बताकर आक्रोश जताते हुए उन्होंने माघ मेले में आने से इन्कार कर दिया है।

# शिष्य ने ही किया था भजन गायक का परिवार सहित कत्ल, गिरफ्तार

**जागरण संवाददाता, शामली**

- भजन गायक के बेटे का शव व हत्या में प्रयुक्त तलवार, खुखरी बरामद
- 60 हजार रुपये न देने व पत्नी को अपशब्द कहने पर दिया हत्याकांड को अंजाम

उत्तर प्रदेश के शामली स्थित पंजाबी कॉलोनी में मंगलवार को हुए सनसनीखेज हत्याकांड में बुधवार को भजन गायक के शिष्य को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार भजन गायक अजय पाठक के सबसे करीबी शिष्य हिमांशु सैनी ने अकेले ही अजय पाठक, उनकी पत्नी स्नेहलता, बेटी वसुंधरा व बेटे भागवत का बेरहमी से कत्ल किया। पुलिस ने हिमांशु की निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त तलवार, खुखरी और चार मोबाइल भी बरामद किए हैं।

पुलिस कार्यालय में एसपी विनीत जायसवाल ने प्रेसवार्ता में बताया कि अजय पाठक की जागरण मंडली के सदस्य हिमांशु ने अकेले ही अजय पाठक, उनकी पत्नी स्नेहलता, बेटी वसुंधरा व बेटे भागवत की हत्या की। तीन साल से हिमांशु अजय की मंडली में काम करता था। उसने 60 हजार रुपये अजय के पास जमा कर रखे थे। हिमांशु पर लोगों का काफी कर्ज था। बैंक का कर्ज अदा करने को आरसी जारी हो गई थी। एक माह में कुर्की नोटिस जारी हो गया था। हिमांशु ने अजय से अपने जमा रुपये व कुछ रुपये की मदद करने को कहा तो उन्होंने गाली-गलौज कर उसकी पत्नी के बारे में आपत्तिजनक टिप्पणी की थी, जिससे वह खफा था। सोमवार रात तीन बजे हिमांशु ने अजय की ही तलवार व खुखरी से पहले अजय फिर स्नेहलता की हत्या की। बाद में दूसरे कमरे में सोई वसुंधरा की खुखरी से व भागवत की गला दबाकर हत्या की। एसपी के अनुसार, हिमांशु शवों को कहीं बाहर ले जाकर ठिकाने लगाना चाहता था। इसी कारण उसने भागवत का शव उनकी ईको स्पोर्ट कार की डिग्गी में रखा। वसुंधरा का शव भारी होने के कारण वह कार में नहीं रख सका।

भजन गायक और उनके परिवार की हत्या के आरोपित हिमांशु (बाएं) के बारे में पत्रकारों को जानकारी देते एसपी विनीत जायसवाल। जागरण

### कार में आग लगाकर भागते हुए पकड़ा

भजन गायक अजय पाठक और उनके परिवार की हत्या करने के बाद आरोपित हिमांशु सैनी उनके घर में ही रहा। सुबह लोगों के जागने के कारण वह घर का ताला लगाकर कार और भागवत का शव लेकर भाग गया। शक होने पर पुलिस हिमांशु का पीछा कर रही थी। पानीपत टोल प्लाजा के पास उसे कार में आग लगाकर भागते समय मंगलवार देर रात गिरफ्तार किया गया। डीआइजी उपेंद्र अग्रवाल ने हत्याकांड का पर्दाफाश करने वाली टीम को 25 हजार रुपये का इनाम देने की घोषणा की है।

# मोहाली में देर रात तक चली पार्टी, सुबह मिले चार शव

**जागरण संवाददाता, मोहाली**

अंगीठी से उठने वाली गैस के कारण दम घुटने से ही चारों युवकों की मौत हुई है। पोस्टमार्टम के लिए शव मोर्चरी में रखवा दिए गए हैं।
– शिवदीप बराड़, एसएचओ फेज-8 थाना मोहाली

पंजाब के मोहाली में 31 दिसंबर की रात नए साल की पार्टी के बाद कमरे में अंगीठी जलाकर सोए चार कैटरिंग ब्वॉय (वेटर) की दम घुटने से मौत हो गई। यह कोठी पंजाब के एसपी इंटेलीजेंस रजिंदर सिंह सोहल के करीबी रिश्तेदार जतिंदर पाल सिंह की है। बुधवार सुबह कोठी के लॉन में बने कमरे में चारों वेटरों का शव पड़े होने की सूचना पर मौके पर गई पुलिस ने जांच की और शवों को कब्जे में ले लिया। पुलिस का दावा है कि अंगीठी से उठने वाली गैस के कारण दम घुटने से ही चारों की मौत हुई है। चारों की पहचान द्वारका दास (35) निवासी विकास नगर मौलीजागरां (चंडीगढ़), धर्म सिंह (21), अमित कुमार (20), रजनीश कुमार (17) तीनों निवासी कांसल (मोहाली) के रूप में हुई है। सभी मूलरूप से उत्तर प्रदेश के जिला उन्नाव के रहने वाले बताए जा रहे हैं।

सेक्टर-22 में कपड़ों का शोरूम चलाने वाले जतिंदर पाल सिंह की सेक्टर-69 में दो कोठियां हैं। यहां 31 दिसंबर की रात पार्टी का आयोजन किया गया था। जतिंदर पाल सिंह ने गेस्ट की खातिरदारी के लिए एक लोकल कैटरिंग कंपनी को हायर किया था। यह कैटरिंग कंपनी विपिन नाम के शख्स की बताई जा रही है। इसमें द्वारका दास, धर्म सिंह, अमित व रजनीश वेटर थे। पार्टी सुबह ढाई बजे तक चली। सुबह चारों की मौत की सूचना मिली। खबर मिलते ही एसएचओ फेज-8 शिवदीप बराड़ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल फेज-6 की मोर्चरी में रखवा दिया है। वहीं, एसपी इंटेलीजेंस रजिंदर सिंह सोहल व उनकी पत्नी भी सूचना मिलने के बाद कोठी पर जा पहुंचे।

**सोने से पहले अंगीठी रखकर कमरा किया बंद :** पार्टी ओपन लॉन में थी, जहां मेहमानों के लिए अंगीठियां जलाई गई थीं। पार्टी खत्म होने के बाद चारों वेटरों ने जतिंदर पाल सिंह को धुंध की बात कहकर लॉन में बने कमरे में सोने की इच्छा जताई। इजाजत मिलने पर वे लॉन में बने कमरे में ही चले गए। इसके बाद ठंड से बचने के लिए चारों ने लॉन में जल रही अंगीठी कमरे में रख ली और दरवाजा बंद कर लिया। इसी बीच अंगीठी से उठने वाली गैस के कारण दम घुटने से चारों की मौत हो गई।

**सुबह नौ बजे दरवाजा खटखटाने पर पता चला :** बुधवार सुबह नौ बजे जब जतिंदर पाल सिंह उठे तो उन्होंने लॉन का दरवाजा बंद देखा। खटखटाने पर जब दरवाजा नहीं खुला तो उन्होंने और लोगों को बुलाकर दरवाजे की कुंडी तोड़ी। अंदर देखा तो चारों के शव पड़े थे।

# बरेली-इंदौर एक्सप्रेस की बोगी 'लापता'

**जागरण संवाददाता, बरेली**

- बरेली में एस-8 बोगी नहीं लगाई, अलीगढ़ में यात्रियों ने किया हंगामा
- दूसरे कोचों में चढ़ने पर यात्रियों को नहीं मिली बैठने का जगह

बोगी गायब नहीं होगी। तीन बोगी डैमेज हुई थी। मरम्मत के बाद ट्रेन में जोड़ी गई थीं। हो सकता है कि बोगी के बाहर का बोर्ड गलत लगा हो। ट्रेन पूरी भेजी गई है।
– सत्यवीर सिंह, स्टेशन मास्टर बरेली जंक्शन

रेलवे के कारनामे कम नहीं हैं। बुधवार को बरेली से बनकर चलने वाली बरेली-इंदौर एक्सप्रेस (14320) में बोगी संख्या एस-8 लगाई ही नहीं गई। कर्मचारियों की इस बड़ी चूक का खामियाजा यात्रियों को उठाना पड़ा। आरक्षित टिकट लेकर यात्री दौड़ते रहे, लेकिन स्टाफ उनकी मदद नहीं कर सका। थक हारकर यात्री अन्य बोगियों में चढ़ गए। ट्रेन के अलीगढ़ स्टेशन पर पहुंचने के बाद यात्रियों ने हंगामा किया।

बरेली-इंदौर साप्ताहिक एक्सप्रेस प्रत्येक बुधवार को पूर्वाह्न 11 बजकर 10 मिनट पर जंक्शन से रवाना होती है। यात्री निर्धारित समय पर जंक्शन पहुंचे, लेकिन कोच संख्या एस-8 ट्रेन में लगी ही नहीं था, जिससे अफरातफरी मच गई। यात्रियों की परेशानी इसलिए और भी बढ़ गई क्योंकि, कोच संख्या एस-9 के बाहर लगे बोर्ड पर कोच संख्या भी ठीक से नहीं पड़ा हुआ था, जिससे गलतफहमी में कई यात्री कोच संख्या एस-9 को ही एस-8 समझकर उसमें चढ़ गए। जब कोच के अंदर पहुंचकर टीटीई से यात्रियों ने बर्थ दिलाने के लिए कहा, तब उन्हें पता चला कि वह कोच एस-9 था, जबकि एस-8 बोगी ट्रेन में लगी ही नहीं थी। कुछ यात्रियों ने बरेली स्टेशन के स्टाफ से शिकायत भी की, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। ट्रेन को बिना एस-8 बोगी के ही रवाना कर दिया गया। थक-हारकर यात्री भी दूसरे कोचों में चढ़ गए, लेकिन उनमें भी बैठने के लिए सीट नहीं मिली। इससे उन्हें खड़े होकर ही यात्रा करनी पड़ी। इस पर यात्रियों ने गुस्सा जाहिर किया।

### रेलमंत्री व डीआरएम को किए ट्वीट

गुस्साएं यात्रियों ने डीआरएम मुरादाबाद व रेलमंत्री को ट्वीट भी किए ताकि सुनवाई हो सके। उनका कहना था कि कोच के बाहर लगे बोर्ड पर नंबर तक ठीक से नहीं पड़े थे। एस-9 पर संख्या ऐसी लिखी थी, जैसे एस-8 हो।

# ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क में बंदूक समेत शिकारी गिरफ्तार

**संवाद सहयोगी, गुशैणी**

वन विभाग की टीम ने मंगलवार रात को गश्त के दौरान शिकारी को बंदूक सहित पकड़ा है। अभी मामले की जांच की जा रही है।
– सचिन शर्मा, डीएफओ जीएचएनपी।

ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क में शिकार करने के आरोप में चंदेराम को बंदूक समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया है। जांच की जा रही है कि आरोपित के पास बंदूक कहां से आई। – विन्नी मिन्हास, डीएसपी बंजार

हिमाचल के ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क के एंट्री गेट के पास ही वन विभाग की टीम ने बंदूक समेत शिकारी को गिरफ्तार किया है। मौके से भागे उसके पिता को भी पुलिस ने पकड़ लिया है। बरामद बंदूक का लाइसेंस भी नहीं है। आरोपित की पहचान चंदे राम और उसके पिता गोपाल के रूप में हुई है। दोनों टारन, तहसील बंजार के निवासी हैं।

31 दिसंबर की रात को वन रक्षकों की टीम तीर्थन घाटी में नोहांडा, ग्राहण व गाड़ के जंगल में गश्त पर थी। इस दौरान जंगल में टीम को धमाके की आवाज सुनाई दी तो वह आवाज वाले क्षेत्र की तरफ भागे। जब वह मौके पर पहुंचे तो वहां पर एक व्यक्ति बंदूक में गोली भर रहा था तथा दूसरा साथ बैठा था। वे वन विभाग की टीम को देखकर मौके से भागे। इनमें चंदेराम को मौके पर पकड़ लिया गया, जबकि गोपाल भाग गया। टीम द्वारा पूछे जाने पर पकड़े गए आरोपित ने कहा कि उसने गोली पक्षी पर चलाई थी, लेकिन वह नहीं लगी।

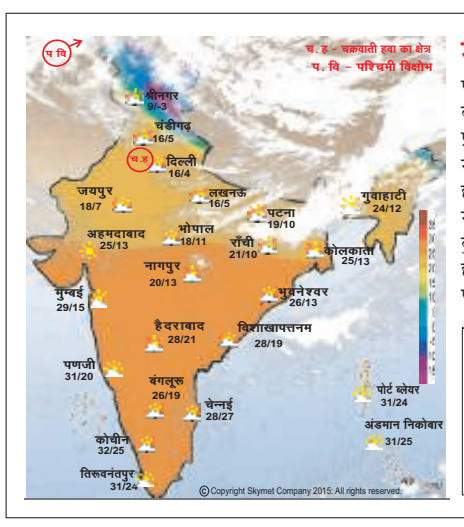


### मौसम विशेष

पश्चिमी विक्षोभ के कारण जम्मू-कश्मीर, लद्दाख व हिमाचल प्रदेश में बादल छाए रहेंगे। कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा व बर्फबारी होगी। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व राजस्थान में बादलों में वृद्धि होगी। कुछ स्थानों पर गरज के साथ हल्की वर्षा होगी। एक-दो स्थानों पर ओलावृष्टि भी संभव है।

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

| शहर | | शहर | |
|---|---|---|---|
| मुम्बई | 30/16 | आंबा अहमदाबाद | 28/09/व |
| कोलकाता | 22/13 | आंबा बड़ौदा | 29/13/सा |
| चेन्नई | 28/23/व | नागपुर | 19/13/आंबा |
| हैदराबाद | 27/21 | आंबा इन्दौर | 24/08/आंबा |
| बंगलूरू | 26/19 | आंबा रांची | 21/10/आंबा |
| त्रिवेन्द्रम | 32/24 | आंबा पटना | 22/11/आंबा |
| गुवाहाटी | 21/13/व | जमशेदपुर | 23/13/व |
| मंगलोर | 03/-6/ | आंबा पुणे | 30/18/व |

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
गुरुवार 2 जनवरी 2020
# आजकल
16
www.jagran.com

## पहले कृत्रिम उपग्रह ने की सूर्य की परिक्रमा

1959 में आज ही के दिन सोवियत संघ ने लूना-1 उपग्रह लांच किया जो सबसे पहली बार चंद्रमा के करीब पहुंचा। लांच के समय में गड़बड़ी होने के चलते यह पृथ्वी की कक्षा से बाहर निकलकर सूर्य की परिक्रमा करने वाला पहला उपग्रह बना।

## धरती से ली गई चांद की पहली तस्वीर

1839 में आज ही फ्रांसीसी फोटोग्राफर लुइस डेगुएरे ने चांद की पहली तस्वीर निकाली। उनकी लैब में आग लगने से इस तस्वीर समेत अन्य कई प्रमुख दस्तावेज जल गए। उनकी तकनीक से ही ब्रिटिश प्रोफेसर जॉन ड्रेपर द्वारा ली गई चांद की तस्वीर फिलहाल सबसे पुरानी चांद की तस्वीर है।

## देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों का गठन हुआ

देश के नागरिकों को किसी भी क्षेत्र में किए गए उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए दिए जाने वाले सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों का गठन आज ही के दिन वर्ष 1954 में हुआ। राष्ट्रपति कार्यालय ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करके दो नागरिक पुरस्कारों के गठन की घोषणा की। इसमें सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न और उससे नीचे तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया पद्म विभूषण पुरस्कार शामिल था। 15 जनवरी 1955 को पद्म विभूषण को तीन पुरस्कारों में विभाजित किया गया। इसमें सबसे बड़ा पुरस्कार पद्म विभूषण, दूसरे स्थान पर पद्म भूषण और अंत में पद्म श्री पुरस्कार है।

### नए साल के पहले दिन

## भारत में गूंजी सबसे ज्यादा किलकारियां

आप ये अनुमान लगाना चाहेंगे कि साल 2020 के पहले दिन भारत में कितने बच्चे पैदा हुए होंगे? चलिए हम आपको बता देते हैं। हर साल पहली जनवरी को पैदा हुए बच्चों को शुभ तारीख के रूप में मानते हुए यूनिसेफ (संयुक्त राष्ट्र बाल कोष) दुनियाभर में खुशी मनाता है। इसी क्रम में उसने एक रोचक अनुमान पेश किया है, जिसमें 2020 के पहले दिन बच्चों के पैदा होने के आंकड़े पेश किए गए हैं। हालांकि नवजातों की होने वाली असामयिक मौतों को लेकर उसने चिंता भी जताई है। कहा है कि सभ्य और आधुनिकता की पींगे मारते इस संसार में ये तस्वीर विचलित करती है। पेश है एक नजर:

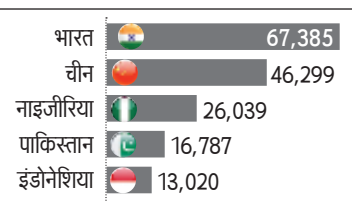

**3,92,078**
दुनिया में पहली जनवरी, 2020 को पैदा हुए बच्चों की संख्या

**67,385**
भारत में पहली जनवरी को पैदा हुए बच्चे

- दुनिया में 2020 का पहला बच्चा फिजी में पैदा होने का अनुमान
- दुनिया में 2020 की पहली जनवरी का आखिरी बच्चा अमेरिका से पैदा होने का अनुमान

### एक जनवरी को पैदा हुई हस्तियां

साल के पहले दिन पैदा हुए बच्चे अपनी जन्मतिथि इसी दिन पैदा हुई विश्व की महान हस्तियों से जोड़कर देखते हैं।

**सत्येंद्र नाथ बोस**

महान भौतिक शास्त्री का जन्म एक जनवरी, 1894 को कलकत्ता (कोलकाता) में हुआ। भौतिकशास्त्र के कई सिद्धांतों के अलावा मुख्य रूप से उन्हें क्वांटम मेकैनिक्स के लिए जाना जाता है। नोबेल के लिए भी नामित हुए।

**विद्या बालन**

मशहूर अभिनेत्री का जन्म भी एक जनवरी, 1979 को बांबे (मुंबई) में हुआ। राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के साथ छह फिल्मफेयर मिल चुका है। 2014 में पद्मश्री से सुशोभित हो चुकी हैं। समाज विज्ञान से परास्नातक बालन ने 1995 में हम पांच से अभिनय की शुरुआत की। फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा।

**50%**
2020 के पहले दिन दुनिया में पैदा हुए कुल बच्चों की संख्या में आधी हिस्सेदारी आठ देशों की

"नए साल और नए दशक की शुरुआत सिर्फ अपने भविष्य की उम्मीदों और सपनों को पूरे होने का मौका नहीं है, बल्कि हमें उनके भविष्य का ख्याल रखना होगा जो पीढ़ी हमारे बाद आने वाली है।"
–**हेनरिएट्टा फोर**, कार्यकारी निदेशक, यूनिसेफ

### उल्लेखनीय सुधार

पिछले तीन दशक के दौरान दुनिया ने बच्चों की उनके पांचवे जन्मदिन से पहले मौतों को टालने में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। ये आंकड़ा पचास फीसद से अधिक है। हालांकि नवजातों के मामले में ये अभी भी चिंताजनक है। 2018 में पांच साल से कम उम्र के सभी बच्चों की मौतों में जन्म के पहले महीने के भीतर मरने वाले बच्चों की हिस्सेदारी 47 फीसद रही। 1990 में यह हिस्सेदारी 40 फीसद थी।

### लाखों बच्चों का सुखद नहीं रहता जन्मदिन

यूनिसेफ ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि दुनिया में ऐसे लाखों बच्चे हैं जिनका जन्मदिन सुखद नहीं रहता है।

- **25 लाख**: 2018 में दुनिया भर में पैदा हुए बच्चे जन्म के बाद महीने के भीतर काल कवलित हुए
- **1/3**: 2018 में जन्म के महीने भर के भीतर मरने वाले 25 लाख बच्चों में जन्म के दिन ही मरने वाले बच्चों की हिस्सेदारी
- **25 लाख**: हर साल उन बच्चों की संख्या जो पैदा ही मृत होते हैं

### इधर-उधर की

#### चोर ने खुद को मार ली गोली

**मेक्सिको सिटी, एजेंसी**: किसी भी काम को करने के दौरान अनाड़ीपन या तो काम के संपन्न होने में बाधा बनता है या फिर खुद को नुकसान पहुंचा देता है। पश्चिमी मेक्सिको के एक छोटे से कस्बे में कुछ ऐसा ही उदाहरण देखने को मिला। दरअसल बस लूटने के इरादे से उसमें चोरों का एक तीन सदस्यों वाला गिरोह भी सफर कर रहा था। वे लोग उस उचित मौके की तलाश में थे, जब वे अपने हथियार निकालकर यात्रियों को आतंकित कर सकें। वह मौका भी आया, लेकिन यह क्या, चोर बिना कुछ किए बस रुकने पर नौ दो ग्यारह होते बने। दरअसल उनकी सारी कारगुजारी बस में लगे सीसीटीवी में कैद हो चुकी थी। बाद में पुलिस ने बताया कि उस गिरोह के एक सदस्य ने अपनी जींस से जैसे ही छिपाई गई गन को निकालने की कोशिश की, उससे गोली चल गई। वह गोली चोर के पैर में लग गई। सोशल मीडिया पर जब यह सीसीटीवी फुटेज अपलोड की गई तो चोर के अनाड़ीपन पर प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आई हुई है।

### शोध अनुसंधान

#### नई दवा में दिखी गठिया के उपचार की उम्मीद

शोधकर्ताओं को गठिया के उपचार की दिशा में बड़ी सफलता मिली है। उन्होंने एक ऐसी दवा की पहचान की है, जिसमें गठिया के एक प्रकार ऑस्टियोआर्थराइटिस के उपचार की उम्मीद दिखी है। एनल्ज ऑफ इंटरनल मेडिसिन पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, एमआइवी-711 दवा ऑस्टियोआर्थराइटिस को बढ़ने से रोक सकती है। घुटने में ऑस्टियोआर्थराइटिस काफी कष्टकारी होता है। ब्रिटेन की लीड्स यूनिवर्सिटी के परीक्षण में पाया कि यह दवा हड्डियों और कार्टिलेज में होने वाली गिरावट को कम करने के साथ ही ऑस्टियोआर्थराइटिस के लक्षणों से निजात दिला सकती है। 244 रोगियों पर किए गए अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया है। ऑस्टियोआर्थराइटिस पीड़ित इन रोगियों को 26 हफ्ते तक एमआइवी-711 की 100 या 200 एमजी की खुराक दी गई थी।
–आइएएनएस

# वैज्ञानिकों ने खोजा नया ब्रेन सर्किट

**सफलता** ▸ खुशी व गम जैसे विपरीत व्यवहार की स्थिति में यह सर्किट करता है काम

### अवसाद और चिंता जैसी बीमारियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां मिल सकती हैं

**न्यूयॉर्क, प्रेट्र**: मस्तिष्क विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने एक बड़ी सफलता हासिल की है। इससे आने वाले दिनों में अवसाद और चिंता जैसी मानसिक बीमारियों के इलाज में अहम कामयाबी मिल सकती है। शोधकर्ताओं ने मस्तिष्क में एक ऐसे सर्किट को खोज निकाला है, जो दो विपरीत व्यवहार- आनंद और दुख- की स्थिति में काम करता है। यह अध्ययन 'न्यूरॉन' जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

शोधकर्ताओं ने बताया कि मस्तिष्क में तंत्रिका कोशिकाओं के विभिन्न वर्ग सकारात्मक और नकारात्मक विचारों को नियंत्रित करते हैं। इसके लिए वे मस्तिष्क के केंद्र में विचारों के विपरीत सिग्नल भेजते हैं। अमेरिका के कोल्ड स्प्रिंग हार्बर लेबोरेट्री (सीएसएचएल) के बो ली सहित अन्य शोधकर्ताओं ने बताया कि तंत्रिकाओं के इन दोनों समूहों की गतिविधियों में संतुलन से पता चलता है कि कोई व्यक्ति सकारात्मक विचारों के दौरान आनंद खोज रहा है या नकारात्मक विचारों के दौरान अपनी परेशानियों से निजात पाना चाह रहा है।

वैज्ञानिकों के अनुसार, इन तंत्रिका कोशिकाओं द्वारा नियंत्रित व्यवहार मानसिक बीमारी से ग्रसित लोगों में बाधित होते हैं। एक उदाहरण का हवाला देते हुए शोधकर्ताओं ने बताया कि अवसाद से पीड़ित लोग उन कार्यों को करना बंद कर देते हैं, जिससे कभी उन्हें खुशी मिलती थी। वहीं, संभावित खतरों से बचने के लिए वे किसी भी हद तक चिंता करते हैं।

प्रतीकात्मक

उन्होंने बताया कि किसी व्यक्ति में आनंद या दुख को पहचानने और प्रतिक्रिया देने की क्षमता आंशिक तौर पर मस्तिष्क के खास हिस्से पर निर्भर करता है, जिसे वेट्रम पल्लिडम कहा जाता है। जब कोई प्यासा जानवर पानी के एक घूंट जैसे आनंद के पल या हवा के कष्टदायक झोकों जैसी तकलीफ से बचने की कोशिश करता है, तो मस्तिष्क का यह हिस्सा सक्रिय हो जाता है।

**इस तरह किया अध्ययन**: ली और उनकी टीम यह समझना चाहती थी कि मस्तिष्क के इस हिस्से में विभिन्न प्रकार के न्यूरॉन दोनों प्रकार के संकेतों से कैसे जुड़े होते हैं। वैज्ञानिकों ने इसका अध्ययन करने के लिए उन उपकरणों का प्रयोग किया, जिससे उन्हें किसी व्यक्ति के मस्तिष्क की कोशिकाओं की निगरानी करने और उनकी पहचान की पुष्टि करने में मदद मिली।

एक बार चूहों को पानी का घूंट या हवा के झोकों के साथ कुछ ध्वनियां सुनने के लिए प्रशिक्षित किया गया। शोधकर्ताओं ने इसके लिए वेंट्रल पल्लिडम में तंत्रिका की गतिविधि की निगरानी के लिए तकनीक का प्रयोग किया। उन्होंने पाया कि तंत्रिका कोशिकाएं गतिविधि को प्रभावित करने के लिए जीएबीए नामक ट्रांसमीटर रसायन का प्रयोग करती हैं। चूहों द्वारा पानी की इच्छा जताने के व्यवहार के लिहाज से मस्तिष्क का यह विशेष हिस्सा काफी महत्वपूर्ण होता है।

अध्ययन में कहा गया है कि ग्लूटामेट नामक न्यूरोट्रांसमीटर का उपयोग करके तंत्रिका कोशिकाएं ब्रेन सर्किट को उत्तेजित करती हैं। शोधकर्ताओं ने बताया कि चूहों ने संयुक्त उत्तेजना की प्रतिक्रिया में अलग-अलग विकल्प बनाए। यानी पानी पी चुके जानवरों की तुलना में प्यासे जानवर हवा के झोकों को झेलने का जोखिम उठाने को अधिक तैयार थे। ली ने अध्ययन के इन निष्कर्षों के आधार पर सुझाव दिया कि सिग्नल के बीच में संतुलन वेंट्रल पल्लिडम में नसों को बाधित करने या उत्तेजित कर सकते हैं, जो उन्हें नियंत्रित करने के लिहाज से महत्वपूर्ण हो सकते हैं। इस आधार पर किसी जानवर के व्यवहार का पता लगाया जा सकता है।

## अब किडनी में सीधे पहुंचाए जाएंगे जीन

**वाशिंगटन, प्रेट्र**: शोधकर्ताओं ने किडनी संबंधित रोगों के इलाज की एक नई विधि विकसित की है। इसके जरिये जीन को सीधे किडनी में पहुंचाया जा सकता है। यह ऐसी तकनीक है जिससे जीन थेरेपी तकनीक में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है।

अमेरिका में गैर लाभकारी संगठन अकादमिक चिकित्सा केंद्र 'मेयो क्लीनिक' के वैज्ञानिकों ने अंतः शिरा मार्ग के माध्यम से किडनी तक सीधे पहुंचने के लिए तीन अलग-अलग आकार के वेक्टर की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। ये एडेनो-एसोसिएटेड वायरस (एएवी) वेक्टर (25 एनएम), लार्जर एनेनो वायरस वेक्टर (100 एनएम) और लेंटीवायरल वेक्टर (120 एनएम) हैं। 'मेरी एन लिबर्ट' नामक पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया कि इन वेक्टर को किडनी तक पहुंचाने में एक दिक्कत थी। आशंका थी कि कहीं वेक्टर लीक न कर जाए। इसलिए शोधकर्ताओं ने ऐसे मार्ग की पहचान की जो किडनी तक सीधे पहुंचते हों।

# प्रत्येक दो महीने में सारे दांत बदल लेता था यह डायनासोर

- मेडागास्कर में लगभग सात करोड़ वर्ष पूर्व पाया जाता था माजुंगासॉरस नामक मांसाहारी डायनासोर
- माजुंगासॉरस में दांतों की वृद्धि दर अन्य डायनासोर की तुलना में 13 गुनी तक अधिक है

प्लास वन जर्नल में प्रकाशित हुआ अध्ययन। प्रतीकात्मक

**न्यूयॉर्क, प्रेट्र**: डायनासोर अब भले ही विलुप्त हो चुके हैं, लेकिन इनकी दुनिया के किस्से आज भी तमाम लोगों को रोमांचित करते हैं। इतना ही नहीं, हर अध्ययन में इन्हें लेकर अलग-अलग तरह के दावे किए जाते रहे हैं। अब वैज्ञानिकों ने एक नया अध्ययन किया है। इस हालिया अध्ययन में बताया गया है कि मेडागास्कर में लगभग सात करोड़ वर्ष पूर्व मांसाहारी डायनासोर रहता था, जो हर दो महीने के बाद अपने सारे दांत बदल लेता था।

प्लॉस वन जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया है कि माजुंगासॉरस नामक डायनासोर प्रत्येक दो महीने पर हर सॉकेट में नए दांत विकसित कर लेता था। इतना ही नहीं, माजुंगासॉरस नामक इस डायनासोर में दांतों को विकसित करने की दर अन्य मांसाहारी डायनासोर की तुलना में दो से 13 गुनी तक अधिक थी।

अमेरिका की अडेल्फी यूनिवर्सिटी सहित इसका अध्ययन करने वाले अन्य शोधकर्ताओं ने बताया कि इस प्रजाति के डायनासोर के दांत जल्दी टूट जाते थे। इसकी वजह यह हो सकती है कि संभवतः वे अपने दातों से हड्डियों को काटते थे।

**अध्ययन में किया गया दावा**: वैज्ञानिकों ने अपने इस अध्ययन में दांतों में अतिसूक्ष्म पंक्तियों की वृद्धि की पड़ताल करने के लिए डायनासोर के दांतों के जीवाश्म के संग्रह का प्रयोग किया। उन्होंने कहा कि ये वृद्धि पेड़ के छल्लों की ही तरह हैं, लेकिन साल में एक बार की जगह रोज जमा होते हैं।

शोधकर्ताओं की टीम ने हड्डियों के अंदर उग रहे अनियंत्रित दांतों को देखने के लिए जबड़े पर कंप्यूटराइज्ड टोमोग्राफी (सीटी) नामक स्कैनिंग तकनीक आधारित एक्स-रे का भी प्रयोग किया। इस तकनीक के जरिये शोधकर्ताओं ने बड़ी संख्या में जबड़ों में दांतों के बदलने का अनुमान लगाया। इसकी पुष्टि के लिए उन्होंने अपने नतीजों की दोबारा पड़ताल भी की।

शोधकर्ताओं का कहना है कि दांतों की तेज वृद्धि दर माजुंगासॉरस नामक डायनासोर को शार्क और हर्बीवोरस डायनासोर के वर्ग ला खड़ा करता है।

**शांति का संदेश**
वर्ल्ड डे ऑफ पीस पर बुधवार को वेटिकन सिटी के सेंट पीटर्स बेसिलिका में बाल यीशु की प्रतिमा के पांव चूमते पोप फ्रांसिस। इस मौके पर पोप ने दुनियाभर के ईसाइयों को याद दिलाया कि उनका ईश्वर गरीबी में पैदा हुआ इसलिए वे उपभोक्तावाद की संस्कृति के स्थान पर प्रेम और पुण्य के कामों में ध्यान लगाएं। एएफपी

**इंडोनेशिया में बाढ़ से हालात विकट**
इंडोनेशिया के जावा प्रांत के बेकासी में अचानक आई बाढ़ से नौ लोगों की मौत हो गई और सामान्य जनजीवन बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के लिए बड़े पैमाने पर बचाव एवं राहत कार्य चलाया गया। एक महिला को ट्यूब में बैठाकर ले जाता नागरिक। भारी तूफान के बाद इंडोनेशिया में भूस्खलन और बाढ़ जैसे हालात उत्पन्न हो गए हैं। देश में दिसंबर से फरवरी के दौरान हर साल लोगों को बाढ़ की विकट समस्या से जूझना पड़ता है। एएफपी

### स्क्रीन शॉट

## खुद के प्रोडक्शन में वैनिटी वैन का प्रयोग नहीं करते अजय-काजोल

कई अभिनेता अभिनय के साथ-साथ अपनी निर्माण कंपनी भी संभाल रहे हैं। जब फिल्म के निर्माण के साथ-साथ वह उसमें अभिनय भी कर रहे होते हैं, तो प्रेशर दोगुना होता है। बात करें अगर अजय देवगन की, तो उनके प्रोडक्शन की आगामी फिल्म 'तानाजीः द अनसंग वॉरियर' होगी। इस फिल्म में अजय ताना जी मालसुरे की भूमिका निभा रहे हैं, जबकि काजोल उनकी पत्नी सावित्रीबाई की भूमिका में होंगी। अभिनय के साथ अजय को निर्माता की जिम्मेदारी भी संभालनी थी। मजे की बात यह है कि होम प्रोडक्शन फिल्म होने के बावजूद काजोल और अजय बिना वैनिटी वैन के काम कर रहे थे। 'द कपिल शर्मा' शो में पहुंचे काजोल और अजय से जब कपिल ने पूछा कि आप दोनों जब किसी दूसरे प्रोडक्शन हाउस की फिल्म में काम करते हैं, तो क्या उनकी वैनिटी अलग-अलग होती है। जब दोनों होम प्रोडक्शन में काम करते हैं, तो एक ही वैनिटी का इस्तेमाल करना पसंद करते होंगे। इस पर अजय ने बताया कि जब प्रोडक्शन हमारा होता है, तो वैनिटी ही नहीं होती है। लंबे अरसे बाद काजोल और अजय की जोड़ी फिल्म तानाजीः द अनसंग वॉरियर में नजर आएगी। कपिल ने जब अजय से पूछा कि उनके शांत स्वभाव के पीछे कहीं यह कारण तो नहीं कि काजोल ज्यादा बातें करती हैं, तब अजय ने हामी भरते हुए कहा कि काजोल को उनके बदले बोलने की आदत है।

## 'तूफान' के लिए रिंग में चार मुक्केबाजों से भिड़े फरहान अख्तर

फरहान अख्तर अपनी आगामी फिल्म 'तूफान' में मुक्केबाज का किरदार निभा रहे हैं। इसकी तैयारी के लिए वह खूब मेहनत भी कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर वह अक्सर अपनी तैयारियों की तस्वीरें साझा करते रहते हैं। नए साल पर फिल्म के निर्माताओं ने फरहान का लुक जारी किया है। जिसमें वह पेशेवर मुक्केबाज की तरह दिखाई दे रहे हैं। इस फिल्म के लिए फरहान अमेरिकी मुक्केबाज डोरेल फॉस्टर से मुक्केबाजी का प्रशिक्षण ले रहे हैं। डोरेल ने बताया कि उन्होंने फरहान को मुक्का मारने की एक्टिंग करने की बजाय असल में मुक्का मारना सिखाया। डोरेल के मुताबिक रिंग में विरोधी के सामने कभी स्थायी और सीधा नहीं खड़ा होना चाहिए। इससे विरोधी के लिए आपके ऊपर हमला करना आसान हो जाता है। रिंग में अपना स्थान बदलते रहने से विरोधी को भी आपको देखने और हमला करने के लिए दिशा बदलनी पड़ती है। इस तरह मुक्केबाजी की कई बारीकियां बताकर फरहान को शारीरिक और मानसिक दोनों तरीके से प्रशिक्षित किया गया है। फिल्म के एक सीन का जिक्र करते हुए डोरेल बताते हैं कि उस सीन में फरहान को रिंग के चारों कोने पर खड़े चार मुक्केबाजों से लड़ना था। उस सीन में फरहान ने बड़ी फुर्ती और तेजी के साथ मुड़कर एक के बाद एक चारों मुक्केबाजों पर मुक्के का प्रहार किया। इससे चारों मुक्केबाज काफी प्रभावित हुए और उन्होंने फरहान की तैयारी की प्रशंसा भी की।

## नव वर्ष पर फिल्मी सितारों के संदेश

साल 2020 नई उम्मीदों और आशाओं के साथ आरंभ हो चुका है। सितारे अपने-अपने तरीके से नव वर्ष की शुभकामनाएं दे रहे हैं। अमिताभ बच्चन ने अपनी नातिन नव्या नवेली नंदा, नाती अगस्त्य नंदा, पोती आराध्या और पत्नी जया बच्चन के साथ एक तस्वीर साझा की, जिस पर उन्होंने अपने 3597वें ट्वीट पर मराठी में लिखा, 'वर्ष नव हर्ष नव जीवन उत्कर्ष नव।' शाह रुख खान ने अपने परिवार के साथ नया साल मनाया। उनकी फोटो सोशल मीडिया पर काफी लाइक की गई। शाह रुख ने लोगों को सलाह दी है कि हम वो बने, जो हम वास्तव में हैं। करण जौहर ने कहा, 'हैप्पी न्यू ईयर। अपने जुनून को फॉलो करें। अपने सपने बनाएं। अपने मन की बात सुनें। लेकिन सबसे जरूरी बात कि अपने इश्यूज को समझें। इस साल स्वयं का विकास करने में लगाएं।' दीपिका पादुकोण ने अपनी बचपन की तस्वीर साझा करते हुए लिखा, 'सोच और एक्शन में हमेशा स्पष्टता बनी रहे। हैप्पी 2020।'

## नुसरत के लिए डबल 100 की खुशी

बॉलीवुड एक्ट्रेस नुसरत भरूचा ने अपनी काबिलियत के दम पर बॉलीवुड में जो मुकाम हासिल किया है, वह तारीफ के काबिल है। हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'ड्रीम गर्ल' की कामयाबी के बाद तो उनके लिए बीता हुआ साल दोगनी खुशी देने वाला साबित हो गया। अब वह अपनी अगली फिल्म 'छलांग' को लेकर बेसब्र हैं, जिसमें उनके अपोजिट राजकुमार राव दिखाई देंगे। बहरहाल हम बात कर रहे हैं नुसरत की दोगुनी खुशी की। असल में साल 2018 में उनकी फिल्म आई थी, 'सोनू के टीटू की स्वीटी' और इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त सफलता अर्जित करते हुए सौ करोड़ क्लब में अपना नाम शामिल कराया था। साल 2019 में उनकी फिल्म आई, 'ड्रीम गर्ल' और इस फिल्म ने भी सौ करोड़ क्लब में अपना नाम शुमार कर लिया। इस तरह नुसरत के करियर में डबल 100 का समय आया। फिल्म 'छलांग' को लेकर नुसरत का कहना है कि मैं इस फिल्म के ट्रेलर और गानों का बेसब्री से इंतजार कर रही हूं।

### अध्ययन

जीवन के छह मुख्य रासायनिक तत्वों में से एक है फास्फोरस, इससे ही डीएनए और आरएनए अणु बने होते हैं

# उच्च फास्फोरस युक्त झीलों में पनपा होगा जीवन

- शोधकर्ता पिछले 50 साल से प्रारंभिक जीवन की उत्पत्ति की खोज कर रहे हैं
- प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज' जर्नल में प्रकाशित हुआ नया अध्ययन

भारत की लोनार झील पर भी किया गया अध्ययन। प्रतीकात्मक

**वाशिंगटन, प्रेट्र** : पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के बारे में वैज्ञानिकों ने कई प्रकार के दावे किए हैं। अब शोधकर्ताओं ने बताया है कि जीवन की शुरुआत ऐसी झीलों से हुई थी जिनमें फास्फोरस उच्च मात्रा में मौजूद था। बता दें कि फास्फोरस पृथ्वी पर जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। फास्फोरस जीवन के छह मुख्य रासायनिक तत्वों में से एक है और इससे ही डीएनए और आरएनए अणु बने होते हैं। यह तत्व कोशिकाओं में ऊर्जा के मुख्य स्रोत के रूप में काम करता है।

शोधकर्ताओं ने बताया कि पृथ्वी के शुरुआती समय में कार्बोनेट से भरपूर कई झीलें रहीं होंगी। इनमें हमारे ग्रह पर जीवन लाने के लिए पर्याप्त मात्रा में फास्फोरस की सांद्रता मौजूद थी। वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के असिस्टेंट प्रोफेसर जोनाथन टोनर ने कहा, 'शोधकर्ता पिछले 50 सालों से प्रारंभिक जीवन की उत्पत्ति की खोज कर रहे हैं। वे रासायनिक क्रियाएं जो जीवित चीजों का बिल्डिंग ब्लॉक बनाती हैं, उन्हें फास्फोरस की बहुत आवश्यकता होती है, लेकिन यह तत्व दुर्लभ है।' 'प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज' नामक जर्नल में प्रकाशित नए अध्ययन में कुछ विशेष प्रकार की झीलों में इस समस्या का जवाब मिला है।

**इस तरह किया गया अध्ययन** : यह अध्ययन ऐसी झीलों पर किया गया जहां प्रचुर मात्रा में कार्बोनेट मौजूद था। यहां पर वाष्पीकृत की उच्च दर की वजह से झील का पानी नमकीन और क्षारीय हो जाता है। यहां का पीएच लेवल बहुत उच्च हो जाता है। शोधकर्ताओं ने कहा कि ऐसी झीलों को सोडा लेक भी कहा जाता है। ये झीलें सभी सात महाद्वीपों में पाई जाती हैं। शोधकर्ताओं ने कैलिफोर्निया की मोनो झील, केन्या की मगदी झील और भारत की लोनार झील का चयन किया। शोधकर्ताओं ने सबसे पहले झीलों में फास्फोरस की माप की। उन्होंने पाया कि इन झीलों में समुद्र, नदियों और अन्य प्रकार की झीलों के मुकाबले 50,000 गुना ज्यादा फास्फोरस का स्तर पाया जाता है। ऐसी उच्च सांद्रता कुछ सामान्य प्राकृतिक तंत्र की ओर इशारा करते हैं जो इन झीलों में फास्फोरस को जमा करते हैं। वर्तमान में ये उच्च कार्बोनेट के स्तर वाली झीलें जैविक रूप से समृद्ध हैं। यहां सूक्ष्म जीवों से लेकर बड़े आकार के जीव पनपते हैं।